समर्पण।



पार्थिवसम्पत्तिके सहित अपार्थिव ऐश्वर्यके सम्मिलनमें जिनका हृदय देवमंदिरके समान पवित्र और उज्ज्वलहै; दानमें, दयामें, सदनुष्ठानमें, और देशहितैषितामें जिन्होंने सम्पूर्ण मनुष्योंकी श्रद्धा और भगवान् श्रीवेङ्कटेश्वरजीके आशीर्वादको आकर्षित कियाहै।

बम्बई महानगरीमें जिन्होंने "श्रीवेङ्कटेश्वर" (स्टीम्) यंत्रालयको स्थापित कर लुप्तप्राय जीर्णशीर्ण वेदवेदाङ्गादि ऋषि मुनि प्रोक्त सम्पूर्ण शास्त्रोंके ग्रंथोंको छाप उनका उद्धार करके अतुल यश और अक्षय पुण्यका संचय किया है. जिनके प्रकाशित सचित्र साप्ताहिक "श्रीवेङ्कटेश्वरसमाचार" को सम्पूर्ण देशदेशान्तरके राजा, महाराजा, सेठ, साहूकार, धनी, निर्धनी, योगी, यती आदि हिन्दीमात्रके जाननेवाले गौरवकी दृष्टिसे अवलोकन करते और मातृभाषाका सर्वोत्तम पत्र मानकर मुक्तकंठसे प्रशंसा करते हैं:—

जिनका भगवद्भक्त्यनुराग, साहित्यानुराग और शिष्टाचार अनिर्वचनीय है; जिन्होंने सम्वत् १९५६ के माड़वाड़देशीय कालमें शतशः पितृ मातृहीन सुकुमार अनाथ बालकोंका भरण पोषण करके उनके जीवनकी रक्षा कीहै।

उन्हीं परोपकारी, सज्जनहितकारी, विद्याप्रचारोत्साही, वैश्यकुलदिवाकर, आश्रित वत्सल, उदारचरित, न्यायपरायण, भ्रातृवर्य, श्रीमान् **सेठजी खेमराज श्रीकृष्णदासजीके करकमलों** में सहर्ष कृतज्ञहृदयसे भगिनी—**सुभद्रादेवीकी** यह पुष्पांजलिरूपी "**स्त्रीप्रबोधिनी**" समर्पित

भूमिका।

पाठिकागण ! इस समय भारतवर्षमें एक विवाद उठरहाहै, और इसमें दो दल हो रहेहैं, एक दल तो यह कहताहै कि, स्त्रियोंको लिखाना पढ़ाना और और शिक्षा करना उचित नहीं, इससे स्त्रियें हमारे वश न रहैंगी और उनके चरित्रमें अन्तर पडेगा; इस दलमें प्रायः प्राचीन शैलीके अनपढ़ लोग और कुछ पुरातन ढंगकी शिक्षा पाये संस्कृत सीखे हुए पंडितभी हैं [पुरातन शब्दसे हमारा संकेत यहाँ उस पद्धतिसे है जो महाभारतके पीछे विदेशियोंके आक्रमणसे नष्ट भ्रष्ट होकर खिचडीके रूपमें परिणत हुई है] दूसरा दल हमारे नव शिक्षितोंका है वे यह चाहतेहैं कि, हमारी ललनायें पश्चिमी रीति नीतिके अनुसार 'एम ए' 'बीए' होकर हमारे साथ वन उपवनके विहारमें निरत रहैं,और परदा वा पींजरेके समान घरोंमें बन्द रहना यह एक बहुतही घृणित कार्य है, स्त्रियोंका पुरुषोंके समान सत्व है इस कारण खान पान निमंत्रण आदिमें पुरुषोंके समानही स्त्रियोंका सम्मिलन होना चाहिये इसके अतिरिक्त औरभी बहुतसी बातें हैं जिनका मैं इस छोटीसी भूमिकामे उल्लेख करना नहीं चाहती यथा वकालत वैरिष्टरी करना दफ्तर जाना इत्यादि ।

मेरी सम्मतिमें धर्मशास्त्रके अनुसार तथा देशकालके अनुसार यह दोनोंही रीति ठीक नहीं हैं, नतो मैं पढे लिखे सभ्य पुरुषके साथ अशिक्षित स्त्रीका जोडाही सुखदायक मान सकती हूं और न मैं उनको ऐसी उच्चकक्षाकी बनानेमें ही कल्याण देखतीहूं कि, वह अपने स्वामीको बूटका प्रसाद जबतक प्रदान किया करे, और मोधूराम बैठे २ सहा करैं, हे बहनो ! मैं स्त्रीशिक्षाकी विरोधी भी नहीं हूं, उनको निपट मूर्ख रखना मेरा अभीष्ट नहीं है; मैं उनके मुखसे अश्लील गाली सुननेकी पक्षपातिनी नहीं हूं, मैं अनेक देवी देवताके होते हुए उनसे भूत, प्रेत, मियाँ, मदार, ताजिया, पुजवाना नहीं चाहती, और न गंडे तावीजोके लिये बाबाजीके पास भेजना चाहतीहूं; और न वशीकरनके लिये मुल्लापर भेजनेकी पक्षपातनी हूं; और मेरी यह इच्छा भी नहीं है कि, स्त्रियें अपने स्वामीके घरमें आतेही गहने कपडेका रोना ले बैठैं, न मैं यह चाहतीहूं कि, रवड़ी, मलाई, मिठाई, चटनीसे वह अपने स्वामी और श्वशुरका संचित धन चटनी करजांय, पर मैं यह भी नहीं चाहती कि, बूट,

कमीज, कुरता, साया पहनकर पुरुषोंके समान जहाँ तहाँ डोलतीहुई, अपने सास श्वशुरको मूर्खराजकी पदवी प्रदान करती हुई सनातन सत्य रीतिको एक साथ तिलांजलि देतीं हुईं, लजीले नेत्रकी लाजको कोसों दूर फेंकती हुईं, स्वामीके प्रत्यक्ष वा परोक्षमें अन्य पुरुषोंसे प्रेमालापकरती हुई, बंधु बांधव कुटम्बियोंको झिजकारती हुई,बिनाकुरसीके न बैठती हुई, देवी देवताका तिरस्कार करती सोडावाटरकी बोतल गटकती हुई, धर्म कर्मको खोती हुई, हमारे देशकी कुलवधू इस प्रकारकी सभ्य बनैं ।

मेरी यही इच्छाहै कि, वे सद्गृहस्थिनी बनैं, सास श्वशुरकी मर्यादा सेवाकरना सीखें, अपने कुटुम्बियोंसे प्रेमपूर्वक यथायोग्य वर्त्ताव रक्खें, देवरानी, जिठानी में बैर विवाद न होने दें, देवर जेठके बालकोंको अपने बालकोंके समान जानें, जितना ईश्वरने दियाहै उसीमें संतोष रक्खें, पतिको ही परम पूजनीय परम उपास्य सर्वस्व परमगुरु परम देवता: मानें, पतिकी आज्ञासेही धर्म कर्म करें बड़े बूढ़ोंकी उत्तमरीतिको अपने हाथसे न खोवैं, व्रत, दान, दयाका सदा सेवन करैं, घरका खर्च हिसाब किताब अपने आप करसकैं, जितनी चादर देखें उतने पैर फैलावैं, अपने बालकोंका पालन, पोषण, शिक्षा, और साधारण रोग होनेपर उनकी चिकित्सा करसकैं, विविध प्रकारके भोजन बनानेकी दक्षता सब प्रकारका कसीदा काढ़ना, सीना, गृहकार्यकी कुशलता, कुटम्बी जनोंका संतोष संपादन, स्वामीके मन प्रसन्नताके निमित्त अपरिमितगान, और वाद्यकी दक्षता, बूढ़ोंका सन्मान, समानोंसे आलाप, छोटोंको अशीश, पतिव्रतधर्मकी पराकाष्ठा धर्मको आगे करके समस्तकार्योंका कर्तव्य, परमेश्वरका विश्वास, कुल मर्यादाका पालन, कुरीति निवारणमें दृढ़ता, बाहर जानेमें अवगुंठनसहित गमन, आभूषणोंका अति शब्द न करना, बहुत ऊँचे स्वरसे न हँसना, स्वामीके दोष देखकरभी सहलेना, मीठीरीतिसे उन दोषोंके दूर करनेका उपाय करना, उद्धतता न करना, क्लेश न ठान्ना, पतिव्रता स्त्रियोंके चरित्र जानना, तदनुकूल आचरण करना, दोनोंकुलकी प्रतिष्ठा रखना, आनतानकी बात न करना, विद्याके गुण जानना, मूर्खताके दोष देखना, स्वामी वा भाई बंधुके साथही तीर्थ यात्रा करना, गृहका स्वच्छ रखना, मीठे वचनोंसे विरत न होना, पड़ोसियोंसे प्रेमवृत्तिसे वर्त्तना, विपत्तिकालमें साथी होना,स्वामीके दुःखमें सौगुना नेह करना इत्यादि सद्गुणसम्पन्ना हिन्दू नारीही हिन्दू रमणीयोंको बनाना चाहतीहूं, ऐसी स्त्रियोंके विषयमें भगवान् मनुजी लिखगये हैं कि:-

"यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः।
यत्रैतास्तु न पूज्यन्ते सर्वास्तत्राफलाः क्रियाः॥"

जहां स्त्रियोंके आँसू गिरते हैं वह कुल शीघ्र नष्ट होजाता है, और जहा स्त्री प्रसन्न रहती हैं उस घरमें देवता रमते हैं, इस कारण यथाथ स्त्रीशिक्षा वहीहै जिससे गृहस्थ धर्म, कुलधर्म, सनातनधम, पतिव्रतधर्म, इनकी यथार्थ शिक्षा हृदयंगम होजाय; मैं भारतकी हिन्दू स्त्रियोंको ऐसी शिक्षा और ऐसीही विद्या देना चाहती हूं जिससे पतिके सुखसे सुख आर पतिके दुःखमें दुःख मानें जैसा भगवती जानकीजीने रामचंद्रसे वन जानेके समय कहा था कि--

"प्राणनाथ करुणा यतन, सुन्दर सुखद सुजान।
तुम बिन रघुकुल कुमुद विधु, सुरपुर नरक समान॥
खग मृग परिजन नगर वन, वलकल विमल दुकूल।
नाथ साथ सुरसदनसम, पर्णशाल सुखमूल,"

जिस दिन ऐसा समय फिर आजाय कि, स्त्रियें अपने स्वामीका स्वामित्व और उसका सन्मान करना यथोचित जान जायँ फिर इससे अधिक और शिक्षा की क्या आवश्यकता रहैगी, सब कुछ जानने परभी अनुसूया महारानी जानकी जीको क्या सिखा गई हैं।

"मात पिता भ्राता हितकारी। मितसुखप्रद सुनुराज कुमारी॥
अमित दान भर्ता वैदेही। अधम सो नारि जो सेव न तेही॥
वृद्ध रोगवश जड धनहीना। अंधवधिर क्रोधी अतिदीना॥
ऐसेहु पतिकर किये अपमाना। नारि पाव यमपुर दुखनाना॥
एकै धर्म एक व्रतनेमा। कांय वचन मनपति पदप्रेमा॥"

जिस शिक्षासे यह धर्म आवे वही शिक्षाहै, जिस विद्यासे उपरोक्त धर्म कर्मका ज्ञान हो वही विद्याहै, और स्त्रियोंके लिये यही उचितहै इन्हीं धर्मकर्मकी शिक्षा वा ज्ञानके प्रचारके निमित्त और भारतवर्षीय नारियों और बालिकाओंके सुधारके निमित्त मैंने यह पुस्तक लिखीहै कि, जिसको पढ़कर और उसके अनुसार वर्त्ताव कर स्त्रियें सच्ची भारतमहिला बन जाय, सास, ननद, देवरानी जिठानियोंके साथ अच्छा वर्त्ताव करना सीखें, गृहस्थियोंके क्लेश मिटें, कारण कि, भाई बंधु कुटुम्बी जनोंके वैमनस्यका कारण विशेषकर स्त्रियाँही होतीहैं और कहीं २ तौ पुरुष उनके खेलनेका मृग छौनाही बन जाते हैं और इस कहावतको चरितार्थ करतेहैं कि--

" नारि विवश नर सकल गुसांई । नाचहिं नट मर्कटकी नांई,,

ऐसे कुसंस्कार मिट जाँय, वालकोंके संस्कार यथासमयमें होनेलगें [कहीं स्त्रियोंकी हठसेही गुड़िया गुडेके समान वालकाका विवाह होताहै] और कुरीति मिटकर देश भरमें आनंद छाजाय,कारण कि, जव स्त्रियें ठीक होजायँगी तो उत्पत्ति भी ठीक होगी, वालकोंका सुधार विशेषकर स्त्रियोंपरही निर्भरहै, इसीकारण मैंने इस पुस्तकमें प्रायः उपयोगी सभी वातोंको ऐसी सरलताके साथ लिखाहै कि, जिससे सहजमेंही नारी जन समझसकें, मुझे आशा तो वहुतहै पर यदि कुछभी इससे हमारी सहपाठकाओंको लाभ होगा तो मैं अपने परिश्रमको सफल मानूंगी,

ऐसी परम उदार, न्याय परायण, गुणग्राहक, शेर वकरीको एक घाट पानी पिलाने वाली तथा विद्या प्रचारमें लक्षोंरुपये खर्च करनेवाली गवर्नमेंटके सुराज-में स्त्रिय विद्या और सुशिक्षा ग्रहण न करेंगी तो फिर किस दिन अपनेको सभालेगीं कारण कि, अव वह कुराज्य और कुदिन नहीं है कि, जहाँ स्त्रिय घरसे वाहर हुई कि, हाथ धरागया, अव वह सुराज्य है कि,

" वातोपि नास्रंसयदंशुकानि कोलम्वयेदाहरणाय हस्तम् "

पवनभी अंचल नहीं उडासकती हाथसे तो कौन छू सकताहै ऐसे पवित्र गवर्नमेंटको जितना धन्यवाद दिया जाय थोडाहै । वहनो उठो ! और अपनेको सम्हालो ।

इस प्रकार सव प्रकारके सत्वसहित यह पुस्तक परम उदार गुणीजन मंडलीमंडन विद्याप्रचार निरत "श्रीवेङ्कटेश्वर" (स्टीम्) यंत्रालयाध्यक्ष सेठजी श्रीयुत खेमराज श्रीकृष्णदासजीको समर्पण कर दी है कि, जो इस समय विद्याके प्रचारमें निरत होकर भारतवर्षमें वडा उपकारका कार्य कर रहेहैं ।

पाठिकाओंसे मेरी यह प्रार्थना है कि, इस पुस्तकमें जहाँ कहीं अशुद्धि रह गईहों उसे क्षमाकर मुझे सूचित करदें जिससे कि, दूसरी वार छपनेपर अशुद्धियोंका सुधार हो जायगा ।

आपकी धर्मभगिनी, सुभद्रादेवी, मुरादावाद.

॥ श्रीः ॥

स्त्रीप्रबोधिनीकी-

अनुक्रमणिका ।



इत्यनुक्रमणिका।

स्त्रीप्रबोधिनीका-

उपोद्‌घात ।

दिल्लीशहरमें आज लाला पुरुषोत्तमदासजीके यहाँ बड़ी धूमधाम होरही है, लालाके घर आज समध मिलावा होगा; अजमेरसे समधनें मिलाप करनेके लिये आई हैं; घर२में नांयने लुगाइयोंको बुलावा देनेके लिये जारही हैं, सारे मुहल्लोंकी लुगाइयें आज लालाके घरको जानेके लिये तैयार होरही हैं, क्या ब्याही क्या क्वाँरी क्या बालक क्या बूढ़ी सभीने लालाके घरकी सुरत ली, लुगाइयोंके इकट्ठी होजानेपर समधौरा हुआ दोनों ओरकी लुगाइयें ढोलकी ले लेकर गालियें गानेके लिये बैठीं, समधनोंमें मिलाप हुआ लालाकी बहूने समधनके गलेमें हार डालकर मिलाप किया; इसके पीछे दोनों ओरकी लुगाइयोंने खूब गालियें गाईं; जिनको सुनकर सारी लुगाइयें हँसते २ लोट पोट होगईं, लालाकी घरवालीने समधनोंको खिला पिला कर बहुतसी तीयलैं और रूपये देकर उनको विदा किया, समधौरा होजानेके पीछे सब लुगाइयें अपने २ घरोंको चली गईं, समधौरा देखनेके लिये एक घरकी तीन लुगाइयें गईं थीं, इनमें एक तो नंद थी और दो भावजैं थीं लड़कीकी अवस्था आठ नौ वर्षकी होगी इस लड़कीकी एक बहन और थी वह समधौरा देखने नहीं गई घरही पर रही थी, यह तीनों जनी आकर समधौराकी बड़ाई करने लगीं, भावजने कहा जीजी! हमैं बडा पछतावा रहा कि, तुम यह तमाशा देखने

नहीं गई बड़ा सुन्दर समधौरा हुआ जो नहीं गया वही पछता-
या ऐसा दिल्लीमें कोई घर न रहा कि,जिस घरकी लुगाइयें इस
समधौरेमें न गई हों तुम तौ रातदिन कागज किताव लिये
इनके कीड़े मकोड़ोंको देखती रहती हो जाने इनमें क्या धरा
है, इसी अवसरमें उसकी छोटी वहनने कहा कि, जीजी !
समधौरेमें लुगाइयोंने वड़ी २ सुन्दर गालियें गाई थीं जिनको
सुन २ कर सभी लुगाइयें ठट्ठे मार २ हँसती थीं समधौरेमें
बड़ी धूम रही. यह सुनकर उसकी वड़ी वहन जिसका नाम
विद्यावती था वह अपनी छोटी वहन प्रकाशवतीसे वोली,
कि, वहन देखो ! मुझे लुगाइयोंकी ऐसी दशा सुन २ कर
वड़ा दुःख होता है,जो मैं विचार कर देखती हूं तो पहले सम-
यकी स्त्रियोंसे आज कलकी स्त्रियें दिनपर दिन मूर्खही होती
जाती हैं। उसका कारण यही है कि, स्त्रियें अनपढ़ी हैं, आज-
कल स्त्रियोंकी जैसी अवस्था होरही है उसको देखकर मन
काँप उठता है, हे परमेश्वर ! इस देशकी स्त्रियोंका क्या कभी
सुधार होगा ? क्या इस देशकी स्त्रियें सदैव जड़ता युक्त रहैंगी?
क्या पहलेकी बुद्धिवाली स्त्रियोंके समान इस देशकी स्त्रियें
फिरभी कभी होंगी ? क्या अव फिर इनके भले दिनोंका
उदय न होगा ? क्या यह अपना इसी अवस्थामें पड़े रहकर
जीवन वितावैंगी ? चाहै इन्हैं अपनी दासी वनाकर रक्खो
चाहै घरकी टहलनी वनाकर रक्खो, परन्तु इन्हैं अपनी अव-
स्थापर कुछभी ध्यान नहीं होगा, हे जगदीश्वर ! हे भक्तवत्सल
प्रभू ! तेरा नाम दयामय है, फिर इन विचारी अवलाओंके

ऊपर क्यों नहीं अपनी कृपा करता ? इनको हीन दशामें रखनेसेही तू प्रसन्न क्यों है ? क्या इनकी सृष्टि तेरे द्वारा नहीं हुई ? जो इनके ऊपर ऐसा रूठा हुआ है, हे दयालु ! अब तो अपनी कृपाकटाक्षसे इनकी अवस्थाको सुधार; और इनको विद्यारूपी अमृतका पान कराय पुनर्वार जीवदान दे । इस प्रकारसे पश्चात्ताप करती हुई अपनी छोटी बहन प्रकाशवतीसे बोली कि, देखो बहन ! तुमने जो बातें कहीं हैं इनसे कुछ लाभ नहीं है तुम जो जहाँ तहाँ जाकर ढोलकी बजानेके लिये ले बैठती हो और बुरे २ गीत गाया करती हो इन सब बातोंको छोड़ दो, अब मैं तुम्हें इतिहासादिककी कथा सुनाती हूँ जो तुम्हारे बहुत काम आवैंगी और इन गालियोंके गाने बजानेसे तुम्हें कुछ लाभ नहीं होगा,इस समय तुम्हारी अवस्था घर २ फिरनेकी नहीं है अभी तुम बालकहो, मेरी समझमें यह आता है कि, सबसे पहले तुम्हें लिखना पढ़ाना सिखाना चाहिये, जिसके द्वारा फिर तुम सभी कामोंमें चतुर हो जाओगी, मैं तुम्हें ऐसी २ उपयोगी बातें सिखलाऊंगी कि, जो तुम्हारे जन्म भर काम आवैंगी और सारे संसारमें तुम्हारी बड़ाई होगी, और ऐसीही बातैं लड़कियोंको सुनानी योग्य है, जिनके द्वारा वह सब अपने घरके कामकाजको भली भाँतिसे निर्वाह कर सकैं, आज तो मैं तुम्हें "स्त्रियोंकी भूत और वर्त्तमान दशा" सुनाती हूँ।इसके पीछे जो शिक्षा लड़कियोंको होनी चाहिये वह सभी सुनाऊंगी कारण कि, इस समय दिन थोड़ा रहगया है; कल प्रातःकालहोतेही तुझे सम्पूर्ण शिक्षाकी बातैं सुनाऊंगी;

हे बहन ! पहले समयमें इस देशकी स्त्रियाँ कैसी २ पढ़ी लिखी और चतुर होती थीं प्राचीनकालमें इस देशकी स्त्रियोंका ऐसा नियमथा कि, स्त्रियें दो श्रेणीमें विभक्त होतीथीं एकतो ब्रह्मवादिनी दूसरी सद्योवधू-जो स्त्रियें विवाह नकरके परब्रह्ममें आत्मसमर्पण करती थीं वह ब्रह्मवादिनी कहाती थीं, और जो विवाह करके गृहस्थाश्रममें वास करती थीं वह सद्योवधूके नामसे पुकारी जाती थीं, स्त्रियें धर्मशास्त्र, नीतिशास्त्र,साहित्य गणित दर्शन और विज्ञानादि सभी शास्त्रोंको पढ़ती थीं, वह चित्रविद्या, शिल्पविद्या और नृत्यगीतादिकी विद्याओंको पढ़ती थीं,परन्तु पतिकी सेवा और तत्त्वज्ञानको प्राप्त करना यह उनकी सम्पूर्ण विद्याओंका शिरोभूषण था. भास्कराचार्यकी कन्या लीलावती ने पाटीगणित और लीलावती नामक दो ग्रंथ बनाये थे, मंडन मिश्रकी स्त्रीने रसोई बनाते २ शंकराचार्यके साथ घोर दार्शनिक विवाद किया था. चित्तौरकी रानी मीराबाई कवि थी, पृथ्वीराजकी स्त्री पद्मावती अनेक कला कौशलसे युक्त थी । महाभारतमें लिखा है कि, द्रुपदराजाने आलेख्यरचना और शिल्पकार्यादि सब विषयोंमें कन्याको अति यत्नके साथ शिक्षादी थी, कन्याने द्रोणाचार्यसे विद्याकी शिक्षा पाई, विराट राजाके घरमें नृत्यशाला थी उस स्थानपर अर्जुनने उत्तरा को नृत्य गीतादिकी शिक्षा दी थी. हे बहन ! ऊँची शिक्षाके साथही साथ उनको गार्हस्थ शिक्षा भी दी जाती थी । आय व्यय रन्धन शिल्प आदि गृहकार्योंमें वह अत्यन्त निपुण थीं उनकी शिक्षाका प्रधान गुण यही था, वह उनका बिना आसरा

लिये एक पगभी नहीं चलसकती थीं, आज कलके समान भक्ति और प्रेम रहित शिक्षा स्त्रियोंके हृदयको भयभीत और कम्पायमान करे देती है. परन्तु उस समयकी शिक्षाका यह केन्द्र था उनके अन्तरिक्षमें ईश्वर और सन्मुखमें स्वामी थे उनका हृदय इन दोनों केन्द्रोंको छोड़कर और किसी ओरको भी चलायमान नहीं होता था।

देखो प्रकाशवती! रामचंद्रके वनवासके समयमें महारानी सीताजीने कहा था। "प्राणनाथ तुम विन जग माहीं। मो कहँ सुखद कतहुँ कोउ नाहीं"। पतिही स्त्रियोंका देवताहै जो स्त्री छायाके समान अपने पतिकी अनुगामिनी होतीहै उसीका जीवन धन्य है वह इस लोक और परलोकमें स्वामीके साथ सुखपूर्वक समयको विताती है. स्त्रीको उचित है कि, वह मन वचन कर्मसे एकाग्र वृत्ति हो अपने पतिकी सेवा करै, किसी समयभी अपने पतिके वाक्यका उल्लंघन न करै; मैंने विवाहके समयमें स्वामीके करकमलमें अपने जीवनको समर्पण कर दिया है यह विचार कर जिस कामके करनेसे उनका हित हो उनके निमित्त उस कार्यमें मैं अपने प्राणोंकोभी समर्पण कर सकतीहूं।

फिर और भी सुनो महारानी शकुन्तलाने राजा दुष्यन्तसे कहा था कि, हे राजन्! स्त्रीका निरादर मत करो, कारण कि, स्त्री धर्मकार्यमें पिताके समान दुःखमें माताके समान और पथिकको विश्राम स्थानके समान है, हे महाराज! तनक ध्यान धर देखो कि, एक सत्यही परमधर्म है; फिर सत्यप्रतिज्ञाका पालन करनाही श्रेष्ठधर्महै तुम सत्यको मत छोड़ो।

फिर हे बहन! औरभी देख राजा दशरथजीने अपनी रानी कौशल्याजीका इसप्रकार वर्णन कियाथा ॥ प्रियबोलने वाली कौशल्याजी हमारी सेवाके समयमें दासीके समान, रहस्यालापमें सखीके समान, धर्मके आचरणमें स्त्रीके समान, उत्तम सम्मति देनेके समयमें बहनकी समान और भोजनके समयमें माताके समान व्यवहार करतीहै।

और २ लिखी पढ़ी स्त्रियोंकी बात तो दूर जानेदो, राजा-की रानीभी घरके काम काजसे घृणा नहीं करतीथी, राजरा-नी द्रौपदीजी अपने पतिके घरमें अतिथि और दास दासि-योंका भोजन और कपड़ोंके पहरनेके सम्बन्धमें स्वयं विचार करतीथी, घरको भली भाँतिसे स्वच्छ करती और रसोईको स्वयं अपने हाथसे बनातीथी।

हे बहन! स्त्रियें पहले गुरुजीके आश्रममें जाकर विद्याको पढ़तीथीं वा अपने पतिसे पढ़तीथीं, परन्तु उनकी शिक्षाका उद्देश्य इससमयकी स्त्रीशिक्षासे स्वतंत्रथा, इससमय स्त्रीशिक्षाका जैसा प्रचार हुआहै उससे स्त्रियें बंधनसहित घरमें रहते हुएभी पुरुषोंके समान स्वभावको प्राप्त होजातीहैं, उससमयकी स्त्रीशिक्षासे स्त्रियें स्त्रियें रहतीथीं अब तो पुरुषसे भी बढकर बननेकी इच्छा करतीहैं।

हे बहन! जभी तो उससमयकी स्त्रियोंका सन्मान होताथा। माता, पिता, भ्राता, तथा कुटुम्बके सभी कुटुम्बी उनका आदर

सन्मान करतेथे और मधुर वचनोंसे उनके साथ वातचीत करते थे वोभी माता, पिता, सास,श्वशुरकी सेवामें तत्पर रहतीं थीं ।

पहली स्त्रियोंका यह पहरावाथा कि, वह वर्त्तमान राजपूतों की स्त्रियोंके समान घाँघरा और चोली पहरा करतीथीं तथा उसके ऊपर चादरको ओढ़तीथीं; आजकलके समान प्रच- लित केवल एकमात्र साड़ी कुरतीकाही पहरावा नहीं था;केवल साड़ीही पहरनेसे स्त्रियें आधी नंगी रहती हैं परन्तु उन्हैं तो साड़ीही रुचतीहै, लैंहगे, दुपट्टे,चोली आदिका पहरावा तो एक साथही लोप होता चला जाताहै, इसीसे उनकी लज्जा और शीलताकी हानि होतीजातीहै उस समय स्त्रियें वाहर जातीथीं मनुस्मृति और रामायणमें लिखाहै स्त्रियें अपनी शुद्धतासेही रक्षित रहती हैं वंधनसे उनकी रक्षा नहीं होती उनको वंधनकी कुछ आवश्यकता नहींहै स्त्रियें उत्सवमें,यज्ञमें, सभामें, भोजनआदि सव स्थानोंमें जाती थीं वह रथपर और घोड़े परभी चढ़ती थीं और अपने देशकी रक्षाकरनेके लिये रणभू- मिमें स्वयं युद्ध करती थीं, परन्तु यह वीर नारियोंकी वात है।

हे वहन ! यूरोपकी स्त्रियोंका वाहर जाना और उस समय की हिन्दू स्त्रियोंका वाहर जाना यह दोनों स्वतंत्रहैं, विलायत की स्त्रियें अपनी इच्छानुसार अकेली जिस तिसके साथमें इधर उधर चली जाती हैं, वह घरमें रहकर पोशाक और वस्त्रोंके प्रति उदासीनता रखती हैं परन्तु जिस समय वाहर जाती हैं उसी समय वढ़िया नेत्रोंको तृप्ति देनेवाली पोशाक

पहरती हैं। भांति २ के सुंदर २ गहने पहर कर परमसुगंधित लेवेंडरको लगाकर सज धज कर पुरुषोंका मन आनंदित करना ही उनका उद्देश्य है, उनका जीवन केवल बाहिरी चमक दमक और गर्वसे परिपूर्ण है, किन्तु हिन्दू घरानेकी स्त्रियें किस प्रकारसे बाहर जाती थीं उसका बतादेना भी तुम्हें अत्यन्त आवश्यक है वह अपने पिताके साथ स्वामीके साथ अथवा पुत्रके साथ बाहर जाती थीं,वह वीर नारी होकरभी धर्म और आत्मरक्षाके सम्बन्धमें अपनेको यथार्थ क्षमता शील नहीं जानतीथीं, वह स्त्रियें अपनी अमूल्य निधिकी रक्षा करनेकेलिये पिता स्वामी और पुत्रको नियुक्त करती थीं, वह स्वामीका चित्त प्रसन्न करनेके लिये घरमें रहकर सुन्दर २ वस्त्र और आभूषण पहरती थीं, स्वामीके परदेश जानेपर वह घरसे बाहर नहीं जाती थीं और न अपना शृंगा-र ही करती थीं उस समय वह एकाग्रचित्त होकर सावधानी के साथ नियमसहित व्रतोंको किया करती थीं।

हे बहन ! वह स्त्रियें विद्याभ्यास करती थीं; परन्तु ईश्वर परायणता और पतिके बीचमें भक्ति यह उनकी शिक्षाका प्रधान उद्देश्य था; इस समय सभ्य जातिकी स्त्रियोंकी शि-क्षाका उद्देश्य केवल बाहिरी शोभा तथा पार्थिव सुख और पुरुषोंकी बराबरी करना है, वह प्रयोजन होनेके समय पिताके साथ स्वामीके साथ अथवा पुत्रके साथ बाहर जाती थीं, वर्त्तमान समयकी स्त्रियें केवल अपने कटाक्षरूपी बाणकी सहा-

यतासे मनुष्योंके चित्तको उन्मत्त करनेके लिये बाजारकी शैर करनेको बाहर जाती हैं, पूर्वकालकी स्त्रियें पतिसेवामें रत रहतीं तथा गृहकार्य और आमदनीके अनुसार खर्च करतीथीं और आज कलकी स्त्रियें पतिसे अपनी सेवा करातीं, नौकर के समान उस पर अपना हुक्म करतीं, अतिथिसे अपनी सेवा कराती गृहकार्यको नीच जातिका कार्य कहकर उससे घृणा करतीं; और स्वामीकी आमदनीसे चौगुना खर्च करतीं हैं चाहै स्वामी किसी अवस्थामें क्यों न हो परन्तु उनको उसकी अवस्थापर कुछभी ध्यान नहीं. रात दिन उन्हें तो गहनोंकी हाय हाय रहती है. वह अपने पतिसे क्लेश किये विना संतुष्ट नहीं रहतीं, पूर्वकालकी स्त्रियोंका तो धर्मही जीवन था और आजकलकी स्त्रियोंका जीवन बाहिरी शोभा है; हमारे देशकी स्त्रियोंकी वर्त्तमान अवस्थाको सभी जानते हैं, पूर्वकालकी स्त्रियोंकी अवस्थाको वर्त्तमान समयकी स्त्रियों-की अवस्थासे मिलानेमें विस्मित होना पड़ता है, आधुनिक स्त्रियोंकी नाड़ियोंमें पूर्वकालकी स्त्रियोंका रक्त प्रवाहित होता है या नहीं,उनके धर्मके साथ इनके धर्मकी एकता है वा नहीं, यहांतक कि, वह पहले भारतवासिनी थीं या नहीं इन सब विषयोंमें इतिहासके न जाननेवाले मनुष्योंके मनमें बड़ा संदेह उत्पन्न हो सकताहै, जिस हिन्दूजातिकी स्त्रियें एक समय उन्नतिके ऊँचे शिखर पर विराजमान् हो गईं थीं, एक समय सभ्यजातिकी स्त्रियोंका आदर्श स्वरूप थीं, उस हिन्दूजाति-

की स्त्रियोंकी किस कारण आज शोचनीय अवस्था हो रही है, यदि अज्ञानही उनके घोर अज्ञानका कारण है तो वर्ण ज्ञान रहित आजकलकी हिन्दू जातिकी स्त्रियें जिस हीन दशा पर पहुँच गई हैं इससें कुछ भी संदेह नहीं।

हे बहन! हम अंग्रेजी रीतिके अनुसार चलना नहीं चाहतीं और न उनकी बराबरी करनेसे उन्नतिको पासकती हैं; हमैं स्त्रीजातिकी अवस्थाकी उन्नति करनी होगी- इस देशकी पहली सभ्यताकी ओर देखना कर्तव्य नहीं, जो लोग चाहते हैं कि, स्त्रियोंको सर्वथा स्वच्छन्दता दीजाय चाहै जहाँ विचरैं उनको यह भी विचारना चाहिये कि, नरनारियोंका शरीर रक्त मांससे संगठित है; और उसमें काम क्रोधादि छः शत्रु निरन्तर रक्तस्रोतके बीच वायुरूपसे वहन करते हैं इनका आकर्षण और विकर्षण स्वभावसे सिद्ध है; व्यास, पराशर, विश्वामित्र आदि कठोर तपस्वीभी इनकी अवरोध गतिको नहीं रोक सके हैं, औरोंकी तो फिर बात ही क्या है, नेत्र उठाकर संसारकी ओरको देखो तौ ऐसा बोध होता है कि, यहां सत्यकी अपेक्षा झूठका अधिक प्रचार है, मंगलकी अपेक्षा अमंगलकी अधिकता है, पवित्रताकी अपेक्षा अपवित्रताके राज्यका विस्तार है देवभावकी अपेक्षा असुर भावका साम्राज्य है, ज्ञान और धर्मकी अपेक्षा शत्रुकी जय है, और दुर्बलके ऊपर बलवानोंका अत्याचार प्रकाशमान् हो रहा है, दुर्बलको बलवानोंके हाथसे और निस्सहायको अत्याचारीके

हाथसे रक्षा करना जिस प्रकार समाजनीतिका कर्तव्य है, उसी प्रकार काम, क्रोध, लोभ, मोह इत्यादि शत्रुओंसे सामर्थ्यके अनुसार स्त्रीपुरुषकी आन्तरिक रक्षा करना समाजनीति और धर्मनीति दोनोंका कर्त्तव्य है, वास्तवमें मनुष्यके पशुभावकी अपेक्षा देवभावका आकर्षण दुर्वल है मनुष्यके स्वभावसे ही वीराचारी और सात्विकता प्राप्त होनेमें बहुतसे समयकी आवश्यकता हो इस कारण हे बहन। स्त्री पुरुषोंके इच्छानुसार मिलापमें समाजका मंगल नहीं होसकता, अंग्रेजी रीति नीति भारतवर्षका उद्धार नहीं कर सकती, उससे नम्रता शील लाज स्त्री पुरुषोंका प्रेम और गार्हस्थ्य धर्म लोप होताहै;पुरातन रीतिवाली सावित्रीके समान पतिपरायणा। जानकीके समान पतिव्रता स्त्री इस बातको दिखागई हैं कि, संसारमें इस प्रकारसे पतिव्रता स्त्रीयोंको क्या करना चाहिये यदि हम अंग्रेजी स्त्रियोंकी चाल ढाल पर चलैंगी तो हिन्दू जातिकी और हिन्दू स्वभावकी जड़ उखड़ जायगी।

हे बहन! मैं सर्वथा अंतःपुरके पींजरेकी भी पक्षपातिनी नहीं हूं, स्त्रीपुरुषके स्वेच्छाचारमिलापको भी उन्नतिकी पराकाष्ठा मत जानना, यह तो मैं पहलेही कह आई हूं कि, पूर्वकालमें हिन्दू जातिकी स्त्रियें घरके बाहर होकर अपनी इच्छानुसार जाती आती थीं, किन्तु वह स्वाधीन नहीं रहती थीं, वह स्वामी, पिता, भाई, इत्यादि अपने कुटुम्बियोंसे

रक्षित होकर अपनी इच्छानुसार जाती आती थीं, इस प्रकारकी रीतिकोही प्राचीनरीति कहा है बहुत वर्षोंसे हिन्दू जातिकी स्त्रियें मूर्खताके घोर अंधकारसे ढकी हैं, उनकी उन्नतिका मार्ग रोकनेवाला अज्ञानरूपी कांटा है, इस अज्ञानके विना दूर हुये स्त्रियोंकी उन्नति नहीं होसकती फिर यह अज्ञान विद्याके विना पढ़े हुए दूर नहीं होसकता है-यों तो कुछ थोड़ी २ बुद्धि तो विधाताने सभी-को दी है परन्तु विना विद्याके पढ़े बुद्धि पैनी नहीं हो सकती।

स्त्रीको पराये आदमीके साथ बैठना उचित नहीं है, न कि-सीके घरमें जाकर किसीकी बात चीत सुनना उचित है, पिता भ्राता और कुटम्बियोंके साथ बात चीत करनाही उचित है।

हे बहन! पहले समयमें पुरुष स्त्रियोंका अधिक सन्मान करतेथे आज कल स्त्रियोंका सन्मान पहलेकी अपेक्षा आधाभी नहीं होता इसविषयमें मनुजीका उपदेश सदा याद रखना चाहिये मनुका वचनहै कि, "जिस कुलमें स्त्रियें वस्त्र और आभूषणादिसे पूजित होती हैं; वहां सभी देवता प्रसन्न रहतेहैं, और जिस कुल में स्त्रियोंका अनादर होता है, उस कुलके सम्पूर्ण कर्म नि-ष्फल होजाते हैं; जिस कुलमें बहन और कुटम्बकी स्त्री पत्नी कन्या और पुत्रवधू इत्यादि स्त्रियें भूषण वस्त्र और भोजनके आभावसे दुःखी रहतीहैं वह कुल शीघ्रही निर्धन होजाताहै राजा इत्यादिसे सताया जाता है,सदा देवता उस कुलके ऊपर रुष्ट रहते हैं, और जिस कुलमें स्त्रियें भोजन वस्त्र आभूषणा-

दिसे संतुष्ट रहती हैं उस कुलकी सदा बढ़ती होती है। भगिनी, स्त्री, पुत्र बधू इत्यादि स्त्रियें भोजन वस्त्र और आभूषणादिके न मिलनेसे जिस कुलको शाप देती हैं वह कुल सब प्रकारसे नष्ट होजाता है, इस कारण हे बहन ! जो लोग सम्पत्तिकी इच्छा करनेवाले हैं वह स्त्रियोंको सदा भोजन वस्त्र आभूषण आदिसे संतुष्ट रखते हैं।

बहुत वर्षोंसे इस देशमें स्त्रीशिक्षा लोप हो गई है अधिक क्या भले मनुष्य और पंडितोंकी सभामें भी बहुतसे मनुष्य प्राचीन कालकी स्त्री शिक्षाको घृणाकी दृष्टिसे देखते हैं, वह यह विचारते हैं कि, जो स्त्रियोंको लिखाया पढ़ाया जायगा तो यह विधवा होजायगी, हे बहन ! कहीं पढ़ाने लिखानेसेभी स्त्रियें विधवा होती सुनी हैं; इसी कारणसे आजकलकी स्त्री-शिक्षाके प्रचारमें वह लोग अनेक प्रकारके विघ्न करते थे, परंतु वह भय इस समय बहुतोंका दूर हो गया है, इस समय भारतवर्षके प्रायः सभी स्थानोंमें लड़कियोंके पढ़नेके लिये पाठशालायें बनती जाती हैं, और घर २ में स्त्रियोंको पढ़ानेके लिये ईसायनी भेजी जाती, हैं स्त्रियोंको भी पढ़नेका अधिक चाव होता जाता है, परन्तु जिस प्रकारसे हिन्दू जातिकी स्त्रियोंको यथार्थ शिक्षा देनी चाहिये वह उपाय अभी प्रकाशित नहीं हुआ।

प्रकाशवती ! मेरे कहनेका मतलब यह है कि,जिस भांतिसे तुमने देखा देखी ढोलकी बजानी सीखली है और जिस भांति से तुमने बड़ी जल्दी उन लुगाइयोंकी गालियें सीखलीं इसी भांति यदि तुम मन लगाकर पढ़ना लिखना सीखोगी तौ तुम्हारे बड़ा काम आवैगा और इसके द्वारा तुम सब कामोंमें चतुर हो जाओगी, यह ढोलकी बजाना और गालियोंका गाना कुछ काम नहीं आवैगा; पढ़ने लिखनेमें एक और भी बड़ा भारी गुण है कि, जब अपना प्यारा परदेशको चला जाय तो विना दूसरेके कहेहुए अपने मनकी बात घर बैठे ही कह दिया करैगी; और जो स्त्रियें लिखना पढ़ना नहीं जानतीं वह अपने मनकी छिपीहुई बात दूसरेसे कहकर भँड़वा खोल देती हैं, स्त्रीको बहुतसी बातें ऐसी हैं कि; जिनको वह सिवाय अपने पतिके दूसरेसे नहीं कह सकतीं। हे बहन ! किसीकी बराबरी करना उचित नहीं, गुण दूसरेके भी लेले और अवगुण अपने भी तज दे, आज तौ मैंने केवल स्त्रियोंकी भूत और वर्तमान अवस्थाही सुनाई है कारण कि, अब मैं भोजन बनानेकी तैयारी करूंगी और तूभी बैठे २ थक गई होगी, अब कलसे मैं तुझे सब बातें बताऊंगी कि, किस भांतिसे विद्या पढ़ी जाती है, और स्त्रीको बालकपनमें कौन २ सी बातें सीखनी चाहिये, मैं तुझे क्रमानुसार यह २ बातें सिखाऊंगी।

कन्यावस्था—विद्याकी शिक्षा, सरल रीतिसे शिक्षाका देना, पढ़ना, लिखना, चिट्ठी पत्री, सामान्य शिक्षा, शिल्पकार्य, (सीना पिरोना कसीदा आदि) चित्रकारी, गृहकार्य और व्यय आदिका प्रवन्ध।

किशोरी—भोजन संस्कार, शरीर पालन, स्वास्थ रक्षा, रोगीचर्या, विपदाविपदचिकित्सा।

गृहणी—विवाह और पातिव्रत धर्म, गृहणी कर्तव्य, (पति और सास श्वसुरकी सेवा तथा पुरजनियोंके प्रति व्यवहार)।

आमोदिनी—रसिकता, हास्य, क्रीड़ा कौतुक, रजोदर्शन, ऋतुरक्षा और सहवास।

गर्भिणी—गर्भावस्था और गर्भरक्षा गर्भपरीक्षा, गर्भचिकित्सा, प्रसूतिके पूर्व आयोजन, प्रसूतिका गृह, प्रसवका नियत समय और शीघ्रप्रसूता स्त्रीके लक्षण।

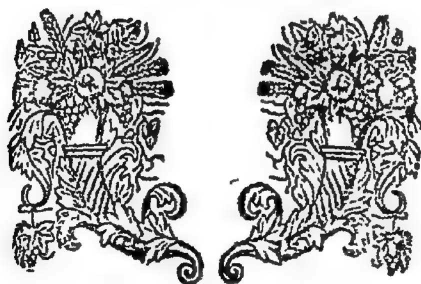
जननी—धात्रीशिक्षा और प्रसव, प्रसूतिकी पीड़ा और चिकित्सा, जननीका कर्तव्य, बाल चिकित्सा, शिशुपालन, शिशुस्वास्थ्यरक्षा, माताकी स्वास्थ्य रक्षा, शिशुशिक्षा अभ्यास और संग. अन्यान्य शिक्षा।

कर्त्री-धर्मोपदेश, रीति, भांति और त्योहार, गुरुजन और अतिथिकी सेवा,संतान, संतति, आत्मीय स्वजन, दास, दासी, दरिद्र और भिखारी, सद्व्यवहार ।

पुण्यवती-धर्म, धर्माचरण, नित्यकर्म, व्रत, तीर्थसेवा (तीर्थयात्रा और उसका फल)।

श्रोता-सीता, सावित्री, सती, शैब्या, दमयन्ती,पद्मिनी, और लीलावती इन सात स्त्रियोंका जीवन वृत्तान्त ।

इति।



" श्रीवेङ्कटेश्वर " (स्टीम्) यन्त्रालय-बम्बई.

श्रीलक्ष्मीकान्ताय नमः ।



स्त्रीप्रबोधिनी ।

१–प्रथम सोपान।

(वालिका.)

विद्या शिक्षा ।

हे वहन प्रकाशवती ! आओ आजका दिन विद्या पढ़ानेके लिये वहुत उत्तम है. इस कारण आजहीसे तुम्हें विद्या पढ़ाना प्रारंभ करूं; प्रकाशवतीने कहा कि, जीजी ! अभीतो मुझे वर्णज्ञानका वोध नहीं है, इस कारण सवसे प्रथम तुम मुझे अक्षर पहँचानने वताओ; पीछे कुछ और पढ़ाना; विद्यावतीने हँसकर कहा कि, हाँ वहन प्रथमतो तुम्हें वर्णज्ञानकाही वोध कराया जायगा कहीं पहलेसेही मैं तुम्हें पुस्तक पढ़ानेको थोड़ेही वैठ जाऊंगी ? देखो वहन ! इस संसारमें नेत्रहीन (अंधे) मनुष्यको देखकर उसके लिये सभी दुःख प्रकाश करते हैं; कारण कि, वह अंधा कुछ भी नहीं देख सकता । संसारमें जितनी सुन्दरता है, वृक्षोंके ऊपर भाँति २ रंगके पक्षी वैठे हैं. उसपर मनोहर सुगन्धित फूल

खिले हुए हैं, और रात्रिमें जो चंद्रमाकी सुन्दर चांदनी खिल रही है, इन सबको वह कुछभी नहीं देख सकता। वह अपने कुटुम्बी और बंधु बांधव, तथा अपने प्राणोंसे भी अधिक प्यारी संतानका मुख भी नहीं देख सकता, यही विचार करके मनुष्य उसके लिये कितने दुःखी होते हैं; परन्तु हम अपने विचारसे वास्तवमें अंधे मनुष्यको जितना दुःखी विचारते हैं वह उतना दुःखी नहीं है। कारण कि, संसारमें उसने कुछ भी नहीं देखा है, वह सब वस्तुयें देखनेमें अच्छी हैं या बुरी इन सब बातोंको वह कुछभी नहीं जानता इसी कारणसे उसके देखनेके लिये वह व्याकुल नहीं होता।

नेत्रहीन मनुष्य तो केवल इसी कारणसे नहीं देखसकता है कि, उसके नेत्र नहीं हैं अर्थात् वह अंधा है, और उसको देखनेकी सामर्थ्य नहीं है, सैकड़ों उपाय करने परभी वह कुछ नहीं देख सकता। परन्तु संसारमें ऐसे सैकड़ों और हजारों मनुष्य हैं जो नेत्रोंके होते हुए भी कुछ नहीं देख सकते, वह नेत्रोंके होते हुए भी नेत्रहीन हैं। वृक्षोंपर नाना प्रकारके फूल खिल रहे हैं, फूलोंकी सुहावनी सुगंध हृदय और मनको आनंददायनी है; इसका बिना विचार किये हुए यह कुछ नहीं जाना जासकता। देखो आकाशमें बादल बड़ी जोरसे गर्ज रहा है, उस भयसे भयभीत होते हैं; परन्तु किस प्रकारसे यह भयंकर शब्द आकाशमें गुंजार रहा है, इसको वह कुछ भी नहीं समझ सकते; इसका कारण यही है कि, वह ज्ञान रहित हैं; जब कि, उनको इतना ज्ञानही नहीं है, तब वह कुछभी नहीं देख सकते, हे बहन! संसारकी सम्पूर्ण सुन्दरता

यह उनके निकट वस्त्रसे ढकी हुई वस्तुके समान रहती है संसारके सभी सुखोंसे वह वंचित रहते हैं; फिर नेत्रहीन और नेत्रवाले इन दोनों मनुष्योंकी अवस्थामें भेदही क्या है ?

हे बहन! विद्याका पढ़नाही ज्ञान रूपी नेत्रोंकी प्राप्तिका एक मात्र उपाय है; परन्तु विद्या शिक्षा क्या है ? और फिर उसके द्वारा किस प्रकारसे संसारके सम्पूर्ण रहस्य विदित होसकते हैं; तब फिर क्या संसारके साथही साथ विद्या भी पृथ्वीमें उत्पन्न हुई थी ?

जो पृथ्वीमें चिन्ताशील हैं, संसारके सम्पूर्ण आश्चर्य-दायक व्यापारोंको देख कर उसके कारणको निर्देश करनेकी जिन्होंने चेष्टा की है; जिन्होंने पृथ्वीमें स्थित सम्पूर्ण प्रकारकी सौन्दर्यताके यथार्थ गुणको जान कर मनुष्योंको उसके समझानेके लिये, और उन सब सौन्दर्योंके भोगका भागी करनेकी चेष्टा की है; वही विद्याके जन्म देनेवाले हैं, उनका चिन्ता पूर्ण हृदय प्रसूत भाव युक्त सम्पूर्ण पुस्तकोंमें है; उनका वह भाव और कहीं नहीं है। उन सब पुस्तकोंको पढ़ना, और उन सब बातोंका विचार अपने हृदयमें करनेकाही नाम विद्या शिक्षा है। और यह नहीं कि, तोतेके समान रटलगाकर पढ़ लिया और उसके अर्थको कुछभी नहीं समझा, इससे कुछ भी प्रयोजन सिद्ध नहीं होता; विशेष करके बालकपनमें मनुष्यका मन जितना चंचल होता है और समयमें उतना नहीं रहता इस कारण हे बहन! तुम इस अवस्थामें बहुत शीघ्र पढ़ना लिखना सीख जाओगी; अधिक क्या इस समय तुम्हें जो बातें सिखाई जायँगी उनको तुम

बहुत शीघ्रतासे सीखलोगी और उन्हींके द्वारा तुम गृहस्थके सम्पूर्ण कार्योंको भली भाँतिसे निर्वाह करसकोगी, सबसे प्रथम तो मनका स्थिर करना है तुम अपने मनको एकाग्र कर मेरे पास बैठ कर जो जो बातें मैं तुम्हें बताऊं सभीको ध्यान देकर सुनती जाना; और मैं विद्या तो तुम्हें इस सरलतासे पढ़ाऊंगी कि, बहुत जलदीसे लिखना पढ़ना आजाय ?

सरलरीतिसे शिक्षाका देना ।

बहुतोंका, विशेष करके स्त्रियोंका यह विश्वास है कि विद्या शिक्षाके समान कठोर और कठिन कार्य इस संसारमें और कुछ भी नहीं है, और बहुतोंका यह विश्वास है कि, विद्या शिक्षामें कुछ भी रस नहीं; वह निरसता युक्त बड़ी ही कठिन है यह उनकी बड़ी भारी भूल है; हे बहन ! अब देखो विद्या शिक्षा जैसी सरल है. और जैसा इस शिक्षामें आनंद है, वह सब बातें मैं तुम्हें बताऊंगी इस संसारमें विद्याशिक्षामें जितना सुख है, उतना सुख और कहीं नहीं और कहीं हो भी नहीं सकता ।

संसारमें सुख क्या है ? मानसिक मत्तताका नामही सुख है । इससे मन प्रफुल्लित हो जाता है, हृदयमें अपूर्व आनंदकी तरंगें उठती हैं; इस संसारमें वही यथार्थ सुखी है जिसने विद्या शिक्षा पाई है; मनुष्य सुखके लिये उन्मत्त होकर घूमते हैं; परन्तु सुख कहां है, इसका कुछ पता नहीं मिला, कौन सुखी है, और कहां सुख पायाजाता है, इसका विचार कोई भी नहीं कर सकता, सुखके लिये मनुष्य कहां जाय और कहां न जाय इसको वह कुछ भी स्थिर नहीं कर सकता,

परन्तु विचार कर देखाजाय तो सुख सभीके सन्मुख खड़ा रहता है. मनुष्य इच्छा करते हो सुख प्राप्त कर सकता है; विद्याका पढ़नाही यथार्थ सुखप्राप्तिका एक मात्र उपाय है ? ।

हे वहन ! पहले पहल तो विद्या पढ़नेमें बड़ी कठिनता जानपड़ती है इस वातको मैं भी भली भांतिसे जानती हूँ । कारण कि, विद्याके पढ़नेसे क्या फल है इसको पहले पहल कोई भी नहीं जानसकता, इसी कारण सबसे प्रथम विद्या पढ़ना कठिन मालूम होता है ।

विद्या पढ़ना कुछ कठिन नहीं है; केवल उसकी भाषाही कठिनहै; इसविषयमें विना भाषाकी शिक्षा पाये पंडितोंने क्या२ कहा है, उसका विचार करना असंभव है; केवल मातृभाषाकी शिक्षाके लिये वार २ परिश्रम करना निरर्थक बोध होता है; परन्तु एक वार भाषाका ज्ञान उत्पन्न होतेही; एक बार विद्याके स्वादमें सामर्थ्य होते ही, फिर इससे अधिक सरल और दूसरा नहीं विदित होगा ।

हे वहन ! किसी वागमें जाकर देखो कि, गुलाव, चमेली, मोतिया जिधर तिधर खिलरहा है, परन्तु उस वागमें विना जाये हुए उन फलोंका अनुभव कभी नहीं हो सकता और घरमें वैठे हुए क्या उन फूलोंके देखनेके लिये मन व्याकुल होसकता है कभी नहीं इसी प्रकार विना विद्या पढ़े हुए मनुष्य विद्याके स्वादको कभी नहीं जान सकते; सूर्य भगवान्‌के अस्ताचल जानेपर उनकी किरणोंकी नीले समुद्रमें कैसी शोभा होती है; प्रातःकालके सूर्यकी कोमल किरणें वरफके पर्वतके शिखरपर अपनी कैसी शोभाका विस्तार करती हैं; वस्त्राभूषणोंसे सुसज्जित पृथ्वीकी चांदनीकी रात्रिमें

कैसी अपूर्व शोभा होती है; विना देखे हुए कोई भी उसका अनुभव नहीं कर सकता; उफनते हुए समुद्रकी तरंगोंको देखकर हृदय भयभीत होता है; हिमालयके देखनेसे केवल कुरूप पत्थरोंके समूहके अतिरिक्त और कुछ विचार नहीं होता इसमें फिर केवल यही कहना होगा कि, समुद्र और पर्वतोंकी कुछ शोभा नहीं है ।

हे बहन ! विद्याका भी सम्बन्ध ठीक उसी प्रकारका है, विद्याका विना विचार किये हुए इसके अपार सुखको कोई भी नहीं समझ सकता, विद्या शिक्षामें प्रथम कठोरताको देखकर भयमान विद्या पढ़ना न छोड़ना चाहिये विद्या पढ़कर जितना उसमें विचार कियाजायगा, उतनाही अधिक सुख प्राप्त होगा ।

पढ़ना ।

हे बहन ! स्त्रियें इसी कारणसे तो विद्याको नहीं पढ़ती हैं; कि उनको विद्याकी शिक्षा उत्तम प्रकारसे नहीं मिलती इसीसे वह झटसे दो चार अक्षर पढ़ कर कहने लगती हैं कि, हमें कुछ कचेहरी थोड़ेही करनी है, मास्टर बन कर मदरसोंमें थोड़ेही जाना है; अपने इसी विचारसे वह मूर्ख रहजाती हैं, और इसी कारणसे उनकी संतान मूर्ख होती है; वह यह नहीं जानतीं कि, विद्यामें क्या २ गुण हैं; किसीने कहा है–

दोहा–कौड़ी कौड़ी जोरिके, धनी होत धनवान ।
अक्षर अक्षरके पढ़े, मूरख होत सुजान ॥

हे बहन ! विद्याकी भी ठीक यही अवस्था है; प्रथम

एक २ अक्षरके पढ़नेसे स्वरज्ञान होता है; और फिर एक २ अक्षरके पढ़नेसे वर्णज्ञान होता है; फिर बारह खड़ी पढ़ीजाती हैं, इसी प्रकारसे क्रमानुसार सम्पूर्ण पुस्तकोंको पढ़ कर मनुष्य विद्वान् और पंडित हो सकता है अब देखो बहन। मैं तुम्हें एक अक्षर पढ़ाकर पंडिता बनाये देती हूं; जिस समय मैं मथुराजीको गई थी उस समय तुम्हारे पढ़ानेके लिये पं० गोवर्धनदासजीके यहांसे खिलौना लाई थी बहुत दिनोंसे मेरे पास धरा है; सो आज तुम्हारे काम आजायगा, उसकी एक २ तख्तीके ऊपर स्वर व्यंजन इत्यादि उनचास अक्षर बड़े २ मोटे अक्षरोंमें लिखेहुए हैं उनके द्वारा तुम्हें बड़ी जलदी वर्णज्ञानका बोध होजायगा; और तुम्हें कठिनाई भी कुछ न पड़ेगी, प्रकाशवतीसे यह कह कर विद्यावतीने अपनी तगड़ीमेंसे तालियोंका गुच्छा खोल प्रकाशवतीको दिया, और कहा कि, छतके ऊपर मेरे कमरेमें एक बड़ा संदूक धरा है उसको खोल कर उसमें जो एक संदूकची धरी है उसे यहां ले आओ; जीजीकी यह बात सुन कर प्रकाशवती अतिशीघ्रतासे तालियोंका गुच्छाले छतके ऊपरको गई; और चावके मारे बड़ी शीघ्रतासे संदूक खोल कर उसमेंसे संदूकची निकाल कर बहनके सम्मुख ला धरी; और इसके भीतर क्या है यह देखनेके लिये वह अत्यन्तही उत्कंठिता हुई; और अपनी बड़ी बहनसे कहने लगी कि, मैं आजही सब अक्षर पढ़लूंगी; तुम इसे जल्दीसे खोल कर मुझे दिखाओ; यह सुन कर विद्यावतीने कहा; हे बहन! तुम घबड़ाती क्यों हो धीरज धारण करो मैं इसे खोलती हूँ यह कह कर विद्यावतीने संदूकचीको खोला; और

उसमेंसे सब अक्षरोंको निकाल कर मेजके ऊपर बराबर २ चुन दिये; जिससे उस मेजकी अत्यन्तही शोभा होगई. प्रकाशवती इस चित्रको देख कर अत्यन्तही आश्चर्यमें हुई और कहने लगी कि, पीले रंगका अक्षर तो जीजी तुम मुझे खेलनेके लिये देदो; यह सुन कर विद्यावतीने कहा कि, हे बहन! तुम घबड़ाओ मत, यह अक्षर सभी तुम्हारे लिये हैं; एक अक्षर नहीं बरन सभी रंगोंके अक्षर मैं तुम्हें दूंगी; यह कह कर विद्यावतीने प्रथम चार अक्षर प्रकाशवतीको दिये कि, जिनके ऊपर अ. आ. इ. ई. इन चार अक्षरोंका स्वरूप लिखाहुआ था; और यह अक्षर चारही रंगके थे; और फिर उनमें अकार का अक्षर लेकर उसको दिखाया कहा कि, लो बहन! मैं इस अक्षरको इन चारोंके बीचमें मिलाये देती हूं तुम इसको ढूंढ कर यही अक्षर मुझे पकड़ा देना; एक दो बार तो प्रकाशवतीने औरका और अक्षर उठाकर दिया और फिर आपसे आप वही अकारका अक्षर बार २ निकाल २ कर बहनके हाथमें देने लगी; जब उसने छोटे अकारका स्वरूप भली भाँतिसे पहँचानलिया तब फिर इसी भाँतिसे अब बड़ा आ. इ. ई. उ. ऊ. इत्यादि क्रमानुसार १६ स्वर और उनचास व्यंजनोंको पांच छैः दिनमें प्रकाशवतीने बड़ी सरलतासे पहचान लिया, तब विद्याने कहा कि, प्रकाशवतीने अक्षर तो बड़ी ही शीघ्रतासे पहचान लिये अब इसको केवल मात्राका ज्ञान और होजाना चाहिये. बस फिरतौ यह आपसे आप भाषा पढ़ने लगैगी. यह विचार कर सेठ खेमराज श्रीकृष्णदासके यहांकी छपी पंडित नाथूरामजीकी बनाई हुई पहली दूसरी

तीसरी और चौथी पुस्तकको मँगाया और उसमेंसे पहली पुस्तक प्रकाशवतीको देकर बोली कि, हे बहन! देखो मैंने तुम्हें एकतो संदूकची दी है जिसमें भाँति२के रंगविरंगेअक्षर हैं; जिनके देखनेसे मन एकवारही मोहित होजाता है; और देखो आज मैंने तुम्हें यह कैसी सुन्दर पुस्तक दी है जो तुम इसको मन लगाकर पढ़ोगी तो यह बहुत जल्दी समाप्त होजायगी; तभी मैं तुम्हें दूसरी पुस्तक दूंगी; इसी प्रकारसे क्रमानुसार तुम जितनी जल्दी जल्दी पुस्तक समाप्त करोगी; उतनीही जल्दी नई पुस्तकें तुम्हें मिलेंगी; प्रकाशवती प्रथमपुस्तकको देखकर बहुतही संतुष्ट हुई, और यह विचारने लगी कि, किसी तरहसे हो यह चारों पुस्तकें मेरे पास आजाँय तो अच्छा है; यह विचार कर अपनी बहनसे बोली कि, जीजी! अक्षर तो मैं सभी पहचान गई हूं; अब मुझे इसमें क्या पढ़ना होगा सो कहो. विद्यावतीने कहाकि, हेबहन! अब मैं तुम्हें लघुमात्रा बताती हूं इनको तुम मन लगाकर और ध्यान देकर सीखो; प्रकाशवतीने कहा अच्छा बताओ।

विद्यावतीने कहा अच्छा बहन! लो सीखो, और यह ध्यान रक्खो कि, मैं जिस अक्षरपर जैसी मात्रा बताऊँगी उसको तुम इस प्रकार याद करना कि, मैं चाहें जौनसी पुस्तकमें उस अक्षरको पूछलूं;प्रकाशवतीने कहा अच्छा जीजी ऐसाहीकरूँगी; तब विद्यावतीने एक कागजके ऊपर बड़े २ मोटे अक्षरोंमें स्वर और व्यंजन लिखे, और कहा कि, देखो बहन! यह सोलह स्वरही इन उनचास अक्षरोंमें काम आवेंगे; इनकी बिना सहायताके व्यंजन कुछ भी नहीं करसक्ते; प्रथम बड़े आ. की मात्राको ककारमें लगाकर बताया और कहा इसके लगनेसे यह बड़ा का होगया; फिर छोटी इ की मात्राको ककार में लगा-

या और कहा कि, देखो बहन! इसकी मात्राके लगनेसे ककार कि की आवाज देने लगा; इसी प्रकारसे उ की मात्रा बताई और कहा कि, क्रमानुसार उनचास व्यंजनोंमें इन सोलह स्वरोंमेंसे जिस किसीकी मात्रा लगाओगी वह उसीअक्षरसे पुकारा जायगा जैसे कि, तुमने बड़े ऊ को खकारमें लगाया; तो यह बड़े खू की आवाज देगा; और ओ को तुमने गकार अक्षर पर लगाया तो यह गो होजायगा; इसी प्रकारसे तुम इन सोलह अक्षरोंकी मात्राओंको उनचास व्यंजनों पर लगाकर; इनके स्वरूप और इनकी आवाजको सीखलो तो बस तुम बहुत जल्दी भाषा पढ़ने लगोगी; और यह अक्षर तुम्हारी पुस्तकमें भी लिखे हुए हैं, मैंने केवल तुम्हारे पहचाननेके लियेही इस कागज पर लिखकर बताये थे; अब तुम इन अक्षरोंको अपनी पुस्तकमेंही याद करना, प्रकाशवतीने उन सब अक्षरोंको अपनी बहनके कथनानुसार अतिशीघ्र पहचान लिया; फिर चाहै जिस पुस्तकमें मात्रासहित किसीभी अक्षरको पूछनेपर प्रकाशवती अतिशीघ्रतासे उसे बतादेती; तब तो विद्यावतीने विचारा कि, अब बस सब काम बन गया बारह खड़ीके सीखतेही मानो समस्त पुस्तक पढ़ली; इसके पीछे छोटे पद पढाने प्रारंभ किये; इनको भी प्रकाशोने बहुत शीघ्र आठ दश दिनमें समाप्त कर दिया; इसी प्रकारसे दशवीस दिनमें ही पहली किताब समाप्त करडाली; और अपनी बहनसे कहने लगी कि, जीजी अब तुम मुझे पढ़नेके लिये रामायण मँगादो; यह सुन विद्यावतीने

कहा कि, हे वहन! अभी तुम रामायण पढ़ने योग्य नहीं हुई; अव तुम हिन्दीकी दूसरी पुस्तक पढ़ो; प्रकाशोने वहनकी आज्ञानुसार ऐसाही किया, और जो लड़कियें प्रकाशोके निकट खेलनेके लिये आया करती थीं उनसे भी प्रकाशवती वोली कि, वहनी! अव मैंने गुड़ियें खेलनी छोड़ दीहैं मैं तो अव पढ़ा करती हूँ; लड़कियोंने कहा वताता तैंने क्या पढ़ा है हम भी तो देखैं; प्रकाशवती उनके यह वचन सुनकर झटसे "खिलौना" ले आई; और उस संदूकचीमेंसे अक्षर निकाल २ कर दिखाने लगी; कि,मैंने इन्हीं अक्षरोंमेंसे विद्या पढ़नी सीखी है, लड़कियें, उन अक्षरोंको देखकर कोई तो कहने लगीं कि, यह हाथी है, कोई वोली कि, इसमें देवी जीकी जो तस्वीर यह मुझे देदे, किसीने कहा इसमें वरात जा रही है; इत्यादि अनेक प्रकारकी वातें कहने लगीं; तव प्रकाशवतीने कहा वहन! यह हाथी घोड़े नहीं हैं, न यह वरातही है, यह तो केवल स्वर और व्यंजन हैं इन्हींके द्वारा मैं विद्या पढ़ी हूँ मेरी जीजी जव मथुराको गई थी तो यह खिलौना मेरे लिये लाई थी इस कारण मैं इनमेंसे एक अक्षर भी अपना नहीं दूंगी; लड़कियोंने कहा कि हम भी मँगावेंगी; तुम हमें पढ़ा देना, प्रकाशवतीने कहा अच्छा; यह कहकर वह लड़कियें तो अपने २ घरोंको चलीगई और प्रकाशवती अपनी पुस्तक को खोलकर पढ़ने लगी; तव विद्यावतीने कहा कि, हे वहन! अव तुम एक काम करो कि, एक वखत तो पढ़ा करो; एक वखत लिखना सीखा करो, प्रकाशवतीने कहा वहन लिखना तो वड़ा कठिन है भला

वह मुझे किस प्रकार आवेगा, विद्यावतीने उत्तर दिया कि, तुम मत घबड़ाओ जिस सरल रीतिसे मैंने तुम्हें पढ़ना सिखाया है उसी रीतिसे मैं लिखना भी सिखा दूंगी. तुम किसी वातकी चिन्ता मत करो, लिखनेमें जिस २ बातको ध्यान रखनेकी आवश्यकता है; और जिसके द्वारा लिखना बहुत सुगम और सरलतासे आजाता है; वह सभी वातें इससमय मैं तुमसे कहती हूँ

लिखना.

हे बहन! केवल एक मात्र पढ़लेनेसेही सम्पूर्ण कार्य नहीं आसक्ते; लिखना भी पढ़नेका एक प्रधान अंग है। जिसको लिखना नहीं आता उसका पढ़ना निरर्थक है; हे बहन! उसके पढ़नेसे कुछ उपकार नहीं होता; उसके विना वह शिक्षा भी सम्पूर्ण नहीं होती; केवल वह मनुष्य बीचधारमें पड़ा रहता है इसी कारण तुम्हें, लिखना सिखाना मुझे अत्यावश्यक है; स्वच्छ और सुन्दर अक्षरोंको सभी मनुष्य सरलतासे पढ़ सकते हैं; और जिनके अक्षर टेढ़े वेढ़े होते हैं; उनको सर्व साधारण मनुष्य नहीं पढ़सकते; उनके अक्षरोंके पढ़नेमें मन उलझताहै; और जो किसीने वहुत दिमागको जोर देकर पढ़ भी लिया तो कुछ का कुछ पढ़कर सुनादिया; इसमें लिखनेवालेकी वड़ी हानियें होती हैं; यह खूब ध्यान रक्खो कि, अक्षर जहाँतक होसके सीधा और गोल बनाओ; अक्षरोंके सुधारनेमेंही यत्न करो जिस कागज़पर लिखो उसको मैला मत करो, और जहाँतक होसकै सवसे पहले टांटलकी कलमसे लिखना योग्य है; होलडर और लोहेके कलमसे

लिखना उचित नहीं; दूसरे जिस कागजपर लिखो उसपर लाइन खैंचलो बिना लाइनके कागजपर मत लिखो जिससे कि; लाइन सीधी और सुन्दर लगै; यों चीतमकोड़े तो सभी करलेते हैं परन्तु जिसका नाम लिखना है वह हरेकसे नहीं आता; हेबहन! यद्यपि लिखना बहुत पित्तमारेका होताहै;लिखनेका भी एक प्रधान गुणहै। लिखते समय इस बातका भी ध्यान रखना आवश्यक है कि, जिससे कागज काला न पड़े इसप्रकार दवातमेंसे डोबा ले; और जो यदि कहीं रोशनाईका छींटा पड़ गया तो हाथसे उसे कभी न पोंछना; ऐसा करनेसे समस्त कागज मैला और कुचैला होजायगा तब तुम्हारे लिखनेकी प्रशंसा न होगी; स्याहीके छीटोंके पड़नेसे तुम उसे ब्लाटिंगसे सुखाना; ऐसा करनेसेही तुम्हारे लिखनेमें सफाई आवेगी और यह भी ध्यान रक्खो कि, नागरीके अक्षर जितने ब्योढ़ी कलमके लिखे हुए सुन्दर और सुहावने होते हैं उतने सीधीकलमके नहीं होते; इस कारण जहांतक संभव होसके वहांतक तुम ब्योढीही कलमसे लिखा करना; यदि कोई बात लिखते २ भूल जाओ अर्थात् कुछका कुछ लिख जाओ तो उस शब्दको हाथसे न मिटाना उस शब्दके ऊपर कलम फेर देना; अर्थात् लकीर खींच देना।

स्त्रियोंके लिखनेमें प्रायः बहुतसी अशुद्धियां होती हैं; एक तो उन्हें विभक्तियोंका ज्ञान नहीं होता, और दूसरे वह लिखते समयमें मात्राओंका ध्यान नहीं रखतीं; इसी कारणसे उनके लिखनेमें बहुतसी अशुद्धियां रहती हैं और वह सब अक्षरोंके ऊपरकी लाइनको भी नहीं लगातीं, इस कारण सबसे प्रथम

अक्षरोंके शिरके ऊपरकी मात्राका लगानाहीं कर्त्तव्य है; जिससे सम्पूर्ण अक्षर पूर्ण विदित हों।

यह मैं निश्चयही कहती हूं कि, इन सब नियमोंके अनुसार लिखनेवालेका लिखना फिर किसी प्रकारसे खराब नहीं होगा, यदि जो स्त्री पुरुष मेरे इन नियमोंके अनुसार लिखैंगे, तो पढ़नेवालोंको कुछ भी कष्ट नहीं होगा।

हे बहन ! पहली पहल, तुम्हैं जिस कागजपर लिखना हो उस कागजकी मजबूतीको भली भाँतिसे देखलो; और कागज मोटा चिकना हो मोटा कागज लिखनेके लिये फुलिस्केपही उपयोगी है; परन्तु उसपर पेन्सलसे लाइन अवश्यही खींच-लेनी चाहिये; पहली पहल लिखनेमें जैसा अभ्यास होजायगा फिर सर्वदाके लिये वैसाही लिखा जायगा; और फिर जब तुम पहली पहलही लिखनेमें सावधान न होगी तब फिर जन्मभरतक तुम्हारा लिखना नहीं सुधरैगा; इस कारण आज मैं तुम्हैं लिखनेके लिये एक कापी देती हूं; जिस प्रकारसे उस कापीके ऊपर मोटे २ अक्षर पेन्सलसे लिखे हुए हैं उसके ऊपर क्रमानुसार तुम मोटी टाँटलकी कलमसे लिखती जाना, यह कहकर विद्यावतीने लिखनेके लिये अपनी संदूकमें से वह कापी निकालकर प्रकाशवतीके हाथमें दी; प्रकाशवतीने बड़ी शीघ्रतासे उस कापीको लेलिया; तब विद्यावतीने एक बहुत मोटी टाँटलकी डचोढी कलम बनाकर दी और कहा कि, ला पहले मैं तुझे एक अक्षर लिख कर बता दूं।

अ—इस प्रकारके सम्पूर्ण स्वर और व्यंजन उस कापीमें लिखे हुए थे; विद्यावतीने अकारको लिखकर बताया, और कहा कि, हे वहन! तुम इसी प्रकारसे क्रमानुसार समस्त अक्षरोंको लिखकर दिखाओ तब प्रकाशवतीने ऐसाही किया, जिस प्रकारसे विद्यावतीने छोटे अको लिखकर बताया था प्रकाशवतीने भी उसी प्रकारसे बड़े आको लिखकर वहनको दिखाया और कहा कि, हे जीजी! देखो! यह अक्षर तुम्हारी समान बना या नहीं, विद्यावतीने कहा हाँ बहुत ठीक बना, और अपनी वहनसे कहा कि, तुम इसी प्रकार सब कापीको लिखकर दिखाओ प्रकाशवतीने ऐसाही किया, आठ दिनमें समस्त कापी लिखकर दिखादी; तब तो विद्यावती अत्यन्तही संतुष्ट हुई, और अपने मनही मनमें कहने लगी कि, प्रकाशवतीकी बुद्धि बड़ी तीक्ष्ण है, यह विचार कर विद्यावतीने दूसरी कॉपी प्रकाशवतीको दी और कहा कि, लो इसमें सब मिले हुए अक्षर हैं; इनको भी इसी प्रकारसे लिखना; इस कॉपीमें तीन २ चार २ अक्षरोंके मिले हुए शब्द भी हैं; बस इन्हीं मिलावटी अक्षरोंके लिखनेसे फिर तुम्हें नाम लिखने बहुत जल्दी आजांयगे; प्रकाशवतीने कॉपीको लेकर लिखना प्रारंभ किया; और प्रथमकी रीतिके अनुसार इस कॉपीकोभी आठ दशदिनमें समाप्त कर दिया, और एक दूसरे कागजपर छोटे २ शब्द लिखकर आपसे आप दिखाने लगी, फिर इसी प्रकारसे उसने अपना नाम लिखकर विद्यावतीको दिखाया; और कहा कि, जीजी! अब तुम हमें नाम डाल दो; तो हम नाम लिखने सीखा करैं, और जब हमसे नाम लिखने आ-

जाँयगे तो तुम हमैं चिट्ठी लिखनी वतादेना. विद्यावती प्रकाशवतीकी यह बात सुनकर बहुत ही संतुष्ट हुई, और अपने मन ही मनमें कहने लगी कि, अब प्रकाशवतीका मन पढ़ने लिखनेमें बहुत ही लगगया तव तो यह बहुत जल्दी चिट्ठी पत्री लिखना सीखलेगी, यह विचार कर विद्यावतीने प्रकाशवतीसे कहा कि, लाओ वहन दवात कलम मैं तुम्हैं नाम डाल दूं, जब यह नाम जो मैं लिखे देती हूँ तुम विना देखे लिखकर मुझे दिखा दोगी, तभी मैं तुम्हैं चिट्ठी पत्री लिखनेकी रीति वताऊंगी; प्रकाशवतीने अति शीघ्रतासे कागज कलम दवात वहनके हाथमें दी विद्यावतीने "गोपालकृष्ण, भगवतप्रसाद, ब्रजवासीलाल, प्रकाशचंद, ब्रजनंदनलाल, मुरलीमनोहर" इत्यादि नाम लिखकर प्रकाशवतीको दिये; और कहा कि, प्रथम तुम इनको देख २ कर लिखना; और जब तुम्हारी दृष्टिमें यह भली भांतिसे रम जाँय तब तुम इनको बिना देखे लिखना, बस नाम लिखनेमें इतना अवश्यही ध्यान रक्खो कि, कौन २ सा अक्षर किस किस मात्रा युक्त है, बस जहां तुमने यह अच्छी तरहसे समझ लिया फिर तुम सब नामोंको आपसे आप लिखा करोगी, प्रकाशवतीने कहा अच्छा ऐसाही करूंगी, यह कहकर प्रथम तो दो चार बार देख २ कर उन नामोंको लिखा और जब उनका स्वरूप भली भांतिसे स्मरण होगया; तव उसने सब अपने कुटुम्बके नाम बिना डलवायेही लिखकर विद्यावतीको दिखाये;— और कहा कि, आज तो हमने यह नाम विनाही देखे लिखे हैं; अवतो चिट्ठी लिखनेकी रीति बतादो, प्रकाशवतीके यह वचन सुन-

कर विद्यावतीने कहा कि, अच्छा बहन ! आज मैं तुम्हें चिट्ठी पत्री लिखने की रीति बताती हूँ तुम सावधान होकर मेरे पास बैठ जाओ और जो मैं कहूँ उसको समझती जाना।

हे बहन ! पत्र लिखनेकी दो रीति हैं, एक तो अंग्रेजी और दूसरी हिन्दुस्तानी, सो मैं तुझे दोनों बताती हूँ।

पुरानी रीतिके अनुसार बडोंको "सिद्धिश्री" और छोटोंको "स्वस्तिश्री" लिखनेके पीछे वड़ोंमें विद्या वृद्धको "श्रद्धास्पद" "मान्यवर महाशय" आदि और धर्मवृद्धको "धर्मधुरन्धर-धर्मावतार "महोदय" बराबर-वालेको "प्रियतम," "मित्रवर" "प्रियवर" "प्रियवत्स" "बंधुवर" आदि लिखना चाहिये छोटोंको "चिरंजीव" "प्रियवत्स" लिखना उचितहै "स्त्रीको "प्रिय" "प्राणप्रिय" प्राणवल्लभे आदि पतिको "आर्यपुत्र" "नाथ" "प्राणनाथ" "प्राणवल्लभ" आदि शिष्टाचारके शब्द लिखं कर बड़ोंको प्रणाम और छोटोंको आशीर्वाद लिखकर पत्रको प्रारंभ करे।

ब्राह्मणोंमें वड़ेको प्रणाम बराबर वालेको नमस्कार और अपनेसे छोटेको वा दूसरे वर्णसे छोटेको आशीर्वाद लिखै। क्षत्री-वैश्य, शूद्र यह ब्राह्मणोंको प्रणाम लिखैं। और आपसमें राम २ सीताराम जय श्रीकृष्णकी लिखैं।

हे बहन ! जिसके नाम पत्र लिखा जाय उसके पहले श्री-शब्द अवश्य रहना चाहिये। "श्री"लिखनेका नियम यह है-कि, गुरु, पिता, और माता आदिको छः श्री। स्वामीको पांच शत्रुको चार मित्रको तीन सेवकको दो और शिष्य पुत्र तथा स्त्रीको एक श्री लिखते हैं।

दोहा-"श्रीलिखिये षट गुरुनको, पाँच स्वामि रिपु चारि।
तीन मित्र द्वै भृत्यको, एक शिष्य सुत नारि"॥

हे बहन! पत्रकी समाप्तिमें "इति" "इति शम" "कृपाब-नाये रखियेगा" और "काम काज लिखियेगा" अवश्य लिखे। अपने पति तथा सास श्वसुर आदिका नाम चिट्ठीमें लिखना ठीक नहीं केवल लिफाफे परही लिखा जाता है।

चिट्ठीपिताको पुत्रीकी ओरसे--सिद्धि श्री वृंदावन शुभस्थान अनेक उपमा योग्यपरम श्रद्धास्पद पूज्यवर श्रीयुत६पिताजीको योग्य लिखी पुष्करजीसे लक्ष्मीदेवीका प्रणाम बाँचना। आपकी कृपासे यहां सबकुशल है आपका कुशल मंगल सदा गोपाल-जीसे चाहती हूं आगे दश पंद्रह दिनमें मैं सब घर वालोंके साथ आपकी सेवामें उपस्थित हूंगी कुछ चिन्ता न करिये इति शुभम। मिती फागुनवदी ८ रविवार--संवत् १९५९

चिट्ठीमाताको पुत्रीकी ओरसे-सिद्धिश्री काशीजी शुभस्थान श्री ६ दयामयी माताजीको योग्य लिखी दिल्लीसे रामप्यारीका प्रणाम बाँचना आगे आपके आशीर्वादसे मैं सब प्रकार सुख पूर्वक हूँ और सर्वदा आपकी कुशल चाहती हूँ आपने लिखा था कि, तेरा बड़ा भाई तुझे लिवानेके लिये आवैगा सो तू चली आना माताजी मैं पराधीन हूँ जो वह भेज देंगे तौ अवश्य चली आऊँगी, दोनों बहनोंको प्यार कहना भौजा-इयोंसे मेरा आशीर्वाद कहना। कृपा बनाये रखना मिती चैत्र सुदी ७ मंगलवार संवत् १९६०

चिट्ठी बड़ेभाईको बहनकी ओरसे। सिद्धि श्री अजमेर शुभस्थाने मान्यवर भाई श्री ३ बलदेव प्रसादजीको चंद्रवतीका

प्रणाम पहुँचै यहां मैं कुशल पूर्वक हूँ-और आपकी कुशल सर्वदा चाहती रहती हूँ आपने जो लिखा कि, सास श्वसुर आदिकी सेवा भली भाँतिसे करना। सो मैं ऐसाही करती हूँ। तुम्हारे देखनेको वहुत मनकरता है, एक वार मेरे पास हो जाओ चिरंजीव रामरत्नको प्यार करना अधिक क्या लिखूँ-मिती माघ वदी पंचमी संवत् १९५९

चिट्ठी स्त्रीकी ओरसे पतिको। सिद्धिश्री अमृतसर शुभस्थान अनेक उपमा योग्य प्राणनाथ श्री५श्रीमदार्य्य पुत्रजी योग्य लिखी दिल्लीसे विद्यावतीका प्रणाम;आगेमैं सर्वदा आपके कुशल क्षेम को सुननेकी अभिलाषिणी रहती हूँ, परन्तु चिरकालसे आपका कोई पत्र नहीं आया कि, जिससे मेरी अभिलाषा पूरी होती, इस लिये दिन रात चिन्ता रहती है अव निवेदन है कि, मुझ अवलाकी दीनतापर ध्यान देकर अपने हृदयकी कठोरताको छोडिये और अपने कुशल मंगलका समाचार लिखकर मेरी चिन्ताको दूर कीजिये। और यह भी लिखिये कि, आपका दर्शन कवतक होगा। इति शम्। मिती अगहन वदी ५ बृहस्पत वार संवत् १९६०

हे वहन! यह तो मैंने तुझे हिन्दुस्तानी रीति चिट्ठी लिखनेकी वताई और अव अंग्रेजी रीति भी वताती हूँ कारण कि, आज कल इस की ही वहुत चाल है।

आजकल पत्र लिखनेकी यह रीति है कि, पत्रके ऊपरी भाग पर अपने स्थानका नाम और तारीख,दाहिनी ओर लिखै, फिर नीचे उस मनुष्य और उसके स्थानका नाम कि, जिसको पत्र लिखा जाता है लिखे इसके पीछे पहली पंक्तिमें वाई ओर बड़ों

में विद्यावृद्धको पूज्यपाद, विद्यावृद्ध, पूज्यवर, महाशयआदि धर्मवृद्धको धर्म धुरन्धर, महोदय आदि मित्रआदि बराबरवालोंको, प्रियतम, मित्रवर प्रियवर, सुहृत्तम, प्रियबंधु, बंधुवर, आदि तथा छोटोंको चिरंजीव, प्रियवत्स आदि स्त्रीको प्रिय-प्राणप्रिय, प्राणवल्लभे लिखना उचित है। पतिको आर्यपुत्र, प्राणनाथ, प्राणवल्लभ आदि लिखना चाहिये।

फिर हे बहन! दूसरी पंक्तिसे आधी पंक्ति छोड़कर पत्र लिखना उचित है; जब पत्र समाप्त होजाय तो नीचे, यदि वह पत्र छोटेकी ओरसे बड़ेको हो तो "आपका आज्ञाकारी" आपका सेवक वा "आपका प्रेमपात्र" इत्यादि यदि बड़ेकी ओरसे छोटेको हो तो "तुम्हारा शुभेच्छु" "तुम्हारा हित-कांक्षी" वा "तुम्हारा शुभचिन्तक" इत्यादि और बराबर वालेको होतो "आपका प्रिय मित्र" इत्यादि शब्द लिखकर नीचे पृथक् पंक्तिमें अपना नाम लिखना चाहिये।

चिट्ठी पिताको पुत्रीकी ओरसे-

जैपुर

ता० २९ अप्रेल, सन् १८९७ ई.

महामान्यवर!

इसके पहले मैंने एक पत्र आपकी सेवामें भेजा है. उसका उत्तर अभी तक नहीं आया क्या कारण है कृपाकर लिखियेगा. अब मेरी छोटी बहनका गौना कब होगा. बड़ी बहन सुसरालसे आगई या नहीं यदि आगई हों तो उनसे भी पत्र भिजवाना।

आजकल मेरी सासुजी मथुराजीको गई हैं, मैं घरमें अकेली

ही रहती हूँ भाईकी छुट्टी होगई हो तौ उनको मेरे पास भेज देना पत्रका जवाव जल्दी देना।

आपकी आज्ञाकारिणी-
प्रकाशवती.

चिट्ठी माताको पुत्रीकी ओरसे।-

आगरा.
ता० २१ जून-सन १९००.

महामान्य माताजी!

प्रणाम! आपसे विदाहो मैं भली भाँति आनंद पूर्वक काशी जी पहुँच गई अव मैंने लल्लाकी वहूको बुलानेके लिये पत्र डाला है जो इसी महीनेमें विदा ठहर गई तौ दोनों वहनोंको भेज देना आजकल मेरा मन यहाँ विलकुल नहीं लगता तुम्हारी याद वहुत आती रहती है. विदा ठहर जाने पर आपको पत्र लिखूँगी।

आपकी पुत्री
भाग्यवती.

चिट्ठी वड़ेभाईको वहनकी ओरसे-

मुरादावाद
ता० २५ जून-सन् १९०१ ई०

पूज्यवर भाई साहव!

आपका २५ तारीखका पत्र मेरे पास आया; अव आप वहूको विदाकराकर शीघ्र चले आइये घर पर अम्माकी तवियत खराव हो रहीहै; और फिर दो एक दिनमें शुक्र डूवनेवाला है जहाँ तक हो सके शीघ्र आओ; क्यों कि,

फिर बहूके घरमें लेनेका मुहूर्त्त टल जायगा; आप बड़े बेफिक्र होकर बैठ रहे हो। देखतेही पत्रके चले आइए।

आपकी भगिनी

कमलावती

चिट्ठी पतिको स्त्रीकी ओरसे—

नैनीताल

ता० ५ मार्च सन् १९०१ ई०

प्राणनाथ!

आज कई महीनोंके पीछे मैंने आपका प्रेमपत्र पाया बाँच कर नेत्र सफल हुए कई बार पढ़ा परन्तु तृप्ति न हुई; अपने चित्तकी दशा आपको कैसे दिखाऊँ, मेरा मन सदा आपकीओर लगा रहताहै, परन्तु आप बड़े कठोर हो; चलते २ मुझसे कह गये थे कि, मैं रोज एक पत्र भेजूँगा पर आज महीनेमें एक पत्र मिला; कलावती रातदिन चाचा २ करती रहती है; कृपाकर कुशल पत्र जल्दी २ भेजा करिए; जिससे चित्तको धीरज तो बँधा रहै।

आपकीदासी

श्यामकांता

हे बहन! इस रीतिसे जो तू चिट्ठी लिखा करैगी तो बहुत जल्दी चिट्ठी लिखनी आ जायगी; और सबमें अव्वल रहैगी; अब चिट्ठीके बाद लिफाफे पर जिस रीतिसे पता लिखा जाता है वहभी मैं तुझे बताती हूँ इसी रीतिसे लिखा करना।

हेबहन ! आजकल तो लिफाफा इसी रीतिसे लिखा जाता है यह नई रीति है ।

टिकट लगादिया.

श्रीबाबू गोपीनाथजी गुप्त

हेड मास्टर हाईस्कूल

प्रयाग.

यह लिफाफा लिखनेकी पुरानी रीति है, पहले इसी रीतिसे लिखा जाता था जो रीति तुझे अच्छी लगै उसी रीतिसे लिखा करना ।

७४॥ चिट्ठी पहुँचै ब मुकाम दिल्ली मुहल्ला

मुरगोंकी गलीमें पहुँचकर

बनवारी लालको मिलै.

सामान्य शिक्षा

हे बहन ! मैंने तुझे लिखना पढना तो सिखाया परन्तु इस समय कुछ शिक्षाकी बातें भी बताती हूँ, जिस समय तुम स्यानी हो जाओ और तुम्हैं कुछ ज्ञान होजाय तो अपने मैकेमें इस प्रकारके व्यवहारसे रहो जो तुम्हारे ससुराल चले जानेपर तुम्हारे घरवाले सब तुम्हैं याद किया करैं; बहुत सी लड़कियें ऐसी होती हैं कि, वह बात २ पर अपनी

सासे लड़ती हैं. भाई भौजाइयोंको गालियाँ देती हैं, घरका कुछ काम काज नहीं करतीं. दिनरात पच गुट्टे हाथमें लेकर घर २ खेलती फिरती हैं, उनका कहीं आदर नहीं होता ससुराल चले जाने पर कोई उनके बुलानेका नाम भी नहीं लेता, ससुरालमें भी उनका निबहना कठिन होजाता है। यदि कभी ठिक टेहलेपर आभी गईं तौ उनकी पूछ कोई नहीं करता, लड़कियोंको ऐसा काम कभी नहीं करना चाहिये. माता पिता जिस किसी कामको कहैं उनका काम उसी समय करना चाहिये, अपने माता पिताका जहाँ तक होसके काम वँटाना चाहिये; हलके २ काम कर लिये भाई वहनने पीनेको पानी माँगा तो झट उठकर दे दिया; अम्माको तमाखू वनाकर दे आई, घर आंगनमें बुहारी दे डाली, कभी मन हुआ तौ चौका भी फेरलिया, तरकारी वनाली, दाल वैठ कर वीनली, तुम्हारा इतनाही सहारा बहुत होगा अम्मा रोटी करनेको चौकेमें गई तो हलदी मिर्च मसाला पीसकर रखदिया इसमें तुम्हारे दो काम वनैंगे. एक तौ काम करना आजायगा और दूसरे तुम्हारे माता पिता खुश होंगे; अपने भाई वहनसे कभी मत लड़ा करो प्यारके साथ हिल मिल कर खेला करो, जब कोई वस्तु ... ी तुम्हारे पास हो तौ अपने भाई वहन आदि सबको वा... ...ले कभी मत खाओ; भौजाइयोंसे कड़वा वोल वोलना ... नहीं; सदा मीठा वोलो, हलकेसे चलो धमक कर मत चलो, कोई ऐसी वैसी वात मा वापके सामने मुँहसे मत निकालो, जब तुम्हारी सहेली तुम्हारे पास आवैं तौ उनको आदर भावके साथ वैठालो और अच्छी २ वातैं करो

किसी सहेलीसे किसी सहेलीकी बुराई भलाई मतकरो जो लड़कियें इधरकी उधर और उधरकी इधर लगाया बुझाया करती हैं उनकी वात का कोई विश्वास नहीं करता, फिर उनसे कोई अपने मनकी वात नहीं कहता; और सव उसे लगा लूतरी कहते हैं, जो तुम्हारी मा तुम्हें घर पर वैठालकर कहीं को जाय तौ घरको इकला छोड़कर कभी कहीं न जाना; इकला घर छोड़नेमें वड़ी हानि होती है, चौकेमें कोई चीज रक्खो तौ दूरसे रक्खो जिससे कि, चौका छू न जाय, कोई चीज खाओ तो हाथ मुँह धो डालो; जूँठन न लगी रहै, जल्दी२शिर वँधवा लिया. जिससे कि, शिर साफ रहै, यही वातैं लड़कियोंको सीखनी उचित हैं. यदि कभी ननसालमें जाना होगया तौ वहां जाकर वड़े शील स्वभावसे रहना चाहिये नानी माँईसे कभी तू तड़ाकसे वोलना उचित नहीं वह जिसकामको कहैं उनका वह काम तत्काल कर दिया. हे वहन! यह मैंने तुझे शिक्षाकी वातैं वताईं, अव मैं तुझे सीने पिरोने तथा कसीदे आदिका काम भी वताऊँगी।

[illegible]

(अर्थात् सीना पिरोना कसीदाआदि)

हे वहन! अव तुम एक काम और करो; लि[illegible] आही गया. अव मैं तुम्हें कुछ [illegible] और काढ़ना इत्यादि भी सिखाऊँगी इस का[illegible] तुम एक वेला तो पढ़ा लिखा करो. और एक वेला सीना सीखा करो, क्योंकि, यह भी एक स्त्रियोंका प्रधान गुण है, जिन स्त्रियोंको सीना पिरोना आता है उनको किसी प्रकारका दुःख नहीं होता; और वह मन

माना कपड़ा सींकर पहर सकती हैं और अपने लड़की लड़कोंको पहरा सकती हैं. उनका पैसा भी वृथा नहीं जाता है; बहुधा ऐसा होता है कि, जिन्हें सीना पिरोना नहीं आता; उन विचारियोंके लड़की लड़कोंका कपड़ा दरजीके यहाँ सिलनेको जाता है; और त्योहारके दिन बहुधा दरजी कपड़ा नहीं देते इससे उनके बालक वर्ष दिनके वर्षदिन नंगे और मैलेकुचैले कपड़े पहिने रहते हैं इसी कारणसे उन स्त्रियोंको अत्यन्त दुःख होता है; और जिन स्त्रियोंको सीना पिरोना आता है वही स्त्रियें धन्य हैं कारण कि, वह त्योहारसे आठ दशदिन पहलेही अपने तथा अपने बालबच्चोंके कपड़े सी रखती हैं; और त्योहारके दिन सबसे पहले अपने बालकोंको पहिना देती हैं, उनको दरजीके यहाँ की बाट देखनी नहीं पड़ती और न मन मार कर बैठना पड़ता है; इसी कारणसे मैं तुम्हें सीना पिरोना भी भली भाँतिसे सिखा दूँगी; जिस समय तुम कुछ भी कपड़ा सीओ या काढ़ो तो इस बातका भी जरूर ध्यान रक्खो कि, सुई किस प्रकारसे पोही जायगी. उसकी रीति यह है कि, सुईके नकुयेको अपने बाँये हाथके अंगूठेसे थामलो और जिस डोरे या रेशमको उसमें पिरोओ तो उसके पासही की अंगलीसे बट कर उसे सीधा करलो डोरेमें कोई सलवट या झोल तथा पूँसड़ा न रहे साफ करके डोरेको सुईमें पिरोओ ऐसा करनेसे फिर तुम्हें सीनेमें कुछ कष्ट नहीं पड़ैगा. पहली पहल पुराने कपड़ोंको सींकर उन परसे सीना सीखो फिर जब तुम्हारे सीनेमें सफाई आजायगी तभी तुम नये कपड़ेंको सिया करना; प्रकाशवती अपनी बहनकी यह बात सुन कर उसी

समय घरमेंसे एक पुरानी धोती ले आई और कहा कि, लो इसके कपड़े बोंतकर तुम मुझे सीना सिखाओ; प्रकाशवतीका ऐसा उत्साह देख विद्यावती प्रसन्न हुई और अपनी जुलदानीमेंसे सुई, गुछी, गज, कैंची आदि निकालकर धोतीको अपने हाथमें लिया, और प्रकाशवतीसे कहा कि, तुम मेरे निकट बैठ जाओ; जिस प्रकारसे मैं इस कपड़ेको छाँटूं तुम भी उसी प्रकारसे छाँटना, यह कह कर प्रकाशवतीको अपने पास बैठाल लिया—

सीनेके समय इस बातका ध्यान भी रखना अत्यन्तही आवश्यकहै. कि, हाथ, पैर यह सभी साफहों, मैले कुचैले नहों; और जो मैले कुचैले हाथोंसे सिओगी तो कपड़ेमें सफाई नहीं आवैगी, और देखनेमेंभी वह कपड़ा सुन्दर नहीं लगैगा, इससे तुम्हारा सब परिश्रम वृथा जायगा; सीनेके समयमें सावधानी रखनेकी अत्यन्त आवश्यकताहै और सफाईकाभी अत्यन्तही प्रयोजन है.।

२—सीनेके समयमें सुई ही समस्त कार्य करती है, पसूजनेके समयमें तो कुछ एक गद्दर अर्थात् न बहुत मोटी और न महीन ऐसी सुई होनी चाहिये, और बखियाके लिये बहुत बारीक सुई होनी योग्यहै,इससे सिलाई बहुतही सुन्दर आती है; और हे बहन! इसमें डोरेकाभी भेद है. पसूजके लिये मोटा डोराहो और तुरपके लिये बहुत बारीक हो और बखिया करनेके लिये मझोला डोरा होना चाहिये। हे बहन! यह भी ध्यान रक्खो कि, जिसरंगका कपड़ा सियो उसी रंगका उसमें डोरा लगाओ तो वह सिलाई नहीं चमकेगी, बहन! यह सीना पिरोना पढ़नेसे भी अति कठिनहै; कारण कि, लिखनेकी भूलको

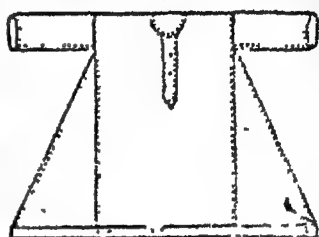
तौ शुद्ध कर लिया जाताहै. परन्तु सीनेकी भूलका सुधारना कुछ सरल नहीं है; जब कहीं तुम्हारे सीनेमें भूलपड़जायगी तब उस कपड़ेको विना उधेड़े हुए उसका सुधार नहीं होसकता-इससे तुम्हारा प्रथमका सभी परिश्रम नष्ट होजायगा। इस कारण इस वातका विशेष ध्यान रक्खो कि, किसस्थानपर कौनसा भाग जुड़ैगा। और फिर जिस समय तुम्हारा मन नहो उस समय सीना उचित नहीं; उस समय सीनेमें सिलाई कभी सुन्दर नहीं होती. ऐसे सीनेसे तो न सीनाही अच्छा है; कारण कि, सीनेका यही अर्थ है कि, वह देखनेमें सुन्दर और सुहावनाहो, जिसको देखकर मन एक साथही प्रफुल्लित होजाय, वार २ देखनेको जिसके लिये इच्छा वनी रहै उसीका नाम यथार्थ सीनाहै; और जव कि, तुम्हारी सिलाई ऐसी सुन्दर और मनको हरण करनेवाली न हुई; तव फिर उस सीनेका प्रयोजनही क्याहै।!

जो तुम इन नियमोंके अनुसार सिया करोगी तौ कभीभी तुम्हारा सीना खराव और वदसूरत नहीं होगा, ऐसा कार्य करनेसे सब जगह तुम्हारा आदर और सन्मान होगा;

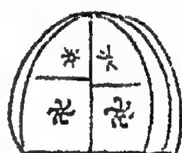
हे वहन! मैंने तुम्हें जो जो वातैं वताई यह सभी तुम्हारे उपयोगीहैं १ कैंची १ गज २ महीन मोटी दो प्रकारकी गुल्ली और महीन मोटी दोनों प्रकारकी सुई प्रत्येक सीनेवालीको अपने पास रखनी उचितहै अब मैं तुम्हें एक चादर सीनेके लिये देतीहूँ तुम इसके बीचमें पसूज डालना—पसूजकरतेमें इतना और ध्यान रखना कि, पसूज टेढ़ी वेढ़ी न हो; जहांतकहो सिलाई-सीधी आवै यह कहकर विद्यावतीने जरासा

चादरका कोना सीकर बतादिया, प्रकाशवतीने अपनी चतु-
राईसे उसीप्रकारकी सिलाईसे चादर सीली और बहनसे
कहा कि. जीजी पसूज तो मैं जानगई अब केवल मुझे बखिया
और तुरपकरनी और बतादो; प्रकाशवतीकी यह बात सुन-
कर विद्यावतीने कहा कि, हे बहन! बखियाके लगानेमें इत-
नी बात होनी चाहिये कि, जहांतकहो बखियाका, टांका
निकट २ लगाना और इसीप्रकारसे तुरपकरना; तुरपभी
महीन होनी चाहिये, और पसूजनेके समय तुरपका भाग छो-
ड़दियाकरो जिससे तुरपनेमें टांका न छीजाय; और तुरपकी
दरज चौड़ी रहै बखिया जहांकरो सीधी और दाने दार
करो टांका बराबर निकालो कमती बढ़ती नहो. तब तुम्हारी
बखिया बहुत साफ़ आवेगी; लाओ अब मैं इसी चादरके
एक सिरेपर तुम्हैं पलीतेदार गोट बखियाकी सिलाईकी
बताऊँ, यह कहकर विद्यावतीने एक गिरेके चौथाई हिस्सेकी
बराबर गिलासके खासेकी सुदेव गोट लेकर चादरके एक
सिरेको पसूज दिया; और गोटकी लंबाईकी किनारपर लाल
डोरा बटा हुआ मोटे २ टोवोंसे सीदिया और उसके एक
कोनेमें जरासी बखिया लगाकर बतादी और कहा इसी
प्रकारसे सीना प्रकाशवतीने बहनकी आज्ञानुसार चादरके
सिरेपर पलीतेदार गोटपर दानेदार बखिया लगाकर सीडाली
जिसको देखकर बहनको अत्यन्तही आश्चर्य हुआ; और प्र-
काशवतीसे कहा कि, हे बहन! अब तुमपर पसूज और ब-
खिया करनी तो आईही गई; अब मैं तुम्हैं टोपी कुरता सीना
तथा उसका छांटनाभी बतातीहूँ; तुम इसे सीकर दिखाओ-

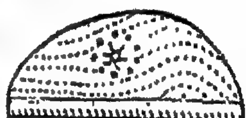
गी तभी म तुम्हैं बहुत उमदा और बहुत बढ़िया कमीज कलकत्तेकी तरजका सीना और कतरना बताऊंगी; जो कि, स्त्रियोंसे उसका सीना बिलकुलभी नहीं आताहै; प्रकाशवती बड़ी प्रसन्न हुई और बोली कि, इसी धोतीमेंसे कुरता टोपी



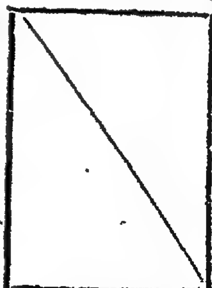
छाँटदो भाग्यवतीने कहा कि, लो बहन ! मैं तुम्हैं कुरता छांटना और सीना बतातीहूं, प्रथम तो तुम यह याद रखना कि सबसे बड़े कुरतेमें



गज भरके अर्जका कपड़ा सवादो गज लगताहै और चार वर्षके बालकके कुरतेमें सवागज लगताहै कुरते में चार कली पड़तीहैं बड़े आ-



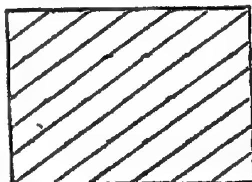
दमीका कुरता गजभर नीचा होताहै, और बालकका दश गिरह, बड़े आदमीकी आस्तीन बारह गिरह नीची और बालककी छः गिरह नीची होतीहै; अब यह विचार लेना होगा कि, बड़े कुरतेमें हमें कितना घेर करनाहै; जिससे उतनीही चौड़ी कलियें काटी जायँ गजभर कपड़ेका तो आगा पीछा फाड़ले, और गज-भरमें चार कलियोंकी इस प्रकारसे तराश ले जिससे कि, कपड़ा खराब न जाय; कपड़ेकी बराबर बराबर दो तह मोड़कर फिर उसे बीचमें चुनकर कैंचीसे तराशले और डेढ़



गिरहकी लम्बी और डेढ़गिरहकी चौड़ी बगल फाड़ले; फिर सुदेवकी ओर दोनों-कलियोंके कमचौड़े शिरपर जोडदे फिर उसको बांहोंमें जोड़े इस प्रकारसे तुम भली भाँतिसे कुरता सी सकोगी और ओरवी

ओर की कलियोंको आगे पीछेमें पसूज देना. फिर सिलाईमें जो कुछ कलियें बढ़ जायँ उन्हें दामन तुरपते समयमें कैंचीसे काट डालना; और जब कुरता सी चुको तो मुझसे इसका गला बनाना सीख लेना प्रकाशवतीने ऐसाही किया; उसने बहनकी बताई हुई रीतिके अनुसार कुरता सीकर खड़ा कर दिया और दामन तुरप कर बहनसे कहा जीजी अब तुम मुझे इसका गला बनाना बतादो; विद्यावती कुरतेको देख कर अत्यन्तही संतुष्ट हुई और कहने लगी कि, ला बहन अब मैं इसका गला लगाना भी बता दूँ; यह कह कर उसने गलेको कैंचीसे तराश कर उसमें सफेद खासेकी पट्टी लगा कर उस पर बखिया कर दी; और उसकी नोंक मोड़ कर उस पर भी भली भाँतिसे बखिया कर दी, फिर प्रकाशवतीसे कहा कि, तेरी समझमें आगया; अब इसको देख कर तू दूसरे कुरतेका गला इसी प्रकार बनाना; प्रकाशवतीने ऐसाही किया; और दूसरे कुरतेको सर्वांग सुन्दर सीकर बहनको दिखा दिया; विद्यावतीने कहा कि, हे बहन ! यह दुकलिया और चौसइया टोपी छाँटनी बताये देती हूँ चौसइया टोपीकी चार कली इस रीतिसे छाँटना जिस रीतिसे मैं तुम्हें बताती हूँ, देखो जैसी कली यह मैंने छाँटी है इसी प्रकारकी चार कली छाँटना फिर इन चारोंको बराबर २ जोड़ लेना तब गुब्बारेकी तरजकी बहुत सुन्दर और सुहावनी गोल टोपी बन जायगी, दुकलियाके दो पल्ले होते हैं दोनोंको मिलाकर बराबर कर औरेबकी ओरसे पसूज लेना उचित है; फिर उसमें दो जौ की बराबर चौड़ी गोट लगावै गोट सीधी अच्छी लगती है; और जो

गोटके दोनों सिलाइयों पर लाल या काले रंगका पलीता लगाओगी तो टोपीकी देखनेमें अत्यन्तही सुन्दरता होगी; दो प्रकारकीही गोट लगाई जाती है एक तो औरेव एक सुदेव; सुदेव गोट तो सीधे कपड़ेमेंसे फाड़ली जाती है औरेव गोटकी थैली करनी होती है सुदेव गोटके लगानेमें जोड़ बहुत आते हैं और आड़ी गोटमें जोड़ कम आते हैं; आड़ी गोटका तराशनाभी मैं तुम्हें बताती हूँ गज भर या बारह गिरहके कपड़ेको तीनों तरफसे बखियाकी सिलाईसे सी लेना और चौथा सिर खुला रखना; और उसको आड़ा करके चुन लेना फिर उसीकी सीध पर कैंचीसे काटना जितनी चौड़ी गोट लगानी हो उतनीही चौड़ी पट्टी तराशना. रेशमीन सूती सब तरहकी गोट इसी रीतिसे काटी जाती है फिर यह अपनी इच्छा रही कि, चाहे जितनी चौड़ी काट



लो; गोट बस दोही प्रकारकी प्रत्येक कपड़ेमें लग सकती है, हाँ केवल इसके लगानेकी रीति भिन्न २ हैं; एक तो संजाफदार गोट होतीहै जो कि, पहले गोटको मोड़कर कपड़ेमें पलीता धरकर लगाई जातीहै यह गोट एक जौकी, बराबर आगेको निकली रहतीहै और आधगिरह चौड़ी तुरपी जातीहै; एक डेढ़ गोट होतीहै, जो डेढ़ हिस्सा मोड़कर लगाई जातीहै; और एक हिस्सा तुरपनेके लिये छोड़ी जातीहै इसका भी पलीता कपड़ेमेंही डाला जाताहै; और एक डोरीकी गोट लगाई जातीहै; आध गिरह चौड़ी गोटकी किनारपरही पलीता डालकर उसको कपड़ेपर रखकर उसपर बखिया की जाती है,

और फिर उसकी नीचेको तुरपाई होती है; और एक डबलगोट होतीहै; आजकल इसी डबलगोटका हमारे भारत-वर्षमें अधिक प्रचार होरहाहै; यह गोट गिरहका तिहाई हिस्सा चौड़ी होतीहै इसके दोनों ओर पलीता रक्खा जाता है और इसे कपड़ेके ऊपर रखकर फिर दोनों ओर इसके वखिया की जातीहै; तव यह गोट देखनेमें अत्यन्तही सुन्दर और मनको हरण करनेवाली प्रतीत होतीहै; वस आजकल इसी गोटका अधिक प्रचार होरहाहै; इसीकारणसे मैंने तुम्हें यहभी गोट वतादी अव इन गोटोंमेंसे चाहे जौनसी गोट चाहे जिस कपड़ेपर लगाओ; लैंहगा, डुपट्टा, कुरती, अंगा, कुरता, टोपी सभी कपड़ोंमें यही गोट लगाई जातीहै; तुम इन सभीको सीखलेना प्रकाशवतीने ऐसाही किया, उन्हीं पुराने कुरतोंपर सव प्रकारकी गोटैं लगा २ कर सीखली; विद्यावतीने कहा कि, हे वहन! आजकल अंग्रेजी कोट हैद-रावादी अचकन, कमीज, अंग्रेजी वासकट (वैस्टकोट) इनकाही पहरावा चल पड़ाहै इसकारण इनका सीना और छाँटनाभी मैं तुम्हें वताऊँगी, तुम क्रम २ से सव कपड़े तैयार कर २ रखती जाना;जव तुमसे यह कपड़े सीने आजायँगे तो तुम्हारा संसारमें वहुत आदर और सन्मान होगा ॥

अव हेवहन प्रकाशवती! अंगरखेकाभी कतर वोंत इसी प्रकारका होताहै पूरे आदमीके अंगरखेमें गजभरके अरजका तीन गज कपड़ा लगताहै उन्नीस गिरह नीचा और आठ गिरह चौड़ा अंगरखेका पीछा फाड़ले और आठ गिरहके दो परदे कतरले; अंगरखेमें कली छः पड़तीहैं, परदा, चाक,

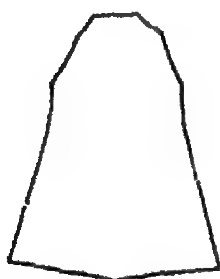
बाँह, चौबगले, गृहवान, गलेके पिछाड़ी एक पट्टीसी लगाई जाती है कमर पट्टी यह इस प्रकार बौंतीजाती है कि, जितनी चौड़ी कमर हो उतनाहीं कपड़ा अर्जसे नापकर उसीमें परदेके लिये दो या ढाई गिरह बढ़ाकर कपड़ा फाड़ले, चौड़ाईमेंसे परदेका कपड़ा छोड़कर बाकी कपड़ेके दो बराबर टुकड़े करलेने उचित हैं, और जिस कपड़ेमें पर्दा छोड़ाहै;- उसमेंसे आधेके पर्देको छोड़कर दो टुकड़े करले यही दोनों आगे होजायगे और वह एक पीछा, आगेमें पर्दा रहजायगा जिसके कतरनेकी रीति इसप्रकार है उसपर चुनकर कतरले तो दो टुकड़े अलग २ होजायँगे तो हे बहन ! पर्दा तुम्हारा ठीक बनजायगा और बायें हाथका आगा होजायगा; जितनी नीची चोली रखनी चाहो उतनाही नीचा कतरलो, बायें हाथके आगेमेंसे ऊपरका भाग थोड़ासा कतरलेना, जितनी चोली नीची रक्खे उतनीही अँगरखेकी निचाई से घटाकर कलियोंको



बोंतले कलियें तराशनेकी रीति तो मैं पहलेहीसे तुम्हें बता-आईहूं; और इसीप्रकारसेभी इसके सीनेकी रीतिहै, पहली पहल दो कली अलग २ पसूजले फिर इन दोनोंको "पिछाड़ीके भाग" में एकओर जोड़दे फिर एक कली और जोड़ै और पीछे पर्देको जोड़ै परदेमेंसे थोड़ासा द्वितीयाके चंद्रमाकी भांति गला कतरले; बीचकी दो २ कलियोंके ऊपर चौबगलोंको जोड़दे, फिर बगलको बाँहमें जोड़दे और आस्तीनकी मौरी छांटले जिस ओर बगल आस्तीनमें जुड़ती है उसओर आस्तीनकी चौड़ाई साढ़ेपांच गिरह होती है, और

मोरीको छाँटकर चार गिरहकी रखनीचाहिये; और फिर इन आस्तीनोंको मुड्ढेमें जोड़दे; फिर इसके चारोंओर उमदा दाने दार बखिया करके गोट लगावो इस रीतिसे सीने के अनुसार तुम दरजीसे भी अव्वल अंगा तैयार कर सकोगी; हे वहन ! कहो तो सही अंगरखेका कतरना और सीना तुम्हारी समझमें आगया या नहीं ? प्रकाशवतीने कहा कि हे जी-जी ! मैं अपनी बुद्धिके अनुसार अंगरखा छांटकर सीकर तुम्हें दिखातीहूँ; जो अँगरखा तुम्हारी कहीहुई रीतिके अनुसार सीकर वतलादूँ तव तुम मुझे कलकत्तेकी तरज़का कमीज़ सीकर बतादेना; विद्यावतीने कहा अच्छा

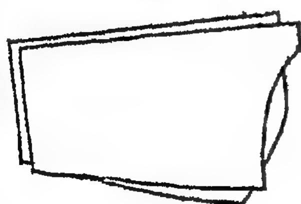
नं० १ कोटकीपीठ.



कोटकासामना.



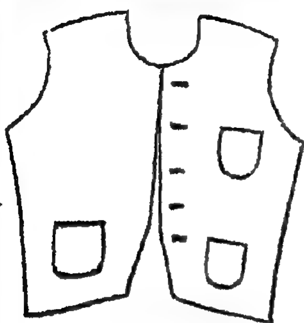
बाँहैं.



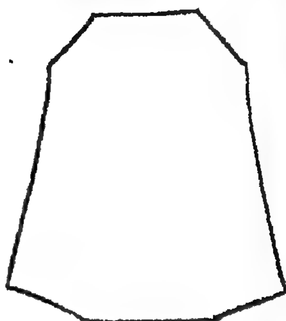
बाँहैं.



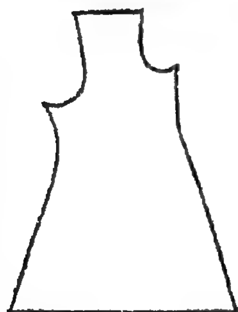
नं०२ वासकटकासामना.



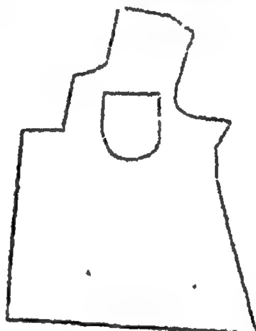
वासकटकीपीठ.



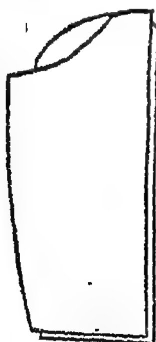
नं०३ अचकनकीपेस.



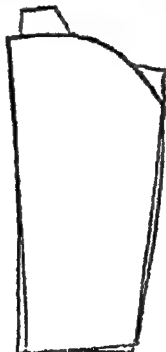
अचकनकीपेस.



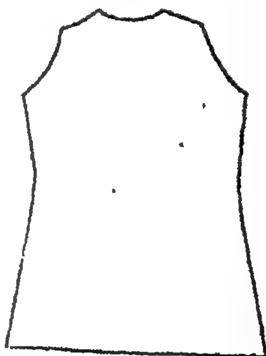
बाहैं.



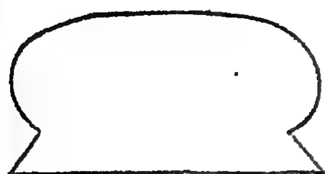
बाहैं.

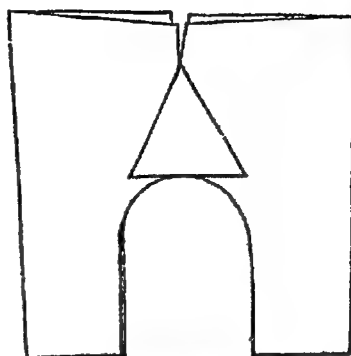


कालर.

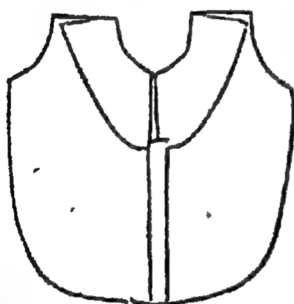


अचकनकी पीठ. नं० ४ पायजामा.

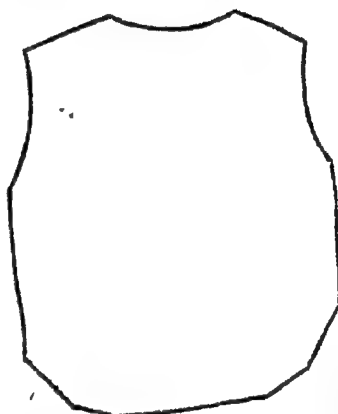




नं० ५ कमीजका सामना.



कमीजकी पीठ.



बाँहें.



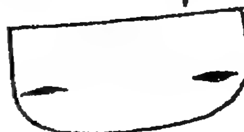
कफ.



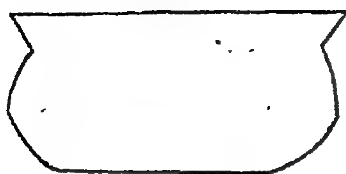
बाँहें.



कफ.



कालर. बगल. बगल.

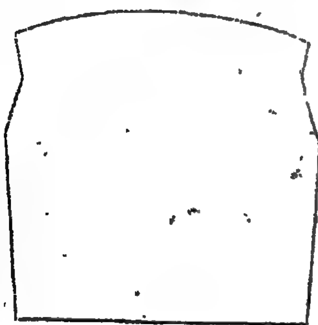
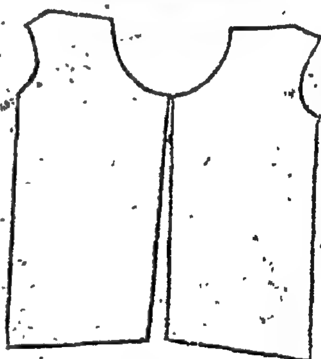




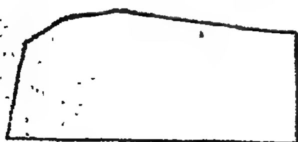
चौबगले. चौबगले.




नं० ६ कुरतीकी पीठ. कुरतीका सामना.

बाहें. बाहें.




नं० १—हे वहन ! अठारह उन्नीस गिरह नीचे कोटमें गज़भरके अर्जका कपड़ा साढ़े तीन गज लगताहै, कोटको इस भाँति छाँटना चाहिये कि, पहले कपड़ेको दुहरा कर, एक शिरेमेंसे तो अगाड़ीकी पेश काटले और एक शिरेमेंसे पीठ तराशले तराशनेसे पहले पिंडोल मट्टी या कोयलेसे इस नकशेके अनुसार निशान काढ़ले, फिर दोनों पाटोंमेंसे जो कपड़ा वचैगा उसकी वाहैं जेवैं और कालर वनाले, इस भाँतिसे कोटको छाँटकर फिर उसकी पीठमें दोनों सामनोंको जोड़ै; और दोनों चाकोंकी धारीपर वरावर सिलाई करके फिर उसमें वाहैं सीकर जोड़दे, इसके पीछे कालर लगावै फिर चारोंतरफ दुहरी वखिया कर तीनों जेवैं तराशकर लगादे कोटमें चाक नहीं खुले रहते सवाविलस्त पीठ में खुलारहताहै।

नं० २—अंग्रेजी वासकट (वेष्टकोट) काभी सीधा हिसाव है वासकटमें गजभरके अरजका कपड़ा गजहीभर लगता है पूरे आदमीकी वासकट दश गिरह नीची होतीहै; दो पाट कर कोयलेसे चिह्न लगाकर नकशेके अनुसार तराशले; एक पाटमें दोनों पेशें करले; और एकमें पीठ करले; फिर पीठमें दोनों पेशोंको जोड़कर सिलाई करजाय इसके पीछे चारोंओर वखिया कर तीन जेव लगावै वसवड़ी सुन्दर वासकट तैयार हो जायगी और जहां एक २ वार तुमने एक२ कपड़ा सीडाला फिर तो ढव पड़जायगा।

नं० ३—बीस गिरह इक्कीसगिरह नीची अचकनमें बारह गिरहके अरजका कपड़ा साढ़ेचार गज लगताहै, इसकोभी दो

पाटकर निशान लगाकर नकशेके अनुसार तराशले एक पाटमें दो पैश छांटे और एक पाटमें पीठ, बाकी जो कपड़ा बचै उसमें बाहैं जेबैं कालर आदि छांटले। इसके पीछे पीठमें दोनों सामनोंको जोड़दे फिर चाकोंका हक छोड़कर सिलाई करजाय, मुड्ढेपर बाहोंको जोड़दे, फिर चारोंओर बखिया करके जेब और कालर लगादे, इसके पीछे काज-करके बटन लगावै।

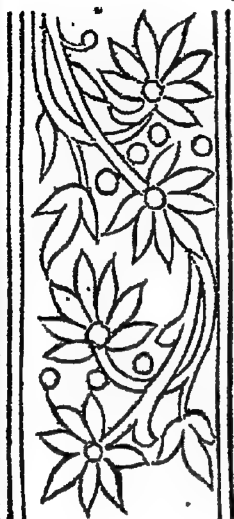
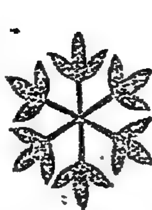
नं०४—पैजामेमें गजभरके अरजका कपड़ा सवादोगज लगताहै पैजामा वीस गिरह नीचा होताहै घेर सवा दोगजका रहता है औरेबी पैजामेका थैला सीकर तीन गिरह ढीले पांयचे तराशले और सूधे पैजामेका थैला नहीं सियाजाता उसके पांयचे आठ गिरहके ढीले रहतेहैं, फिर बीचमें आसन जोड़कर सिलाई करडाले, इसके पीछे नेफा तुरपकर मोरी बनाले।

नं०५—गजभरके अरजका कपड़ा कमीजमें तीन गज लगताहै, कमीज अठारह गिरह नीचा रहताहै इसके दो गज कपड़ेको दो पाट करके अगाड़ी पिछाड़ी नकशेके अनुसार तराशले और गज भर कपड़ेमें बांहैं और डबल सामना छांटै, और पांच गिरहके लम्बे ढाई गिरहके चौड़े कफ लगावै। कालर साढ़े छः गिरहका तराशै काज पट्टीकी लम्बाई सात गिरह नीची रक्खै, सवाबालिस्तके चाक सीते समय छोड़कर बाकी सिलाई करजाय फिर उसमें बाँहैं जोड़दे इसके पीछे बांहोंमें घूम भरकर कफ लगावै, और दामनपर बखिया करजाय फिर काज बटन करले कालर लगावै—इसरीतिसे सीने कतरनेसे कमीज बहुत सुन्दर तैयार हो जायगा,

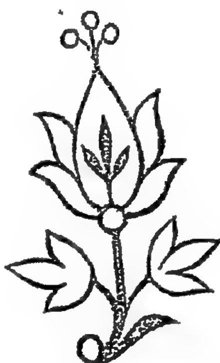
नं०६—लुगाइयोंके पहरनेकी कुरतीमें गजभरके अरजका कपड़ा डेढ़ गंज लगताहै पूरी लुगाईकी कुरती दश गिरह नीची रहतीहै चार गिरहके चौवगले, ग्यारह गिरह ढीली और वारह गिरह लम्बी अस्तीनैं छांटले, इसके पीछे आगा पीछा तराशले फिर आगे पीछेको जोड़कर उसमें चौवगले जोड़दे, वांहोंमें वगले जोड़कर मुड्ढोंपर वांहोंको जोड़दे फिर तुरपकर गोट लगावै; इसी भांति चाहै छोटी लड़कीकी चाहै वड़ी लुगाईकी कुरती सीलो।

हे वहन! कहो इनका छांटना सीना तुम्हारी समझमें आया? प्रकाशवतीने कहा हाँ वहन! अव मैं इसी रीतिसे छांटकर सियाकरूंगी. इसका हिसाव तो वहुत सीधाहै, अव मुझे तुम कसीदेका काढ़नाभी वताओ।

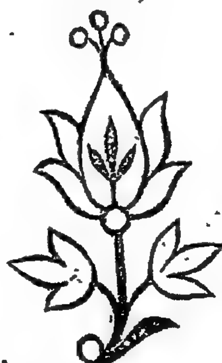
प्रकाशवतीने कहा हे वहन! अव मैं तुझे कच्ची पक्की वेल बूंटियोंका काढ़ना भी वतातीहूं इनको तुम भली भांतिसे समझ लेना जो कढ़ावट मैं इस चादर पर सिखलातीहूं इसी कढ़ावटसे अंगरखा कुरता रूमाल चादर दुपट्टा सभी कुछ काढ़सकोगी आज तो मैं तुम्हैं चादरके चारोंओर वेल उसके वीचमें बूंटियें डालदेतीहूं; पहली पहल तुम इ[illegible] [illegible]वी कढ़ावटसे काढ़ना।

क

ग

घ

ख

ङ

च

छ

ज

झ


हे बहन! यह जो चादरके चारोंओर बेल डालीहै इसमें (क) अक्षरवाली बेलको तुम इस प्रकारसे काढना; प्रथम खूब मोटा दो आने गजका खासा मँगाकर उसके ताने बानेको उधेड़कर उन डोरोंको निकालना और चार २ तारके डोरे

निकालकर उनकी गुच्छी करलेना, फिर बेलकी पत्तीके चारों ओर बहुत बारीक २ सिलाईकी पसूज देना; जब एक बार किनारे २ पर पत्तीके बराबरमें पसूज देआओ तब उसमें जो बीच खाली रहा है उसको फिर दुबारा उस पसूजके बराबरमेंही महीन २ पसूजदेना; तब इस बेलकी पत्तीमें चार सिलाई होजांयगी इसी कढ़ावटको चौसइया कढ़ावट कहतेहैं;और इस बेलमें जहां२ गोल२ बिंदीयैंसी आई हैं इनको तुम इस भांतिसे काढ़ना; सुईमें तागा पिरोकर उलटी ओरसे सीधी ओरको निकालना ऐसा करनेसे एक रोजन होजायगा उसी रोजनको सुईसे जरा एक बढ़करके उसके चारों ओर एक२ टांके की सिलाई करती जाना बस बहुत सुन्दर और गोल सितारा बनजायगा तब इस बेलकी सुन्दरताई इस प्रकारकी होजायगी कि मानो सोनेमें सुगंध मिलगयाहो, और इसके नीचेकी जो दुहरी लकीरहै उसमें मैं तुम्हें जाली डालना बतातीहूं प्रथम इस चादरमें बेलकी लकीरके भीतरके चार पांच तार निकाल लेना और सुईमें डोरो पिरोकर चार तार सुईमें उठाकर फिर उस सुईको चादरकी किनारमें निकालना बराबर२ इसी प्रकारसे चार तार लेकर टांका लगाती जाना; बस बड़ी सुन्दर सितारेदार जाली पड़जायगी।

(ख) प्रकाशवती और सुनो यह जो मैंने तुम्हैं कढ़ावट बताई यह कच्ची कढ़ावट है; और अब मैं तुम्हैं चादरके दूसरे पल्लेवाली बेलको पत्तीकी कढ़ावटसे बतातीहूं यह कढ़ावट आजकल किसीसेभी नहीं आती; उस चौसइया कढ़ावटको

तो सर्वसाधारण स्त्रियें काढ़सकतीहैं; परन्तु अभीतक इस कढ़ावटका प्रचार इधरकी स्त्रियोंमें नहीं हुआ इस कढ़ावटमें डबलकी चारवाली पेचकका डोरा लगैगा, हे वहन ! इस वेलको जिस ओर छपीहै इसी ओरसे काढ़ना इसका सीधा-पन नीचेकी ओर रहैगा; इसमें सुईका टांका आड़ा निकलेगा एक टांका पत्तीके इस ओर और एक टांका उस ओर निकालना तो बहुत सुन्दर जालसा पड़जायगा उसके दूसरे ओर सिलाई पड़जायगी और बहुत सुन्दर पत्तीकी वेल तैयार करलोगी; इसी प्रकारसे इस पत्तीकी कढ़ाईके वेल बूंटे हरेक कपड़ेपर तुम काढ़सकोगी ।

(ग) हे वहन ! दो तरहकी कढ़ावट तो मैंने तुम्हें वताई अब इस चादरमें जो बूंटियें छपरही हैं उनमेंसे प्रथम (ग) अक्षरकी बूंटीका काढ़ना बतातीहूं यह बूंटीभी कच्चे डोरोंसे कढ़ती है, इस बूंटीकी कलियोंके इधर उधर वरावर २ पसूज डालना इस बूंटीमें चार पसूज नहीं पड़ैंगी केवल दोही सिलाई पड़ैंगी, वह दोनों सिलाई परस्परमें मिलीहुई होंगी, तव यह बूंटी बहुत साफ कढ़जायगी, इसीको दुसइया कढ़ावट कहतेहैं।

(घ) अव मैं दूसरी (घ) अक्षरकी बूंटीका काढ़ना बतातीहूं इस बूंटीको प्रथम कहीहुई रीतिके अनुसार चौसइया कढ़ाईसे भी काढ़सकोगी और गुल्लीके डोरोंसे मोइयेकी कढ़ा-वटसे काढ़लोगी, जिस समय तुम्हें इस बूंटीको मोइयेकी कढ़ावटमें काढ़नाहो तो इस प्रकारसे काढना; कि, पैसेकी चारवाली गुल्लीके डोरेको महीन सुईमें पिरोना और कपड़े

की बूंटीकी जड़में टांका निकालना; पत्तीके ऊपरके बराबर आड़े टांकोंकी पंक्तिकी सिलाईके टांके लगातीजाना, तो यह मोझ्ये कढ़ावटकी बूंटी कढ़जायगी; यह कढ़ावटभी आजकल किसीसे नहीं आती है यह बूंटी धुलकर बहुतही सुन्दर लगतीहै परन्तुइसके काढ़नेमें इतना ध्यान अवश्य रखना कि; छापेकी हदमेंही टांकारहै उसके बाहर न होजाय, कमती बढ़ती टांका लगनेसे बूंटीकी सुन्दरता जातीरहैगी।

(ङ) अक्षरकी बूंटीभी मोझ्येकी कढ़ाईसे कढ़तीहै, इसकी नोंकपर जो तीन गोल २ बूंदें लगरहीहैं इनको पीले रेशमके डोरेसे सितारेकी कढ़ावटसे काढ़ना, और फूलके बीचमें पक्के पीले रेशमसे बराबर बराबर दानेदार बखिया लगाना; तो यह बूटी अत्यन्त ही सुन्दर विदित होवेगी।

(च) हे बहन! इस बूंटीका काढ़ना बहुतही कठिन है, इसमें तीन प्रकारका डोरा लगता, एक तो चार तारका कच्चा, और पैसेवाली गुल्लीका; और एक पीला रेशम; तब यह बूंटी काढ़ीजातीहै, प्रथम इस बूंटीको कच्चे डोरेसे काढ़ना चाहिये, इस बूंटीकी ऊपरकी पत्तियोंको इसप्रकारसे काढ़ना कि, प्रथम सुईमें कच्चा डोरा पिरोकर पत्तियों को काढ़ना पत्तीकी बराबरीमें सुईका टांका निकाल फिर उसके ऊपर उसी तागेको घुमाकर सुईको निकालना तो जालसा पड़जायगा; इसी प्रकारसे एक २ पत्तीमें पांच २ बार सुईको निकालना; फिर जो इस बूंटीमें यह गोल २ बूंदैंसी बनरही हैं इनकी कढ़ावट इसप्रकार है कि, इस एक बूंदके ऊपर सुई का एक टांका निकाल उसके ऊपर बराबर पांच टांके लगा-

ना, तब यह गोल घुन्डीसी बनजायगी फिर इसके चारों ओर सुईको फिराकर डोरेको खैंचलेना, इससे इन घुन्डियों की मजबूती होजायगी और इस बूंटीकी नीचेकी जड़की लकीरोंपर पक्की गुछीके डोरेसे चिकनकी कढ़ाईसे काढ़ना और बीचमें पीले पक्के रेशमकी बराबर २ बखिया करती-जाना तब यह बूंटी अव्वल नंबरकी कढ़कर तैयार होजायगी-और इन कढ़ावटोंके काढ़नेसे हे बहन् ! संसारमें तुम्हारी अधिक बड़ाई और सन्मान होगा।

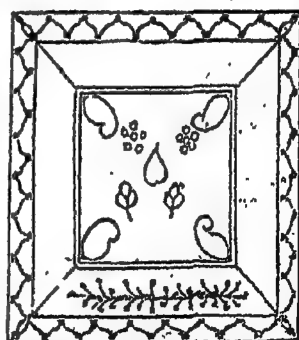
(छ) इस बूंटेको लाल पीले हरे तीन रंगके रेशमसे काढ़ना इसकी कढ़ावट प्रथम कहीहुई रीतिके अनुसार पसूजसेही काढ़ना, एक २ कलीको एक २ रेशमके रंगके रेशमसे काढ़ना; तो यह बूंटी अत्यन्तही मनोहर होजायगी और देखनेमें इस भांतिका बोध होगा मानों कलका कढ़ा हुआ ग्रान्डीलहै।

(ज) इस बूंटीको हे बहन ! पक्की चिकनकी कढावटसे काढ़ना इसके काढ़नेकी रीति इसप्रकारहै कि, पक्की मोटी गुछीका डोरा सुईमें पिरोकर कपड़ेमें टांका निकाल डोरेको सुईके चारोंओर लगाकर टांकेको बराबर बराबर इसीप्रकार से निकालती जाना, तो यह पक्की चिकनकी बूंटी तैयार होजायगी, और बाजारसे भी अव्वल चिकनके डुपट्टे कुर्त्ते तुम अपने हाथसे तैयार कर सकोगी; और इस बूंटीकी नोंकपर प्रथम कही हुई रीतिके अनुसार पीलेरेशमके डोरे से सितारे बनाना;प्रकाशवतीने कहा अच्छा मैं ऐसाही करूंगी

(झ) इस बूंटीको सात रंगके कच्चे रेशमसे पसूजकी तरह काढ़ना, एक २ पत्तीमें एक २ रंगका रेशम लगाना, फिर इसके सितारे पीले रेशमसे भरना तौ यह बहुतही सुन्दर बूंटी बन जायगी।

अब हे बहन ! मैं तुम्हें जालीका भी काढ़ना बताती हूं इसका काढ़ना है तो बहुतही कठिन परन्तु इसमें खाने गिन कर काढ़ना होता है, जिस प्रकार मैंने चादर पर तुम्हें बेल बूंटे छाप दिये हैं, इसमें इस प्रकारकी बेल बूंटी नहीं छापी जाँयगी इसमें केवल अपनी बुद्धिसे ही काढ़ना होताहै आज मैं तुमको एक जालीका रूमाल देतीहूं और जिस प्रकार मैं इसमें बेलबूंटी काढ़कर बताऊँ उसी प्रकारसे तुम भी काढना; हे प्रकाशवती ! इसमें भी खासेके चार तारका कच्चा डोरा लगाया जाता है,।

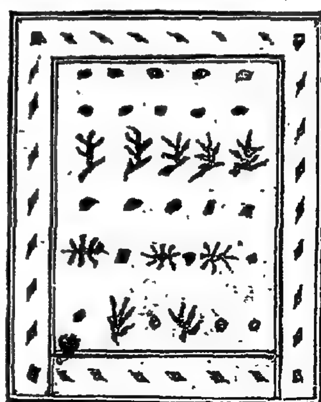
(ञ) सुईमें डोरेको पिरोकर प्रथम इसके चारोंओर बेल काढ़ना जालीका एक टांका सुईमें उठाकर और एकको उसके नीचे दबाकर सुईको निकालना, सुईसे इस रूमालके चारोंओर काढना; चार जालीके खाने दाँई ओरके और चार खाने बाँई ओरके लेकर-



चौसइया कढ़ावटसे काढ़ना बस यह रूमाल भली भांतिसे कढ कर सर्वाङ्ग सुन्दर होजायगा; और इस कढ़ावसे तुम दुपट्टा कुरता इत्यादि भी काढ़ सकोगी.बस जालीकी कढ़ावटमें केवल इतनाही ध्यान रखना है कि, जिस बूंटीको काढ़ो उसके खाने

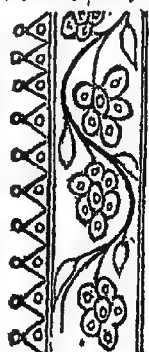
गिन लिया करो जिस बूंटीमें प्रथम चार खाने लेकर पत्ती बनाई है फिर सब पत्तियें उस बूंटीकी चार २ खानेकी बनाना जिससे पत्ती कम बढ़ न होजाय. ऐसा करनेसे ही तुम जालीके सभी कपड़े भली भांतिसे काढ़ सकोगी ।

(ट) हे बहन ! अब मैं तुम्हैं कामदानीका भी काढ़ना बताती हूँ- यह कामदानी इस प्रकारसे काढ़ी जाती है; बहुधा स्त्रियोंसे इसका काढ़ना नहीं आता, जहाँ उन्होंने इसके सीखनेका उत्साह किया. और काढ़नेके लिये सुईमें तार पिरोकर एक आधबार टाँका सुईका निकाला और जहाँ वह तार उलझा कि, झटसे तोड़ मरोड़ कर रख दिया. उसमें केवल इतनीही सावधानी रखनेकी अत्यन्त आवश्यकता है कि, प्रथम सुईका तार निकाल कर सीधाही निकालना इस प्रकारसे उसी टाँके पर पाँच टाँके निकाले तब वह गोल बुँदकी चनेकी दालकी तरज़की बन जायगी. तारमें सलवट न पड़ने दे मैं तुम्हैं अपने हाथका कामदानीका कढ़ाहुआ रूमाल दिखाती हूं. इसको देख २ कर तुम इस रूमालमें दालैं काढ़ना इसकी कढ़ावटमें तारही दीखताहै कपड़ा नहीं दीखता. उलटी ओरको बहुत तार नहीं रहता है बस इसका टांका निकालतेसमय इतना अवश्य ध्यान रक्खो कि, तारमें सलवट न पड़ैं जिस ओरको तारकी सिधाई हो उसी ओरसे सु-



ईको निकालना. ऐसा करनेसे फिर तुम्हें काढ़नेमें उलझना नहीं पड़ैगा. जिस ओर तारकी महीन नोंक हो उसी ओरको सुई पिरोना, फिर इन्हीं बूटियोंसे चादर कुरता अंगरखा रूमाल टोपी इत्यादि सभी कुछ तुम काढ़सकोगी। हेबहन! अब मैं तुम्हें कुछ थोड़ासा सलमे सितारे और कलाबत्तूका काम भी सिखातीहूं सो तुम इसे भी ध्यान देकर अपनी अटकलमें रखना।

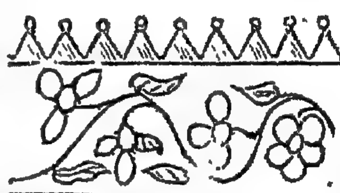
(ठ) हे बहन! कलाबत्तू और सलमे सितारेकी प्रथम वेल बनानी बतातीहूं. इसमें पांच चीजोंकी आवश्यकता होतीहै प्रथम तो आधागिरह चौड़ी मखमल या साटन होनी चाहिये उस साटनको उतनीही चौड़ी तूलके ऊपर मोटे २ टांकोंसे सीदेना, फिर उसकी सीधपर कुड़ २ का तार दुहरा टांकजाना. इसकी सिलाई तकके डोरोंसे होतीहै पेचकका डोरा काम नहीं आता, फिर कलाबत्तूको दुहरा करके भनमावट लेना फिर तारके उस वेलके वीच सिंघाड़ेकी तर्‌जके लहरिये दार खाने वनाना उन्हीं खानोंके वीचमें कलाबत्तू टांक २ कर सितारोंकी माफिक गोल पांच कोठे वनाना उन कोठोंपर सितारे टांकना उन सितारोंपर सलमा कतरकर टांकना, इस प्रकारकी वेल मेरे



दामनमें लगीहुईहै इसको देखकरही तुम वेल बनाना, जव तुम वेल बनाचुको तो इसके ऊपर कलाबत्तूके कंगूरे इसीप्रकारके बनाना उनके वीचमें सितारेको प्रथम एक टांकेसे टांककर फिर सुईमें सलमा पिरो उस टांकेको सितारेके रोजनमें डालकर नीचेकोनिकालना;

इस रीतिसे तुम भांति२की सलमे सितारेकी वेलैं वनासकोगी।

(ड) प्रकाशवती! अव मैं तुम्हें निरे सलमेकी वेल वतातीहूं जिसमें कि, सितारोंके स्थानपर सलमाही भराजाता है, जिस समय तुम कलावत्तूसे काढ़कर खाने वनालो तव फिर मोटी सुईमें पीले चीरूका कच्चा मोटा डोरा पिरोकर सितारोंके स्थानपर सितारेहीकी माफिक गोल बूंदें वनाना फिर छोटे २ सलमेंके टुकड़े काट २ कर रखलेना, सुईमें सलमेके एक टुकड़ेको लेकर उस दालके ऊपर धरकर जहां सलमेकी समाप्ति हो उसी स्थानपर सुईका टांका लगाना. इसी रीतिसे वरावर सलमेके टुकड़े टांकना; जव वह पीला डोरा सलमेसे ढकजाय तव सुईको तोड़लेना; यह वेल देखनेमें अत्यन्तही सुन्दर और वहुत भारी वनतीहै. हेवहन! यह अपनी इच्छारही कि चाहै जितनी चौड़ी वेल वनालो. चाहै कँगूरे लगाओ



चाहै न लगाओ; इसी प्रकारसे सलमे सितारेकी बूंटियें भी वनती हैं।

प्रथम साटन या मखमलपर गेरूके रंगसे बूंटीको छापलेना। और उसकी वरावर लकीरपर कलावत्तूको टांकती जाना उसके वीचमें सितारे टांककर उसमें सलमेकी घुन्डी टांकना, वस इसरीतिसे काढनेसे सलमे सितारेका कामभी तुमपर वहुत शीघ्र आजायगा।

(ढ) अव हेवहन! मैंने तुम्हें यह कसीदेका काम तो वतादिया यह तो तुमने समझही लिया परन्तु इससमय मैं

तुम्हें कुछ थोड़ासा ऊनका कामभी बतातीहूं गृहस्थीमें जो काम अपने आपसे आताहो वही अच्छाहै, आजकल गुलूबंदका शौकभी सभीकोहै- इसमें भांति २ के रंगकी ऊनें लगती हैं प्रथम लोहेकी सवाविलस्त लांवी दो सलाका ले फिर एक सरकफुन्दी वनाकर एक सुईमें डाले फिर उस सरकफुन्दीके वीचमें दाहिने हाथकी सुईको डाल उसपर ऊनका डोरा लपेटै फिर उसी सुईको उसी फंदेके बीचमेंको निकाल ले फिर जो वह फंदा सुईपर आवे उसे वायेंहाथकी सुईमें पिरोदे इसभाँतिसे तीन २ फंदोंका एक २ फंदा गिन कर सुईमें ऐसे पंद्रह फंदे डालै; तव इस भाँतिसे गुलूवंदका ओड़ पड़जायगा और फिर दाहिने हाथकी सुईमें वांये हाथकी सुईका एक फंदा ले और वाँये हाथकी सुईके दो फंदोंके वीचमें दाहिने हाथकी सुईको डालकर उस पर ऊनका डोरा घुमावे और फिर उसके वीचमेंको निकाल ले, फिर उन दोनों फंदोंको तो सुईसे नीचे उतार दे और ऊनके डोरेको सुईके वीचमें करले, इसी भाँति से वुनता जाय और जव दो गिरहकी एक पट्टी वुनजाय तो दूसरे रंगकी ऊन जोड़ दे, इस प्रकारसे जव दो या डेढ़ गजका गुलूवंद तैयार होजाय तो उसका मुँह इस प्रकार मूंददे कि, प्रथमके एक फंदेके वीचमें सुईको डाल कर उस पर ऊनका डोरा घुमा सुईको उसी फंदेके वीचमें निकाले और उस फंदेको वांये हाथकी सुईपरही पिरोदे फिर तीन फंदोंके वीचमें सुईको डाले फिर ऊन फिरा कर सुईको निकाल ले और उन तीनों फंदोंको सुईके नीचे उतार दे इस प्रकार करनेसे सभी फंदे सुईसे नीचे उतर जाँयगे और

तुम्हारा गुलूबंद अत्यन्तही सुन्दर होजायगा फिर उनके दोनों सिरों पर तुम झालर बाँध देना. पंचरंगी ऊन मिलाकर सवा बिलस्त लाँबी ऊनके टुकड़े २ तीस जगह कर लेना और एक २ टुकड़ेको एक २ लकीरकी बराबरीमें पिरोकर गाँठ लगा देना; इसरीतिसे तेरह फंदों पर तेरहही डसियें ७ बाँधना, फिर एकडसी बाँई ओरकी लकीरकी और एक दहिनी ओरकी लकीरकी लेकर दोनोंको मिलाना उन्हीं डसियोंमेंसे एक डस लेकर उससे गाँठ दे देना बस इसी रीतिसे गाँठ पर गाँठ लगाती जाना; तो यह गुलूबंद बहुत सुहावना प्रतीत होगा और ऐसा करनेसे घर २ में तुम्हारा आदर और सन्मान होगा यह गुलूबंद आदमियोंके गलेकी अत्यन्तही शोभा बढ़ाता है, हे भगिनी! प्रथम मैंने तुम्हें जो जो काम बताये इन सभीको तुम सीख कर एक २ अदत तैयार कर मुझे दिखाना, उसमें जो कुछ कोर कसर होगी उसको मैं तुम्हें बताऊँगी, प्रकाशवतीने ऐसाही किया, वह घंटा दो घंटा तो पढ़ा करती और सारे दिन सीना पिरोनाही लिये बैठी रहतीथी, किसी समय भी अपने समयको वृथा न जानेदेती.



हे बहन! अब मैं तुम्हें कुछ चित्रकारी भी बताती हूं जो कि, सालभरके प्रत्येक त्योहारको पूजनेके लिये घरकी दीवारों पर बनाई जातीहैं।

चित्रकारी।

चित्रोंके खींचनेका भी लड़कियोंको अत्यन्तही प्रयोजन

रहता है; और इसकी शिक्षाकी भी अत्यन्तही आवश्यकताहै इस चित्रकारीको देख कर छोटे २ बालकोंका मन आनंदित होता है, और तस्वीरें देखनेके लिये मन व्याकुल होजाता है, जिनको यह अच्छी लगती हैं उनका मन इनके बनानेके लिये भी अत्यन्तही उत्कंठित रहता है, इसी कारणसे मैंने बहुतसी लड़कियोंको दीवारों पर मूर्त्तियें बनाते देखा है। यद्यपि हमारे देशमें दीवारों पर तस्वीरें काढनेका कुछ अधिक प्रचार नहीं है, मानो चित्रविद्याका तो लोपही होगया है।

इसका सीखना भी सीने पिरानेकीही समान है, पुस्तक पढ़नेकी समान नहीं है; इसकारण चित्रोंके सम्बन्धमें जिन २ वस्तुओंका होना आवश्यक है उनको भी मैं तुझे बतातीहूं।

(ण) हेभगिनी! करवाचौथ, दिवाली, भइयादोयज इत्यादि त्योहारोंके आने पर स्त्रियोंको दीवारोंपर करवाचौथ इत्यादि रखनी होती हैं सो जिन स्त्रियों पर चित्रकारी करनी आती है वह तो त्योहारसे एक दो दिन पहले भांति २ के रंग भर कर अपने घरकी दीवारें सजा रखती हैं और जिन पर नहीं आती वह अपने चीतमकोड़े कर लेती हैं इससे उनके घरकी शोभा नहीं होती और उनका मन दूसरे घरकी चित्रकारीको देख कर सर्वदा उत्कंठित रहताहै कि, किसी रीतिसे हो ऐसा बनाना हम परभी आजाय।

हे बहन! मैं तुम्हें दिवाली अघोई करवाचौथ इत्यादिकी तस्वीरें भी काढनी बताती हूं परन्तु वह अपने २ देशकी रीतिसे कुल मर्यादाके अनुसार भिन्न २ देशमें भिन्न २ रीतिकी रक्खी जाती हैं इसी कारणसे मैं यहां उनके नकशे

नहीं वताती हूँ. जिस रीतिसे तुम इन सव तस्वीरोंको काढ़ सको उनके जो नियम हैं वह मैं सभी तुम्हें वताती हूँ।

(त) १। तस्वीरें खैंचनेके लिये प्रथम मोटे डबल कागजके ऊपर पिन्सलसे तस्वीर खींचनेकी चेष्टा करना चाहिए.

२। सबसे प्रथम कागजके ऊपर पिन्सलसे सीधी और गोलाकार लकीरोंको खींचै।

३। इसके उपरान्त वृक्षकी डाली, पत्ते, फूल फल इत्यादिको देख कर उसीके अनुसार कागज पर पिन्सलसे बनावै।

४। शेर, रीछ, बंदर, हाथी, घोड़े, गरुड़ इत्यादि प्राणियोंकी तस्वीरैं देख २ कर तस्वीरैं खींचनेकी चेष्टा करना उचित है। ऐसा करनेसे बड़ी सरलतासे तस्वीरैं खींचनी आ जांयगी।

५। इसके उपरान्त फिर मनुष्योंकी तस्वीरैं देख कर उसी प्रकारकी तस्वीरैं खींचै।

६। फिर जव पिन्सलसे खींचते २ तुम्हें अभ्यास हो जाय तव कोई स्थान देख कर (जैसे कि नदीकी धार- एक घर, एक वगीचेमें बँगला) उस स्थानमें बैठे हुए उसी प्रकार देख २ कर तस्वीरोंको काढ़ना।

जब पिन्सलसे अत्यन्त सुन्दर तस्वीर खिंचकर तैयार होजाय तो उसमें रंग भरना उचितहै; और जो इसके पहलेही रंग भराजायगा तो तुम्हारी तस्वीर कभी ठीक नहीं वनैगी।

रंगकी तस्वीरोंका खींचना दो प्रकारसे होताहै, उन दोनोंके नाम यह हैं- प्रथम नाम "जलरंग" और दूसरानाम

"तैलरंग" इस विषयके सम्बन्धमें निम्नलिखित नियमोंका पालन करना उचितहै।

१। प्रथम तो रंगको पसंद करना उचितहै। किस स्थानपर किस प्रकारका रंग भराजायगा और किस रंगके देनेसे तस्वीर सर्वाङ्गसुन्दर बनजायगी, इसका स्थिर करना अत्यन्तही आवश्यक है। एक रंगमें पांच सात प्रकारका रंग होताहै, रंगको कुछ एक पतला करै और फिर उसे देखले कि, यह कागजपर बहता तो नहीं है इस बातका भी ध्यान रखना अत्यन्त आवश्यकहै।

२। रंगसे ठीक तस्वीर नहीं खिंच सकती केवल तस्वीरके भीतर रंग भरा जाताहै कारण कि, तस्वीर तो प्रथम पिन्सलसेही खींच ली जाती है, इस कारण रंगभरनेके समय इस बात का भी ध्यान रखना अत्यन्त आवश्यकहै कि, कहीं तस्वीर पर रंगके छींटे इधर उधर न पड़ जांय। हेभगनी! मैं यहांपर एक उदाहरण देती हूं।

इटाली देशमें चित्र विद्याका प्रचार अधिकहै इटालीमें जैसे २ तस्वीरैं खींचनेवाले उत्पन्न हुएहैं संसारमें उनके समान और कहींभी नहीं हुए।इटाली देशकी खिंची हुई जैसी२सुन्दर तस्वीरैं हैं वैसी और कहींकी नहींहैं इसी इटालीदेशमें एक चित्रकार मनुष्य अपनी छत्तपर बैठाहुआ तस्वीर खींचरहाथा। इसके पीछे तस्वीर किस प्रकारकी बनीहै इसको देखनेके लिये उठा, और दूर जाकर तस्वीरको देखनेलगा, फिर और पीछेको हटकर तस्वीरको देखनेलगा, इससे उसका पैर छत्तकी कानसपर जापहुँचा, जो जराएक और पीछेको हटता

तो झटसे नीचे गिरजाता। उसका प्यारा नौकर स्वामीकी यह अवस्था देखकर भयभीत हो कुछ भी स्थिर नहीं कर सका; यदि वह उसे पकड़नेके लिये जाता तो अवश्यही नीचे गिर-जाता, तव उसने विना शोच विचारकिये रंगका भराहुआ कटोरा उस तस्वीरके ऊपर फेंककर मारा। चित्रकार अपने चित्रमें इतना मग्न होगया था कि, वह इस भयंकर विपत्तिका किंचित् मात्र भी ध्यान न कर सका, इस समय प्राणप्यारी तस्वीरको विगड़ता हुआ देखकर वोल उठा कि "हाय ! क्या किया ?" इसके उपरान्त झपट कर तस्वीरकी ओरको जा पहुँचा। उसके प्राणोंकी रक्षा हुई; परन्तु तस्वीरके विगड़ जानेकी अपेक्षा अपने प्राणोंकी रक्षा होनेसे वह संतुष्ट नहीं हुआ।

मेरे इस उदाहरणके कहनेका अभिप्राय यह है कि, जो तुम्हें चित्र वनाना हो तो विख्यात चित्रकारके समान तस्वीर खींचनेमें मन लगाना कर्त्तव्य है।

प्रथम (जलरंग) की तस्वीरके वनाने पर पीछे (तैल-रंग)की तस्वीर बनानेकी चेष्टा करना चाहिए। अयेल (तैलरंगकी) तस्वीरका वनाना अत्यन्त कठिन है और इसमें विशेष यत्नकी आवश्यकता है, यह तस्वीर वहुत समय तक रहती है बिगड़ती नहीं, अधिक क्या पांच चार वर्ष तक भी यह ज्योंकी त्यों बनी रहती है।

हे वहन! यह मैंने तुम्हें तस्वीर खैंचनेकी रीति वताई-इसीके द्वारा तुम सव त्योहारोंको अपनी दीवारों पर सुन्दर२ चित्र काढ सकोगी और फिर तुम्हें किसीको बुलाकर चित्र कढ़वानेकी भी आवश्यकता नहीं रहैगी।

गृहकार्य।

हे वहन! अव मैं तुम्हें घरके काम धन्धे वतातीहूँ; इसके अनुसार काम करनेसे संसारमें तुम्हारी वड़ाई होगी और घरके तथा वाहरके सभी तुम्हारा आदर सन्मान करेंगे।

स्त्रियोंको प्रातःकालसे प्रथमही उठना कर्त्तव्य है. फिर घरके सभी दरवाजोंको खोलदेना चाहिए जिससे उनमें ताजी हवा प्रवेश कर जाय; और जो घरमें नौकर चाकर हों तो उनसे सभी स्थानोंमें सूर्यका उदय विना हुए बुहारी झाड़ी करवानी चाहिये, सभी घरोंको साफ रखना उचित है, जिनके घरके कौन विचालोंमें कूड़ा पड़ा रहता है वहाँ दरिद्रका निवास होता है. लक्ष्मी उस स्थान पर कभी निवास नहीं कर सकती; घरकी दीवारों पर जो जाले होगये हों तो बुहारीसे नित्य झाड़ै हे वहन ! इस वातका भी विचार कर लेना अवश्य कर्तव्य है कि, कौन सा काम किस समय किया जायगा, ऐसा करनेसे सारा काम होजायगा: और उसमें कुछ गड़वड़ न पड़ेगी, घरके भीतर मटके आदिकोंमें जो गेंहू चावल इत्यादि नाज भरा हुआ है वह सील न गयाहो इस कारण उसको धूपमें सुखा लेना उचित है, जिस समय गेंहूँ पिसनेके लिये दो तो एक दिन पहले छाँट फटक कर रख लो जिससे उसमें किसी प्रकारकी मिट्टी कंकड़ न रह जाय, साफ करके पिसनेके लिये तोलकर देने उचित हैं और जिस तराजूमें तोलो प्रथम देखलो कि, इसमें पासंग तो नहीं है और जो पासंग हो तो उसकी डंडी पर गुट्टी कपड़ेमें वाँधदेओ, फिर आप स्वयं शौच इत्यादिसे निश्चिन्त हो स्नान करें, तदनंतर घरके सभी

बर्त्तनोंको बहुत साफ मँजवा धुला कर रक्खै, फिर थोड़ी देर कुछ धर्म सम्बन्धी पुस्तकको पढै; अपने घरमें सभी वस्तुओं का होना आवश्यकहै, जो २ वस्तु गृहस्थीमें होनी उचित हैं सभीको संग्रह कर रक्खै शाक इत्यादि तरकारी इतनी मँगानी उचित है कि, जो दूसरे दिनके लिये भी काम आ जायँ, कदाचित् तुम्हारे घर कोई रात्रिमें पाहुना आ जाय तौ उसके लिये उस समय तरकारी कहाँ ढूँढती फिरोगी और जो किसीके घर माँगनेको भेजोगी तो तुम्हारे घरकी बदनामी होगी और जो तुम्हारे घरमें धरी होगी तो उस समय निकाल कर कर तो लोगी, आये हुए पाहुनेकी सेवा भली भाँतिसे करना; जब उसे भोजन खिलानेके लिये बैठालो तौ परोसते समयमें संकोच न करना, उसके खानेको इतना परोसना जिससे उसकी थालीमें कुछ रहजाय बहुधा स्त्रियें पाहुनोंका निरादर करके उनको बड़ी कृपणता से भोजन कराती हैं, इसी कारणसे वह पाहुने घर घरमें उनकी निन्दा करते फिरते हैं, एक महीनेके लिये अन्न, घी, मीठा, नोन, तेल, मसाला इत्यादि सभी सामग्री मँगानी उचित है और नौकरोंको जो काम करना योग्यहै, एक वार सभी समझा देना चाहिये, जिससे वार२उनसे कहना न पड़े, और नौकरोंके प्रति ऐसा व्यवहार करना जिससे वह संतुष्ट रहैं जिस समय वह घरका कुछ काम बिगाड़ दें तौ उन पर क्रोध करना चाहिये, परन्तु हर समय क्रोध करना उचित नहीं नौकर जहाँ तक हो पुरानाही ठीक है. नये २ नौकर घरमें आकर बहुत सी गड़बड़ करते हैं घरमें जितने बरतन हैं, "यह गिनती-

में कितने हैं" इस बातका भी ध्यान रखना; यदि जो कोई वर्त्तन पड़ोसनका अपने यहाँ आगया हो तो उसके बिना माँगे ही दिलवा भेजना, भोजनके समयमें आटा, दाल, घी, मिष्टान्न, मुरव्वा इत्यादि जो जो सामग्री काममें आती हैं. उनकी सावधानीसे रक्षा करना, जिससे कि, बिल्ली कुत्ता मुँह न डाल जाय, और पानीके भरे हुए सभी वर्त्तनोंको ढककर रक्खो जिससे कउये मुँह न डालें घर की सब जेटैं ढकी रक्खो, जिससे कि, चूहे इत्यादि नाज न खाजायँ, जिस घरमें जिन्स धरीहो उसकी ताली अपने पास रक्खो, स्त्रियोंको हर समय अपने पास रुपये पैसेका रखना उचित है, जिससे कि, कोई काम आनेपर किसीसे उधार लेना न पड़े, किसी समय अपने पतिकोही कुछ रुपयोंकी आवश्यकता हो तो उस समय अपने पाससे निकालकर दे दे, ब्याजू रुपया कभी न ले, जो ब्याजू रुपया लेते हैं उनको दूना रुपया देना पड़ता है. और जो तुम किसीको उधार रुपया दो तो प्रथम यह देखलो कि, यह घराना कैसा है जो अच्छा हो और समझ लो कि, इससे रुपया पटजायगा तभी देना नहीं तो नहीं जब कोई स्त्री तुम्हारे घर आवे तो उसका आदर सन्मान भली भांतिसे करना, उसको ऊँचेपर बैठालकर आप नीचे पर बैठना, जिस बातको पूंछे उस बातका उत्तर देना, बहुत न बोलना, खानेके लिये पान तमाखू देना, और ऐसा कभी न करना कि, आप तो एक पान खालिया और आई हुई स्त्री को आधा दिया. ऐसा करनेसे घर२ में तुम्हारी बड़ी निन्दा होगी प्रथम उसको पान देकर पीछे आप खाना, और जो कोई उसस्त्री के संग बालक आयाहो उसको खानेके लिये कुछ मिठाईदेना. च-

लतेससय दरवाजे तक पहुँचाआना, माता पिताकी आज्ञामें चलना कोई वरतन घरका टूट फूट गयाहो तो उसको वदलवाकर नया मँगा लेना और एक कापी इस प्रकारकी वनाना कि,जिसमें सव सामग्री लिखी रहैं, तुम्हारे घरमें जितनी दरी, कालीन,घर-की पलंग,संदूक इत्यादि वस्तुऐं हैं उन सभीको अपनी कापीपर लिख रक्खो; फिर जव कोई वस्तु तुम्हारे घरसे माँगकर ले जाय तो उसी समय कापीपर लिख लो ऐसा करनेसे कोई वस्तु नहीं खोई जायगी गहने और रुपये पैसेकी संदूकको हर किसीके सामने मत खोलो, जिससमय सव घरके कामोंसे निवटकर सोनेके लिये जाओ तो प्रथम दीवा लेकर घरके आँगन, जीना इत्यादि सभी स्थानोंको देखलो कि, कहीं चोर इत्यादि तो नहीं दुवक रहा; फिर जिस स्थानपर ताला लगता हो वहां ताला लगा दो और जहां कुन्डी लगती हो वहां कुन्डी लगादो, ग्यारह वजेसे प्रथमही सो जाओ कारण प्रातः-कालके पांचवजेही उठना पड़ताहै । फसलपर जो वस्तु सस्ती हो उसको खरीद लेना; और फसल निकल जानेपर नहीं लेना, फसल वीतनेपर जो तुम लोगी तो तुम्हारे दाम अधिक जायँगे; आमका अचार, नीवूका अचार, अदरखका अचार इनको फसलमेंही डाल लेना उचित है, मुंगोरी, वरी, पापड़ यह सव अपने घरमें रहने चाहिये; घरमें कोई गऊ या भैंस हो तो उसकी देखा भाली आप करनी नौकरों पर ही नहीं वैठे रहना घर जहां कहीं टूटफूट गयाहो तो तुरन्तही उसकी मरम्मत करा देना; जिस कामको करो पूरा करके छोड़ो अधभरमें मतछोड़ो वर्षाऋतुमें दो तीन वार कपड़ोंको धूपमें सुखा दे-

ना उचित है, जिससमय गोटे किनारीके कपड़े सुखाओ तो एक सफेद चादर महीनसी उन कपड़ोंके ऊपर डाल दो; तो उन कपड़ोंका और गोटेका रंग नहीं उड़ैगा वर्षांतमें ऊनी-कपड़े दुसाले इत्यादिकोंको खूँटीपर डालदो जिससे उनको हवा लगती रहै; ऊनीकपड़ोंको संदूकमें नहीं रखना चाहिये जो संदूकमें रखतेहैं, उनके कपड़ोंको कीड़ा काट डालता है इससे उनकी बड़ी हानि होतीहै. जिससमय गोटे किनारीके कपड़ोंको सुखाकर संदूकमें रक्खो तो प्रथम उन्हें ठंढाकर लो तव रक्खो जो कपड़े पसीनेमें भीज गयेहों उनकी तह मतकरो धोवीको जो कपड़ा धुलनेके लिये दो, प्रथम कापीपर लिखलो और गिनलो पीछे धुलनेको गिनकर दो; जिस दिन दो उसकी तारीख लिख रक्खो जहांतक हो अपनी माको काम मत कर-ने दो जिसकाममें परिश्रम पड़े उसे आपही करो, ऐसा व्यव-हार करनेसे जब तुम ससुरालको चली जाओगी तो तुम्हारी माता हर कामपर हर समय तुम्हारी याद करैगी और जल्दी २ तुम्हारे बुलानेको भेजैगी, इससे तुम्हारा आदर ससुरालमें भी वनारहैगा और माताके यहांभी अधिक सन्मान रहैगा, अपने घरकी गुप्तवात किसीसे न कहना, जब तुम्हारे निकट तुम्हारी सहेली आवैं तो उनको एकान्तमें लेकर न बैठना जो ऐसा करोगी तो घरके सभीलोग तुमपर संदेह करैंगे, उनसे जो कुछ वार्त्तालाप करो प्रथम यह देखलो कि, इससे किसीको बुरा तो न लगैगा किसीकी बुराई मतकरो, जो हँसी दिल्लगी करो तो यहां तक करो कि, जिससे कोई बुरा न मान जाय और घरके कामकाजसे निवटकर जितना

समय शेष रहै उसमें अपना सीना पिरोना करना, जो काम नौकरोंके करनेका हो उसे आप न करना ।

यह हमने बहुधा देखा है कि, स्त्रियें अपने घरमें समर्थ होकर भी नौकरको नहीं रखतीं; सारे दिन घरके कामकाजमें स्वयंलगी रहतीहैं, गाय भैंसको सानी करना, कुट्टीकाटना, चौका बरतन करना, इत्यादि ऐसे २ कामोंकोभी वह स्वयं आपसे करती हैं.यह उनकी बड़ी भूल है वह यह नहीं विचारतीं कि, जितने समयमें हम यह काम करैंगी यदि जो उतने समय में घरबैठकर कपड़े इत्यादिकोंको सियैंगी तो हमैं कितना लाभ होगा, नौकरके न रखनेसे गाँवके मनुष्य उस स्त्रीको कृपण कहते हैं; घरके जितने उज्ज्वल काम हैं वह सभी स्त्रियोंको स्वयं करने उचित हैं; और शेष काम सब नौकरोंसे लेने चाहियें; यदि जो तुम किसी लड़की लड़केको पढ़ाओ, तो प्रथमका पढ़ाहुआ उससे पूछलो तब पीछे आगेको पढ़ाओ; कदाचित् जो वह कहीं भूलजाय तो उसको मारना नहीं वरन् पुचकार कर प्यारके साथ समझादो; जिससे वह डरकर एकसाथही पढ़ना न छोड़ बैठे. अपने घरको आठवें दिन गोबरसे लिपाती रहो; त्योहारके आनेपर उस त्योहारमें जिस २ वस्तुकी आवश्यकता हो,एकदिन पहले मँगा रक्खो; और एकदिन पहलेसेही घरका लीपना पोतना करवा रक्खो यदि कोई पड़ोसन तुमसे तरकारी आदिक माँगनेको आवै तो अवश्यही उसे दे दो; बिना दिये कभी मतरखाओ; अपनी बहन भानजी भतीजी आदिसे स्नेह रक्खो; हे बहन ! जो तुम मेरे कहे हुएके अनुसार आचरण करोगी तो तुम्हैं कभी

पछताना नहीं पड़ैगा; और न तुम्हारा समयही वृथा जायगा यह बातें सर्वसाधारणस्त्रियोंको सीखनी योग्य हैं;ऐसा करनेसे घर २ में उनकी बड़ाई होगी।

व्ययआदिका प्रबन्ध।

" कौड़ी २ जोड़के रंक होत धनवान "

हे बहन! घरमें खर्च किसरीतिसे उठानेमें बचत हो सकती है, वह भी मैं तुम्हें समझाकर कहतीहूं; जो स्त्रियें नियमसहित खर्चको उठाती हैं वह कभी कंगाल नहीं रहतीं और न उनका कोई कामही बंद रहताहै कौड़ी २ नियम सहित जोड़ी जायगी तो पैसा हो जायगा और पैसा पैसा रोज नियमसे जोड़ा जायगा तो रुपये हो जायँगे, फिर तुम धनवान हो जाओगी, इस कारण जितनी आमदनी हो उसका तीसरा हिस्सा जोड़कर अवश्य रखना कर्तव्य है कोई २ स्त्रियें कहने लगती हैं कि, हे बहन! हम कहांसे रक्खैं हमारे तो इतनी आमदनीमें गृहस्थीका कामभी पूरा नहीं होता; उनकी यह कहावत सच है, वह खर्च बेपरवाहीसे उठाती हैं प्रथम तो सम्पूर्ण गृहस्थोंको सालभरमें जितने रुपयेका नाज उठे वह ले लेना चाहिये, फिर एक महीनेमें कितने का घी,तेल, साँभर, मिर्च,मसाला इत्यादि सामग्री उठती है वह सब इकट्ठी ले लेनी योग्य है और जो रोजकी रोज पैसे २ की मँगाओगी तो उसमें बड़ी कसर रहैगी; इकट्ठी मँगानेमें बहुत फायदा है; महीनेमें कितनेका कपड़ा आवेगा उतनेही दाम जमाकरके रखदिये, और बालबच्चोंके विवाहके लिये एक खाता अलग करदिया; जो कुछ रुपया बचै सो सब उसीमें डाल दियाकरो न जाने किस समय क्या जरूरत पड़

जाय समय पड़ेपर रुपया नहीं मिलता यह खूब ध्यान रक्खो कि, रुपया अपने पासकाही काम आताहै, चाहै तुम्हारे घरके कितनेही धनी क्यों न हों परन्तु समय पर कोई किसीको नहीं देता जो तुम्हारे पास धरा होगा तो उस समय काम तो आजायगा; और तुम्हारे घरका बनाव बनारहेगा जो गृहस्थ ऐसा नहीं करतेहैं; वह सदा कर्जदार रहते हैं; और वह रातदिन की हाय हायमें अपनी जिन्दगीसे आरी होजातेहैं तथा बहुतसे आत्मघात करके मरभीजाते हैं इससे उनके दोनों लोक बिगड़ते हैं बहुतोंका यह हालहै कि, प्रथम तो उधार ले २ कर खा गये और जब उधार वालेका तगाजा आया तो मुँह छिपाकर बैठ गये और जो कहीं ब्योहर बाजारमें आते जाते मिलगया तो लगे कस्मैं खाने;और कहने कि, आज देंगे कल देंगे, जब वायदे परभी नहीं देते तो उसका नौकर आकर दो चार भलीबुरी कह जाताहै; लाचार होकर उनको सुननी पड़ती है, फिर उनकी बाजारसे साख जाती रहती है; कोई उन्हैं उधार नहीं देता, सारे मोहल्लेमें उनकी हँसी होती है, सब आदमियोंकी आंखोंमें वह हकीर होजाताहै, इस कारण प्रत्येक गृहस्थीको अपने घरका व्यय इस रीतिसे करनां चाहिये कि, जिससे कभी उधार लेना न पड़ै; विवाह इत्यादि बड़े २ कामोंके आने परभी सब काम अपने घरसेही चलजाय, दूसरेका मुँह देखना न पड़ै देखो गृहस्थीमें बहुत खर्च उठनेके तो अनेक अवसर आते हैं और ऐसा अवसर कोई नहीं आता जिसमें कम उठताहो; फिर जब कि, तुम अलग खाता बनालोगी तो बहुत खर्चकभी नहीं उठैगा और तुम्हैं

वचतभी रहैगी, छोटे २ खर्चोंके रोकनेसे कभी वचत नहीं हो सकती परन्तु नियम सहित खर्च उठानेसे वचत हो सकती है, जव तुम शोच विचार कर खर्च उठाओगी तौ अवश्यही तुम्हैं वचत रहैगी, किसीकी कहन है कि " बूंद २ करके घड़ा भरजाता है" इसी प्रकारसे घरका खर्च है; कि, एक २ पैसेको जो तुम छः वस्तुओंमेंसे वचाओगी तौ डेढ़आने रोजकी वचत होगी इस प्रकार महीनेमें तीनरुपये हो जायँगे पैसा २ तौ कुछ मालूम नहीं देता; परंतु प्रत्येक वस्तुमें थोड़ी २ भी वचत करोगी तो प्रत्येक महीनेमें दश १५ रुपये वड़ी सरलता से वचजायँगे फिर जव भंगन, पनिहारी, मालन, धोवी, इनका महीना हो जाय तौ प्रथम कापीमें चढाकर उनको हिसावसे महीने भरकी तनख्वाह देदेनी चाहिये और जव देखो कि, हमैं किसी लड़के लड़कीका विवाह करना है तो अपनी सामर्थ्यके अनुसार खर्च करो जो तुमने अधिक धूमधामके साथ कर्ज लेकर विवाह करादिया तो व्याज देते २ पिच मरोगी, गृहस्थीको ऐसा काम भूलकर न करना चाहिये उधार उस समय ले कि,जिस समय देखले कि, अव हमारा काम विना उधार लिये चलताही नहीं क्योंकि उधार तौ वड़े २ धनवान् अवसर पड़ने पर ले लेतेहैं; परन्तु जबतक वह उस ऋणसे मुक्त नहीं होते तवतक उन्हैं रात्रिमें नींद नहीं आती; यह नहीं कि, उधार तौ ले लिया और देनेका कुछ विचारही नहीं जो उधार लेकर वे फिकर होजाते हैं वह व्याज देते २ मरजाते हैं फिर वह कभी नहीं उभरते; उधारका रुपया रोजकी रोज रखता जाय तो मनुष्यको वहुत सुभीता हो जाता है और महीने

भरमें बड़ी सरलतासे रकम बन जाती है जो उधार लेकर नहीं देते हैं उनकी साख जाती रहती है, व्याजूरुपया कभी लेना योग्य नहीं, हेबहन! व्याजके लोभमें आकर विना लिखत पढ़त किसी-को रुपया उधार मतदेना इस प्रकारसे व्याजके लालचमें आकर वहुतसी स्त्रियें ठगीगई हैं; एक स्त्री जिसका नाम रुक्मिणी था वह व्याजके लोभमें आकर इस प्रकारसे ठगीगईथी कि, उस-की पड़ोसन गंगादेई नामकी स्त्री रोज़ नियमसे इसके यहां आ-या करतीथी, एकदिन मुँह सुजाकर बैठीरही कुछ बोली नहीं रुक्मिणी सीधी साधी स्त्री थी वह बोली बहनी आज तुम उदास क्यों हो? गंगादेईने यह सुनकर कहा कि, मैं अपने उदास होने-का कारण कुछ नहीं कहसकती, फिर कहेसे क्या होताहै, क-हीं तुम हमारी पूरी थोड़ेही करदोगी, यह सुनकर रुक्मिणीने कहा कि हे बहन! यदि जो मेरे पूरी करनेकी होगी तो मैं उ-से पूरा करदूंगी, यह सुनकर गंगादेई कहनेलगी कि आज कुछ घरमें चकर मकर हुईथी इसीकारणसे सासूजीने मुझे घरसे जुदा करदिया; खानेपीनेको हमारे पास इससमय कुछ नहींहै दोनों प्राणियोंको आज सारेदिन फांका हुआहै यदि इससमय तुम मुझे दश रुपये उधार देदो तो बड़ाही काम चले महीनेपर उनकी तनख्वाह आतेही मैं एक आने रुपयेके व्याजके हिसाब करके तुम्हारा रुपया देजाऊंगी, तब तो उसकी मीठी २ बातोंपर रुक्मिणीका मन पसीज गया और झट संदूकचीमेंसे दश रुपये निकालकर गंगादेईको देदिये और कहा कि लो अपना कामकरो; जब तुम्हारे पास हों त-भी मेरे पास देजाना, यह सुन गंगा रुपयोंको ले अशीशें देती

हुई चंपतहुई और अपने मनही मनमें विचार करने लगी कि. यह दश रुपये तो नहीं मारनेकी अब इसको मेरा विश्वास तो होगयाहै कोई भारी रकम पर हाथ मारूंगी; यह विचार कर दश पंद्रह दिनमें उन रुपयोंको व्याजसहित रुक्मिणीके घर लेआई, और लेकर बोली कि लो बहन! मैं तुम्हारे दश रुपये और दश आने व्याजके ले आई हूं, तुमने मेरा बडा काम निकाला, यह सुनकर रुक्मिणीने कहा कि ऐसी जलदी क्या पडीथी जैसे तुम्हारे पास थे वैसेही मेरे पासथे इतनी जलदी तुम क्यों ले आई गंगादेईने कहा कि हे बहन! उधारका यही हिसाब है कि, जिस समय हुआ उसी समय चुकादिया, यह कह कर चली गई और एक महीनेके बीतनेपर फिर आकर कहने लगी कि, यदि आज तुम हमारा काम निकालदोगी तो विरादरीमें मेरी नाक रहजायगी, मेरी नंदकी लड़कीका विवाह है वहांको मैं भात लेकर जाऊंगी इसकारण पचास रुपये मुझे उधार उसी एकआने रुपयेके हिसावसे देदो, और थोड़ासा अपना गहनाभी देदो, कारण कि हमारे घरकी द्योरानी जिठानी तो सब पहरे ओढ़े जायगी, और मैं नंगी बूची जाऊंगी इसमें मुझे वडी लज्जा आवेगी यदि तुम मुझे अपना सब गहना दे दोगी तो मेरी वात वन जायगी; यह सुनकर रुक्मिणीने उसीसमय पचास रुपये और अपना सारा सुनहरी और रुपैली जेवर गंगादेयीके हाथमें दिया; और कहा कि, लो सँभालकर रखना, जिससमय भात देकर चली आओ तो गहना तो मेरा उसीसमय देजाना और रुपये चाहे जब देना; यह सुनकर गंगादेईने कहा कि, हाँ वहन! मैं उसीसमय दे जाऊंगी

आज परमेश्वरने मेरी बड़ी लाज रक्खी; तुमने मेरा बड़ा काम निकाला, यह कहकर चलीगई, जब महीना एक बीत गया और गंगादेईने सूरतभी न दिखाई तो रुक्मिणीके मनमें बड़ा संदेह हुआ, कहने लगी कि, क्या कारण हुआ जो गंगादेई हमारे घर नहीं आई; विवाहको हुये तो बहुत दिन हो गये, अब तो वह भात देकर चली आई होगी, यह विचारकर कहने लगी कि, आज मैं स्वयंही जाऊंगी, दूसरे दिन उसके घर गई, उसकी सूरत देखतेही गंगादेईने गाल फुलालिये रुक्मिणी बोली कि, हे बहन ! भात देकर आगई, गंगादेईने कहा कि, कैसा भात, रुक्मिणी बोली कि, हे बहन ! तू क्या बातें करती है भातके देनेके लियेही तो तू मुझसे सारा गहना माँगकर ले आई है सो बहन ! गहना तो मुझे दे दे और रुपये मेरे जब हों तब दे देना, गंगादेई ने कहा कि, मैं तो कभी किसीके घर नहीं जाती मेरे घर नारायणने सबकुछ दियाहै, मैं क्या घर २ फिरती फिरूं हूं मैं तुम्हारे घर काहेको जाती, तुम मेरे घरसे जल्दी चली जाओ जो कोई हमारे घरका मर्द इस चकचकको सुन लेगा तो तुम्हें पीटैगा, इस कारण सीधी तरहसे चली जाओ; यह सुनकर रुक्मिणी बड़ी लज्जित हुई और कहने लगी कि, हाय ! मैंने अपने पैरमें अपने हाथसे ही कुल्हाड़ी मारी, परमेश्वर करै मेरी आत्माका दुःख इसके ऊपर पड़ै जैसे इस ने मेरा गला मसोसाहै, तैसेही नारायण करै इसकाभी कोई गला मसोसे; यह कह कर विचारी पश्चात्ताप करती हुई चली गई इसी कारण हे बहन ! व्याज भी मूलको ले डूबताहै स्त्रीको चाहिये कि, लेन देन विना लिखत पढ़त किये कभी न

करे, ऐसे करनेसे स्त्रियोंको बड़ी हानि उठानी पड़तीहै बहुतसी स्त्रियें ऐसी ठगनी होतीहैं जो घर २ की बहू बेटियोंको ठगती फिरतीहैं जिस समय उन्होंने देखा कि, इससमय उसकी सास-ननँद घरमें नहींहै तभी जाकर उसकी बहू बेटीसे चुपड़ी बातें करीं और कहा कि, फलाना साधु बड़ा अच्छा आयाहै वह ऐसा तावीज करेहै, जिसके पहरतेही उसका पति उसके वशमें हो जाताहै तिसपरभी वह लेता कुछ नहीं है केवल वह पूजनके लिये सवारुपया लेताहै; और एक तावीज देताहै, स्त्रियें तो इस बातपर मरतीहैं कि, किसी-प्रकारसे हो पति हमारे वशमें होजाय; झटसे सवारुपया निका-लकर देदिया फिर उस लेनेवालीने जाकर सूरततक न दिखाई जिस स्त्रीको देखा कि इसके संतान नहीं होती है उससे जाकर कहा कि तेरे पुत्र होगा एक स्याना ऐसा अच्छा आया है कि जो स्त्री उसकी करी हुई डोरीको पहरती है उसके अतिशीघ्र संतान होतीहै, मैंने बहुतसी स्त्रियोंको डोरी करा कर पहरते देखाहै, और उनके संतान हुई है, सारेदिन स्त्रियोंकी भीड़ उसके घर लगी रहतीहै, यह सुनकर वह स्त्री बड़ी प्रसन्न हुई और जो कुछ सास ननँदसे चुरा छिपाकर जोड़ा जंगोडा था सभी निकालकर उसे दे दिया; और कहा कि, जो वह स्याना ऐसाहै तो मैं पुत्र होनेपर औरभी दस बीस रुपये दूंगी इसी प्रकारसे बहुतसी सीधी साधी भोली भाली स्त्रियें इन धूर्त्त स्त्रियोंके द्वारा ठगी गई हैं हे बहन! जो स्त्रियें चतुर हैं वह ऐसी ठगाईमें नहीं आतीं, जहां कहीं रुपये पैसेके लेन देनका अवसर आता है चतुरस्त्रियें उसी समय कह देती

हैं कि हमारे घरके आदमियोंसे रुपया लेना, हम स्त्रीहैं इस बारेमें कुछ नहीं जानतीं, हे वहन! एक स्त्री झाड़ा फूंकीके जालमें फँसकर जिसप्रकारसे धोखेमें आगई थी उसकाभी वृत्तान्त मैं तुमसे कहतीहूं कि एक नगरमें एक स्यानेने आकर अपनी बड़ी धूमधाम मचाई; सारे नगरमें शोर पड़ गया, बड़े २ घरानेकी स्त्रियें उसके पास आने जाने लगीं, कोई आकर कहती कि कोई ऐसा गंडा करदो जिससे मेरा पति वशमें होजाय, कोई कहती कि, ऐसी डोरी करो कि, जिससे मेरा भाई जो घरसे निकल गयाहै वह चला आवे कोई कहती कि, मेरे लड़के पसलीके रोगसे मरजाते हैं इस कारण कोई ऐसा यंत्र लिखदो कि कोई तो मेरी गोदमें खेलै और किसी वातका मुझे दुःख नहीं है, केवल संतानकी ओरसेही आठों पहर चौसठ घड़ी जलती रहती हूं, इत्यादि ऐसी २ अनेक प्रकारकी वातें स्त्रियें आ २ कर कहतीं; तव वह स्याना किसीको तो भोजपत्र पर तावीज लिखकर देता और कहता कि, लो वीवी इसे तुम सवेरेही उठकर धोकर पी लिया करना वस पति तुम्हारे वशमें हो जांयगे और जो तुम चाहोगी वही करैंगे; किसीसे कहता कि लो यह डोरी मैं देताहूं इसको तुम अपनी कमरमें बांधना, ईश्वर करैगा तो तुम्हारे बालक जी जांयगे; किसीसे कहता कि, लो यह मेरा तावीज अपनी चोटीमें वांधना तुम्हैं भूत चुड़ैल नहीं सतावैंगे; किसीसे कहता कि लो मैं ये जानवरके दांत देताहूं इसको अपनी भुजामें बांधना; यदि ईश्वरने चाहा तो तुम्हारे संतान होजायगी; इस प्रकारसे घरमें स्त्रियोंकी जवानपर वह

स्यानाही चढ़ा रहता एक दिन एक अच्छे घरानेकी एक स्त्री गई और जाकर उस स्यानेसे बोली कि, जो तुम मेरा काम पूरा करदोगे तो मैं तुम्हें बहुतसा धन दूंगी; स्यानेने कहा मइया मैं कुछ नहीं लेताहूं काम अपना कहो अपनी सामर्थ्यके अनुसार मैं उसे पूरा करदूंगा स्त्रीने कहा कि, मेरे पतिने बहुत दिनोंसे एक और स्त्रीको अपने घरमें रखलियाहै जिस दिनसे वह स्त्री आई है; न वह मुझसे बोलैं; न वह घरहीमें रहैं सारे दिन उसीके ध्यानमें मग्न रहते हैं, और तो मुझे किसी बातका दुःख नहीं है परन्तु न जाने विधाताने यह प्रबल दुःख मुझे क्यों दिया महाराज ! जो तुम मेरा यह काम पूरा करदोगे तो मैं तुम्हें निहाल करदूंगी, स्याना यह बात सुनकर मनमें अत्यन्त प्रसन्न हुआ और मन ही मनमें कहने लगा कि, आज तो अच्छी चिड़िया हाथ लगी, यह विचारकर प्रगटमें कहने लगा कि, अच्छा तुम दुपहरको आना इसकी फिकर की जायगी; स्यानेकी आज्ञानुसार वह स्त्री ठीक दुपहरीमें आई, तब स्यानेने कहा कि, इसका अनुष्ठान रात्रिके समय श्मशानपर सिद्ध होगा,तुम अपना सारा शृंगारकर अच्छे वस्त्र गहने पहरकर आना, उस स्त्रीने ऐसाही किया; तब वह उस स्त्रीको अपने साथ लेकर नदीके किनारे श्मशानपर गया; और अपनी झोलीमेंसे तांबेकी थालीके ऊपर एक चक्र लिखाहुवा उसे निकालकर दिखाया और कहा कि,प्रथम तो तुम इसे देखकर तारागणकी ओरको हाथ जोड़ो, स्त्रीने ऐसाही किया फिर स्यानेने चार पांच लकड़ी निकालकर सुलगाई और उस स्त्रीसे कहा कि अब तुम अपना सारा शृंगार उतार कर केवल

यह एक मेरे पास जो धोती है (झोलीमेंसे निकालकर पीली धोतीदी) इसे पहरकर इस नदीमें स्नान करो; फिर आकर अपने कपड़े और सारे गहने पहरलो, स्त्रीने सारे गहने कपड़े उतारकर रखदिये और वही एक-मात्र धोती पहरली, और वह नदीमें स्नान करनेके लिये गई उसने जैसेही जाकर नदीमें गोता मारा कि, वैसेही स्याना सब गहने कपड़ेको लेकर चंपतहुआ वह स्त्री स्नान करके नदीके किनारे पर आई और आकर देखा कि न स्याना है और न गहने कपड़े हैं तब तो वह हाहाकार करने लगी और बोली कि हाय मैं तो आज चौपटेमें मारी गई, आज मेरा सर्व नाश होगया, दोनों दीनसे गई, तत्ता दूध न उगलनेका न पीने का वह विचारी बड़ी कठिनतासे अपने घर आई और कहने लगी कि, स्त्रियोंको कभी स्याने दिवानेके फंदमें न पड़ना चाहिये इस प्रकारसे बहुतसी स्त्रियें धोखेमें आकर अपना सर्व नाश कर बैठती हैं हे बहन ! जब ईश्वर करदेताहै तब सभी उसके आधीन होतेहैं और जभी उसके संतान होती है विना ईश्वरकी इच्छाके कुछ नहीं होता, इसकारण स्त्रि-योंको उचित है कि, स्याने और धूर्त स्त्रियें चाहे कैसी २ चुपड़ी २ बातें क्यों न बनावें परन्तु उनके फंदेमें कदापि न आना चाहिये। उनको अपना एक पैसा मतदो, जो स्त्री तुमसे रुपया उधार मांगे तो साफ कहदो कि, इस बातमें हमारे घरके आदमियोंसे पूछलो, और ऐसेही रसायन बनाने वालों-केभी फंदेमें मतपडो। रसायनवाले यह कहते हैं कि, ला माई हम तेरे चांदीके गहनेको सुवर्णका करदें मूर्खस्त्रियें सुवर्णके

लालचमें आकर चांदीके गहनोंकोभी खो बैठती हैं; यह खूब ध्यान रक्खो जो वह रसायन बनानेवाले चांदीको सुवर्ण करसकते तो घर बैठेही न पुजते, घर २ भीख मांगते क्यों फिरते ? जिससमय नौकर भंगन पनिहारीका महीना हो जाय उसी समय इनकी तनख्वाह देदो, यहभी एक अपने ऊपर कर्जही समझो जो ऐसा करोगी तो नौकरोंके पास पैसा हर-समय रहैगा. उनको चोरीकी आदत नहीं पड़ैगी चाहे नोक-रोंको मोटाही नाज खिलाओ परन्तु पेट भरकर खानेको दो भूंखा मतरक्खो, और जो भूंखा रक्खोगी तो उनको चोरीकी आदत पड़ैगी. दूसरा महीना कभी मत चढ़नेदो, और कभी२ अवसरपर एक दो पैसा देदिया करो फटा पुराना कपड़ाभी देदिया जिससे नौकर प्रसन्न रहैं, त्योहारके आनेपर एक दो आना इनामके बतौर दे दिया-जिसके घर नौकर चोरी कर-ताहै उस घरमें बरकत नहीं होती। जो स्त्री चटोरी होती है उसके घरमें लक्ष्मी नहीं ठहर सकती इससे अधिक व्ययभी होताहै, जो गृहस्थीस्त्रियें चटोरी होतीहैं वह जन्मभरतक दुःख भोगती और सर्वदा नंगीबूची रहतीहैं; जहां चटोरपनेका अधिक राज्यहै वहां घरमें कछ नहीं रहता वह घर नाश हो जाताहै बहुतसे गृहस्थी तो कुछ हाट हवेली सभी कुछ बेंच-डालतेहैं और जबानकी राह खाजातेहैं फिर उन स्त्रियोंके न तो तनपर साबित कपड़ाहै और न कांसेका छल्लाहै वरन उन्हें पे-टभरके खानेको रोटीभी नहीं मिलती;बुरे घरकी बंदोरसी घरमें बैठी रहती हैं, न कहीं आनेकी और न कहीं जानेकी; इसकारण स्त्रीको हरसमय अपने पास तीस चालीस रुपयेका तो छील-

पत्तर रखना उचितहै; जिससे अपनी इज्जत तौ बनीरहै और कपड़ाभी साफ और सावित हो, जिससे कोई दरिद्री न कहै इज्जतके साथ दश लुगाइयोंमें बैठे, जो स्त्रियें चटोरी होतीहैं, वह सर्वदा दरिद्रनसी बनी बैठी रहती हैं उनका कोई सन्मान नहीं करता किसीने कहा है कि जीभ हाथी, घोडे, रथ बहल, महल, दुमहले,वाग इत्यादि सभीको खा जाती है, इसके अगाडी कुछ नहीं रहता. हां तीज त्योहारके आनेपर अच्छे २ पदार्थ बनाकर भगवत्को भोग लगाय खानेमें चटोरपना नहीं कहाता चटोरपनेका नाम दौलतकी चाट है;अर्थात् समस्त दौलतको चाटजा; जो स्त्रियें चटोरी होतीहैं वह सर्वदा निर्धन और कंगाल रहतीहैं निर्धनकी कोई बात नहीं पूछता, धनवान्का सभी आदर सत्कार करते हैं, धनवान्की सभी जगह पूछ होतीहै, निर्धनकी कोई बाततकभी नहीं पूछता, धनवान्से सब दवते हैं,निर्धनके ऊपर सव अपना वल प्रकाश करतेहैं, जिसपर वीतती है वही जानता है दूसरा उसके दुःखका किंचित्भी अनुभव नहीं करसकता क्योंकि किसीने सच कहा है।

" जाके पैर न फटी विँवाई। सो कहा जानै पीर पराई"॥

हे बहन! जब तुम्हारे पास धन होगा तो तुम्हारी इज्जत बनी रहैगी और घरके लोग भी तुम्हारे संगी होंगे परन्तु विपत्तिमें कोई किसीका साथी नहीं, जब खोटे दिन आते हैं तो कह कर नहीं आते. यह संसारचक्र है सर्वदा घूमता रहता है, सुखके उपरान्त दुःख और दुःखके पीछे सुख होता है, अपनी एक मात्र आशासे निराश न होना चाहिये,

आज तुम्हारे खोटे दिन हैं ईमानदारी और नेक नियतसे चलोगी तो फिर भी तुम्हारे भले दिन आजाँयगे।

प्रकाशवती इस बातका भी अवश्य ध्यान रक्खो कि, जब तुम कोई वस्तु बाजारसे मँगाओ तो प्रथम दो, चार दूकानों पर उसका भाव पुछवालो; और घर आने पर तोल लो कारण कि, ऐसा बहुधा होते देखाहै कि, उसमेंसे नौकर चाकर चुरा लेते हैं जब वह कम निकलै तो उसी समय उस दूकानदारसे मँगालो; और कभी किसीसे उधार सौदा लेकर मत खाओ, इसमें ओछापन कहलाता है, जब मँगाओ तब नकद दाम देकर प्रत्येक वस्तुको बड़ी संभालसे रक्खो जैसे कि, बहुतसी स्त्रियें नाजकी छाँटन फटकनको इधर उधर पड़ा रहने देती हैं, इस कारण उसे चूहे खाजाते हैं, जिस समय चूल्हेमें जलते२ लकड़ियोंके कोयले झड़जाँय तो एक घड़ेमें भर कर ढक कर रख दे, वह जाड़ोंमें तापनेके लिये काम आवेंगे, फिर तुम्हें पैसा नहीं डालना पड़ेगा, दाल धोवाकरो तो उसके छुकले इकट्ठे करकै रखती जाओ निकट पड़ोस में किसीकी गायको खिलानेके लिए भेजदो तो उसके मुँह पड़जायँगे और जब चाहो तब उसके यहांसे गोबरमँगासकोगी, वैसे देनेमें स्त्रियें मुँह सकोड़ती हैं और जब तुम चुन्नी भुस्सी छुकले आदि उसकी गाय भैंसके खानेको दिलवाभेजोगी तो तुम्हारा उस पर जोर रहैगा, और अवसर पड़ने पर वह तुम्हें दूध मट्ठाभी दे दिया करैगी, जिस समय खरबूजा तरबूज मँगाओ तो उसके बीज एक थल्लेमें डालती जाओ फिर बहुतसे होजांय तो चलनीमें डालकर

मलकर धो रक्खो फिर सुखाकर छीलकर उनकी मींग निकालकर बूरेमें पागलो खानेके काम आजायगी और हरसमय घरमें मीठा भरा रहैगा जो स्त्रियें चतुर होतीहैं वह इनको इसीप्रकार संभालकर रखतीहैं, घरमें सभी वस्तुएँ काम आजाती हैं, घरकी खाट टूटजाय तव उसे नई बुनवालो और पुराने बानोंको उधेडकर उसकी त्रिन्डी बनाकर रखलो बहुतसी कंजारियें छींके वेचने आया करतीहैं वान देकर उनसे छींके मोल लेलियाकरो और कुछ तुम्हारे वर्तन माजनेके जूने बनानेके काम आजायँगे जो कोई बगवानी या कूंजडी तरकारी अथवा फल फलैरी वेचनेको आवै उससे नाज देकर मोल कभी मतलो, नाजकी वस्तु मोल लेनेसे दोपैसेका नाज हो गा तो वह तुम्हैं धेलेकी चीज देगी, इसकारण स्त्रियोंका नाज आदि घरकी वस्तु देकर मोल लेना उचित नहीं जव देखोकि अवके सालमें लिहाफ रजाई नई वनगई तो उनके रुअड़को उधेड़कर कातनेवालीको घर बुलवाकर कतवालो और जो तुम उसके घर कातनेको दोगी तो वह रुअड़ वदल लेगी जब कत कर तैयार होजाय तो उसकी दरी बुनवालो, दरी बुनकर आजाय तो उसके सिरे बटलो. जितनी तुम्हारी यह घरकी दरी चलैगी उतनी बाजारू दरी नहीं चलैगी, जो तुम किसीसे वहनेलाकरो तो ऐसा मतकरो जिसमें कि थुक्का फजीती होतीरहै जैसे तुम्हारी चार पांच मिलनेवाली हैं तो उन चारोंके साथ एकसा व्यवहार करो, मैं तुम्हैं वह रीति बताये देती हूं कि, " हर्रा लगै न फटकरी" डबल खर्च न हो और तुम्हारे घरका बनउआ बनजाय जो बहनेली प्रथम तुम्हारे यहाँ थाली भेजे

तो तुम उसे आप मत खालो अपनी दूसरी वहनेली के यहां वही थाली भेजदो, फिर दूसरे त्यौहारके आनेपर वह तुम्हारे यहां भेजेगी फिर तुम दूसरीके यहां भेजदेना इसी रीतिसे तुम्हारा लैन दैन वढजायगा, मेरी वहनने ऐसाही किया था, घरमें जरा मीठा नहीं उठाती इधरका उधर और उधरका इधर करती, उसकी इसी चतुरताको देखकर तौ मैं अत्यन्तही प्रसन्नहुई इसीरीतिसे वहनेला करना सर्वसाधारणको उचित है,जो स्त्रियें इसप्रकार चतुरतासे गृहस्थीका लालन पालन करतीहैं वह धनवान् होजातीहैं और धनसे धर्म करती हैं इससे उनका इस लोकमें नाम और परलोक सुधरता है, संसारमें वह भारी भरकम गिनी जातीहैं ।

हे वहन ! इसकारण तुम घरके सभी कामोंको ध्यान देकर सीखो जिससे तुम्हें किसीकी वात न सहनी पडै कहावत है कि, "वातकी मारी न मरी तौ लातकी मारी क्या मरैगी ।" इसकारण वातही तौ नहीं सही जाती, इससे ऐसा काम क्यों करो जिसमें किसी की वात सहनी पड़ै हे वहन ! जिससमय कोई भिक्षुक भिक्षा मांगनेके लिये आवे तो उसे सौकाम छोड़कर भिक्षा देआओ क्योंकि जो अपने हाथसे निकल जाय वही अच्छाहै और कदाचित् किसी समय भिक्षा न दो तो उससे यह मत कहो कि, फिर लेजइयो ऐसा कहनेसे वाक्यदान होजाताहै इससे बड़ा भारी पातक लगताहै, फिर घरमें नटनी इत्यादिका नाच न कराओ जो स्त्रियें घरमें नाच करातीहैं उनको घरके वरतनोंसेभी हाथ धोने पड़तेहैं हे वहन ! एक नटनी का मैं यहां दृष्टान्त देतीहूं कि,

एक स्त्रीने ज्येष्ठ मासकी ठीक दुपहरीमें नटनीका नाच कराया घरकी सब स्त्रियें तौ नाचदेखनेमें लगगईं और उन्हींमेंकी एक स्त्री उस घरके सब बरतन भांड़े उठाकर चम्पत हुई,जब नटनी नाचकर चलीगईं तब वह स्त्री घरमें घुसी तो घरमें सूनसान देखा और मनही मन शोचने लगी कि, मुझे क्या कुछ भ्रम होगया घरमें तौ एक बरतनभी नहीं सूझता, फिर और स्त्रियों से बोली कि, घरके सब बरतन कहां गये, दूसरीने कहा कि हाय ! आज तो बड़ा धोखा हुआ, हम सब तौ नाच देखने में लगी रहीं. कोई सब घरमेंके बरतन उठाकर लेगया।

हे बहन ! स्त्रियोंको ऐसे काम कभी नहीं करने चाहियें; जो स्त्रियें शोच समझकर इस हमारे लिखेहुएके अनुसार काम करैंगी उनको इन आपत्तियोंमें नहीं पड़ना होगा ।

हेबहन! गृहस्थीमें किस रीतिसे चलना चाहिये वह मैंने सभी तुम्हें बताया मेरी सीख कुछ खोटी नहीं है, यह सभी तुम्हारे काम आवैगी ।

इति प्रथमसोपान समाप्त ।



द्वितीयसोपान।

(किशोरीअवस्था)



भोजनसंस्कार।

हे बहन! अब मैं तुम्हें सबप्रकारके भोजन बनानेकी रीतिभी बतातीहूं, कारण कि जिन्हे भोजन बनाना नहीं आता उनकी घर २ निन्दा होती है, और जो स्त्रियें स्वादिष्ठ भोजन बनाना जानतीहैं अवसर आनेपर उनकी सभी प्रशंसा करतेहैं भोजन बनानेका कार्य स्त्रियोंकेही ऊपर छोड़ागया है, कारण कि, वह घरमें रहतीहैं, और कोई२ मनुष्य तो इसी अभिप्रायसे अपना विवाह करते हैं कि, हम नौकरीपरसे हारे थके आवेंगे तो हमें घरमें बनी बनाई रोटी तो तैयार मिलैगी, परन्तु कोई २ स्त्रियें ऐसी मूर्ख होतीहैं कि, उनसे तवेपर चँदियातकभी डालनी नहीं आती वह ससुरालमें जाकर बड़े नाम सुनती हैं, उठते बैठते सासु ननँद ताना मारतीहैं, कि वह रोटी बनाना क्यों सीखैगी. बड़े बापकी बेटीहै पैसे दिये और बाजारसे कचौड़ी मँगाकर खाली। इत्यादि बातैं उन्हैं सहन करनी पड़तीहैं; इस कारण हे बहन! जिस प्रकारसे मैं तुम्हैं भोजन बनानेकी रीति सिखाऊं उसको ध्यान देकर सुनती जाओ।

भोजन बनानेमें सबसे प्रथम रसोईघर बहुत साफ और पवित्र होना योग्यहै, जहां बैठकर तुम रसोई बनाया करो उसकी दीवारोंपरभी दोनों समय झाड़ू मार लियाकरो, कारण कि, दीवारोंपर जो जाले होते हैं वही भोजन बनाने के समय तरकारी दालमें गिरतेहैं, फिर रसोईघरमें जो वस्तु रक्खो, उसे

ढककर रक्खो; भोजन दो प्रकारके होतेहैं (१) कच्चा, और दूसरा पक्का,सो हे वहन! प्रथम मैं तुम्हें कच्चा भोजन बनानेकी रीति बताती हूं. जो कि यह बारहों महीने आता है.

जब कि तुम्हें उड़दकी काली दाल करनीहो तौ इस प्रकारसे करना कि प्रथम ओखलीमें डालकर उसे मूसलसे छड़लो जिससे कि, उसके छुकले निकल जाँय. फिर सेरभर पानीमें एक गांठ हलदीकी पिसी हुई डालकर उसे चूल्हेपर रखदो. और आंच बालतीजाओ, जव वह पानी गरम होजाय तौ पाव भर दालको दो तीन वार धोकर उसमें छोड़दो और छटांकका चौथा हिस्सा उसमें सामर डालदो, फिर जव देखो कि, दाल गलगईहै तो उसे उतारकर अंगारों पर रखदो, फिर चमचा लाल होनेको आगमें रखदो, घी, मिरच, हींग चमचेमें डालदो जव देखो कि मिरचैं काली पड़गईं तौ दालको छौंकदो।

उड़द की धोवादालको इस रीतिसे करना. प्रथम दालको पानीमें भिगोदो जव वह दाल फूलजाय तौ धोडालो छुलका न रहने पावैं, फिर कपडेसे पोंछ लो; जव फरैरी होजाय तौ जरा घी कढ़ाईमें डालकर अकोर लो फिर निकाललो, पतीलीमें सेरभर पानी गरम करलो,वह पानी निकाल कर कसैरीको फिर चूल्हेपर धरदो,उसमें जरासा घी डालो, पिसीहुई सूखी हलदी डालो, जरासा जीरा डालो फिर उसमें दालको डालकर भूनो, जव खूब भुनजाय तो जो पावभर दालहो तौ तीन पाव पानी डालो, दो तीन उफान आकर दाल गल जायगी, फिर चूल्हेपरसे उतारलो, नीचे

अंगारे रक्खो, ऊपर कोयले रक्खो, आध घंटेबाद चमचा लाल कर घी मिरच धनियाँ हींग डालकर छौंकदो, यह दाल खाने में अत्यन्तही स्वादिष्ट होगी; हे बहन ! इसी रीतिसे मूंगकी धोवादालभी बनालेना अब मैं तुम्हैं भात बनानेकी रीति बताती हूं; भात दोप्रकारके चावलों का बनताहै एक तो पुराने हंसराजके चावलोंका और दूसरा नये सुनखरचेके चावलोंका, बहुधा स्त्रियोंसे भात बिगड़ जाताहै, उनको करने की रीति नहीं आती।

(१)--प्रथम हंसराजके पुराने चावलोंको तीन वार धोकर पानीमें आध घंटेतक भीगनेदे, और दो सेर पानी कसेरीमें भरकर गरम करनेको रखदे जब वह पानी सनसनाने लगे तो चावलों को छोड़दे, फिर चमचेसे चलादे दो तीन वार उफान आजाय तो चावल निकालकर देखै गले या नहीं, जब चावलमें एक कन रह जाय तो उतारलो और छन्ना बांधकर माड़ पसालो. जब देखलो कि, पानी इसमें बिलकुल नहीं रहा तो उसमें आधी छटांक घी डालकर हिलादो जरा देर उघड़ा रख कर फिर ढक दो बस इस रीतिसे करनेसे तुम्हारा भात कभी नहीं हलुआसा होगा।

(२)--सुनखरचेके चावलोंको इस रीतिसे करो प्रथम पानी भरकर कसैरीमें रखदो जब वह पानी सनसनाने लगै तो चावल धोकर उसमें डालदो दो कन गल जाँय एक शेषरहै तो उतारलो, फिर कपड़ा बांधकर मांड पसालो, फिर हिलादो ढककर रखदो तो यह भात कभी गलकर हलुआसा नहीं होगा बरन बिखरमा होगा।

(३)-बेसनकी कढ़ी-इस रीतिसे बनती है कि, प्रथम बेसनमें जरासी हींग घिसकर बेसनको पानीमें घोलकर खूब फेंटो, जब वह खूब फिटजाय तो पहले पानीमें एक फुलोरी डालकर देखलो, जो वह फुलोरी पानीमें ऊपरको उतरा आवे, तो पीसकर जरासा नमक डालदो; कढ़ाईमें घी छोड़ो जब घी बोलकर चुप होजाय तो उसमें फुलोरी तोड़ो; वह अच्छी खरी सेंककर निकाललो, फिर कढ़ाईमें हलदी, अजवायन, मेथी, मिर्च ,हींग आदि सब मसाला डालदो, और बेसन घोलकर उसमें मट्ठा डाल दूधकी तरह उसे पतला करलो. जब देखो कि, कढ़ाईका मसाला होगया तो उस घुले हुए बेसनको कढाईमें छोड दो; फिर धीरे २ चलाती रहो. सामर डालदो, जबतक कढ़ी चुरने न लगै तबतक बराबर चलाती रहो, दस बारह उफान कढीको आजांय तो उसे फलोरी डालकर उतारलो, बस ऐसा करनेसे बडी सोंधी कढी होजायगी तीन घंटेमें यह तैयारहोती है ।

(४)-मूंगकी कढी-प्रथम मूंगकी दालको धोकर उसकी पिट्ठी बहुत महीन पीसलो, फिर उसको थालीमें रखकर खूब फेंटती जाओ कढाई में घी डालकर चढाओ जब घी बोलकर चुप होजाय तो उसमें पिट्ठीकी फुलौरी तोडो, दोनों तरफसे सेंक कर उतारलो; फिर उस शेष पिट्ठीको मट्ठेमें घोलकर कढाईमें छोड दो अपनी अन्दाजसे उसमें नमक डाल दो, हलदी, मिरच, अजवायन, यह कढाईमें मट्ठेके छोडनेसे प्रथम भूनलो, जब पांच सात उफान आजाँय तो फुलौरी डालकर उतारलो, बस यह कढी अत्यन्तही सुन्दर बनजायगी ।

(५)-आटेकी रोटी-को इसप्रकार बनाना कि, हे बहन! प्रथम तो आटेको कड़ा करके माड़ना, फिर जरा २ सा पानी देकर दोनों हाथोंसे घुक्की देकर माड़ती रहना, जब खूब नरम होजाय और उसमें छाला पडने लगें तो पर्थन लगा कर छोटी २ लोइयें बनालेना फिर दो लोइयोंके बीचमें पर्थन रख लोइयोंको चुनियाले और हथेलीसे रोटीको बढावे यह अवश्य ध्यान रक्खो कि, रोटी टेढ़ी बेढ़ी न हो, पतले किनारे और गोल रोटी रहे जब तवा होजाय तो तवे पर उस पोई हुई रोटीको डाल दो जब रोटीमें झांइयेसी पडने लगें तो लौट दो, जब चित्ती पडजांय तो उतार कर चईमें सेंको धुएँमें रोटीको कभी न सेंको, जल न जाय इस बातका भी ध्यान रक्खो, जब दोनों ओरसे सिकजाय तो किसी ऐसे बरतनमें रखती जाओ जिस्से हवा न लगे, हे बहन! यह रोटी खानेमें अत्यन्त ही हाजिम होती हैं, चकले बेलनकी रोटी तो सभी करलेतीहैं परन्तु हाथकी रोटी बहुधा स्त्रियोंसे नहीं आती जिस समय तुम्हें चकले बेलनकी रोटी करनी हो तो उसका आटा कडा रक्खो, लोई बनाकर चकले पर बेल २ कर रोटी बनालो; यह रोटी हजम देरमें होती हैं, हे बहन! अब मैं तुम्हें पूरी, कचौडी, तरकारी, खीर, रायता इत्यादि बनानेकी रीति भी बताती हूँ, कारण कि, इनका गृहस्थीमें नित्य प्रति काम रहता है, और सब प्रकारकी मिठाई बनाना भी बता देती परन्तु अभी इतना बताया हुआ सीखलो, जब यह सब बनानेमें चतुर होजाओगी और अधिक सीखनेकी इच्छा होगी तो सेठ खेमराजजीके यहांकी छपीहुई व्यंजनप्रकाश मँगा

दूंगी उसमें भाँति२ के भोजन बनानेकी रीति लिखी है, वह पुस्तक प्रत्येक स्त्रीके उपयोगी है, उसके पढ़नेसे भी तुम्हें बहुत प्रकारके भोजन बनाने आजाँयगे, यह कच्ची रसोई तो मैंने तुम्हें बताई, अब पक्कीभी बताती हूं ।

(६)--पूरी--प्रथम आटेको खूब कड़ा माड़े, फिर मल्हार कर भली भांतिसे चिकना करले और उसकी छोटी २ लोइयें बनाकर पूरियें बेल कढ़ाईमें छोड़ताजाय, जब पूरी फूलैं तभी लौटदे दोनों ओरसे सेककर उतारले; पूरियोंको एक बरतनमें रखता जाय बस बहुत मुलायम पूरी होजायँगी ।

(७)--खस्तापूरी--इसमें सादी पूरीसे दूना घी लगैगा; सेर भर मैदामें माड़ते समय छटांकभर घी, तोला भर नमक, जरासी अजवायन डालदे, फिर छोटी २ लोइयां बनाकर चकलेपर पतली २ पूरी बेल दोनों तरफसे सेंक कर उतारले खानेमें यह पूरी बहुत खस्ताहोगी ।

(८)--बनारसीपूरी--इसमें खस्तासे भी अधिक घी लगैगा, इसकी मैदा रोटीके आटेके समान माडै; फिर पिट्ठी पिसी हुईको लोईके बीचमें रखकर लोईका मुँह मूँददे पर्थन लगाकर पूरीको चकले पर फोके २ बेलै, घी होजाय तो कढाईमें छोडदे, दोनों ओरसे सेंक कर उतारले, यह पूरी खानेमें बडी स्वादिष्ठ होगी ।

(९)--कचौड़ी--मैदाको नमक डालकर मुक्कीदेदेकर खूब माडे और पिट्ठीमें सब मसाला लाल मिर्च, धनिया, जीरा, हींग, इलायची डालकर महीन पीसे, फिर उसी पिट्ठीको लो-

इयोंके भीतर भरै, हाथोंमें पानी चुपड़ ले हाथसेही कचौड़ी ठेक २ कर कढाईमें छोंड़े दोनों ओरसे सेंककर खूब लाल करके उतार ले, वहुत सुन्दर कचौड़ी होजायँगी ॥

(१०)-खस्ता कचौड़ी-प्रथम पिट्ठीमें सव मसाले डाल कर उसे घीमें अच्छी तरह सेंकै, फिर उसको सिलवाटपर खूब महीन पीसले, उस पिट्ठीको लोईमें भरै, पर्थन लगाकर वहुत धीरे २ वेलै, घी होनेपर कढाईमें छोडता जाय फिर दोनों ओरसे सेंक कर उतारले; इन कचौडियोंमें आटा वहुत थोड़ा लगाना, इसका आटाभी नमक डालकर रोटीके समान नरम माडना ।

(११)-तरकारी आलू-सेरभर आलुओंमें पाव भर घी लगता है, उसकी रीतिभी मैं वतातीहूं, सवसे प्रथम आलुओंको छीलै, और उनको चाकूसे गोदै, फिर कढ़ाईमें घी छोड़कर आलू धोकर उसमें छोड़दे, फिर आंच वालता जाय, भुनते २ गलजायँ तो निकालले, फिर चूल्हे पर पतीली चढ़ावै, घी, तथा पिसी हुई धनियां, हींग, जीरा, [illegible] आदिको उस पतीलीमें छोड़दे जव मसाला भुनजाय तो [illegible] देकर खूब भूनता रहै अन्दाजसे नमक डालदे, [illegible] डाल-कर ढक दे नीचे धीमी २ आंच वालता [illegible] कि पानी नहीं रहा तो गरम मसाला डालकर उतार लै; यह आलू खानेमें रसभरीके समान होंगे, सावत रहैंगे टूटैंगे नहीं ।

(१२)-भिन्डीसाबत-प्रथम भिन्डीको धोकर भीजे-हुए कपड़ेसे पोंछले, जिससे कि उनमें कांटे न रहैं, फिर

हलदी, धनियाँ, जीरा, मिर्च, हींग, अमचूर इत्यादि मसालेको खूब महीन पीसकर करेलोंके समान तराशकर उनके बीचमें थोड़ा २ मसाला भरदे फिर कढ़ाईमें घी डालकर भिन्डी छोड़दे, खूब भूनतारहै, नमक पिसाहुआ डालकर ढकदे, तो यह भिन्डी साबत खिलमा बहुत सुन्दर होजाँयगी, और इस रीतिसे करनेसे लुआबभी नहीं उठैंगे। इसी रीतिसे साबत बैं-गनभी बनते हैं।

(१३) करेला—इसके बनानेकी कई रीतिहैं, यहां दो एक बताती हूं; इसके बनानेमें चतुराई तो इस बातकीहै कि कड़वापन न रहजाय, उसकी रीति इसप्रकार है, प्रथम साबत करेलेके ऊपरके कांटोंको छीलकर धोले, और चाकूसे चीरकर उसके भीतरके बीज निकाल डालै,फिर नमक लगा-कर धूपमें रखदे। जब उसका पानी निकल जाय, तो धो-डालै, फिर धनियां, लालमिर्च, सौंफ, हलदी, अमचूर,नमक इन सबको पीसकर करेलोंमें भरकर डोरेसे उनको बांधता जाय, फिर थोड़ासा पानी पतीलीमें भरकर चूल्हेपर चढ़ादे, फिर जब वह गलजाँय तो कढ़ाईमें घी डालकर तलले, जरा२ सा दहीका छींटाभी देताजाय, बस यह करेले बहुतही सुन्दर होंगे, कड़वे जरा नहीं होंगे।

और इनकी दूसरी रीति यह है कि इनके चंदे बना २ कर धोले, फिर कढ़ाईमें घी छोड़कर उसमें हलदी, मिर्च, धनियाँ, सौंफ पीसकर भूनै, फिर करेले छोड़दे, गलनेलायक पानी डालदे, जब गलजाँय तो दही देकर भूनै, फिर गरम मसाला डालकर उतारले, यहभी खानेमें अच्छे होते हैं।

(१४)-जिमीकंद-इसका वनाना वहुधा स्त्रियोंसे नहीं आता, इसके वनानेमें वड़े खटरंगे करने पड़तेहैं, तव भी इसकी पपड़ाहट दूर नहीं होती, इसकारण मैं तुम्हैं इसके वनानेकी सरलरीति वतातीहूं प्रथम जिमीकंदके टुकड़े२ काट-कर पतीलीमें भरकर उसमें पानी डाल उवालनेके लिये रखदे और पतीलीमें इमलीके पत्तेभी भरदे, जब दो घंटे चूल्हेपर धरे होजाय तौ उतारले और गोलेके तेलमें तलले, फिर हलदी, मिर्च, दालचीनी, तेजपात, धनियां, लौंग, इत्यादि मसाले पीसकर घीमें भूनै और फिर जिमीकंदको डालकर दही देकर भूनै, रसीला करना हो तो पानी जियादे डालै, नहीं तो पानीका छींटा दे पिसीहुई साँभर डालदे, फिर गरम मसाला डालकर उतारले, यह इसरीतिसे वनानेमें कभी नहीं पपड़ावैगा।

हे वहन। घियातुरई, रामतुरई, काशीफल, मूली, सोया, पालक, लाहीगोभी इत्यादि तरकारी वनानेकी तौ साधारण रीतिहै, इन्हैं तौ तुम विना वतायेही वनासकोगी इनके वनानेमें कुछ भेद नहींहै।

(१५)-मखानोंकी खीर-प्रथम मखानों को भरे घीमें तललो, जव वह भुनजांय उतारलो, पीछे कढ़ाईमें दूध औटाओ, जव दूध खूव औटजाय तो मखाने छोड़दो, तीन चार उफान आनेके पीछे उसमें गोला, पिस्ता, वदाम, छुहारा, किसमिस इत्यादि मेवा डालदो, दश मिनटके वाद उतारलो, पीछे बूरा डालदो- वस यह खीरभी वहुतही सुन्दर होगी।

(१६)-रामतुरईकी खीर-इसे छीलकर कद्दूकसमें

कसलो, सेरभर दूधको पतीलीमें औटालो, कसेहुए कद्दूको धोकर पतीलीमें उबालनेके लिये रखदो, जब वह गलजांय तो उतार कर खूब निचोड़लो, फिर उस औटते हुए दूधमें तीन छटांक कद्दू छोड़दो, पीछेसे गोला, किसमिस, छोटी इलायची डालदो जब तीनचार बार उफान आजाँय तो उतारलो, पीछेसे बूरा डालदो।

(१७)–कूटूकी खीर–प्रथम कूटूको भाड़में भुनाले; जब उसकी खीलैं होजांय तो बीनले, काला छुलका न रहने पावै, दूध औटाकर उसमें खीलैं छोड़दे दो एक उफान आने पर गोला, किसमिस इलायची, डालकर उतारले. नीचे उतार कर बूरा डालदे।

(१८)–चावलकी खीर–चार सेर दूधको कढ़ाईमें खूब औटावै, औटते २ जब वह आधा रहजाय तो पावभर हंसराजके पुराने चावलोंको धोकर उसमें छोड़दे, कर्छलीसे बराबर चलाता रहै, जब चावल गलकर मिलजांय तो गोला किसमिस, पिस्ता, बादाम तोला २ भर सब चीजें डालकर उतारले और बूरा डालकर जरासा केवड़ा डालै फिर थालीमें परसकर चांदीका वरक लगाकर खाय तो इसके खानेमें अत्यन्तही स्वाद आवैगा।

(१९)–हलुआमोहन भोग–हे बहन! हलुए बनते तो कई चीजोंकेहैं. परन्तु इस समय मैं एकही हलुआ बताती हूं यही हलुआ सबसे बढ़करहै पाव भर सूजीको पाव भर घीमें भूनै जब भुनते २ सुगंधिआनेलगे तो उतारले आधसेर बूराको डेढ़सेर पानीमें घोलकर गरम करनेके लिये रखदे;

फिर कढ़ाईमें सूजी डालकर छान कर सरवतको छोड़दे, वरावर कछेलीसे चलातारहै, इसके पीछे, गोला, किसमिस, इलायची, सौंफ डालकर उतारले, यह हलुआ वहुतही वढ़ियाहोगा।

(२०)-गुझिया-गुझियोंके वनानेकी रीति इस प्रकार है कि, प्रथम सेरभर मैदाको तीन छटांक घी डालकर माड़ै; नरम न माड़ै करीं माड़; और सेरभर मैदामें पावभर घी डालकर भूनले जव वह खूव भुनजाय तौ उसमें जरासा कपूर डालै; गोला, किसमिस, इलायची तीन पाव वूरा डालै; मैदाकी छोटी२ लोई करके वेलै फिर उसमें कसार भरकर किनारों पर पानी लगा मोड़दे फिर गूंदकर कढ़ाईमें छोड़दे दोनों ओरसे सेककर उतारले खानेमें अत्यन्तही स्वादिष्ठ और खस्ता होंगी अकसर होलीके आनेपर स्त्रियां इन्हें वनाया करतीहैं।

(२१)-टिकोने-इनको इस प्रकार वनाना कि, प्रथम पावभर मैदाको जरासा नमक डाल, छटांक भर घी देकर माड़ना, आलुओंको छील कर उनके नन्हे २ टुकड़ेकर घी में भूनना जव वह गलजाँय तौ साँभर चूक और भुने हुए चनेके वखतोंको पीसकर उसमें मिलालेना; जरासा दही डालना; फिर छोटी २ लोई वनाकर पूरी वेलना, चाकूसे वीचमेंसे काटकर दो करना फिर दोनों सिरोंको मिलाकर पानीसे जोड़ना, इसके उपरान्त उसमें कूर भरकर गूंदन दे देना, यह भी खानेमें वड़े खस्ता होंगे।

(२२)-भुनीहुई खिचड़ी-भुनेहुए आधसेर हंस-

राजके पुराने चावल आधसेर मूंगकी धोई दाल चार आलूके टुकड़े इन सबको मिला कर धोडाले, फिर हलदी, लौंग, कालीमिर्च, जीरा इनको घीमें भूने फिर उस घीमें खिचड़ीको छोड़दे खूब भूनतारहै, सामर डालकर पानी डालदे पानी खिचड़ीके ऊपर दो अंगुल रहै फिर जब गलजाय और उसमें पानी न रहै तो नीचे उतारलो खानेमें यह खिचड़ी बहुत सोंधी होगी।

(२३)—रायता—रायते तो कई किस्मके बनते हैं इनमें केवल जीरा हींगका छौंकही तेज होनाचाहिये, काशीफल रामतुरईका भी रायता बनता है इनके बनानेकी साधारण रीतिहै मैं तुम्हैं केवल चिनौरियोंका रायता बनाना बतातीहूं।

प्रथम जरासी हींगको पानीमें घोलकर छटांकभर बेसनको घोले जरासा नमक डालदे, बेसन गाढ़ा न रहै, फिर पावभर घी कढ़ाईमें चढाकर पौनेमें थोड़ा २ बेसन डालकर कढाईमें पौनेको ठोकता जाय तो छोटी बुन्दी गिरैंगी उन्हैं दूसरी पौनियांसे चलाकर जब सिकजायँ तो उतारले फिर एक थालीमें जरासा नमक डालकर उसमें उन्हैं डालताजाय, जब वह फूलजांय तो मट्ठे वा छनेहुए दहीमें उन्हैं डालदे, सांभर, मिर्च पिसीहुई डालै, जीरे, हींगका धुँगार देकर ढकदे जरासा गरम मसाला डालदे।

(२४)—मगदके लड्डू—सूजीके बराबर घी कढाईमें चढ़ाकर मंदी २ आंच बालकर भूनतारहै जब भुनते २ उसमें सुगंध आने लगै तो उतारकर उससे सवाया बूरा उसमें

डालकर मिलावै, फिर सब मेवा डालदे, जब ठंढा होजाय तो घीका हाथ लगा २ कर लड्डू बांधले।

(२५)-मूंगका लड्डू-मोटी २ मूंगको भाड़में भुनाले फिर दलकर उसे फटकले जब छुकले निकलजायँ तो चक्कीसे उसका आटा पीसले सेरभर आटेमें आधसेर घी डालकर भूने इसे अधिक न भूने फिर ढाईपाव बूरा मिलाले मेवा डाल कर घी लगा २ कर लड्डु बांधताजाय।

(२६)-अचार आमका-आमको छीलकर उसमें नमक पिसाहुआ मिलाकर धूपमें सुखादे, फिर हलदी, मिर्च कलौंजी, सौंफ, हींग इन मसालोंको तेलमें भूनकर पीसले फिर तेलका मोवा देकर सब मसालेको मिलादे. इसके उपरान्त अचारीमें भरकर ऊपरसे तेल छोड दे तेल अचारके ऊपर तक रहै॥ कभी २ धूपमें भी रखदिया करै तेल सरसोंका हो।

(२७)-आमका मुरब्बा-हे बहन! मुरब्बे तो कई चीजोंके होते हैं परन्तु तुम्हें इस समय आमकाही मुरब्बा बताती हूं, दो सेर आमोंको छीलकर दो टुकड़ेकरके गुठली निकालडालै फिर काँटेसे गोदकर पानी भरकर मट्टीके बरतनमें जोस देले जब कुछ एक गलजांय तो उतारले फिर सेरभर सफेद बूरा डालकर कुछ एक जोस देकर उतारले; फिर सेरभर बूरेकी दूसरी चासनी तैयार कर रक्खै, इसके उपरान्त निकालकर दूसरी चासनीमें छोड़दे और ठंढाकरके अमृतबानमें रखदे।

(२८) नीबूका अचार–प्रथम नीबूको चाकूसे तराशकर दो टुकड़े करले, फिर पत्थरके बरतनमें उनका कुछएक अर्क निचोड़ कर लौंगचूरा, कालीमिर्चें, जीरा, इलायची, नमक इन सबको कूटकर नीबूकी फांकोंमें भरै, और दो कटोरियोंको बराबर जोड़कर कच्चे तागेसे बांध २ कर शीशेकी अचारीमें भरदे, फिर उस अर्कको छानकर मट्टीके वर्तनमें रखकर गरम करले इसके उपरान्त अचारीमें छोड़दे, अर्क नीबूके ऊपरतक भरारहै, नित्यप्रति धूपमें रखदिया करै ।

(२९) चटनी–तोलाभर पोदीना, आध तोला अमचूर, नमक, कालीमिर्चें, जीरास्याह डालकर सिलवटपर खूब पीसे और जरासी हींग डालदे ।

(३०) अदरखकी चटनी–अदरखको छीलकर उसको तराशले फिर धोकर पत्थरकी प्यालीमें रखकर उसमें नीबू निचोड़दे-जीरा, इलायची, नमक यह अपनी अटकलका डाले ।

हे बहन! यह ३० रीतियें भोजन बनानेकी मैंने सभी तुम्हें बताईं, गृहस्थीमें इन सभीका काम पड़ताहै, पेड़ा, बर्फी, जलेबी, खुरमे, इमरती इत्यादि बनानेकी रीति भी बताती परन्तु यह सब वस्तुएँ तो बाजारमें भी मिलतीहैं इसीकारणसे इनको नहीं बताया ।

विद्यावतीके यह कहनेपर प्रकाशवतीने कहा कि, हे बहन! तुमने प्रथम कहाथा कि, तुम व्यंजनप्रकाश मँगालेना उसमें सभी प्रकारकी मिठाई और भोजन बनानेकी भी रीति लिखी हुईहैं, सो तुम्हारे पास हो तो मुझे देदेना ।

तब विद्यावतीने अपनी आलमारीमेंसे सेठ खेमराज श्री-कृष्णदासजीके यहांका छपाहुआ व्यंजनप्रकाश दिया और कहा कि, इसको पढ़ाकरना, इसमें सभी मिठाई इत्यादिके बनानेकी भी रीति लिखीहुई हैं।

शरीरपालन।

हे बहन! शरीरका पालन करनाभी एक मुख्य कार्यहै सो मैं तुझे इसे भी बतातीहूँ जो शरीरको यत्न सहित रक्खाजाय तौ इसकी रक्षा भली भांतिसे होतीहै, सरलतासे शरीर पर कोई भी रोग अपना अधिकार नहीं जमासकता, यौवन बहुत समय तक स्थिर रहताहै, तनदुरुस्ती नहीं बिगड़ती, थोड़ी अवस्थामें ही बुढ़ापा नहीं आजाता, अकालमें मृत्यु नहीं होती इस बातको कितनेही आदमी जानतीहैं हे बहन! हम तो अपने भाग्यपर ही विश्वास करे रहतीहैं कि, जो कुछ होता है हमारे भाग्यसे ही होताहै; इसी बातको जानकर सभी मनुष्य अपने मनही मनमें विश्वास करलेतेहैं, इसकारण पीड़ा, अकाल, बुढ़ापा और अकाल मृत्यु यह सभी प्रारब्धके अनुसार होतीहैं, इसी बातको सब आदमी निश्चयकर जानतेहैं। इसीसेही हमारे देशमें इतने दुर्बल और क्षीण मनुष्य दिखाई देते हैं, इसीसेही इस देशमें मनुष्योंको थोडी अवस्था में ही बुढ़ापा आजाताहै और इसीकारणसेही इस देशके मनुष्योंकी अकाल मृत्यु होतीहै। प्रारब्धके ऊपरही विश्वास रखकर आजकलके लोग "शरीर पालन" जो एक विद्याहै उसको भूलगयेहैं, परन्तु हे बहन! प्राचीनकालमें हिन्दू संतानके बीचमें इस विद्याका बड़ा आदरथा; ऋषियोंने स्वास्थ्यरक्षाको

धर्मशास्त्रके अंशीभूत मानाहै, वह लोग जानतेथे कि, शरीरका पालन न होनेसे किसी धर्म कर्मका साधन नहीं हो सकता, इसीलिये प्रातःकर्मसे लेकर रात्रिमें निद्राके समय तक सम्पूर्ण विषयोंको नियमकी श्रेणीपर चलागयेहैं, और इन सब नियमोंको धर्मरीतिके अनुसार करनेपर स्वास्थ्यरक्षा स्वयंही भली भांतिसे होसकतीहै, स्वास्थ्यरक्षामें शरीरका पालन करनाही प्रथम उद्देश्यहै, इसी कारणसेही उस समयके मनुष्य आजकलके मनुष्योंकी भांति रोगी नहीं होतेथे न थोड़ी उमर में ही उनको बुढ़ापा आताथा; और उनकी अकाल मृत्यु भी नहीं होतीथी. सो हेबहन ! मैं देखतीहूं कि सब कोई विशेष करके स्त्रियें तो अपने शरीरपर कुछ भी ध्यान नहीं देतीं इसी कारणसे २५ ।३० वर्षकी अवस्थामेंही उनको बुढ़ापा आजाताहै, शरीरके पालन करनेसेही स्वास्थ्यरक्षा होती है, सो उसेभी मैं तुझे बतातीहूं यह भी तेरे काम आवैगी इसको ध्यान देकर सुन !

स्वास्थ्यरक्षा।

हे बहन ! स्वास्थ्यरक्षा करनेमें प्रथम इन दो नियमोंपर सावधान रहना उचित है।

१ गरमी। २ शरदी।

इन दोनों विषयोंकी ओर दृष्टि रखकर पीछे कईएक विषयोंपर ध्यान देना योग्य है।

१ पीनेका जल। २ निद्रा। ३ भोजनकी सामग्री।
४ व्यायाम। ५ वस्त्रपहरना। ६ स्नान।
७ गृहनिवास स्वच्छ वायुका सेवन। ८ मन।

गरमी—हे बहन ! शरीरमें अधिक गरमी लगनेसेही अनेक प्रकारके रोग उत्पन्न होतेहैं अधिकतापके लगनेसेही मूर्च्छा दुर्बलता इत्यादि नानाप्रकारके रोग उत्पन्न होजाते हैं, और फिर बहुत दिनोंतक वही ताप शरीरमें प्रवेशकर रुधिर चलनेकी क्रियाको दुर्बलकर शरीरको क्षीण करदेता है, इसकारण जहांतक होसके शरीरको अधिक गरमी लगने देना उचित नहीं यदि कोई बहुतही जरूरी काम हो और बाहर जानाहो तो इसरीतिसे जाना कि जिससे शिरको धूप न लगै, और शरीरनंगा न रहै; विना कपड़ा पहरे नंगे बदन घरसे बाहर जाना उचित नहीं. अधिक धूप लगनेसे कितने ही ऐसे रोग शरीरमें उत्पन्न होते हैं जिन्हें बहुतसे मनुष्य नहीं जानते, जिस रीतिसे अधिक गरमी लगनेसे जिस प्रकार बहुतसे रोग उत्पन्न होते हैं उसी प्रकार शरदी लगनेसे भी रोग उत्पन्न होते हैं।

शरदी—शरदीके अर्थसे हिम, शिशिर, शीतल जल, इत्यादि सभीको समझना। शरदीके लगनेसे ज्वर, वात, शरीरमें दर्द, पेटमें पीड़ा इत्यादि रोग उत्पन्नहोतेहैं विशेष करके बालकोंको तो शरदी बहुत जलदी सताती है गरमदेशके रहनेवाले मनुष्योंको अधिक शरदी लगतीहै उसका कारण यह है कि, गरमीसे वहलोग अधीर होकर शरीरको असमयमें ठंढ लगादेते हैं जैसे कि;

१ अधिक परिश्रम करके आना और झटसे कपड़े उतार डालना।

२ परिश्रम तो अधिक करना और विना विश्राम कियेही झटसे पानी पीलेना।

३ रात्रिमें सोते समय ओसमें सोना, अधिक हवाका लगना.

४ वर्षाकालमें शरीरको हवा लगाना, वस्त्रोंका न पहरना।

बस हे बहन ! इन्हीं कारणोंसे मनुष्योंको गरमी शरदी सतातीहै और फिर उनको अनेक प्रकारके रोग उत्पन्न होतेहैं; इन सब विषयों पर मनुष्योंको सावधान रहना उचित है।

पीनेका जल—जल जीव धारण करनेके पक्षमें एक प्रधान उद्देश्य है पानीसेही अनेक प्रकारके रोग उत्पन्न होतेहैं जलके दोषसे ही तिल्ली आदि रोग हो जातेहैं, नदी और कुएका जल शुद्धहै, जलको जब पियो तब छानकर पियो जल जिन पात्रोंमें भराहो उनको कभी खुले मत रक्खो ढक-कर रक्खो; दिशासे आकर पानी मत पियो; प्रत्येक कुएका पानी मत पियो भोजन करते समय एक या दो बार पानी पियो, हे बहन ! खड़े होकर पानी कभी न पीना, रात्रिमें बारह बजेके पीछे पानी कभीन पीना, निराहारभी पानी पीना बुरा-है, हे बहन ! जो इस रीतिसे जल पीनेमें ध्यान रक्खा जायगा तो कोई रोग नहीं सतावैगा।

निद्रा—सारेदिनके परिश्रमके उपरान्त विश्रामका नामही निद्राहै भली भांतिसे नींद न आनेसे शरीरमें पीड़ा रहती है, जो रात्रिमें जागरण करतेहैं उनका दूसरे दिन शरीर अक-ड़ने लगताहै, अंगड़ाई आती हैं, देह टूटतीहै, आलस्य छाया रहताहै, काम करनेको दिल नहीं करता, इसकारण रात्रिमें कभी न जागे; जमीन पर कभी न सोवे, वर्षाऋतुमें जब सोवै तो इस बातका जरूर ध्यान रक्खै कि, कोई कीडा मकोड़ा कान नाकमें न घुसजाय, इस कारण कानमें रुईके फोये लगाले,

गलेतक चादरको ओढ़े, जमीनके सोनेमें नसें दब जातीहैं रुधिर वहना वंदहोजाता है, शरीर तरलासा होजाताहै, सोते समय मुँह खुला रक्खे ओसमें कभी न सोवै, सोनेसे पहले नित्य-प्रति नेत्रोंमें अंजन लगावे और हाथ पैर धोकर सोवे तो नींद खूब आती है। स्वप्न नहीं दीखते. प्रातःकालही उठना उचित है सूर्य निकलनेसे प्रथम उठकर दँतौन करनी चाहिये ऐसा करनेसे शरीमें फुर्ती रहती है, चेहरा प्रफुल्ल रहता है, कोई रोग नहीं सताता।

भोजन—भोजनसेही मनुष्योंका जीवनहै. इसकारण हे वहन! इसपर विशेष सावधानी रखनी उचितहै. नीचे लिखे-हुए नियमोंको अवश्य पालन करना चाहिये।

१–भोजनका स्थान साफ हो। भोजनकी सामग्रीको कभी उघड़ा मत रक्खो।

२–भोजन करनेके पीछे स्नान कभी मत करो; भोजन पचानेके लिये कुछ काम ऐसा भी करो जिससे शरीरको कुछ कष्ट हो, परिश्रम करनेसे भोजन अतिशीघ्र पचताहै, खाली वैठे रहनेसे भोजन नहीं पचता, भोजनका पचनाही शरीरको वलिष्ट करनेवालाहै, भलीभांति पचनेसे दस्त खुलकर आता-है, नहीं तो खुलकर नहीं आता, और इसके न आनेसे मन विगड़ा रहताहै, भूंख नहीं लगती, भोजनमें अरुचि रहतीहै इसकारण थोड़ासा परिश्रम अवश्य करनाचाहिये, गरमियोंकी दुपहारियोंमें घंटा दो घंटा मनुष्य सोरहै; जिस घरमें रहै उसको नित्य बुहारडालै; कच्चा भोजन कभी न खाय. बासी तिवासी भी न खाय; यह पेटमें जाकर आंतोंमें चुभताहै,

और इसीसे शूलका दर्द पैदा होजाताहै. भोजन सर्वदा स्नान करके खाय. उसको भली भांतिसे चबा २ कर खाना योग्य है; ऐसा भोजन बहुत जलदी पचताहै; भोजनके समय अधिक पानी न पिये; भोजनके पहले भी न पिये और न अंतमें, भोजन करके आध घंटेको लेटरहे, फिर पीछे थोड़ासा पानी पिये; ऐसा करनेसे भोजन अतिशीघ्र पचताहै, भोजन करके अधिक परिश्रम न करै, और मार्गभी न चलै; ऐसा करनेसे दर्द होजाताहै. भोजन तभी करै जब खूब कड़ाकेकी भूंख लगीहो, अरुचि वा अजीर्णमें भोजन न करै, जिसके सन्मुख भोजन करनेमें लज्जा आतीहो उसके सामने भोजन न करै, जिसके देखनेसे घृणा आतीहो उसके सन्मुख भी भोजन न करै, भोजनके पीछे भोजन न करना चाहिये ऐसा भोजन पचता नहीं है; भोजन करते समय अपने पुत्र पुत्री या अपने प्यारेको अपने पास बैठालले, तो भोजन अच्छा कियाजाताहै भोजनके आदि और अंतमें थोड़ासा मीठा भोजन करै, जिन भोजनोंका परस्परमें विरोधहै उनको कभी न करै, जैसे दूधके संग गुड़, खीरके संग मट्ठा इत्यादि; हे बहन! मेरी कहीहुई रीतिके अनुसार भोजन करनेसे तुम्हैं कष्ट उठाना कभी नहीं पड़ैगा।

व्यायाम। अंग प्रत्यंगको विना चलायेहुए शरीर फुरतीला नहीं होता। और विना फुरतीके आयेहुए शरीरमें नवीन रुधिर का प्रवेश नहीं होता, इसकारण भोजनमें भी इच्छा नहीं होती देखते, २ शरीर दुर्बल होजाताहै, स्त्रियें पुरुषोंकी भांति तो कसरत करतीही नहीं उनको घरके काम धंधेही कसरतहैं मैंने

यह अपने नेत्रोंसे देखा है कि, वड़े २ घरानोंकी स्त्रियें कामकाज तो अलग रहा वरन खाटपरसे उतरकर नीचे पैरतकभी नहीं धरतीं इसीकारणसे वह सर्वदा रोगी रहतीहैं उसका यही कारण है कि, वह परिश्रम नहीं करतीं, ऐसा करनेसे उनको अपने जीवनसे हाथ धोबैठना पड़ताहै, इसकारण हे बहन! घरके काम धंधे अवश्य करने चाहिये ऐसा करनेसे भोजन भली भांतिसे पचताहै, शरीर फ़ुरतीला रहताहै. आरोग्यता अपना प्रचंड अधिकार जमाये रहती है।

वस्त्रादि पहरना-जिन वस्त्रोंके पहरनेसे शरीर स्वस्थ रहताहै और जो वस्त्र अत्यन्तही प्रयोजनीयहैं. मैं केवल उन्हीं वस्त्रोंको तुझे वतातीहूं मेरे कहनेका मतलव यह है, कि कपड़ा जव पहरो तव मोटा पहरो.शरीरको उघड़ा कभी मत रक्खो जिससे शरीरमें ठंढ न लगै; अपने ओढ़ने विछौनेके कपड़ोंको दूसरे तीसरे दिन सुखालिया करो;जो कपड़े पहरो वह साफ पहरो,मैले कुचैले कपड़े कभी मत पहरो, जो कपड़ा फटगया हो उसे सीलो ऐसा करनेसे तुमसे कोई घृणा नहीं करैगा; और तुम्हारा मनभी स्वस्थ रहैगा।

स्नान-स्नानकरनाभी शरीरकी रक्षाका एक प्रधान उपायहै, जो नित्य प्रति नियमसे स्नान नहीं करते; उनके शरीरके रोमकूप वंद होजातेहैं और इसीसे अनेक रोग उत्पन्न होतेहैं,इसकारण रोमोंका वंदपडना कदापि उचित नहीं; स्नान करनेसे रुधिरके चलनेकी शक्ति बढ़तीहै; प्रातःकालही उठ दिशा इत्यादिसे निश्चिंतहो स्नान करना चाहिये जो गरमी हो तो ठंढे जलसे स्नान करै और जो शरदी हो तो गरम

जलसे स्नान करना चाहिये; स्नान करनेसे प्रथम जाड़ोंके दिनोंमें शरीरपर सरसोंका तेल मलले फिर स्नान कर गीले अँगोछेसे शरीरको पोंछडाले । हे बहन ! इसरीतिसे नित्य प्रति स्नान करना योग्यहै ।

गृहनिवास—जिस घरमें रहो उसको झाड़ बुहार कर साफ रक्खो आठवें दिन गोबरसे लिपवादिया करो; कूड़ा करकट कोने बिचालोंमें कहीं न रहने पावै, कूड़ा होनेसे घरमें दुर्गन्ध आने लगतीहै जीवजन्तु पैदाहोतेहैं, उनके काटनेका डर रहताहै; नित्य घरमें अगर, गूगल आदिकी धूनी देतीरहो, इससे घरकी दुर्गंध जाती रहतीहै; और वायुभी शुद्ध होजाती है, कोई रोग नहीं होता, घरके दरवाजोंको प्रातःकाल खोल देवो जिससे उनमें ताजी हवा प्रवेश कर जाय, घरमें दो चार गमले सुन्दर वृक्षोंके लगाये रक्खो एक तुलसीका भी वृक्ष अवश्य होना योग्यहै; इसके रहनेसे घरमें सब प्रकारसे शांति रहतीहै; इसके दो चार पत्ते रोज खानेचाहिये यह बड़ा गुण करतेहैं; पाखाने साफ रखने चाहिये, एक घड़े पानीसे इनको सर्वदा धुलवा डालना चाहिये ऐसा करनेसे दुर्गंध न आवेगी और घरकी हवा भी शुद्ध रहेगी; घरमें अंधेरा और शील न हो; शीलका घर बहुत दुःखदाई होताहै, घरकी दीवारोंको नित्य-प्रति झाड़ डालो जिससे जाले न होने पावैं; घरमें छिपकली और उनके अंडों को न होने देओ; जहांतक होसकै हे बहन ! अपने रहनेके घरको लिपा पुता साफ रक्खो ऐसा करनेसे कोई रोग उत्पन्न नहीं होगा।

मन—मनके साथ जो शरीरका एक विशेष सम्बन्धहै

उसको सभी मनुष्य मन लगाकर अपने मन और शरीरके कार्योंको भली भांति देखनेसे जान सकतेहैं । जिस रीतिसे भोजन आदिके विषयमें भी नियमानुसार कार्य करना उचित है, ठीक उसीके अनुसार मनके सम्बन्धमें भी मनको सर्वदा अपने स्वाधीन रखना कर्त्तव्यहै, हे वहन ! कभी किसीकी अच्छी चीजको देखकर उस पर मन न डुलाओ जो परमेश्वरने तुम्हें जैसा कुछ दियाहै सर्वदा उसीपर संतोष रक्खो ।

रोगीचर्या ।

हे वहन ! अव मैं तुझे यहभी वतातीहूं कि रोगीके प्रति कैसा व्यवहार करना होताहै;यह भी तेरे उपयोगी वातहै वहुधा रोगी की सेवा स्त्रियोंसेही भली भांति हो सकतीहै; कारण कि,स्त्रियें दिन रात घरमें रहतीहैं; इसकारण उनको रोगीकी ओर विशेष ध्यान देना चाहिये हे वहन ! रोगीको ठीक समय पर दवा देनी चाहिये, विलायतमें रोगीकी सेवा सुश्रूषा करनेवाली स्त्रियें तनख्वाहपर मिलती हैं; हमारे देशमें यह रीति नहींहै; लड़केको वीमार होनेसे उसकी सेवा माता करैगी, पतिके रुग्ण होनेसे उसकी सेवा उसकी स्त्री करैगी, स्त्री और माता आदि जैसे मन लगाकर अपने पति और पुत्रकी सेवा करसकतीहैं; ऐसी प्रीति और मन लगाकर नौकरनियें सेवा सुश्रूषा कदापि नहीं करनेकी, उनसे ऐसी आशा करना बड़ी भारी भूल है ।

गृहस्थी मनुष्यको सुख दुःख सभी भोगना पड़ताहै; वहुतेरे रोगीकी हालतको देखकर दुःखीहो शिथिल होजातेहैं;और वहुतेरे रोगीकी सेवाके तरीकोंको न जानकर उसकी सेवा

नहीं करते। आजकल स्त्रियोंके पढ़नेका अधिक प्रचार होगयाहै; और बराबर होताचलाजाताहै, वह यदि हमारे बताए हुए नियमोंके अनुसार रोगीकी सेवा टहल करैंगी तो रोगीको किसी बातकीभी तकलीफ न होगी; और जो स्त्रियें पढ़ना लिखना नहीं जानतीहैं; उनको हमारे नियम सुनानेसे भी बहुत कुछ उपकार होसकताहै।

(१) रोगीके घरवालोंको इस बातकाभी ध्यान रखना आवश्यकहै कि, रोगीकी सेवा चिकित्साका एक प्रधान अंगहै, किस समय, कितनी खुराक दवा रोगीको खिलानी होगी, किस समय रोगीको उठाना बैठाना होगा; और रोगीको कैसा पथ्य दिया जायगा; जो स्त्रियें इस बातको नहीं जानतीहैं, उनको अपने रोगीकी सेवामें बहुत सी हानियें उठानी पडतीहैं- इससे रोगीको आराम न होकर वरन रोग दूना बढ़ता जाताहै।

(२) हे बहन! मैंने बहुधा देखाहै, कि, रोगीको बहुत तेज बुखार चढ़ रहाहै, उसकी खुशकीसे व्याकुल होकर रोगी हाथ पैर पटकताहै और प्यासके मारे पीनेके लिये ठंढापानी मांगताहै, उस समय घरके लोग विना शोच विचार किये उस विचारेको ठंढा पानी पीनेको दे-देतेहैं रोगीका तो जायका बिगड़ही जाताहै वह भांति २ की खानेकी चीजें मांगताहै घरवाले उसपर दयाकर झटसे बड़े लाड़ प्यारसे उसको खानेके लिये देदेतेहैं; वह यह नहीं जानते कि, इस खिलानेका कैसा भयानक फल फलैगा, यही विचारकर मैं तुझे रोगीकी सेवाके नियम संक्षेपसे बतातीहूं। मैं जो यह नियम बतातीहूं, यह सभी स्त्रियोंको याद रखने

उचितहैं। इसके अतिरिक्त वैद्य और डाक्टर जो कुछ कहैं वही करना योग्यहै।

सेवाकरनेवालीका कर्त्तव्य।

रोगीको किसी समयभी अकेला न छोड़े उसके पास एक न एक आदमी हर समय बैठारहै, सेवाकरनेका भार स्त्रीकोही देना उचितहै; जो स्त्री रोगीकी सेवामें नियुक्तहो वह निरोगी और वलिष्ठ तथा धैर्य्यवानहो; वालक और छोटे २ वच्चोंके लिये तो स्त्रीही सेवाकरनेवाली चाहिये; रोगी चांहै कैसाही घवडावै और चिल्लावै परन्तु वह स्त्री विना घवडायेहुए स्थिर भावसे स्थित रहकर रोगीको धीरज वँधाती रहै। वैद्य जिस रीतिसे पथ्यपालनकरनेको कहगये हों उसपर विशेष ध्यान रखना उचितहै; दवाइयोंमें किसके वाद कौनसी दवा देनी होगी इसका ध्यानभी रखना उचितहै। नित्य रोगीके शारीरक लक्षणोंका परिवर्त्तन और रोगी के सम्वन्धमें जो कुछ नई वातहो उसका स्मरण रखनाचाहिए और वह सव वातें वैद्यसे अवश्य कहदेवै। रोगीके दस्त पिशावका रंग और आकार परिमाण स्मरण रखकर वैद्यसे कहदेवे और फिर जिस रीतिसे वैद्य कहै उसीके अनुसार कार्य करै।

सेवाकरने वाली स्त्री प्रौढा और स्थिर बुद्धिवाली होनी उचितहै यदि रोगी सहसा संज्ञाहीन होजाय; या वाईमें भरकर वकवादकरै अथवा विछौनेसे उठ २ कर भागने लगै तो स्त्रीको उचितहै कि, वह निडर होकर अपना कर्त्तव्य पालनकरतीरहै और सर्वदा प्रसन्न मनसे रोगीके मन वहलानेके लिये कहानी आदि सुनाती रहै, जिससे उसका मन प्रफुल्लरहै।

चाहै रोगीको कितनीही कठिन बीमारी क्यों न हो परन्तु रोगीसे यह कभी न कहै कि, तेरी बीमारी बड़ी कठिन है ऐसा करनेसे रोगीको अपना प्रबल रोग अल्प विदित होगा रोगके सम्बन्धमें चिन्ता हीनता और प्रफुल्लताही रोगीको निरोग करनेका प्रधान उपायहै; यह बात सभी स्त्रियोंको स्मरण रखनी उचितहै ।

रोगीके घरमें धीरे २ बात चीत करै, अधिक चिल्लाकर वार्त्तालाप न करै । रोगीसे रोगके सम्बन्धमें कुछभी बातचीत न करै यदि रोगी अपने रोगके विषयमें कुछ प्रश्न करै तो उसको उत्तर ऐसा देना चाहिये कि, जिससे रोगीको धीरज और भरोसा बनारहै ।

रोगीके घरमें धीरे २ बातचीत करै, तथा कोई कठिनशब्द न बोले; रोगीके सो जानेपर धीरे २ चलना उचित है, रोगीके पास रहनेवाली स्त्रीको पैरोंमें बाजे इत्यादिका पहरना ठीक नहीं रोगी नीचेके घरमें रहता हो तो उस घरकी छतपर किसी-को चलने फिरने न देवे; रोगीके सन्मुख दो जनोंमें चुपके २ वार्त्तालाप नहींकरने देवै, ऐसा करनेसे रोगीको अपने रोग पर संदेह होताहै ।

जब रोगीका रोग कठिनहो, तो उसे बिस्तरपरसे उठने न देवे,करवटलेने,ठसक देकर बैठाने, हिलाने, डुलाने, या दस्त, पेशाबकरनेमें सेवाकरनेवाली स्त्री रोगीको सहारा देतीरहै । यदि रोगीको उठनेकी जरूरतपड़े, तो अपने गलेमें रोगीके दोनों हाथ डालकर अपने हाथसे उसकी कमरको पकड़ धीरे २ उठाकर बैठावे, इसीप्रकार और २ कामोंमें सहायताकरनी

उचितहै, तकियेपर शिर उठातीसमय रोगीके दोनों नेत्रोंको बंदकरदेना उचितहै, नहीं तो रोगीको घूमनीआजाती है, फिर रोगी मूर्च्छित होजाताहै। जो रोगी बहुत दुर्बल होगयाहो और उसका शिर तकियेसे अलग होगयाहो खाटके वान उसके शिरमें चुभनेके कारण वह छटपटाताहो तो जानलो कि, यह इससमय बेचैनहै, इसकारण ऐसे समयमें उसकी अवस्था देखकर या उससे विनापूछे तुरन्तही उसके सुभीतेका उपाय करदेना उचितहै।

हे बहन। प्रातःकालही रोगीको पेशाव पाखानेसे निश्चिन्त करादेना चाहिये, एक बड़ा और गहरा बरतन खाटके नीचे रखकर उसमें कुल्लाकराना, गरमपानीसे मुँह हाथ धुलाकर साफ कपड़ेसे पोंछकर थोड़ीदेर तकियेके सहारेसे रोगीको बैठानाचाहिये।

कठिनरोगोंमें रोगी सबेरे बहुतही सुस्त होजाताहै, इसके पीछे मुँह धुलानेके उपरान्तही वैद्यकी व्यवस्थाके अनुसार पथ्य और उत्तेजक द्रव्य देना चाहिये; इससमय सेवाकरने-वालीको रोगीपर विशेष ध्यानरखना कर्तव्यहै, अर्थात् सब-काम छोड़ उसको रोगीकी सेवाही करनी उचितहै।

रोगीका घर–जिस घरमें रोगी हो वह सबसे बड़ा, सुन्दर, हवादार और धूप आने योग्य हो। रोगीके शरीरमें ठंढी हवा न लगनेपावे; एकओरकी ऐसी खिड़की खोलदेवे जिससे घरमें धूपआवे और रोगीको अधिक नुकसान न पहुँचे ऐसे घरमें रहनेसे रोगीको कुछ हानि नहीं होती वरन लाभ होताहै कारण कि, रोगी उजालेमें रहना अच्छा मानताहै।

घरकी सब वस्तु साफ और एकजगह रखनीचाहिये; सब दवा एकओर धरीरहैं, पथ्यादि एकओर रक्खे रहैं, मेरे कहनेका आशय यह है कि, सब वस्तु इस रीतिसे रखनी चाहिये कि, आवश्यकता होनेपर तुरन्तही हाथ बढ़ाते मिलजांय, नहीं तो बहुधा ऐसा होताहै कि, समयपर साधारण वस्तुकी आवश्यकता होनेपर १०। १५ मिनट तो उसकी खोजमेंही लगजाते हैं, इतनेमें रोगी विचारा कष्टके मारे व्याकुल हो जाता है ।

रोगीके पेशाब और पाखानेका स्थान घरके एककोनेमें हो, वह हरसमय साफ रहनाचाहिये; किसी २ समय घरमें बदबूको दूरकरनेकेलिये अगरकी बत्ती जलाकर दीवारमें लगा देनी, या धूपकी धूनी घरमें देदेनीचाहिये ।

रोगीका घर साफ करनेकेलिये झाड़ू ऐसी नहीं लगानी चाहिये जिससे कि, धूल उड़कर रोगीके शरीरपर गिरै; पानी छिड़ककर धीरे २ झाड़ू देना उचित है ।

बिछौना तकिया चद्दर आदि—बिछौना, तकिया, अथवा तकियेकी खोल चादर आदि तीसरे दिन बदल देने उचितहैं और रोज बिस्तरेको धूपमें सुखालेना कर्त्तव्यहै, रोगीका बिस्तर बहुत मुलायमहो, बिछौना नीचा ऊँचा रहनेसे रोगीको तकलीफ होती हैं और नीचे ऊँचे बिछौनेपर सोनेसे "शय्या क्षत" (Bedsore) रोग पैदा होजाताहै । रोगीको जो वस्त्र पहरायाजाय वह गरम और नरमहो; मुँह ढककर न सोनेदे, इसका कारण यह है कि, श्वास प्रश्वासमें दूपित हवा रोगी लेताहै, कम्बलआदिसे मुँह ढककर सोना उचित है,कारण कि,

कम्बलमें बहुतसे ऐसे छेद होतेहैं जिनमेंसे खराब हवा निकलती रहतीहै; दिनभरमें दोदफे विस्तरको झाड़ना उचितहै।

शय्याक्षत—शरीरका कोई अंग लगकर एकओर पड़े रहनेसे शरीरके उस अंगकी कार्यकारिता बंदहोकर उस अंगमें घाव हो जाते हैं, इसीको "वेडसोर" या शय्याक्षत कहतेहैं. यह घाव बहुधा मेरुदंडके नीचे पीठमें होताहै। एक तो रोग की पीड़ा और दूसरे घावकी तकलीफ नई उत्पन्न होजाती है, इससे शरीर बहुत दुर्बल होजाताहै। जिससे शय्याक्षत रोग न हो ऐसी रीतिभी मैं तुझे बतातीहूं।

(१) बिछौना साफ, नरमहो और उसमें सलवट नहो।

(२) रोगीको करवट फिराते रहो, एक करवटसे न सोने दो।

(३) यदि रोगीकी इच्छा करवटलेनेकी नभी हो परन्तु तो भी उसे करवट लिवाते रहो और इस बातकाभी ध्यान अवश्य रक्खो कि, रोगीका कोई अंग दबता तो नहीं है। या खाटके एक ओरतो नहीं पड़ाहै।

(४) बीच २ में वैद्यकी सम्मतिके अनुसार गरमपानीमें थोड़ासा अक्कोहल मिलाकर स्पञ्चसे रोगीकी पीठमें मालिशकरो, फिर सूखी फलालैनसे पोंछो।

(५) हवेकी गद्दी (एआर क्रूशन) पर यदि रोगी सोवै तो बहुत उत्तमहै। गरीबोंके लिये यह बात, कठिनहै, इसकारण बिछौना अवश्य नरम होना चाहिये।

(६) रोगीकी पीठमें जो लालरंगका चकद्दा, दाग पड़जाय तो तुरतही वैद्यको दिखादे, यही दाग शय्याक्षतका पूर्वलक्षण है।

पथ्यदेना—रोगीको मांसका जूस, साबूदाना, अरारोट, दलिया, जौका मंड आदि पतले पदार्थोंका पथ्य नीचे लिखी-हुई रीतिके अनुसार देना उचितहै; मांसजूस आदि मुखरोचक और स्वादिष्ठ बनाना; जिससे रोगी रुचिसे भोजन करले; जिसके खानेमें रोगीकी अनिच्छाहो उसके खिलानेको रोगीसे हठ न करनीचाहिये धीरे २ रोगीको उठाकर गलेके नीचे और छातीके ऊपर एक अँगोछा रखना उचितहै, जिससे मुखभ्रष्ट बूँद उस अँगोछेपरही गिरै ऐसा करनेसे बिस्तर खराब नहीं होगा, रोगीको स्वच्छताके साथ पथ्यबनाकर खानेको देना-चाहिए, यह खालो, वह खालो, यह कहकर रोगीको विरक्त नहीं करना, उसको अपनी इच्छानुसार खाने देना उचितहै। रोगीके बिछौनेपर दूसरा कोई न सोवै। रोगीके घरमें पथ्य नहीं बनाना चाहिये, वैद्यके कहनेके अनुसार रोगीको जगाकर पथ्य या औषधी देनी उचितहै। हे बहन! मेरी कही हुई रीतिके अनुसार रोगीकी सेवा सुश्रूषा करनेसे सरलतासे रोगी आरोग्यता प्राप्त कर सकताहै, मेरी इन सब बातोंको तू भली भांतिसे स्मरण रखना भूलना नहीं।

विपदाविपत्तचिकित्सा।



हे बहन! संसारमें मनुष्यको न जाने किससमय क्या विपत्ति आजाय इसका समय कुछ ठीक नहीं है, आगमें जलजाय, शस्त्रसे हाथ पैर आदि कट जांय आदि एकही मुहूर्त्तमें अनेक प्रकारकी विपत्तियें आजातीहैं, इसमें क्या करना उचित है वहभी मैं तुझे बतातीहूं।

१-यदि आगमें हाथ पैर आदि कोई स्थान जलजाय तो उसी समय चूना या काली रोशनाई लगादी जाय तो जलन थमजाती है अथवा उसी समय आलू कुचलकर जलेहुए स्थानपर लगावै तो छाला नहीं पड़ता और तत्काल ठंढक होजाती है।

२-किसीस्थानमें चाकू छुरीसे चोट आई हो और वह स्थान कटगयाहो तो उसमें दूर्वाघासको कुचलकर भरदो घाव भर जायगा।

३-ततैया या शहतकी मक्खी काटखाय तो सरसोंका तेल या मिट्टीका तेल या भीजीहुई मट्टी मलदे तो शीघ्र आराम होजाय।

४-बिच्छूके काटनेपर मूलेके पत्तेका रस लगावै अथवा काशीफलके ऊपरका डंठल घिसकर लगादे, या जमालगोटा पानीमें घिसकर पिलादे, अथवा दीवासलाई घिसकर लगादे या शिरसके बीज, गोमेद, दाड़िमकी जड़, आकका दूध, इनकी धूप दे तो बिच्छूका विष दूर होजावेगा। हींग और जलका लेप भी बिच्छूके विषको दूर करताहै।

५-यदि कानखजूरेने काटा हो तो दीवेका बचाहुआ तेल उस स्थानपर लगावै तो उसीसमय विष दूर होजावै या गूगलकी धूपदे और पीछे आकके पत्ते लपेटकर बांधदे तो विष दूर होजावे।

६-यदि कांतर चिपटगईहो तो कड़वा तेल डालदे टुकड़े २ होकर मरजायगी। या मूलीके पत्तेका रस निचोड़दे तो वह उसी समय छूटजायगी।

७-चूहेने काटाहो तो मैनशिल, हरताल, कूट इनको निर्गु-

डीके रसमें भावितकरके पीवै तो मूसेका विप उतरजाय, या सरसों कुंकुम, मट्ठा इन तीनों चीजोंको बराबर लेकर घीके साथ पिये तो चूहेका विष दूर होजावे ।

८–कुत्तेने काटाहो तो शिरसके बीज थूहरके दूधमें पीसकर काटे हुए स्थानमें लगादे तो कुत्तेका विष दूर होजाताहै अथवा चिरचिटेकी जड़ पीसकर एककर्ष शहतके साथ चटावे तो भी विष दूरहोताहै ।

९–यदि बावले कुत्तेने काटा हो तो घीक्वारका पत्ता सैंधा-नोन कुछ गरमकर तीनदिनतक बांधे तो विष दूर होताहै वा कुचला पीसकर लगा दे तो भी विष दूर होताहै ।

१०–मकरी फलजाय तो हलदी, देवदारु, मजीठ, नाग-केशर इनकालेप करै तो मकरीका विष दूर होताहै । या अमचूर पीसकर लगावे तौ भी विष दूर होताहै ।

११–यदि सर्पने काटाहो तो सफेद विष्णुकांताकी जड़,देव-दाली (बड़ीतोरई) की जड़ जलमें पीसकर सुँघावै तो सांपका विष दूर होताहै.या दही,शहत,मक्खन,पीपल,अदरख, काली-मिर्च यह बराबरले इनसे आठवां हिस्सा सैंधानमक ले, इन सबको कूट पीसकर सेवन करै तो साक्षात् तक्षक और वासु-किका काटा भी क्षणभरमें यमराजके यहांसे लौटआताहै ।

अथवा कुटकी और तालमूशलीकी जड़ जलके साथ पी-नेसे विष दूर होताहै ।

१२–जीयापोतेके फलकी मींग शीतल जलके साथ पीस कर लेप करै या आंखोंमें अंजन लगावे वा एकनिष्कमात्र पीवै तो व्याघ्र–चूहा–सर्प–बिच्छू आदिका विष दूर हो जाता है ।

१३-यदि शिरमें अधिक दर्दहोताहो तो कच्ची हलदी वा मक्खनको मिलाकर लगावे तो शिरका दर्द दूर होताहै, या गुलबनफसा पीसकर माथेपर लगावे तो आराम होताहै।

१४-पेट अफर गया हो तो महीन २ सामर पीसकर पेटमें मले तो आराम होताहै या सात आठ कालीमिर्च मिश्रीके सरवतमें खावे तोभी आराम होताहै।

१५-बदहजमी होगई हो तो अजवायन और काला-नमक मिलाकर खानेसे हाजमा दुरुस्त होताहै।

१६-गलेमें दर्द होताहो तो वहांपर चूनेका पानी गरम करके लगावे तो तत्काल आराम होताहै।

१७-रातमें नींद न आवे तो मेथीके शाकका रस पीवे झट नींद आजायगी।

१८-जो शरीरमें कहीं फुड़ियाहो तो उस स्थानमें जरासा चूना लगा दे तत्काल आराम होजायगा।

१९-फोड़ाहो तो गरम चीजें बैंगुन-या गंठी, तथा कबूतर की वीट लगादेनेसे फोड़ा शीघ्रही पकजाताहै उसके पकजाने पर अलसीकी खलकी पुलटिस बांधदे तो फोड़ा तत्काल फूटजायगा।

२०-राल एक पैसेभर-मुरदाशंख एक पैसेभर इन दोनों चीजोंको महीन पीसकर रक्खे, पहले गौका घी छः पैसेभर लेकर गरम करै उसमें दो पैसेभर मोम डाले जब मोम पि-घलजाय तो इन दोनों दवाइयोंको मिलावे फिर कांसीकी थालीमें डाल कर एक सौ आठ वार इसे धोवे धोकर किसी बरतनमें रखले यह मल्हम जिस फोड़े फुंसीपर लगाया जायगा तत्काल आराम होजायगा।

२१–सफेदेमोम, मस्तगी;गोंद,नीला थोथा, सुहागा,सज्जी, सिंदूर, कवलिा, मुरदाशंख, गूगल, कालीमिर्च, गेरू, इलायची; वेर, सफेदा, सिंगरफ, सुधी गंधक इन सब दवाइयोंको बराबर लेके मोमको छोड़कर बाकी सब दवाइयोंको अलग २ पीसले, फिर घीको गरम कर उसमें मोम पिघलावे (गायका घी सब दवाइयोंसे चौगुना हो) फिर सब औषधियोंको मिलाय खरलमें डाल खूब घोटे जब घुटते २ घी और दवा एक होजांय तो उसे एक डिवियामें रखले और घावोंपर लगावे यह मल्हम चोटके घाव–शस्त्रकेघाव,फोड़े फुंसी आदिके घावोंपर लगानेसे उन्हें आराम करताहै ।

२२–आँख दुखतीहों तो वस रसोतही लगावे ऊपर भी लेप करे और भीतरभी सलाईसे लगावे तत्काल आराम होता है ।

२३–डाढ़में दर्दहो तो तोमड़के वीज दावले आराम होजायगा या बकूलके पत्ते चावे तो दांतोंकी कमजोरी दूर होकर दांत मजबूत होजातेहैं ।

दांतोंमें कीड़ा लगगयाहो तो हींगको कुछ गरम करके लगावे तत्काल आराम होजायगा ।

या चिकनी सुपारीकी राख, सरसोंके तेलके साथ दांतोंकी जड़में लगानेसे दांतोंकी जड़ मजबूत होजातीहै; और दांतोंमेंसे खून निकलनाभी बंद होजाताहै ।

२४–पेटमें आंव होगईहो तो बेलको भरड़में भूनकर खाय तो आराम होजाताहै ।

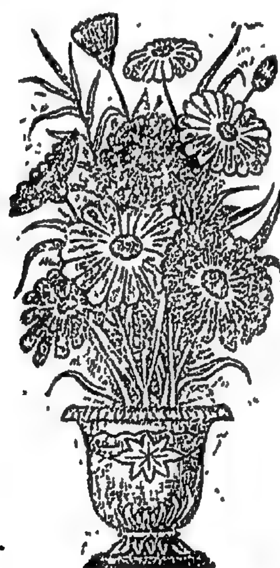
२५–गूलरके रसको शहतके साथ पीनेसे प्रदररोग दूर

होजाताहै, पावभर दूध, अशोककी छाल दो तोले, एक सेर जलमें पकावे जब जल जलजाय और दूध रहजाय तो उसे छान कर मिश्री डालकर पी ले तो अधिक रजका निकलना और प्रबल प्रदररोगभी दूर होजाताहै।

२६-यदि खट्टी डकारें आतीहों तो कालानिमक अदरख खानेसे आराम होताहै।

२७-खांसीसे या और किसीकारणसे छातीमें दर्द होगया होय तो पुराने घीका मालिशकरै आराम होजाताहै।

इति द्वितीयसोपानसमाप्त।



तृतीयसोपान ।

(गृहिणी)

विवाह और पातिव्रतधर्म ।

हे बहन ! विवाहभी स्त्रियोंके जीवनमें एक प्रधान यज्ञहै; वरन इसको सभी यज्ञ कहतेहैं; इस यज्ञमें स्त्रियोंका देह, मन, प्राण पुरुषके अर्पण होजाताहै; उनका आशा, भरासो, सुख, दुःख सभी एक मनुष्यपर निर्भर होजाताहै; उनका जीवन प्राणपतिके जीवनके साथ, हृदय हृदयके साथ, मांस मांसके साथ, इन्द्रिय इन्द्रियोंके साथ मिलजातीहैं । स्वभावकी कैसी सुन्दर और मनोहर विधिहै, जैसे बिजलीके नरकेन्द्रके साथ स्त्रीकेन्द्रका मिलन न होनेसे बिजलीकी क्रिया पूरी नहीं होती वैसेही स्त्रीपुरुष (शिवशक्ति) के संयोगविना संसारयंत्र एक पलकोभी नहीं चलसकता ।

विवाहका प्रधान उद्देश्य आत्मरक्षाहै, स्त्री पुरुष सभीकी यह इच्छा रहतीहै कि, हमारी आत्मा संसारमें बनीरहै मनुजीने कहाहै, कि स्वामी स्वयं स्त्रीके गर्भमें जाकर संतानरूपसे जन्म लेताहै, इस आत्मरक्षाकोही वंशरक्षाभी कहतेहैं, विवाह इसीलिये किया जाताहै कि, हमारा आगेको वंश बढ़ै यही विवाहका आदि कारणहै, उसकारण विना स्त्रीपुरुषोंका सम्बन्ध हुए किसी प्रकारभी वंशरक्षा नहीं होसकती; आजकल मैं बहुधा देखतीहूं कि, विवाह होजानेके पीछे स्त्री पुरुषोंमें मेल नहीं होता, परस्परमें दोनोंजने एक२को शत्रुकी दृष्टिसे

देखते रहतेहैं, वर्षों बातचीत करे विना वीत जातेहैं, इसी कारणसे स्त्रियें व्यभिचारिणी होजातीहैं, हे वहन! स्त्रियोंको जो करना कर्त्तव्य है; और जिसके करनेसे इस लोक और परलोकमें उनका धर्म बनारहै, और पतिकी वह अत्यन्त प्यारी रहैं सो मैं वही तुझे पातिव्रत धर्म बतातीहूँ, तू मन लगाकर सुन कारण कि, विवाह होजानेके उपरान्त तुझेभी इस धर्मको पालन करना होगा।

यह श्रेष्ठ जाति जिस प्रकार अनेक सद्गुणों और सुन्दर धर्मोंसे पूर्णहै इसी प्रकार इस जातिमें स्त्रियोंको पातिव्रतधर्म का पालन करना भी सर्वोत्तम धर्म है, पतिपरायण, पतिकी सेवामें दक्ष, पतिकी इच्छानुसार कार्य करनेवाली, धर्मनिष्ठ सती लक्ष्मी महिलाओंकी कीर्त्तिसे आजतक भारत वर्षकी प्रजा सम्पूर्ण देशोंमें जगमगारहीहै; पातिव्रत धर्मका पालन करना वह धर्म है कि, इसके अतिरिक्त दूसरा कार्य कर्त्तव्यही नहीं, देवता, ब्रह्मा, विष्णु, महादेव, जो कुछभीहैं स्त्रियोंके लिये सब पति-हीहैं, पतिकी सेवाही देवताओंकी पूजा है, हे वहन ! जिस स्त्रीपर स्वामी प्रसन्नहै, मानो उसपर सभी देवता प्रसन्न होगये, तपस्विनी अरुन्धती पातिव्रत धर्मके कारणही सप्त ऋषि मंडलमें महर्षि वसिष्ठजीके समीप विराजमानहैं, अवतक विवाह के समयमें उन श्रेष्ठ अरुन्धतीका दर्शन करायाजाताहै, पतिव्रतास्त्रीका अलौकिक प्रभाव होताहै, चंद्र, सूर्य क्या वरन सम्पूर्ण ब्रह्मांडके धारणमें पतिव्रता समर्थ होतीहै, महाभारतमें लिखाहै कि, एक महर्षि तप कररहेथे उनके ऊपर चिड़ियाने वींट करदी, जैसेही उन्होंने क्रोधकर उसकी ओरको देखा कि

वैसेही वह जलकर भस्म होगई, तव यह अपने मनमें विचारने लगे कि हम सिद्ध होगये, ऐसा विचार तपसे विरत हो विचरते हुए एक नगरमें आये और किसी गृहस्थीसे कुछ याचना करी, ज्योंही वह स्त्री भिक्षा लेकर आई कि, वैसेही उसके स्वामीने उसको पुकारा, जिससे वह वीचमेंसेही लौटगई और स्वामीके कार्यसे निवृत्त होकर पीछे वहां आई तव यह उससे पूछने लगे कि, हे अवले ! तू किस कारणसे लौटगई ? उसने कहा कि, महाराज स्वामीका कार्य करने चलीगईथी; तव वह ऋषि क्रोधकर वोले कि, तैंने अतिथिका इतना निरादर किया ? तव वह इनकी क्रोधभरीदृष्टिको देखकर वोली कि महाराज ! मैं वनकी चिड़िया नहीं हूं जो दर्शनमात्रसेही भयभीत होजाऊं, महर्षि बड़े आश्चर्यमें हुए और पूछने लगे कि, तुमको यह ज्ञान कहांसे प्राप्त हुआ ? इससे वह स्त्री कहनेलगी कि यह सव पतिके चरणकमलसेवनकाही प्रतापहै, मैं स्वामीकी सेवाही परमधर्म जानतीहूं, इस प्रकार कहकर उस स्त्रीने उस ब्राह्मणको वहुतसा धर्म सिखाया पातिव्रत धर्मके पालनसेही स्त्री सर्वोत्तम गुणोंको प्राप्त होतीहै, अधिक क्या भूत भविष्य वर्त्तमानका ज्ञान, पतिरक्षा, कल्याण, कुटुंव सन्तानादिकी प्राप्ति यह सव एकही धर्मसे होतीहैं ; अनुशासनपर्वके १२२ अध्यायमें कथा आतीहै कि, सुमनय नामक केकयराजकी कन्याने सर्वज्ञा शाण्डलीसे पूछाथा कि तुम किस चरित्र और आचरणसे इस लोकमें आईहो और किस पुण्यके प्रभावसे तुमने यह अतुल ऐश्वर्य पायाहै इसपर शाण्डलीने कहाथा कि, मैं गेरुआ वस्त्र पहरनेवाली नहीं हूं, मैंने शिर मुंड़ाने

वा जटा धारणकरनेसे स्वर्ग लोक नहीं पायाहै, परन्तु मैंने सावधान रहकर कभी भी अपने पतिसे कठोर वचन नहीं कहाहै, देवता, पितर, ब्राह्मणोंकी पूजामें रहकर अप्रमत्त चित्तसे सास श्वशुरकी सेवा कीथी, कभी किसीकी चुगली नहीं की, घरसे बाहर कभी निवास नहीं किया, न बहुत समयतक किसीके साथ बातचीतही की; किसी असत्कार्य अथवा हास्यकार्यसे अहित गुप्त किसीकी बात जाननेमेंभी मैं व्यग्र नहीं हुई, कार्यको बाहर गएहुए हमारे स्वामी जब घर आते तब उन्हें बैठाय उनकी पूजा करती तथा उनके चरणोंको धोकर चरणामृत लेतीथी; जो भोजन उन्हें रुचता वही मैं बनाती, कुटुम्बके निमित्त जो वस्तु लाई जातीथी, तथा जो कुछ घरका काम काज होता सभीको करलेती, तथा दूसरेसे करालेतीथी; यदि मेरे पति परदेश चले जातेथे तब मैं उससमय मंगलसूत्र धारणकर व्रतसे रहतीथी; न चोटी गूंधती, न भूषण पहरती, न महावर लगाती, न उबटन करती, अर्थात् पतिके विदेश-जानेपर मैं कोई शृंगार नहीं करतीथी; जिस समय पति शयन-करते उस समय मैं सब कामोंको छोड़छाड़ पतिके निकटही रहाकरती; उनको देखकरही मेरा मन प्रसन्न रहताथा; घरके कामकाजकेलिये स्वामीको क्लेश नहीं देतीथी; छिपाने योग्य बातोंको सर्वदा छिपाकर प्रसन्नरहतीथी, हे बहन! जो स्त्री सर्वदा सावधानहोकर इस रीतिसे पातिव्रत धर्मका पालन करतीहै, वह स्त्रियोंमें अरुंधतीके समान सर्वदा स्वर्गमें निवासकरतीहै।

हे बहन! पुरातन धर्म पातिव्रतके पालन करनेसेही यह स्त्रियाँ

पतिलोकमें गमन करतीहैं, पतिव्रताओंकी महिमासे आजतक भारतका शिर ऊँचा होरहाहै; पूर्वसमयकाही एक इतिहास सुनातीहूं, कि एक स्त्री अपने पतिकी सेवामें तत्पर थी; पति उसकी जंघापर शिर धरकर सोगयेथे, उससमय उसका छोटा लड़का खेलता २ अग्निहोत्रके प्रज्वलितकुंडमें जापड़ा स्त्रीने विचारा कि, जो मैं इसे उठानेकेलिये जातीहूं तौ इनकी नींदमें बाधाहोगी, इसकारण वह उठानेकेलिये न गई, परन्तु अग्निमें क्या सामर्थ्यथी कि, जो पतिव्रताके पुत्रको भस्म करती, उसी समय चंदनके समान शीतलहोगई, हेबहन ! इससे भलीभाँति विदितहोताहै कि, पातिव्रतधर्मका कैसा प्रभावथा; स्त्रियोंके निमित्त इससे अधिक और क्या होसकताहै, एकवार परम तपस्विनी अनुसूयाजीने जानकीजीसे इसप्रकार पातिव्रतधर्मका उपदेश किया था कि, हेजानकी ! जो गति जप, तपसेभी किसीको सिद्ध नहीं होसकती वह गति केवल पतिके चरणारविंदोंकी कृपासे स्त्रियोंको सरलतासे प्राप्तहोसकतीहै ।

चौपाई ।

मातपिताभ्राताहितकारी । मितसुखप्रद सुन राजकुमारी ॥
अमितदानभर्ता वैदेही । अधमनारिजो सेव न तेही ॥
वृद्ध रोगवश जड़ धनहीना । अन्ध वधिर क्रोधी अतिदीना ॥
ऐसेहु पतिकर किये अपमाना । नारिपाव यमपुर दुखनाना ॥
एकै धर्म एक व्रत नेमा । कायवचनमन पतिपदप्रेमा ॥
जगपतिव्रता चार विधि अहहीं । वेद पुराण सन्त सव कहहीं ॥

अर्थात् माता पिता भ्राता यह सब परिमित सुख देनेवाले हैं, परन्तु हे जानकी ! स्वामी अपरिमित सुख देता है; वह स्त्री

अधम है जो स्वामीकी सेवा नहीं करती स्वामी चाहै बूढ़ा, रोगी, मूर्ख, धनहीन, अंधा, वहरा, क्रोधी, दीन, दुःखी कैसाभी क्यों नहो, ऐसे पतिका जो स्त्री निरादर करतीहै वह यमलोकको जातीहै एकही धर्म और एकही नियम और एकही व्रत स्त्रियोंकेलिये कहागयाहै, कि स्त्री मन वचन कर्म-से पतिके चरणोंमें प्रेमकरै, संसारमें उत्तम, मध्यम, नीच, लघु यह चार प्रकारकी पतिव्रता स्त्री वेद और पुराणोंमें कहीहैं।

चौपाई।

उत्तमके अस वस मनमाहीं। सपनेहु आन पुरुष जगनाहीं ॥
मध्यम परपति देखहिं कैसे। भ्राता पिता पुत्र निज जैसे ॥
विनु अवसर भयते रह जोई। जानहु अधम नारि जग सोई ॥
पतिवंचक परपतिरतिकरहीं। रौरवनरक कल्पशत परहीं ॥
क्षणसुखलागिजन्मशतकोटी। दुखनसमझतेहिसमको खोटी ॥
विनश्रमनारि परमगतिलहई। पतिव्रतधर्म छांड़िछलगहई ॥
पतिप्रतिकूल जन्म जहँ जाई। विधवा होय पाय तरुणाई ॥

हेवहन! जो उत्तम पतिव्रताहै वह यह जानतीहै कि,मेरे पतिके अतिरिक्त दूसरा कोई पुरुष संसारमें नहींहै, और मध्यमपतिव्रता दूसरे मनुष्योंकी वड़ाई छोटाइके अनुसार भ्राता पिता पुत्रके समान देखतीहै, जिनका चित्त चलजाताहै; परन्तु वह अपने कुल और धर्मको विचारकर स्थितरहतीहैं, वे स्त्रियें निकृष्टहैं जो विनाअवसरही भयसे चकित रहतीहैं,और जो अपने पतिको वंचितकर परपतिसे रति करतीहैं वह स्त्री अधमहैं, वह रौरव नरकमें जातीहैं, जो क्षणकालीन सुखके निमित्त अनेक जन्मोंका सुख नष्टकरदेतीहैं उनके समान

खोटा और कौनहै? यदि निष्कपटहोकर स्त्री अपने पतिकी सेवाकरै तो विनाही आश्रयके उसकी परमगति होतीहै और जो स्त्री पतिसे प्रतिकूल होकर जहांभी कहीं जन्मलेगी; वह तरुण अवस्थामें ही विधवा होजायगी, कैसी भी अपवित्र स्त्री क्यों नहो पतिके चरणोंमें पूजनकरनेसे परमगतिको प्राप्तहोतीहै; हेबहन! महारानी जानकीने पतिव्रतधर्मकी शिक्षा मानो सर्व साधारणको करदीहै उन्होंने अंतिमपरीक्षाके समय कहाथा।

वाङ्मनःकर्मभिः पत्यौ व्यभिचारो यथा न मे ॥
तथा मे माधवी देवी विवरं दातुमर्हसि ॥ वा० रामायणे ॥

यदि मेरा मन वचन कर्मसे पतिमें व्यभिचार नहींहै तो यह पृथ्वी फटजाय और मैं उसमें समाजाऊं कैसी धर्मकी महिमाहै, किं महारानीका प्रेम ऐसे वनवासमें अलग रहकरभी उनसे पृथक् नहींथा, वह कहउठी थीं कि यदि मेरा जन्म फिर कभी हो तो रघुनाथ रामचंद्रही मेरे पति हों! इसकारण हेवहन! स्त्रियोंकेलिये पातिव्रतधर्मही अत्यन्त श्रेष्ठहै सो मैंने तुझसे कहा।

गृहिणीकर्तव्य।

हे बहन! अब मैं तुझे गृहणीकर्त्तव्य वताती हूं, क्योंकि जवतक कन्याका विवाह नहीं होता तवतक वह अपने माता पिताके आधीन रहती है, और विवाह होनेपर ससुरालमें जाना होता है, फिर वहां जाकर कैसे व्यवहार करनेसे उसकी बड़ाई होगी वहभी मैं तुझे वताती हूं।

बुद्धिमान् स्त्री वही है जो अपनी चतुरतासे सब कुटुम्बको

अपने वशमें करले लड़कीको ससुरालमें जाकर पिता की जगह श्वशुरको, माताकी जगह सासको, भगिनीकी, जगह नंदको, भ्राताकी जगह देवरको समझना योग्यहै भली भांतिसे पतिकी सेवा करनी चांहिये सहेलियोंके स्थानपर देवरानी जिठानीको समझना। सबसे प्यारसे बोलना उनके कहनेको न टालना, बहूका यह मुख्य कर्त्तव्य है, हे भगिनी! विचारो बचपनसेही लड़केके माता पिता बहूके आनेकी खुशी मनाते रहते हैं; कि हमारे घर बहू आवेगी तो सब काम काजका भार उठालेगी; तुम्हारे पतिकी उन्होंने कितनी टहलकी है यदि इस बातको तुम समझकर अपने सासश्वशुरकी सेवा करोगी और आदरसत्कारकर उनका चित्त प्रसन्न रक्खोगी; तो उनके आशीर्वादके प्रभावसे तुम्हेंभी सुख मिलैगा;और तुम्हारी जो बहुएँ आवैंगी वहभी तुम्हारे आचरण देखकर तुम्हारी टहल भली भांतिसे करैंगी, सबके साथ प्रीति रखना, कभी किसीकी चुगली न करना; बहुत न बोलना, न बहुत चुपके रहना प्रत्येक गृहिणीको उचित है. किसीने कहाहै।

"अतिका भला न बोलना। अतिकी भली न चुप्प।"

अवसर पाकर बहुओंको बोलना शोभा देताहै; घूंघट काढ़े रहना, सबके सामने मुँह न खोलना,जो अपने पतिसे बड़ाहो उससे कभी न बोलना न उसके आगे मुँह खोलना प्रत्येकस्त्रीको उचितहै कि,सास नंदसे छिपाकर कोई काम कभी न करना चाहिए अपने घरकी कोई वस्तु अपने घरवालोंसे छिपाकर कभी किसीको न देना और न अपने घरकी कोई

वस्तु छिपाकर बेचना उचितहै ऐसा अवसर अनसमझ कच्ची मतिकी थोड़े दिनोंकी आई हुई बहुएँ कर बैठतीहैं, कि सास से तो कहदिया कि हमारा फलाना गहना खोगया, और किसीके हाथ बिकवा मँगाया, या अपने लहँगे डुपट्टेका गोटा किनारीही बेचनेके लिये भेज दिया, इससे आधे दाम तो जभी रहगये कि,जब वह बिकनेको गया और फिर जिसने बेचा है उसनेभी अपनी दस्तूरी खाई, इससे तुम्हारे पल्ले कुछभी न पड़ा, और जब तुम नया मँगाओगी तो पूरे दाम देने पड़ैंगे, फिर जो सासश्वशुरने सुन लिया तो उनके मनसे उतर जाओगी, और जब वह तुम्हें बुरा कहैंगे तो पतिभी तुम्हारा आदर नहीं करैंगे, इसकारण ऐसा काम कभी न करना; और अपने घरका भेद कभी किसीसे मत कहना, अकसर ऐसी स्त्रियें बहू बेटियोंको बहकानेके लिये घर २ फिरा करतीहैं कि,प्रथम तो सासश्वशुरकी बुराईकर बहूके पेटमें घुसकर उसके मनका भाव लेती हैं, फिर मीठी २ बातेंकर कहने लगती हैं कि,लो तेरा जो कुछ काम हो उसे मैं कर लाऊंगी;इसी रीतिसे यह ठगईका जाल फैलाया करती हैं; इनके कहनेमें कभी न आना, यह बड़ी दुष्टा होती हैं; अपने घरमें जो कुछ रूखासूखा मिला उसीको खाकर संतोष करलेना; जब कोई अतिथि तुम्हारे घर आवैगा तो उसके सन्मुख कोई ऐसी बात मत कहना जो वह तुम्हें मूर्ख समझे,भोजन करतीसमय अन्नपूर्णाको प्रणामकर भोजन करके उठना और परोसी थाली छोड़कर कभी न उठना चाहिए, भोजन बनानेकी रीति नीति और घरके कामकाज तो

मैं प्रथम तुझे बताही चुकीहूं यहां केवल सास श्वशुर और पतिकी शुश्रूषाही बतातीहूं।

किसीकी अच्छी वस्तुको देखकर उसके लिये हठ न करना; यहां मैं तुझे एक दृष्टान्त सुनातीहूं; कारण कि आजकलकी स्त्रियां शील और गुणको तो सीखती नहीं परन्तु गहनेके मारे मरी जातीहैं; गहना तो केवल शोभाके लिये पहना जाताहै, न कि बोझालादनेके लिये; स्त्रियें बूढ़ी तो हो जाती हैं परन्तु उनको गहनेका चाव नहीं जाता; मुँहमें दांत नहीं हैं, शरीरमें केवल अस्थिमात्र रह गई हैं परन्तु गहने पहननेमें जवानसेभी अधिक मन चलताहै, गहने पहरनेका स्त्रियोंको इतना चाव होता है कि, और गैरोंकाभी मांगकर पहर लेती हैं, वरन पीतल और गिलटीकाभी पहरलेतीहैं और कुछ न हुआ तो बीजोंके गजरेही बनाकर पहिनतीहैं।

एकादिन ऐसा हुआ कि, एक स्त्रीके पतिने कहा कि, वह पंसेरी जो रक्खी है जरा उसे उठालो; उसने कहा भला मुझसे यह इतनी भारी काहेको उठेगी तुम्हीं उठालो,यह बात उसके पतिने अपने मनमें रखली और भुलवा देकर एक दिन उसी पंसेरीके चार टुकड़ेकर सोनेमें मढ़वा एकहारमें पुहालाया; और अपनी स्त्रीको देकर कहा कि, लो आज मैं तुम्हारे लिये सबसे भारी गहना बनवालाया; ऐसा किसी स्त्रीपरभी नहीं निकलैगा, तुम बार २ मुझसे कहा करतीथी फलाना गहना फलानी पर बड़ा भारीहै, सो लो तुम्हारे समान भारी अब किसी पर न निकलैगा; यह सुनकर उस स्त्रीने बड़ेही चावसे पहरलिया; और कई दिनतक दिखानेके मारे बराबर पहने रही; तब एक

दिन उसके पतिने कहा कि, जरा तोलकर देखो तो सही यह हार तुम्हारा कितना भारीहै;उसने तोला तो छः सेरका निकला तब उसके पतिने हँसकर कहाकि वह पंसेरी तो तुमसे उठीनहींथी यह इतना भारी छः सेरका हार कईदिनसे अपने गलेमें डाले हो। यह सुनकर वह स्त्री बहुतही लज्जित हुई। इसकारण हे वहन! ऐसी हठ कभी न करना कि, हमें गहने भारी बनवाओ। ऐसे गहने पहरनेसे शोभा नहीं होती सदा अपनी जिठानी देवरानी और नंदके साथ मिलकर रहना, और घरका काम-काज मिल झुलकर करलिया करना इसप्रकारसे काम तो किसीको मालूम नहीं देगा, और घरका सारा काम हो जायगा, तथा घरकी शोभा और बड़ाई भी निकलेगी, एक काम किसीने करलिया, और कोई काम किसीने करलिया, कभी किसीकी बुराई भलाई न करनी चाहिये। हे वहन! सास, नंद तथा देवर जेठमें परस्पर जो कुछ वार्त्तालापहो,और जिसके सुननेसे तुम्हारे पतिका माता पिताकी ओरसे मन फटजाय तो ऐसा कभी न करना कि वह बात अपने पतिसे कहदो ऐसा मैंने बहुधा देखाहै कि, वाजी २ बहुएँ ऐसी आती हैं जो कि, अपने स्वामीके कान भरकर मातापितासे पतिका मन अलग करा झटसे जुदी हो जाती हैं, फिर पीछे उनको कितनी तकलीफ उठानी पड़ती है, इस बातको वही जानती हैं वह इसको पहले नहीं जानतीं, अवसर पाकर उनका पतिभी बात २ पर ताने दिया करता है, कि तैंनेही मेरे मातापितासे मुझे अलग कराया है, अब मैंभी तुझे तेरे मातापिताके यहां नहीं भेजूंगा, इत्यादि अनेक प्रकारके मर्मभेदी वचन उसको सुनने

पड़ते हैं, और फिर सारे गृहस्थीका भार अपने ऊपर आजाता है, औरभी वहुतसी ऐसी बातें हैं कि, उन्हें मैं अवसर पाकर फिर कभी कहूँगी इसकारण हे बहन ! जो काम तुम्हारा उनके साथमें रहनेसे चलेगा वह अलग रहनेसे कभी नहीं चलेगा।

हमारे देशमें सासेंभी स्त्रियोंको बड़ा कष्ट देतीहैं। यह दुष्ट व्यवहार अत्यंतही निन्दनीय है। अपनी कुलवधू जो कि आदरकी सामग्री है, इसके सुखदुःखके ऊपर अपने बेटेकाभी सुखदुःख निर्भर है; इस बातको वह नहीं जानतीं, बहूको दुःख देनाही उनका स्वभाव है, वह यह नहीं समझतीं कि,जो हम बहूसे प्रेम करैंगी तो बेटाभी हमारी सेवा करैगा, परन्तु वह इस बातको ध्यानमेंभी नहीं लातीं इसीकारणसे बहुएँ जुदी हो जातीहैं, सो हे बहन ! तुम अपनी बहुओंके प्रति कभी ऐसा व्यवहार न करना, ऐसा करनेसेही तुम्हारी भलाई होगी ।

कपड़ा जिससमय पहरो ओढ़ो तो ध्यानरक्खो कि,तुम्हारा कोई अंग उघड़ा न दीखता रहै, घरके दरवाजेकी ओर मुहँ करके कभी न बैठो, झरोखोंमें न झांको, बरात आदिके आनेपर दरवाजेपर न जाओ, पराये घरमें न रहो, पराये घरमें सोनाभी ठीक नहीं,सास नंद देवरानी जेठानीका जो काम हो उसे प्रसन्न चित्तसे करदेना, घरमें जो कोई रोगी हो उसकी सेवा भली भांतिसे करो और सबसे एकसा व्यवहार रक्खो ।

पतिकी शुश्रूषा—हे बहन ! पतिव्रता स्त्रीको अपने पतिसे पहले उठना चाहिये वह सबेरेही उठकर पति और सासश्वशुरको प्रणाम कर घरके कामकाज सुधारे; रसोईके बरतन मांज धोकर रसोई घरमें रक्खे और जो टहलनी

हो तो यह काम उससे करालिया करै, रसोई जब बनावे तो प्रथम भगवत्को भोग लगाय पीछे लड़के और नई व्याही हुई लड़कियोंको और उससे पीछे वृद्धोंको, फिर गर्भवती स्त्री तथा रोगीको खिलाये और पीछे सास, श्वशुर, देवर, जेठ, द्योरानी, जिठानी, अतिथि, इत्यादिको भोजन कराय और अपने पतिको भोजन कराकर सबसे पीछे आप भोजन करै पतिके मनको अपने मीठे २ वचनोंसे प्रसन्न रखना, पतिकी आज्ञाका कभी उलंघन न करना, पतिव्रता स्त्रीका मुख्यधर्म है। पतिसे जो बात कहनेकी इच्छा हो तो बहुत आधीनीके साथ कहना चाहिए स्त्रीको उचित है कि रातकोभी उसी भांतिसे भोजनकर पतिकी शय्या भली भांतिसे बिछावे, पतिके सोनेसे पहले कभी न सोवे, और पतिके परदेश जानेके पीछे गंजीझा चौसर इत्यादिका खेल न करै; केवल उससमयमें उसे एक निर्दोष शिल्पविद्यासेही निर्वाह करना चाहिये । विवाह हो जानेपर, किसी मंत्रका संस्कार न करावे, और किसी पुरुषको गुरुभी न करै स्त्री कभी स्वतंत्र नहीं है ।

चौपाई ।

नारिस्वभाव सत्य कविकहहीं । अवगुणआठसदा उररहहीं ॥
साहस अनृत चपलता माया । भयअविवेक अशौच अदाया ॥

हे बहन ! स्त्रीको अपने पतिका नाम कभी न लेना चाहिये; और अपने ससुरालवालोंकाभी नाम नहीं लेना चाहिये; जो अपनेसे और अपने पतिसे छोटे हों उनका नाम लेना योग्य है; हे बहन ! स्त्री पुरुषका आधा अंग होतीहै, इसकारण

जहांतक हो स्त्रीको अपने चरित्रोंके सुधारनेकी ओर ध्यान देना कर्तव्य है, स्त्रियोंमें जो आठ अवगुण बताये हैं वह यह हैं उतावली, झूंठ बोलना, चंचलता, माया रचना, भयभीत होना, अविचार, अपवित्रता और निर्दयता, स्त्रीको उचित है कि जहांतक हो इन आठोंको त्यागदे ।

इति तृतीयसोपान समाप्त.



चतुर्थसोपान।

आमोदिनी।

सदानंदमयी।

हे बहन! इस संसारचक्रमें दिनरात मनुष्य घूमता २ थकित होकर विश्राम करनेके लिये स्थान ढूंढ़ताहै। क्या दरिद्र क्या धनी कोईभी संसारकी पीड़ासे छुटकारा नहीं पा सकता सभीको दिनरात परिश्रम करना पड़ताहै; सभीका मन अनेकप्रकारकी चिंतासे व्याकुल रहता है, उससमय मनुष्य संसारी तापोंसे व्याकुल होकर मुसाफिरके समान व्याकुल हो वृक्षकी छायाको ढूंढता है। कहां शांति है, कहां सुख है, कहां विश्राम मिलैगा इन्हींको ढूंढता हुआ फिरता है। सभी मनुष्य शान्तिकी आशासे अपने घरपर आते हैं; इस बातको सभी कहतेहैं, कि अपने घर जाकरही आराम मिलैगा, घरमें आते ही संसारी सब दुःख दूर हो जातेहैं, और शान्ति तथा सुख मिलता है फिर कोई कष्ट नहीं रहता।

परन्तु हे बहन! घर क्याहै, और वह कैसे सुख और शान्ति दे सकता है घर तो केवल एक जड़ पदार्थ है; उसमें सुख और शान्ति देनेकी सामर्थ्य कहां है? यह तो कभी सम्भव नहीं हो सकता।

जिस घरमें गृहिणी नहीं है; वह घर कभी किसीको सुख और शान्ति नहीं दे सकता। घर कुछ नहीं है, घरकी गृहिणीही सब कुछहै स्त्रीसेही घरकी शोभाहै इसकारण संसारमें स्त्रियेंही मनुष्योंको सुख और शान्ति दे सकतीहैं; स्त्रियोंके अतिरिक्त

और कोईभी मनुष्योंको सुख नहीं दे सकता; जिससमय पुरुष सूर्यके कठिन तापसे व्याकुल हो जाते हैं, उससमय स्त्रियेंही पंखा लेकर हवा करती २ उनके शरीरको शीतल करती हैं, परन्तु बड़े दुःखका विषय है कि, स्त्रियें इस बातको जानकर भी अनजानकी भांति व्यवहार करती हैं। इसीकारणसे बहुधा घर २ में क्लेश और दुःख रहताहै।

हे बहन! यह तो मैं तुमसे पहलेही कह आईहूं कि, मनुष्य जिससमय घरपर आतेहैं तौ सुखकी आशासे आते हैं. ऐसी अवस्थामें घरपर आकर यदि अपनी स्त्रीको आनंदमयी नहीं देखते, तौ उनका शरीर दुगना व्याकुल होताहै; उससमय उनको घरके समान दुःखदायी और कोई स्थान नहीं दिखाई देता। जिसके पास आनंद पानेकी इच्छासे गये, यदि वहांही आनंद न मिला तौ फिर और कहां मिलैगा। इसी कारणसे मैं कहतीहूं कि, स्त्रियोंको सर्वदा प्रसन्न मनसे रहना उचितहै; चाहे उन्हें किसी प्रकारका क्लेशभीहो परन्तु पतिके सामने प्रफुल्लवदनसेही रहना ठीक है, कारण कि, अनेक भाँतिके क्लेशोंको सहनकर मनुष्य घरपर सुखकीही आशासे आता है घरपर दुःखकी आशा नहीं करता इस बातको भी मैं भली भाँति से जानतीहूं कि, बहुतेरी स्त्रियोंका ऐसा स्वभाव होताहै कि, स्वामीके आनेपर वह मान-करनेके मिस गाल फुलाकर बैठ जातीहैं, वह इसीमें आनंद मानतीहैं कि स्वामी हमारी विनती करै और हमैं मनावे, परन्तु मनुष्यको उस समय यह बातें अच्छी नहीं लगतीं, उसको उस समय अभिमान अच्छा नहीं लगता; जिस समय

मनुष्य घरमें रहताहै तब तो उसे मान अभिमानकी बातें अच्छी लगतीहैं परन्तु बाहर जाकर अनेक प्रकारकी चिन्तायें आ २ कर उसे घेर लेतीहैं, उस समय वह स्त्रीके निकट शान्तिकीही आशासे जाताहै; उसको उस समय मान आदिक कुछभी अच्छा नहीं लगता। उस समय यदि मनुष्य घरपर आकर स्त्रीको प्रसन्न नहीं देखता तो उसका शरीर जल उठताहै; तब वह घरसे भागनेका उपाय करताहै, फिर कहां जाकर सुख मिलैगा। यदि उस समय वह स्त्रीसे वाद विवाद करै तो वह घर भयंकर मूर्त्ति धारण करले। स्त्रियोंकी इस अज्ञानताके पीछे उनको कितना दुःख उठाना पड़ताहै इसबातको वह नहीं जानती। इसी कारणसे उनके पति उनसे विरक्तहो वेश्या इत्यादिकोंसे जाकर प्रेम करते हैं, फिर वह स्त्रियें रातदिन पड़ी रोती रहती हैं, कोईभी उनकी बात नहीं पूछता, अंतमें उनकी बुरीदशा होजाती है, यदि जो उन्हें तुम प्रसन्न चित्तसे आदर सत्कार कर उनके मनको प्रसन्न रक्खो तो वह घरको छोड़कर काहेको वेश्याओंसे प्रेम करै; वेश्यायें उनको बड़े आदर मानके साथ प्रसन्न रखती हैं, यदि जो स्त्रियेंही उनको ऐसा प्रसन्न करसकैं तो उनके पति कभीभी घरको छोड़कर बाहर नहीं जासकते।

हे बहन! सभी समयमें "आनंद मयी" रहो, वरन् जिस समय स्वामी घरपर आवें उससमय प्रसन्न मनसे उसको प्रसन्न रक्खो; यह सभी स्त्रियोंसे मेरी प्रार्थनाहै; और जो स्त्रियें इस मेरे कहे हुएके अनुसार व्यवहार करैंगी वह कभी दुःख नहीं पावेंगी। आमोदिनी होनेसे प्रथम आनंदमयी, और

हास्यवदना होनाभी प्रथम कर्त्तव्यहै, इसका होना संसारमें बड़ा कठिनहै; संसारमें इसकी अपेक्षा और सुख क्या होसकताहै। स्वयं सुखी न होनेपर कभी आनंदमयी नहीं होसकती, परन्तु संसारमें सभी तौ सुखी नहीं हैं, इसीकारण मैं अनुरोध करतीहूं, कि अपने स्वामीके सन्मुख सर्वदा दुःखको छिपाकर प्रसन्न मनसे रहो; जव ऐसा व्यवहार कर स्वामीको प्रसन्न करलोगी; जव स्वामी तुम्हारे साथमें रहकर स्वर्गके सुखको प्राप्त करैंगे, तव देखना कि, तुम्हारे दुःखोंका किस प्रकारसे नाश होजायगा, और कितना आनंद मिलैगा।

रसिकता

हे वहन! आनंद प्रगट किस प्रकारसे होताहै वहभी मैं तुम्हैं वतातीहूं, उसके दो उपायहैं; हास्यरस और रसिकता; हास्यरसका सम्वन्ध तो मैं अगाड़ी कहूंगी, परन्तु पहले मैं इस समय रसिकताके सम्वन्धमें दो एक वातैं कहतीहूं।

जिस वार्त्तालापसे औरोंके भी मनमें हास्यरसका उदयहो; और हृदयमें हास्यरसका आनंद अनुभव होनेलगे उसीका नाम रसिकता है; परन्तु दुर्भाग्यसे विना अश्लील शब्दोंके निकले हुए रसिकता नहीं हो सकती अश्लीलता नीच प्रकृतिकी अनुचर है; इससे जिससे आनंद उदय होय वह भी नीच हो जाता है; और इससे जिस हास्यरसका उदय होताहै; वह यथार्थ रूपसे हृदयमें हास्यरस नहीं पहुँचा सकता। यथार्थ रसिकताभी एक विद्या है, यथार्थ रसिक मनुष्य सबके निकट आदर और सन्मान प्राप्त करताहै; जहां वह जाताहै, वही स्थान आनंदसे पूर्ण हो जाताहै; हजारों आदमियोंके जम-

घटमें जानेसेभी इस मनुष्यके समागमसे सभीको सुख मिलताहै इसकारण रसिकता एक सामान्य विद्या नहीं है; और इसीकारण सरलतासे सबजने रसिक नहीं होसकते।

बहुतसे विश्वासी रसिकताकी शिक्षाको प्राप्त नहीं कर सकते। जो रसिक होते हैं, वह आपही हो जाते हैं, रसिकता एक स्वभाविक सामर्थ्यहै मैं इसका विश्वास कभी नहीं करसकती कि चेष्टाकरने पर रसिकता प्राप्त होसकती हो; तब बड़ी भारी सामर्थ्य होनेपरभी सब जने काम चलानेके लिये एक न एक उपयुक्त रसिकताकी शिक्षाकर सकते हैं; इसकी चेष्टा भी शिक्षाके समान है। किसी को यह एक महीनेमें प्राप्त होती है; और कोई एक वर्ष तक भी उपाय करने पर इस शिक्षाको प्राप्त नहीं कर सकता।

बात चीतकरनेका प्रधान अंगही रसिकता है; जो रसिक इस बातको नहीं जानते हैं; उनकी वार्त्तालापसे कोई कार्य सिद्ध नहीं होता; रसिकताके विना हुए वार्तालाप निरस हो जाता है; मनुष्य विरक्त होकर उस स्थानको भी छोड़ देते हैं।

हे बहन! रसिकता क्या है? इस बातकोभी मुझे समझा देना होगा (किसी बातका उपयुक्त हास्यदायी उत्तर देने काही नाम रसिकता है;) जो हास्ययुक्त उत्तर देनेमें समर्थ हैं; उन्हींका नाम रसिक है। परन्तु ऐसा उत्तर क्या सभी मनुष्य दे सकते हैं; कदापि नहीं। एक दृष्टान्त मैं तुझे सुनातीहूं।

एक समय एक पाठशालामें एक अच्छे रंग ढंगका मनुष्य गया, वह काना था, उसने जाकर पढ़नेवाले लड़कोंसे बहु-

तसी पूछापाछी करी;यहांतक हुआ कि, सभी वालक वताते २ थक गये, फिर उसने अंतमें एक और लड़केसे जाकर पूछा कि, वताओ " प्रश्नका चिह्न कैसाहै ? " बालकने उसी समय खड़े होकर कहा कि " प्रश्नका चिह्न ऐसा होताहै, कि एक काना आदमी हमारे सामने खड़ाहुआ पूछरहाहै । " फिर उसने किसीसे कुछ न पूछा और जलदीसे पाठशालासे चलागया ।

वीरवलका वेटा संस्कृतमें वड़ा योग्य पंडितथा; जव वीरवल मरगया तव वादशाहने उसके वेटेको बुलाकर पूछा- कि वीरवलके साथ कितनी स्त्रियें सतीहुई, लड़केने कहा वहादुरी, उदारता और बुद्धि, यह तीन स्त्रियें तौ वीरवलके साथही सती होगई, अव केवल उसकी एक कीर्त्ति, यहांपर रहगई है । यह उत्तर सुनकर वादशाह वड़े खुशहुए । एकदिन वादशाहने वीरवलसे कहा कि वीरवल वैलके भी लड़का पैदा होताहै वीरवलने कहा नहीं तव वादशाहने कहा इसवातको सावित करकै दिखाओ महीने भरकी मुहलतहै नहीं तो जानसे मारे जाओगे; वीरवल घर आकर पड़रहे कोई युक्ति नहीं मिली, जव महीना होनेको आया तो वीरवलकी लड़कीने पूछा कि, पिता किसशोचसागरमें पड़े हो तव वीरवलने कहा कि, वादशा- हने मुझसे कहाहै कि,वैलके लड़का होता है इसवातको सावित करकै दिखाओ नहीं तो एक महीने वाद मारे जाओगे वेटीने कहा यह कितनी वड़ी वात है लो मैं आजही सावित करती हूं यह कहकर आधीरातके समयमें वहुतसे कपड़े लेजाकर वड़े जोरसे छीहो छीहो ! शब्द करके धोने लगी, वादशाह सो-

तेसे जागगये और उसे पकड़मँगाया पूछा कि तू क्यों रातमें कपड़े धोरही है उसने कहा मेरे पिताके लड़का हुआ है पोतरोंके लिये कपड़ोंकी जरूरत है बादशाहने कहा हैं ! कहीं इन्सानके भी लड़का पैदा होताहै, लड़कीने कहा हैं ! कहीं बैलके भी लड़का पैदा होताहै । यह सुनकर बादशाह बहुत खुश हुए।

हे बहन ! सर्वदा हास्यमयी और आमोदिनी होनेसे ही रसिकता अपने आपही उत्पन्न होजातीहै, इसके पीछे मनुष्य किस प्रकारका उत्तर देताहै उसके ऊपर भी ध्यान रखना कर्त्तव्यहै, किस बातका कैसा उत्तर देनेसे मन प्रसन्न होजायगा, इसका जानना भी प्रथम आवश्यकहै, बिनाकारण जाने हुए तुम रसिक नहीं होसकोगी । जिस मनुष्यके सन्मुख तुम्हें रसिकता करनी हो, उसकी मनकी अवस्था, समय, स्थान इन सबको प्रथमही देखलेना होगा । बहुतसे मनुष्योंको जो एकसाथही हँसी आजाय उसीका नाम रसिकताहै; कौनसा समय रसिकता करनेका है; ऊपर लिखे हुए सब विषयोंपर दृष्टि अवश्य रखनी चाहिये, चाहै तुमपर हँसीकी सैकड़ोंही बातें क्यों न आती हों, परन्तु जो हँसीको उत्तेजनकरनेवाला यथार्थ उत्तर देसकतेहैं हे बहन ! वही रसिकहैं, मैं यहांपर कई एक हँसीकी भी बातें बताती हूं

हास्य ।

हे बहन ! अब मैं तुझे दो चार दृष्टान्त हास्यरसके भी सुनातीहूँ, स्त्रियोंके यहभी उपयोगी हैं ।

एक दिन इजलासमें बैठे २ मुन्सिफ साहबने एक वकील साहबसे कहा कि, ओह तुम बड़े गधे हो, वकीलने इस बातका

उत्तर बड़ी सरलता से दिया। हुजूर! आपने ठीक कहा है। वकीलोंमें जितने गधे थे वह तो सब मुन्सिफ हो गये हैं, केवल एक मैं ही बाकी रहाहूँ। मुन्सिफ साहब मुसकाकर चुप हो गये।

एक अफीमची अफीमकी पीनकमें बैठे हुए थे, उस समय मक्खी उनकी नाकपर बार २ बैठ जाती थी, कई बार उड़ाया परन्तु मक्खी न मानी अंतमें उन्होंने जेबमेंसे चाकू निकालकर अपनी नाकको उड़ा दिया, और बोले ले सुसरी अब काहे पर बैठेगी मैंने तेरे बैठनेके स्थानको ही काट डाला। आपको मक्खीके उड़ानेकी बड़ी खुशी हुई अपनी नाक कटनेका कुछ भी रंज नहीं हुआ।

किसी गाँवमें एक आदमीने एक मसखरेसे पूछा भाई इस गाँवका ठेकेदार कौन है मसखरेने, उत्तर दिया कि आप किसका ठेका पूछते हो, कोई भाँगका ठेका, कोई गांजेका ठेका कोई चरसका ठेका,कोई अफीमका ठेका लियेहैं तब उसने कहा कि मैं यह नहीं पूछता; इस गाँवका ठाकुर कौन है,मसखरेने कहा;किस२को बताऊं, किसीके यहाँ शालिग्राम, किसीके यहां श्रीकृष्ण किसीके यहां बालमुकुन्द, किसीके यहां गोपीनाथ, किसीके यहां महादेव, सबके यहाँ ठाकुरही ठाकुर हैं, आप किसको पूछते हैं; उसने कहा कि, भाई इन ठाकुरोंको नहीं पूछता, इस गाँवका राजा कौन है; फिर मसखरेने कहा, यहां एक चमार मर गया था उसकी स्त्री यह कह २कर रोती थी "मेरे राजा २" इससे यह मैं जानता हूं कि अपने २ घरके सभी राजा हैं तब वह विचारा इसको मसखरा समझ चलागया।

पिता–बेटा पढ़ो २ "मातृवत्परदारेषु"

पुत्र–इसका अर्थ क्या हुआ?

पिता–दूसरेकी स्त्रीको माके समान जानना चाहिये.

पुत्र–तब तो मेरी लुगाई भी आपकी अम्मा होगी?

पिता–चुप पाजी, राम २ ऐसा नहीं! पढो–
"परद्रव्येषु लोष्टवत्"

पुत्र–इसका क्या अर्थ है?

पिता–पराई चीज वस्तुको लोष्टवत् जानना योग्यहै।

पुत्र–लोष्टवत् किसे कहते हैं?

पिता–मट्टीके ढेलेके समान।

पुत्र–तो अब बदमाश हलवाइयोंको मैं मिठाईके दाम नहीं दूँगा, क्योंकि पेड़े आदि मट्टीके ढेलेके समान वस्तुके दामही क्या?

पिता–अबे मूर्ख! गधा है, जरा अकलको जोर देकर पढ़ आगे भावार्थमें साफ खुल जायगा। आगेको पढ़ (आत्मवत्सर्वभूतेषु यः पश्यति स पंडितः)।

पुत्र–इसका अर्थ क्या हुआ?

पिता–जो अपने समान सबको देखता है सो पंडित है।

पुत्र–तब तो बड़ी खुशी की बात हुई पराई वस्तुको अपनीही समान समझेंगे, तो पराई वस्तु और पराई स्त्री भी अपनेही समझनी चाहिये।

पिता–अबे जा मूर्खके मूर्ख इसी अकल पर कहता था कि, मुझे धर्मशास्त्र पढ़ा दो, इससे जो खोमचा करना सीखलेता तो घरका पालन पोषण तो होजाता; हट मूर्ख,

जा यहांसे (यह कह कर पिताने एक थप्पड़ बड़ी जोरसे उसके गाल पर मारा पुत्र लड़कोंमें खेलनेके लिये चला गया)।

एक जवान स्त्री गंगाजीपरसे घड़ा लेकर जल भरनेके लिये जा रही थी इसी अवसरमें वह धर्मशास्त्रशिक्षित बालक आया; और उससे बोला कि, अम्मा ! अरी अम्मा !

स्त्री-क्यों बेटा ! आ। (मनही मनमें इस लड़केकी कैसी प्यारी बोली है)

बालक-क्योंरी, अम्मा ? मुझे चीज खानेके लिये एक पैसा दे दे।

स्त्री-बेटा ! मैं तो गरीब हूं पैसा तो मेरे पास नहीं है ?

बालक- रंडा ! पैसा क्यों नहीं देती ? दे पैसा नहीं तो अभी पीटता हूं।

स्त्री-यह कैसा बालक है ? जो गालियें देता है।

बालक-नहीं देती चुड़ैल (यह कहकर एक लात मारी और घड़ा फोड़ डाला) इतनेमेंही गंगास्नानसे लौटकर उस लड़केका पिता यह चरित्र देखकर बोला क्योंरे बदजात ? यह क्या बदजाती है।

बेटा--होता क्या यह मेरी 'मा' है जो (मा,के साथ किया करताहूं सोई इसके साथ करता हूं, आपने मुझे सवेरे पढ़ायाही था "मातृवत्परदारेषु" स्त्रीकी ओर देखकर) क्यों री अम्मा ? बापको देख कर घूंघट क्यों नहीं काढ़ती। तू मेरी मा है तो मेरे बापकी मा है ?

हे बहन ! इसी प्रकारकी हँसी दिल्लगी की अनेक बातें हैं; सो मैं तुझे बीरबलविनोद देती हूँ इसमें बहुतसी बातें हँसीकी लिखरही हैं इसे पढ़ना।

क्रीड़ाकौतुक ।



हे वहन ! रसिकता और हँसी दिल्लगीकी वातोंसे यद्यपि समय तो आनंदपूर्वक व्यतीत होजाता है; परन्तु सव समयमें रसिकता अच्छी नहीं लगती, समय व्यतीत करनेके लिये; और स्वामीको सुखी करनेके लिये और भी वहुतसे उपाय हैं।

संगीत और वाजे इत्यादिकी विद्या भी आनंद और सुखका यथार्थ उपाय है संगीत और वाजेमें भी वहुत मन लगता है; आज कल संगीत विद्याको भी स्त्रियें भली भांति सीखती जाती हैं, हे वहन ! तू गाना वजाना तो जानतीही है।

मैं जानती हूँ कि, स्त्रियें आज कल अनेक भांतिके खेलोंको जानती हैं परन्तु अच्छी रीतिसे नहीं जानतीं । स्त्रियें स्त्रियोंके साथ खेलती हैं, इस कारण खेलकी चपलताके अतिरिक्त २ गंभीरता नहीं होती, स्त्रियें खेलकी रीतिको नहीं जानतीं । उनके पति उनके साथ खेल कर सुख नहीं पासकते, परस्पर समान भावके उदय न होने पर, दोनोंमें खेलनेका उत्साह नहीं वढ़ेगा । खेलनेमें हार जीतके समयमें हर्ष विषाद उत्पन्न नहो तव तक खेलही क्या; इसकारण पुरुष तो खेलके जाननेवाले होते हैं, और स्त्रियें अज्ञान रहती हैं, हे वहन ! इसी कारणसे आपसमें क्रीड़ाका आनंद कभी नहीं उत्पन्न होता; तभी कहतीहूँ कि, प्रत्येक स्त्रीको खेलोंमें भी पारदर्शी होनेकी चेष्टा करनी चाहिए ।

वहुतोंका यह कहन है कि, स्त्रियोंको खेल खेलना उचित नहीं। वहुतेरे यह विचारते हैं कि, स्त्रियें जव खेलने बैठ जायँगी तो

घरके काम काज कौन करैगा, यह उनकी बड़ी भूल है, परन्तु स्त्रियोंको खेलकी शिक्षा पुरुषके लिये है, जिस समय घरके काम काजसे निश्चिन्त हो स्वामीके पास बैठें तो अपने पतिके सुखके लिये खेला करें इसमें कुछ हानि नहीं है, यह शिक्षा स्त्रीके लिये नहीं हुई वरन् पुरुषहीके लिये हुई, यह बात किस प्रकारसे कही जा सकती है ? तो आदमी जिस २ खेलको खेलते हैं और जो खेल खेलना उन्हें उचित है। ठीक २ वही २ खेल स्त्रियोंको भी खेलना उचित है पुरुषको जो खेल अच्छा लगै, स्त्रियोंको भी वही खेल सीखना उचित है हे बहन ! इसी लिये मैं तुझे तासका खेल, शतरंजका खेल और चोसर आदिका खेल भी बताती हूँ। इनको तू सींखलेना; और अवसर मिलनेपर अपने पतिके साथ खेला करना।

अधिक अवस्था होने पर पहले के समान तासका खेल अच्छा नहीं लगता तब चौसर और शतरंज खेलनेके लिये मनुष्यका मन करता है, इसी कारणसे बहुतसे मनुष्य घरसे बाहर जाकर अपने दूसरे साथीको ढूंढ़ कर उसके साथ खेल कर समय बिताते हैं; फिर यह खेल दो जनोंसे होता है; यह खेल केवल स्त्री पुरुषके खेलनेकेही लिये है, परन्तु हमारे इस भारत वर्षकी स्त्रियें इस खेलको बिलकुल नहीं जानतीं, इसी लिये उनके स्वामी घरसे बाहर जाकर अपने साथीको ढूढ़ते हैं, और फिर उन्हें यह संगतिही बिगाड़ देती है; हे बहन ! जो स्त्रियों को यह खेल खेलने आते होते, तो उनके पति क्यों कुमार्गगामी होजाते, स्त्रियोंको यह खेल अवश्य सीखने चाहिये, इसी लिये मैं तुझे तास चोसर शतरंज आदिके खेलनेकी रीति सरलतासे बताती हूँ।

जो स्त्रियें इन बातोंको जानती होतीं कि, हमारी तनक सी भूलसे कितना दुःख होता है तो वह कभी अज्ञानकी भाँति नहीं बैठी रहतीं।

खेल तासका।

तासके खेलको तो स्त्रियें थोड़ा बहुत जानती भी हैं परन्तु भली भाँतिसे नहीं जानती उनको सिखानेके लिये मैं तांस खेलनेकी रीति बताती हूँ।

१ तासके खेलको तीन जने खेलैं यह खेल बहुत सीधा है, हरेक रंगके तेरह २ पत्ते होते हैं चारों रंगके कुल मिलाकर बावन पत्ते होते हैं जिसमें से ईंटकी दुग्गी निकाल कर फिर तासको खेलैं, जब तुम तीन जनी तास खेलनेको बैठो तो उनमेंसे एक जनी तासोंको फांट कर तीनों जनियोंको १७ सत्तरहपत्ते बाँटदे, इसखेलमें सबसे पहले हुकमका इक्का अर्थात् आफताब खेला जाता है, पीछे यह अपनी इच्छा रही कि, चाहे जौनसा रंगखेलो, चारों रंगोंका सबसे बड़ा इक्का है उससे छोटा बादशाह, बादशाहसे छोटी बेगम, बेगमसे छोटा गुलाम, गुलामसे छोटा देहला, देहलेसे छोटा नेहला नेहलेसे छोटा अट्ठा, अट्ठेसे छोटा सत्ता, सत्तेसे छोटी छग्गी छग्गीसे छोटी पंजी, पंजीसे छोटी चौग्गी, चौग्गीसे छोटी तिग्गी तिग्गीसे छोटी दुग्गी होती है, इसी रीतिसे बड़ा पत्ता छोटेको जीत लेता है, और जिसने खेलमें बदरंग पत्ता डाला है वह पत्ता चाहै इक्का बादशाह भी क्यों न हो उसे रंगवाला पत्ता काट लेगा, इसी भांति खेलते २ जिस पर तीन पत्ते रह जाँय या एक भी न रहै उसीकी हार होती है, और जो तीन

पत्तेवाला खेलना चाहै तो उसको तीन पत्ते देकर दूसरेको पूरी बाजी देनीचाहिये जिसको अधिक जीत हो बाकी पत्ते उसको देनेचाहियें, फिर अच्छे २ पत्ते छांटकर उस तीन पत्ते वालेको बाकी पत्ते देकर उसके सत्तरह पत्ते पूरे कर देने उचित हैं यह खेल तीन जनोंसे होताहै ।

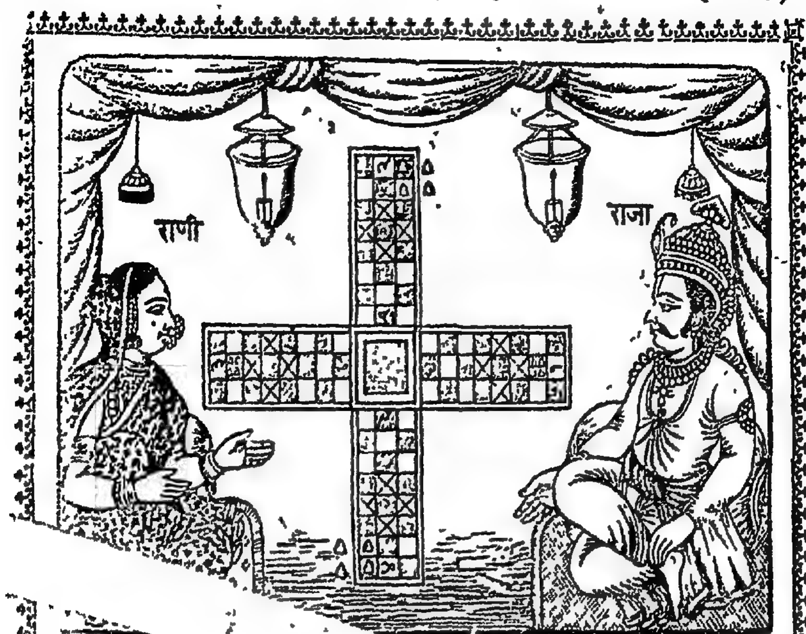
गुलाम चोर खेल—हे बहन ! यह तौ मैंने सीधा खेल बताया और अब गुलाम चोर खेलके खेलने की भी रीति बतातीहूँ; पहली पहल सब तासोंमेंसे चारों गुलामोंको एक जगह मिला उनमें से एक गुलामको छिपा कर रखले, इसके पीछे उन तीनों गुलामोंको । बिना देखे तासमें मिलाकर खूब फाँटले, जब खूब फाँट चुको तौ चार पांच जनीं आपसमें बाँटलो और इसके पीछे काले रंगका काले रंगके साथ और लाल रंगका लालरंगके साथ जोड़ा मिला २ कर नीचे तासोंको डालती जाओ; अर्थात् बेगमके साथ बेगम, बादशाहके साथ बादशाह, दैलेके साथ दैला इत्यादि।अब जितने तास बचैं, जिसने तासोंको बांटा हो, उसके दहिने हाथवाली बांटनेवालेसे विना देखे एक तास खैंचे, अगर जोड़ा मिलजाय तो जमीन पर डालदे और नहीं तो वह भी अपने दहिने हाथवालेसे खिचावै—चाहै जोड़ा मिलै चाहै न मिलै जहां तक होसके गुलामके निकालनेकी कोशिश करै, अंतमें जिसके पास गुलाम रह जायगा वही चोर कह लायगी । इसी खेलको गुलाम चोर खेल कहते हैं ।

तुरपका खेल—इसे चार जनी खेलती हैं,इसमें जो रंग कटनेमें आता है वही रंग माना जाता है, चाहै ईटहो, या चिड़ी हो

वा पान हो या हुकम हो और वही रंग सबसे बड़ा माना जाता है,जैसे चिड़ीकी दुग्गी काटी गई और वही रंग माना गया तो वह हुक्मके आफ़तावको भी काट सकती है, जैसे पानका खेल होरहा है और चारोंमेंसे एकके पास पानका रंग नहीं है तो उस अवसरमें खेलनेवाली तुरप लगासकती है; सर्वोपरि रंगको तुरप कहते हैं, इस खेलमें दो दो जनी एक २ तरफ होकर खेलतीहैं; दो २ जनीका खेल एक साथ होता है; अपने सामने बैठी हुईको वह अपनी बाजी दिखा सकती है और वह उसकी देख सकती है, इसी भांति खेलते २ जिसको कम पत्ते हों उसको काटकर पत्ते दिये जाते हैं; इसी भांति जिसकी हार होती है उसीको खिलाल होजाता है।

तासोंका खेलतो अनेक प्रकारका है परन्तु तेरे लिये यह तीन प्रकारका खेलही उपयोगी होगा अब मैं तुझे चौसरका खेलभी बताती हूँ।

चौसरका खेल-हे बहन! चौसर दो रीतिसे खेली जाती है एक तो पासोंसे दूसरी कौडियोंसे परन्तु मैं तुझे कौड़ियोंके खेलनेकी चौसरका खेल बतातीहूँ यह तेरी बहुत जलदी समझमें आजायगा,यह आठ कौड़ियोंका खेल है इस चौसरको दो जने खेलतेहैं;पहले क़ागज़ पर या कपड़े तथा जमीन पर चौसरका नक़्शा इस भांति खैंचले।





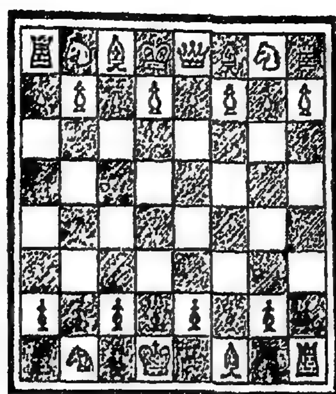
चाररंगकी सोलह नरदैं बनवाले-रंग-हरालाल, पीला काला होना चाहिये आठ २ नरदैं दो दो रंगकी दोनों जनें ले लें; अब खेलनेकी रीति तुझे बताती हूं; दो जनोंमेंसे पहले एक जन आठों कौडियोंको हाथमें लेकर जमीनपर डाले इसके पीछे यह देखै कि, सात कौड़ी खिल्ल पड़ी हैं और एक पट्ट है तो तीसका दांव होता है, और छः खिल्ल पड़ें और दो पट्ट पड़ें तो पच्चीसका दांव होता है, और पाँचखिल्ल पड़ें तो पांचका दाँव हुआ; चार खिल्ल पड़ें तो चारका दाँव तीन खिल्ल पड़ें तो तीनका दाँव दो खिल्ल पड़ें तो दोका दाँव होता है और जो एक खिल्ल पड़ें तो दशका दाँव होता है, और आठों कौड़ियैं खिल्ल पड़ें तो बारहका दाँव होता है और जो सब कौड़ियैं

पट्ट पड़ैं तो छक्का कहाताहै—विना पौ आये दोनोंमेंसे किसीकी नरदैं नहीं चल सकतीं तीस पच्चीस और दशके दाँवको ही पौ कहते हैं छः और बारहके पड़नेसे खेलनेवाला दो वार कौड़ियें डालैगा और पौ के आने परभी दो वार कौड़ियें डालैगा; अगर किसीकी एक साथही तीन पौयें आ जाँय तो वह दाँव गल जाते हैं अर्थात् उनका दाँव नहीं लिया जाता है, फिर चौथी वारके डालनेसे जो दाँव आता है वही लिया जाता है,इसकी हार जीत इस भाँति होती है-कि जिसकी आठों नरदैं चारों ओरको घूमकर अपने दाँव पर आकर रंग होजाँय उसीकी जीत होती है, इस खेलमें नीचे लिखे नियम अवश्य याद रखने चाहिये ।

१ जिस समय ३० । २५ या १० की पौह आवै तो पहले देख ले कि, कौन सी नरद के चलने से दूसरेकी नरद पिटती है ।

२ चिडों पर बैठी हुई नरद नहीं पिटती, चिड़ौंके अतिरिक्त दूसरे घरोंमें यदि दो नरदैं एक रंगकी बैठी हों तो वह भी नहीं पिटती यदि चिड़ों को छोड कर दूसरे घरोंमें दो रंगकी दो नरदैं बैठी हों तो वह दोनोंही पिटजाती हैं, जिस समय दूसरेकी, सब नरदैं रंग होती हों तो पौहके पड़ जानेसे खेलनेवाला अपनी रंग हुई नरदसे उस नरदको पीटलेगा, जो नरद अपने घरमें रंग होनेको नहीं आईहो तो वह दूसरेकी पौहसे पिट जाती है या जो नरद पौहके आनेसे रंग होने वाली हो तो वह भी दूसरे की पौह आनेसे पिटजातीहै । इसीभांति चौसर खेलीजातीहै ।







खेलशतरंजका—हे वहन ! सवसे प्रथम शतरंजका नक्शाभी कपड़े या कागज पर काढ़ले. इसके पीछे लाल और हरे रंगके मोहरे बनवावै इस खेलकोभी दो जने खेलते हैं दो राजा, दो मंत्री, चार हाथी, चार घोड़े, चार ऊँट और सोलह पैदल इस भांति वत्तीस मोहरे वनवावे फिर सोलह २ मोहरे एक २ जन बाँट ले, इसके पीछे दोनों जने अपने २ खानोंमें मोहरे इस भांति वैठावें कि चारों कोनोंमें चार हाथी हाथियोंके पास घोडे, घोडोंके पास ऊंट, ऊंटोंके पास मंत्री, मंत्रीके पास राजाको वैठाले और उनके आगेके आठों घरोंमें आठों पैदलोंको वैठाले; अब मैं तुझे प्रत्येक मोहरेकी चाल बतातीहूँ, इस खेलमें सवसे पहले पैदलको चलाते हैं पैदल सीधा चलता है और अपने सामनेके दोनों कोनोंकी ओर बैठे हुए निर्वल मोहरेको मारता है, घोड़ा ढाई घर चलता है, और उसी ढाई घरकी चालमें निर्वल मोहरेको मारता है ऊंट तिरछा चलता है और निर्वल मोहरेको मारता है, हाथी सीधा अपनी दोनों पट्टियों पर चलता है और सीधाही निर्वल मोहरेको मारता है, मंत्री हाथीकी चाल ऊंटकी चाल और पैदलकी चाल चलता है और

निर्बल मोहरेको मारता है, राजा सीधा तिरछा अपनी इ-च्छानुसार एक घर चलता है; और सबसे पहले एक बार ढाई घर चलता है, इसकी हार जीत इस भाँति होती है कि, पैदल घोड़े ऊँट मंत्री हाथी आदि यह सभी मोहरे मारे जाते हैं, परन्तु राजा नहीं मारा जाता, सभी मोहरे अपनी २ चा-लसे राजाको किस्त देते हैं; और जिस समय राजाके चलने-का मार्ग बंद होजाता है; उस समय जिसके राजाका मार्ग बंद होजाय उसीकी हार हुई अर्थात् उसी पर मात हुआ ।

हे बहन ! एक ओर का पैदल चलते २ दूसरेके दलमें जाकर मंत्री ऊंट हाथी घोड़ा इन चारोंके घर पर जा पहुँचे और अपने दलका वह मोहरा मारा गया हो तो वह मोहरा जीवित होजाता है ।

रजोदर्शन ।

ऋतु किसको कहतेहैं ।-हे बहन ! अब मैं तुझे यह भी बताती हूँ कि, यह किस समय और किस प्रकारसे होतीहै, स्त्रियोंके लिये इसका जानना भी अवश्यकर्त्तव्य है ।

ऋतु कुछ नहीं है केवल गर्भ धारण करनेके समय दिखा-नेका चिह्नमात्र है, जिस समय स्त्रियें पूर्ण यौवनवती होती हैं जिस समय उनके सब अंग प्रत्यंग पूर्णताको प्राप्त हो जातेहैं, तो उनको स्वभावसेही नूतन मनुष्यको जन्म देनेकी सामर्थ्य होजातीहै * संसारका नियमही इस प्रकार है,ईश्वरके

---

* स्त्रियोंके उदरमें महीने २ पर एक डिम्बकोश रहताहै, डिम्बकोशस्थ चर्म-स्थलीके रक्तसे प्रतिमासमें अंडेके समान छोटा पदार्थ उत्पन्न होता है । क्रमानुसार एकमास पूर्ण होनेपर यह अंडा फट जाताहै । तिससमय रक्त निकलता है; और क्रमसे-

राज्यकी प्रथाही यहहै तुम यत्न करो अथवा न करो, पेड़ होगा, फूल होगा फल होगा फिर सुख जायगा। इसीप्रकार तुम संतानकी चाहना करो या न करो तुम्हारे संतान होनेकी सामर्थ्य आपही होगी, अन्य २ प्राणियोंमें संतान उत्पन्न करनेका एक नियत समय है इस समय उनकी कामेच्छा अत्यन्त प्रबल हो जाती है। मनुष्योंका यह नियम नहीं है, महीने२पर ही स्त्रियें संतान उत्पन्न करनेको उपयुक्त होती हैं, इसीको ऋतु होना अर्थात् न्हानी होना, या कपड़ोंसे होना, या रजस्वला होना भी कहते हैं। इससमय सहवास करनेसे संतानका होना अति संभव है।

ऋतुका समय—कोई निर्दिष्ट नहींहै। जिस समय यौवन पूर्ण होताहै उसी समय ऋतु आरंभ होतीहै; परन्तु किसी २ स्त्रीको आगे पीछेभी होतीहै, यह स्वाभाविक नहीं है। जो स्त्रियें नगरमें रहतीहैं, जो सदा नाटक उपन्यासोंको पढ़ा करती हैं, जो थोडी अवस्थामें संगदोपवशसे इन्द्रियोंको उत्तेजित करना सीखतीहैं उनको ऋतु आगेही आरंभ हो जातीहै।

फिर हे बहन! सभी देशोंमें स्त्रियें एक अवस्था पर रजस्वला नहीं होतीं जिस देशमें अधिक सरदी पड़ती है, वहां अधिक अवस्थामें होती हैं, और जिस देशमें अधिक गरमी पड़ती है वहां थोडी अवस्थामें रजस्वला होती हैं "लैपलैन्ड" और नारवे आदि देशोंमें अत्यन्त शरदीके कारण कन्यायें १८।

—ही यह छोटे अंडे गर्भस्थलीके पार्श्वमें नाभिसे जा मिलतेहैं, रक्तादिमूत्रमार्गद्वारा बाहर निकल आताहै, इसप्रकार किसीके दो तीन दिन और किसीके पांच सात दिनतक निकलताहै। इसकोही लोग ऋतु कहतेहैं। प्रायः अंडा गर्भस्थलीके बगलमें जाकर रहता है फिर इसके संग पुरुषका वीर्य मिलनेसे मनुष्यका जन्म होता है।

१९। वर्षकी अवस्था में मासिक धर्मसे होतीहैं। और इँग्लैण्डमें इसकी अपेक्षा कम शीतहै इस लिये वहां १५।१६ वर्षकी अवस्थामें ऋतुमती होतीहैं; अमरीकामें १४, १५ वर्षकी अवस्थामें ही कन्यायें मासिक धर्मसे होने लगतीहैं; और हमारे भारत वर्षमें अधिक गरमीके कारण साधारण १२ वर्षकी अवस्थामें ही कन्यायें मासिकधर्मसे होने लगतीहैं, तथापि किसी २ स्थानोंमें १०,११ वर्षकी अवस्थामेंभी ऋतुमती होजाती हैं।

हे वहन! कोई २ ऐसाभी कहते हैं, जवसे ऋतु प्रारंभ होतीहै उससमयसे लेकर ३० वर्ष तक ऋतु रहती है; और कोई ऐसाभी कहते हैं कि, पचास वर्षतक रहती है।

जिन स्त्रियोंको ऋतु एक साथ वंद हो जातीहै वह वहुत दुःख भोगती हैं ऐसी अवस्थामें स्त्रियोंके कलेजेपर ज्वाला पड़तीहै नेत्रोंसे धूंधलदिखाई देता है, चित्त चंचल रहताहै, किसी काममें उनका मन नहीं लगता विचारी वहुतसे कष्ट पाती रहती हैं; और अपना रोग लाजके मारे किसीसे नहीं कहतीं; उन स्त्रियोंको उचित है कि, उस समयमें वह किसी सुयोग्य वैद्यका इलाज करावैं; लाज करके अपने स्वास्थ्यको न विगाड़ बैठें इस रोगके छिपानेसे स्त्रियोंको वहुतसी हानि उठानी पड़ती हैं।

जव यौवन प्रारंभ होता है उससमय ऋतुका होना स्वाभाविक है; और जो स्त्रियें इससे पहले ऋतुमती होतीहैं तो उनका स्वास्थ्य ठीक नहीं हे वहन! ऐसी अवस्थामें ऋतु होनेसे उनका स्वास्थ्य भंग हो जाता है; ऐसी स्त्रीमें जो संतान उत्पन्न होती

है वह दुर्बल और रोगी रहती, है और उसकी उमरभी कम होतीहै, स्त्रियोंको नगरमें रहना; उत्तम भोजन खाना, मांसादिका अधिक भोजन करना, सुरा आदिका पान, सर्वदा मधुर संभाषण, उपन्यास नाटकादिका पढ़ना, संगदोषके वशसे थोड़ी अवस्थामेंही इन्द्रियोंको उत्तेजित करना, इत्यादि अनेक दोषोंसे असमयमें वे रजस्वला हो जाती हैं*

यौवनके लक्षण—जिस समय स्त्रियोंके तलपटकी अंत्री सब पूर्ण हो जाती हैं चोली विस्तारित, दोनों स्तन ऊंचे और गोल हो जातेहैं उस समय गर्भस्थलीभी योनिके साथ मिलजाती है, छाती, गला, हाथ यह सभी पूर्णताको प्राप्त हो जातेहैं, सम्पूर्ण शरीर गोल और सुडौल हो जाताहै, केश अधिकतासे उत्पन्न होतेहैं, स्वर मीठा और गंभीर होताहै, मन सर्वदा प्रफुल्ल रहता है; चाल चलनेमें मंद हो जातीहै, और प्रत्येक विषयमें संकोच, तथा लज्जा शीलता दिखाई देती है। जो स्त्री पूर्ण यौवनवती हुई है उसमें यह सव लक्षण दृष्टि आवेंगे।

इसकारण हे वहन! जिससे विना समयमें स्त्रियें रजस्वला न हों इसविषयमें सभी स्त्रियोंको सावधान होना उचित है।

यह तो ठीकही नहीं कि, स्त्रियें पूरे महीनेपरही ऋतुमती होती हों,कारण कि कोई २ स्त्री पंद्रह दिनके भीतरही न्हान्ही हो जाती हैं, और कोई एक महीनेके भीतर होतीहैं, और

---

* कोई २ ऐसाभी कहते हैं, कि जिन स्त्रियोंका छोटी अवस्थामें विवाह हो जाता है उनकोभी कम अवस्थामें ऋतु होने लगतीहै।

कोई २ दो महीनेपर ऋतुमती होती हैं जो स्त्रियें ठीक २८।२९ दिनमें कपड़ोंसे होती हैं; वह निरोग रहती हैं वही समय ऋतुकालका ठीक समय है।

ऋतुरक्षा–हे बहन! जब स्त्रियें न्हानी हों तो पहले दिन उनको बड़ी सावधानीसे रहना चाहिये, इस बात-काभी अवश्य ध्यान रखना चाहिये कि, हमारे कपड़ोंमें कहीं रुधिरका दाग न लगजाय, इस कारण उससमय हरेक स्त्रीको कौपीन बांधनी चाहिये, कौपीनके बीचमें पांच सात तह लगा-कर थोड़ासा कपड़ाभी रखना उचित है; इस कपड़ेको दो तीन बार बदलना चाहिये उससमय एक जगह साफस्थानमें बैठी रहै; पुष्टिकारक भोजन करै, मूली, गाजर, दही, दूध और मांसादि पदार्थोंको न खावै, कारण कि, मांसादिक खानेसे कामेच्छा बलवती होती है, तो उससमय अधिक रुधिर निकलता है, इसके अतिरिक्त फिर नलोंमें दर्द हो जाता है, ठंढे जलका अधिक सेवन न करै ठंढी हवा शरीरको न लगने दे, और वर्षाकी हवा भी शरीरको न लगने दे और आंधी आजानेपरभी उस हवामें स्त्रियोंको बैठना उचित नहीं। सदा शरीरपर कपड़ा पहरे रहै। दिनमें न सोवे, रातको न जागै, धूपमें या शरदीमें न फिरै, कुछ परिश्रम न करै, तेल न लगावै; और उस समय स्नान करनाभी उचित नहीं, बहुधा स्त्रियें पहले दिनही स्नान करलेती हैं, और कहतीहैं कि, हम शुद्ध हो गईं। सो उन्हें ऐसा कभी नहीं करना चाहिये। जिससे बुखार या शरदी न हो जाय, इसविषयमें स्त्रियोंको सर्वदा सावधान रहना चाहिये कारण कि, इन दिनोंमें स्त्रियोंको

कोई रोग हो जाय तो वह रोग दूर होना बड़ा कठिन हो जाताहै। स्त्री चौथेदिन स्नान करै और साफ कपड़ोंको पहर एकमनसे प्रथम परमेश्वरकी आराधना करै फिर हे बहन! इसके पीछे अपने पतिका दर्शनकर उसकी सेवा करै; और रात्रिमें [जो पूर्णमासी, मावस, संक्रान्ति—यह न हों तो] उत्तम भोजन करनेके उपरान्त सोनेके समय पवित्र और प्रफुल्ल-मनसे पतिके साथ संसर्ग करै; यदि जबतक स्त्रीको रुधिर निकलना बंद न हुआहो तो उसदिन तक पतिसंसर्ग न करै, कारण कि, पतिका वीर्य रुधिरके साथ निकल जायगा, फिर गर्भ रहने की संभावना न होगी।

हे बहन! स्त्रियोंको इसीलिये अपने ऋतुकालमें बहुत सावधान रहना उचित है।

ऋतुमें आचार—हे बहन! स्त्रीको उचित है कि कपड़ोंसे होनेपर तीन दिन ब्रह्मचर्य व्रतसे रहै, जो स्त्री दिनमें सोती है उसका बालक निद्रालु और आलसी होता है, जो स्त्री इन दिनोंमें आँखोंमें काजल लगाती है, उसका बालक अंधा होता है, जो रोती है, उसका बालक विकार युक्त दृष्टिवाला होता है, जो स्नान करती है और जो चंदनादि लगाती है, उसका बालक दुःखी होता है, और जो उबटन लगाती और तेल मलती है उसका बालक कोढ़ी होता है, और जो नख काटती है उसका बालक नखरोगी होता है, जो बहुत दौड़ती है उसका बालक चंचल होता है, और जो स्त्री बहुत हँसती है उसके बालकके काले दांत होते हैं; और मोटे होठ तथा बहुत बक-वादी होता है, और जो स्त्री भयंकर शब्दोंको सुनती है

उसका बालक बहरा होता है; जो स्त्री बहुत हवा सेवन करती है उसका बालक उन्मत्त होता है; हे बहन ! इसलिये स्त्रियोंको उचित है कि,वे इन तीन दिनोंमें इन कामोंको न करैं।

रजस्वलाको कर्तव्यकर्म—हे बहन! स्त्रीको उचित है कि जिस दिन कपड़ोंसे हो तो उस समयसे तीन दिनतक हो सके तो कुशकी शय्यापर शयन करै और नहीं तो चटाई परही शयन करै; फूलके या पीतलके बरतनमें भोजन न करै, पत्तलपर भोजन करै, घृत शाल्योदन अथवा खीरको खाय, और किसीको स्पर्शभी न करै, तीन दिनतक पतिका दर्शनभी न करै, चौथेदिन स्नान करनेके पीछे शुद्धहो सुन्दर २ वस्त्रों को पहन कर पतिका दर्शन करै उसका कारण यह है कि, जब स्त्री ऋतुस्नान करचुकै तो चौथेदिन स्त्री जैसे पुरुषको देखती है, उसकी वैसीही संतान उत्पन्न होती है; इससे उचित है कि स्त्री प्रथम पतिकाही दर्शन करै।

सहवास।

हे बहन ! अब मैं तुझे सहवास करनेकी रीति बताती हूं कि, किस तरहसे सहवास करना चाहिये, कारण कि सहवासही एक सृष्टिका मुख्य उद्देश्य है, ईश्वरकी सृष्टिही इस सहवासके द्वारा चलती है।

सहवासका सुखदुःख—मनुष्यके जीवनका सुखदुःख सभी सहवासके ऊपर निर्भर है; कुसमयमें सहवास करनेसेही संतान गूंगी-कानी-लँगड़ी-रोगी-दारिद्री-मूर्ख-क्रोधी-उन्मत्त होती है; सहवासके ठीक समयमें सहवास करनेसे संतानमें उपरोक्त दोष नहीं होते, और संतान उत्तम होतीहै।

सहवासका समय—रात्रिकालही सहवासका ठीक समय है; रात्रिमें समस्त वायुमंडलीसे एकप्रकारकी भाफ निकलती है, सहवासके लिये जिस बलकी आवश्यकता होतीहै, यह भाफ उसी बलकी देनेवाली होती है।

दिनमें यह भाफ नहीं निकलती; इस कारण दिनमें सहवास कभी नहीं करना चाहिये कारण कि, दिनमें सहवास करनेसे बलका नाश होजाता है और बलकी हानि होतेही अनेक रोग उत्पन्न होजाते हैं।

सहवासके समय इस बातका भी अवश्य ध्यान रक्खै कि, स्त्रीका रज और पुरुषका वीर्य शुद्ध हो जब स्त्रीपुरुषका वीर्यही दूषित होगा तो संतान उत्पन्न करनेकी आशाही वृथाहै। गठीला दुर्गन्धयुक्त पीपकी तरह क्षीण और मलमूत्रके गंधके समान दुर्गंधीवाला पुरुषका वीर्य अशुद्ध समझना चाहिये। जो स्त्रीका रक्त दूषित हो तो वहभी पुरुषके वीर्यकी तरह वात, पित्त और कफादि दोषोंके योगसे उन २ दोषोंके रंग तथा गंधवाला होजाता है। स्फटिककी तरह सफेद लसलसा, मधुर और सहतके गंधके समान पुरुषका वीर्य शुद्ध तथा खरगोशके खूनके और लाखके रंगके समान स्त्रीका रज शुद्ध समझना चाहिये, अति संयोगके कारण पुरुषका वीर्य और इसी तरह स्त्रीका रज गिरने लगताहै, यह एक प्रकारका रोग है। यदि जो पुरुषस्त्रीका वीर्य रज दूषित हो तो उस समय किसी सुयोग्य वैद्यका इलाज करना चाहिये; इसके पीछे शुद्ध वीर्य होने पर सहवास करै। रात्रिके समय भोजनके दो तीन घंटे पीछे शरीर जिस प्रकार विश्राममें और स्वस्थ अवस्थामें रहता

है, ऐसा और किसी अवस्थामें नहीं रहता, इस लिये सहवास करनेके लिये यही समय ठीक है, सहवासके दोषसे ही संतान रोगी कुरूपा होती है, इसी कारण सहवास करनेके समय विशेष सावधानी रखनी उचित है।

हे बहन! रजोदर्शनके उपरान्त चौथेदिन शुद्ध स्नान करके सफेद फूलोंकी माला और उत्तम २ वस्त्रोंको धारण करे हुए पवित्र हो पतिके समान पुत्रकी इच्छा करनेवाली प्रथम अपने पतिको देखै। हे बहन! बारह रात्रियोंतक ऋतुकाल रहता है, इसके पीछे योनि संकुचित होजाती है और वह वीर्य को ग्रहण नहीं करती, इस लिये उन बारह रात्रियोंमें ऋतुकाल कहा है, उनमें पहली दूसरी तीसरी यह तीन रात्रि निंदित हैं, और ग्यारहवीं रात भी निंदित है, और युग्म अर्थात् पूरी रात्रियोंमें गर्भ स्थित रहनेसे पुत्र उत्पन्न होताहै, और अयुग्म रात्रियोंमें गर्भ रहनेसे कन्या होती है। स्त्री पुरुषका संयोग निष्फल नहीं होता, पुत्र तथा कन्या अवश्य ही उत्पन्न होती है।

हे बहन! बड़े २ ऋषि मुनियोंने भी सहवास करनेको एकांतमें कहा है ज्योतिषशास्त्रके अनुसार उत्तम तिथिमें पुरुष और स्त्री हलुआ पूरी खीरआदि इनका भोजनकरै; और फिर परमेश्वरको स्मरण कर संतानकी इच्छासे मनुष्य अपना पहले दहिना पैर शय्या पर रक्खे और फिर स्त्रीभी अपना बांया पैर शय्यापर रखकर शय्यापर विराजमान् हो।

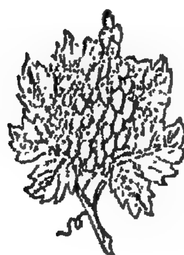
परन्तु स्त्री पुरुषकी दाहिनी ओरसे होकर चढ़ै; इसके पीछे नीचे लिखे हुए मंत्रको पढ़े।

आहिरसि आयुरसि सर्वतः प्रतिष्ठासि धाता त्वाम्॥

दधातु विधाता त्वां दधातु ब्रह्मवर्चसा भवेति ॥
ब्रह्मा बृहस्पतिर्विष्णुः सोमः सूर्यस्तथाश्विनौ ॥
भगोऽथ मित्रावरुणौ वीरं ददतु मे सुतम् ॥

शेषभी तुम्हीं हो, आयुभी तुम्हीं हो, सब ओरसे प्रतिष्ठा भी तुम्हीं हो, धाता तुम्हें धारण करै, विधाता तुम्हें धारण करै; आप ब्रह्मके तेजसे संयुक्त हो, ब्रह्मा, बृहस्पति, विष्णु, चंद्रमा, सूर्य, अश्विनीकुमार, भग, मित्र, वरुण यह सब मुझे वीर्यरूप पुत्रको दें।

इसके उपरान्त प्रिय वचन आदिका परस्पर आदिमें संभाषण कर आनंदसहित सहवास करै; उस स्थानपर सीधी शयन करनेवाली मनको लगानेवाली वह नारी सुन्दर स्थित हुए अंगोंकरके स्थित रहै। और जिस प्रकार अपने २ स्थानोंमें स्थित हुए दोषों करकै वह स्त्री वीर्यको ग्रहण करती है वैसेही स्थितरहै, और जब योनिमें वीर्यका संग्रह होता है तब तत्काल गर्भ रह जाता है; उस समय स्त्रीके लक्षण तुरन्त पलट जाते हैं वह भी मैं तुझे अगाड़ी बताती हूँ।



पंचमसोपान।

गर्भिणी।

हे बहन ! सहवास तो मैं तुझे बताचुकी अब मैं तुझे गर्भवतीके लक्षणभी बताती हूं, गर्भवती स्त्रीकी यह पहचान है-कि, जिसदिन सहवास करनेसे गर्भ रहा हो उसीदिनसे उसको ग्लानि, तृषा, होठोंपर खुशकी, पेडूमें दर्द और प्रसवस्थानमें फुर्ती हो जातीहै। ऋतु होना उसी दिनसे बंद हो जाताहै; जी मिचलाता रहता है, वमन होती है, गर्भ रहनेके दशपंद्रह दिन पीछे स्त्रीके स्तनोंका अग्रभाग काला हो जाताहै, आंखों के पलक चिपकने लगते हैं, शरीर पर रुयें खड़े हो जातेहैं, मुँहसे पानी बहता रहता है; शरीर पर आलस्य छाया रहताहै तरह २ की वस्तुओंके खानेको मन चलता है, खट्टे मीठेको बहुत मन करताहै, भोजन करतेही वमन हो जाती है, सोतेसे उठतेही निराहारमुँह वमन होती है सुगंधित पदार्थोंमें एक प्रकारकी दुर्गन्ध आने लगती है, सारे शरीरपर आलस्य रहता है, दो एक दिनके लिये ज्वरभी आजाताहै। यही गर्भवतीके लक्षण हैं।

हे बहन! माताके गर्भमें बालक किस रीतिसे बनकर कैसे बढ़ताहै, और उसको वहां भोजन किस प्रकारसे मिलता है वह मैं तुझे बताती हूं, तू मेरी इन बातोंको गांठ बांध लेना, यह तेरे बड़े काम आवेंगी।

स्त्रीके गर्भस्थलीके बीचमें एक थैली है; यह मैं पहलेही

तुझे रजोदर्शनमें पीछे वता आईहूं कि, जिस रीतिसे जीवका जन्म होता है ।

गर्भमें बालककी अवस्था—हे वहन ! दैवप्रेरित अपने पूर्वजन्मोंके प्रभावसे देहप्राप्तिके निमित्त यह जीव पुरुषके वीर्यकणके आश्रय होकर स्त्रीके उदरमें प्रवेश करता है; एक रातमें तो शुक्रशोणित मिलता है, पांचरातमें बुद्‌बुदासा होता है, दशदिनमें वेरके समान हो जाताहै; फिर मांसके पिंडके समान हो जाताहै, एकमहीनेमें वालकका शिर वनता है दूसरे महीनेमें वाहु, चरण आदि अंगके आकार वनजाते हैं, तीसरे महीनेमें नख, रोम, हाड, चाम सव इन्द्रियोंके छिद्र वन जाते हैं, चौथे महीनेमें सातों धातु प्रगट होती हैं, पांचवें महीनेमें भूंख प्यास उत्पन्न होती है, छठे महीनेमें जेरमें लिपटाहुआ माताकी दाहिनी कोखमें घूमा करताहै, माता जो भोजन करतीहै उसी अन्नादिकसे इसकी धातु वढ़ती हैं और वह जीव जीवोंकी खानि ऐसे २ विष्ठा और मूत्रके गर्त्तसे गढ्ढेमें दिनरात पड़ा रहता है, मार्कंडेयपुराणमें लिखाहै कि "स्त्रीकी नाभिमें एक वालककी वृद्धि करनेवाली आप्यायनी नाड़ी वंधी है, उसीके द्वारा स्त्रियोंके खाये पिये पदार्थके रसका अंश उसगर्भ स्थित वालकको पहुँचता है और उसको वह वालक पीपीकर दिन २ वढ़ता है" सुकुमारतासे गर्भके कीड़े जो क्षणमें उसे काटते हैं, उस कठिन पीड़ासे वह जीव अत्यन्त व्याकुल हो मूर्च्छित होजाता है, वह कीड़े भूखसे व्याकुल होकर जीवको सताते हैं, और कीड़ोंके काटे हुए घावोंपर जो माताके खाये, कटु, तीक्ष्ण, उष्ण, (गरम) लवण रूखा, अम्लादि अनेक

भाँतिकी वस्तुओंके लगनेसे उस जीवके शरीरमें अत्यन्त पीड़ा होती है, उदरके भीतर जरायुसे बँधा और बाहर माताकी आँतोंसे बंधा; नीचे योनिकी ओरको शिर किये धनुषके समान टेढ़ी पीठ झुकाये मलमूत्रमें पड़ा रहता है; हाथ पैर तकभी नहीं चला सकता। यह माताका उदर नहीं है; बरन् जेलखाना है, अपने तनुकी चेष्टा करनेमें इस बालकको कुछ सामर्थ्य नहीं रहती; जैसे पींजरमें पक्षी अपना मनोर्थ सिद्ध नहीं कर सकता, उसी प्रकार यह प्राणी फँसा रहता है वहाँ इस प्राणीको पिछले सौ जन्मके कर्मोंकी याद आती है; उस समय दीर्घ श्वास लेकर पश्चात्ताप करता है। और इस बालकको वहाँ सुख तो नाम मात्रको भी नहीं मिलता। गर्भके समान दुःख कहीं नहीं है हे बहन! सातवें महीनेमें इसे अधिक बाधा होती है, यह एक जगह स्थिर नहीं रह सकता, प्रसूतिकी वायुसे सदा काँपता रहता है; और विष्ठेके कीड़ोंको अपना सम्बन्धी समझता है। उस समय दुःखी हो वह जीव बारम्बार परम उदास हो गर्भवासकी त्रास देख सात धातुओंसे बँधाहुआ हाथ जोड़ व्याकुल वाणीसे उस परमात्माकी स्तुति करताहै कि, जिसने इसको इस बंदीगृहमें डाला है।

स्तुति गीतका छंद।

तेहि कृष्णके चरणारविन्दहि मैं शरण अब होत हूं।
जो दास हित बहुरूप धारत मैं परो दुःख सोतहूं॥
माया विवश मैं कर्म बंधन बँधो गर्भहिमें परो।
अविकार शुद्ध अंखडबोध मुरारि मेरा दुख हरो॥
मैं हौं असंगहिये वृथाही बँधो भूतहि पंचमें।

इन्द्रिय विषय आसक्त हौं मैं वढ़ो माया मंचमें ॥
दुख रूप यह संसारमें जेहि विवश जीव सिधावतो।
नहिं कटत जाकी कृपा विन तेहि नाथको गुहरावतो ॥
यह ज्ञान दायक नाथ सोइ जो सकल जग व्यापत रहै।
सम तिनहि ज्ञान विनाश हित अव नाथ सोइ दाया गहै ॥
मल मूत्र शोणित कूपमें जननी जठर वड़वानलै।
तनुदशन मासन को गनत उद्धार करि हौ कब भलै ॥
दशमास वालक मोहिं जो यह ज्ञानदिय सुखगाथ है।
जो करत निरहेतुक कृपा सो सत्य दीनानाथहै ॥
प्रभुको न निरखत पशु खगादिक निज सुखे दुःख भोगते।
मैं तौ लखौं तुमको सकल थल आप ज्ञान सँयोगते॥
पै मैं न इतते कढन चाहत यदपि कठिन कलेश है।
निकसे असे तुव प्रवल माया यह विशेष अशेप है ॥
यह गर्भहीमें भक्ति कर संसार सागर तरहुँ गे।
तुव कृपासे वैकुंठ वश नहिं विश्व व्यालहि डरहुँ गे ॥

हे वहन ! इस रीतिसे माताके गर्भमें आया हुआ बालक नौ महीने गिन २ कर व्यतीत करता है, । अव मैं तुझे गर्भकी अवस्था और गर्भकी रक्षा भी बताती हूँ।

गर्भावस्था और गर्भरक्षा।

जिस समय स्त्री गर्भवती होती है हे वहन ! उस समय उसकी सुन्दरता वढ़ती जाती है, और कोई २ स्त्री अत्यन्त दुर्वल होकर वृद्धके समान होजाती हैं, नेत्रोंमें झाई पड़ जाती हैं; नेत्र नीले वर्णके होजाते हैं, उस समय कोई स्त्री तौ अधिक

चपलता धारण करती है, और कोई २ धीर और गंभीरता को ग्रहण करती है।

गर्भवती स्त्रीको उचित है कि, वह अपने भोजन और व्यवहारके सम्बन्धमें बड़ी सावधान रहै। इस समय उनकी रक्षाके ऊपर और एक जीवकी रक्षाका भार है; जो स्त्रियें ऐसी अवस्थामें असावधान हो अपना यत्न सहित पालन नहीं करती हैं, उनके गर्भमेंका बालक, रोगी, अंगहीन, बुद्धिहीन, होते हैं; और फिर वह गर्भमेंही मरजाते हैं। गर्भगिरनेकी संख्या कुछ कम नहीं है; गर्भवती स्त्रीकी असावधानीसेही गर्भपात होता है।

हे बहन! यदि सुगठित-बलवान् और बुद्धिमान् सन्तानको उत्पन्न करनेकी इच्छाहो, तो तुम्हारे गर्भमेंका बालक जिसप्रकारसे भलीभाँति निर्विघ्नतासे बलप्राप्त कर सकै, वही काम करना उचित है; गर्भवती स्त्रीका शरीर एक साथही बदल जाता है, इस कारण पहले नियम भी साथही साथ बदल जाते हैं; उस समय समयके अनुसार उचित कामके बिना किये उनकी संतान दुर्बल, अंगहीन, बुद्धिहीन, गूँगी,बहरी, अंधी होजाती है, यह माताही का दोष है, गर्भवतीस्त्रियोंको गर्भावस्थामें सावधानी से रहनाचाहिये गर्भवती स्त्रीको कम भोजन करना उचित नहीं, वरन् खूब पेट भरकै खाना चाहिये; वह बासी तिवासी; सड़ी बुसी चीज कभी न खाय;और पुष्टिकारक भोजन करना कर्त्तव्य है; दिनरातमें जै बार भोजन करनेका अभ्यास हो, उससे अधिक बार भी खालो तो कुछ हर्ज नहीं है; और जिस पदार्थके खानेमें रुचि न हो उसे कभी खाना उचित

नहीं; जो रुचै उसीको खाना चाहिये, परन्तु इतना अवश्य ध्यान रहै कि, जो वस्तु इस समय दुःखदायी हो उसे न खावे पके हुए फलके खानेमें कुछ दोष नहीं है; अधिक खटाई भी न खाय; छै महीनेके पीछे भोजनकी मात्राको कुछ बढ़ादे, उस समय दूध, मोहनभोग इत्यादि हलके पदार्थोंका भोजन करै; धोती या लेंहगा कस कर न बाँधै जिससे पेटको पीड़ा नहो, शरदीके दिनों में गरम कपड़ा पहरे रहै और नंगे पैरोंसे शरदीमें न फिरै। ऐसी अवस्थामें स्त्रियोंको काया कष्ट अवश्य करना चाहिये। इस समय योंही चारपाई पर बैठी हुई नौकर चाकरोंसे काम न लेती रहै, सर्वदा अपने घरके काम काजको आप करती रहै, तो वह बड़ी जल्दी और सुखसहित संतान उत्पन्न कर सकेंगी, परन्तु ऐसा काम न करै जिससे अधिक परिश्रम पड़े और शरीरको क्लेश हो। जो घरके काम काज न करै तो हे बहन! इतना तो वह अवश्य करै कि, दो तीन घंटे घरमें टहल लिया करै, गर्भावस्थामें भारी बोझ न उठांवे, जैसे बहुतसी स्त्रियें भारी २ पलंग तथा नाजके भरे हुए मटके, पानीके भरे घड़े आदि उठा लेती हैं, इससे उनकी गर्भकी संतानको अपना जीवन दे देना होता है; गर्भवती स्त्री को गाड़ी पालकी घोड़ागाड़ी इत्यादि सवारीमें बैठना उचित नहीं, और दो तीन महीने तक बाहर जानेसे गर्भके गिर जानेका भय है, गर्भवती स्त्रीको घरसे बाहर जाना उचित नहीं इन नियमोंकी गर्भवती स्त्रीको अवश्य पालना उचित है।

जिस घरमें हवा भलीभाँतिसे जा सकै ऐसे घरमें स्वच्छ शय्या पर शयन करना उचित है ८-९ घंटे तक बराबर शयन

करै इससमय सुखसहित नींदआनेकी अत्यन्त आवश्यकताहै बहुधा आठमास पूर्ण होने पर गर्भवती स्त्रीको नींद नहीं आती, दिनमें भी दो तीन घंटेको सो रहना चाहिये । अति गर्म या अत्यन्त ठंढी शय्यापर भी शयन न करै ।

शारीरिक स्वस्थताकी अपेक्षा मानसिक शांतिका अधिक प्रयोजन है प्रथमही गर्भवती स्त्रीके मनमें वड़ा भय होताहै । और वह अपनी अवस्थाको देखकर व्याकुल होजातीहै; यह गर्भिणी स्त्रीको सन्तानके लिये अत्यन्त अनिष्टदायकहै । इस कारण भय कभी न करै; गर्भकी पीड़ा नहीं है, यह सभी स्त्रियोंको होतीहै, ऐसी अवस्थामें जो स्त्रियें भय करतीहैं उनका गर्भ गिरजाताहै ।

ऐसी अवस्थामें अधिक मानसिक परिश्रमभी करना उचित नहीं, जिससे मन सर्वदा संतुष्ट रहै शांत रहै ऐसी उत्तम और श्रेष्ठ चिन्ता करना कर्त्तव्यहै; स्त्रीकी वह मानसिक चिन्ता गर्भके बच्चेपर अपना असर करती है। बुद्धिमान् अथवा निर्बोध, क्रूर अथवा सरल; धार्मिक या नास्तिक संतानका उत्पन्न करना माताकेही ऊपर निर्भरहै । गर्भवती स्त्रीका खाया हुआ भोजन जिस रीतिसे वालकको पुष्ट करताहै, उसी रीतिसे उसकी चिन्ताआदि करनेसे वालकपर असर पड़ताहै; इस कारण मनको सर्वदा ऊंचा रखना चाहिये। धर्मकी चिन्ता करै, सभी मनुष्योंके साथ नम्रता और सरलतासे व्यवहार करै, दीन दरिद्रीके दुःखसे दुःखिनी होकर उसके दुःखको दूर करै, तो धार्मिक और बुद्धिमान् संतान होगी वडे २ वीरोंके जीवन चरित्रको गर्भवती स्त्री पढै, उनकी वीरता, धीरता और

साहसको पढ़कर हृदयमें भक्ति उत्पन्न होगी, तो तुम्हारेभी श्रेष्ठ संतान होगी—हे वहन! कुंतीने अपने पुत्रोंसे इस प्रकार कहला भेजाथा कि "हे केशव! तुम भीम और अर्जुनसे जाकर कहना कि, क्षत्रीकन्याने जिसलिये गर्भ धारण किया है. उसका समय अब आगया-इसकारण जो तुम युद्ध नहीं करोगे. तो यह कार्य वडा घृणित होगा।" सिंहनीका पुत्र सिंहही होता है। इस समय उपन्यासादिको कभी न पढै और कोई बुरी चिन्ता मनमें न करै। जिसके देखनेसे या जिसका विचार करनेसे मनमें भय, घृणा, क्रोध, ग्लानि, शोक इत्यादि उदयहों उसको कभी न देखै और न उसका विचारही करै।

माताके मानसिक भावके ऊपरही संतानकी सुन्दरताका भी भार निर्भरहै वह तो मैं तुझे पीछे बताआई हूं; गर्भवती स्त्रीको भयानक पदार्थभी देखना उचित नहीं, और गर्भावस्थामें मुरदेको भी न देखे; कोई दुर्गन्धियुक्त पदार्थकी गंध न ले और अधिक सुगंधित चीजोंको भी न सूंघे जिससे शरीर स्वस्थ रहै तथा जिससे मन प्रफुल्ल रहै वही काम करना ठीकहै।

संसारमें सुख दुःख निर्विघ्नतासे नहीं भोगे जा सकते। संसारमें सुख दुःख सभी भोगने पडतेहैं। जिसमें अधिक सुख मिलताहै,उसके लिये वड़ा दुःख उठाना पडताहै।संसारी सुखोंके बीचमें संतानका होना एक प्रधान सुखहै। और यह सभी जातियोंमें देखाजाताहै। परन्तु इसमें प्रारंभसे अबतक कितना क्लेश और कष्ट उठाना पडताहै उस बातको हे वहन!जननीही जानती होंगी, मैंने गर्भ गिरजानेके बहुतसे कारण तुझे बताये

हैं, और उसके निवारण करनेके उपायभी बतायेहैं, परन्तु अधूरा जाना उन सबकी अपेक्षा भारीहै। गर्भके गिरजानेसे गर्भवती स्त्री को बड़ा कष्ट उठाना पड़ताहै; वरन प्राणोंके जानेमेंभी संदेह नहीं रहता, परन्तु इसमें सबसे बुरी बात यह है कि, जिस स्त्रीको एकबार कच्चा गर्भ जाता रहा फिर उसे टेव पड़जातीहै वर्षवें दिन दसियों जीव उदरमें आकर अपने जीवनकी यात्राको शेष कर जातेहैं, पूरा बालक होना बड़ा कठिन पड़ जाताहै

गर्भ तीसरे महीने अधिकतर गिरजाताहै, और छठे मासमें भी बहुधा गिर जाता है; जिस स्त्रीका गर्भ जिस महीनेमें गिरा है उसका दूसरीबार भी ठीक उसी समयमें गिर जायगा। बालक और वृद्ध स्त्रियोंके गर्भ गिरजानेकी अधिक शंका रहती है। स्त्रियोंकी पूर्ण युवावस्था होजानेपर यह विपत्ति बहुत कम पड़तीहै। गर्भवती स्त्रीको जुलाब आदि कोई औषधी नहीं देनी चाहिये, गर्भवती स्त्री दौड़ कर न चले, चौपटेमें न सोवे। गर्भावस्थामें अपने गोदीके बालकको स्त्रियें दूध न पिलावें जो ऐसी अवस्थामें बालकको दूध पिलाती रहती हैं उनका गर्भ भी गिरजाताहै; इसके अतिरिक्त, परिश्रम अधिक क्लांति भारी बोझाका उठाना, क्रोध, दौड़कर चलना, अधिक आनंद, भय, गाड़ीआदिमें दूर जाना, जुलाब देकर अधिक दस्त कराना, तथा अधिक दुर्बलता इत्यादि गर्भ गिरजानेके कारण हैं। गर्भवती स्त्रीको इन सब बातोंपर ध्यान रखना अवश्य कर्तव्यहै

गर्भवती स्त्रीको स्वामीके साथ सहवास करना उचित नहीं है, पहली पहल गर्भवती स्त्रीको बड़ी सावधानीसे रहना चाहिये कि, उसको बहुत डर रहता है नवीन गर्भवती स्त्रीको किसी

प्रकार भी चौथे महीनेसे अधिक सहवास न करने दे। इससे भी गर्भ गिर जाता है

हे वहन! गर्भगिरनेसे प्रथमही पेडूमें दर्द होने लगता है और रुधिर निकलने लगता है, इस कारण इन लक्षणोंके होते ही गर्भवती स्त्रीकी किसी योग्य वैद्यसे चिकित्सा करानी चाहिये।

गर्भका गिरजाना यह अस्वाभाविक है। इसी लिये स्त्रीको अधिक पीड़ा होतीहै; जिन स्त्रियोंके गर्भ जाता रहा हो, उनको एक महीनेतक विश्राम करना उचित है; विना दो तीन मासिकधर्मोंके हुए गर्भाधान करना उचित नहीं।

जिन स्त्रियोंके छै महीनेमेंही वालक होजाता है वह किसी भाँति नहीं वचसकता, पृथ्वीपर आतेही मर जाता है, और यदि जो किसी प्रकार जीवित रहभी जाय तो वड़ी सावधानी और यत्नसे उसे रखना चाहिये। कारण कि मैंने डाक्टरोंके मुखसे सुना है, कि ऐसे २ दोचार वालक वचभी जाते हैं। अठमासा वालक भी नहीं वचता, परन्तु हे वहन! सतमासे वालक वहुत वच जाते हैं स्त्रियोंको उचित है कि, गर्भावस्थामें वड़ी सावधानीसे रहैं। यही मेरा कहना है।

गर्भपरीक्षा।

हे वहन! अव मैं तुझे गर्भकी परीक्षा भी वताती हूं कि, जिससे गर्भवती स्त्रीको देखते ही पहचान लिया जाय कि, इसको पुत्र होगा वा कन्या, या नपुंसक संतान होगी; या दोवालक होंगे।

पुत्रकी परीक्षा।

१–जिस स्त्रीके पहले दाहिने स्तनमें दूध हो तो जानलो कि, इसके पुत्र होगा।

२-जो स्त्री चलते समय अपना दहिना पैर आगे धरै तौ इसके भी पुत्र होगा।

३-जिस स्त्रीके मुखकी कांति हीन होजाय और चेहरा रूखा रहै तौ इसके भी पुत्र होगा।

४-जो स्त्री दहिनी पसली करकै अपनी इच्छासे सोती हो तो उसके भी पुत्र होगा।

५-जिस गर्भवती स्त्रीको पुरुषके नामोंमें अधिक प्रीति हो जाय वा पुरुष नामवाले प्रश्नमें रतहुई स्त्री भी पुत्रको जनती है।

६-जो स्त्री गर्भके समय पुरुष नामवाले पदार्थोंके देखनेकी अधिक इच्छा करती हो, तौ जानलो कि, इसके भी लड़का होगा।

७-जिस स्त्रीकी दाहिनी कोख ऊँची हो, तो इसके भी पुत्र होगा।

कन्याकी परीक्षा।

१-जिस गर्भवती स्त्रीके गर्भ समयमें पुत्रके लक्षण न हों तौ उसके कन्या होती है।

२-जिसको गर्भ समयमें पुरुषके साथ सहवास करनेकी इच्छा अधिक होजाय उसके भी कन्या होतीहै।

३-जिस स्त्रीको गर्भ समयमें नृत्य अच्छा लगता हो, बाजा अच्छा लगता हो, गांधर्वविद्या (गाना) अच्छा लगता हो सुगंधि तथा फूलोंकी माला अच्छी लगती हो, उस स्त्रीके कन्या होती है।

४-जिस स्त्रीके कुच काले हों उसके भी कन्या होती है।

५–जो स्त्री आलस्यमें भरी रहै दिनभर लेटी रहै, किसी कामकी भी इच्छा न करै तौ उसके भी कन्या होती है।

गर्भमें नपुंसककी पहँचान।

जिस स्त्रीको गर्भावस्थामें पुत्र और कन्याकी जननेवाली इन दोनों गर्भवतियोंके लक्षण न मिलैं, और कोखमें मध्य भाग ऊँचाहो उसकें नपुंसक संतान होती है।

गर्भमें दो बालकोंकी पहँचान।

१–जिस स्त्रीके गर्भ समयमें दोनों ओरके पार्श्वोंके ऊँचे पनेसे और द्रोणीकी तरह कोख स्थित हो तो उस नारीके दो बालक होते हैं।

२–जिस स्त्रीके गर्भ समयमें उदर अधिक बढजाय, वा गर्भिणी स्त्रीको यह मालूम पड़ै कि, एकही समय दो बालक पेटमें घूमरहेहैं तो उस स्त्रीके दो बालक पैदा होते हैं।

हे बहन। यह मैंने तुझे गर्भवती स्त्रियोंकी परीक्षा बताई यह भी समय पर तेरे काम आवेगी, अब मैं तुझे गर्भकी चिकित्सा भी बताती हूं। इसे तू सावधान होकर सुन।

गर्भ चिकित्सा।

१–हे बहन! पहले महीनेमें-यदि अकस्मात् गर्भमें वेदना होजाय तो उस समय गौके दूधमें पद्माख, खस, लाल चंदन एकपलमात्र तीन दिन पान करनेसे गर्भ स्थित होजाता है; या मुलेठी, देवदारु, शाकवृक्षके बीज और क्षीरकाकोली इनको पीस कर गौके दूधके साथ पियै तौ भी गर्भ ठहर जाता है।

२–दूसरे महीनेमें नीलकमलकी जड़,मुलेठी,काकड़ा-

सींगी, इनको बराबर ले जो स्त्री गायके दूधके साथ पियै तो दूसरे महीनेकी वेदना शान्त होजाती है अथवा पीपलकी छाल, काले तिल, शतावरी, मंजीठ, इनको बराबर ले पीसकर चौगुने दूधके साथ पियै तो भी दूसरे महीने की वेदना शांत हो जाती है ।

३–तीसरे महीनेमें–चंदन, तगर, कूट, मृणाल (कमल की जड़) कमलकेशर यह ठंढे जलके साथ पिये तो तीसरे महीनेकी पीड़ा शान्त होती है । अथवा क्षीर काकोली और सुगंध वालाको जलके साथ पियै तो भी गर्भकी पीड़ा दूर होती है ।

४–चौथे महीनेमें–नीलोत्पलकमलकी जड़, गोखरू, कसेरू पीस कर गौके दूधके साथ पीनेसे चौथे महीने की वेदना शान्त होजाती है । अथवा मुलेठी, रास्ना, श्यामक ब्राह्मण यष्टि अनन्त मूल इनको पीस कर गौके दूधके साथ सेवन करै तो चतुर्थ मासकी वेदना शान्त हो जाती है ।

५–पांचवें महीनेमें–पुनर्नवा, काकोली, तगर, नीलोत्पल यह सब गौके दूधके साथ पिये तो पाँचवें महीनेकी पीड़ा दूर हो जाती है, अथवा दोनों कटेरी, ब्राह्मण यष्टिका कमल नाल, गौके घी और दूधके साथ पंचम मासमें सेवन करै, तो पांचवें महीनेकी पीड़ा दूर होती है ।

६–छठे महीनेमें–मिश्री, कैथका गूदा, ठंढे जलके साथ पीने वा गायके दूधके साथ पीनेसेभी वेदना शान्त होती है । अथवा गोखरू सहँजना मुलेठी, पृष्ठीपर्णी, खरैटी इनको

पीसकर गायके दूधके साथ पिये, तौ छठे महीनेकी पीड़ा जाती रहती है।

७--सातवें महीनेमें--कसेरू, पुष्कर मूल, सिंघाड़ा, नीलोफर पीसकर दूधके साथ पिये तौ सातवें मासकी वेदना शान्त होजाती है। अथवा मुलेठी, दाख, सिंघाड़ा, कसेरू, कमलकी जड़, मिश्रीके साथ दूधमें मिलाकर पिये तोभी सातवें महीनेकी पीड़ा दूर होती है।

८--आठवें महीनेमें--मुलेठी, पद्माख, मोथा, नागकेशर, गजपीपल, नीलोत्पल यह गौके दूधमें पिये तो आठवें महीनेकी वेदना शान्त होजाती है। अथवा वेलकी जड़, कैथ, दोनों कटेरी अर्थात् छोटी वड़ी, गन्नेका रस, पटोलकी जड़ यह दूधमें सिद्ध करे; इस दूधको जलके साथ पीनेसे आठवें महीनेकी गर्भ पीड़ा शान्त होजाती है।

९--नौमें महीनेमें--इन्द्रायनके वीज क्षीरकाकोली (शीतलचीनी) सहतके साथ पीनेसे नौमें महीनेकी व्यथा शान्त होजाती है। अथवा मुल्हेठी, गुडूची, अनन्तमूल, प्रियंगु इनसे सिद्ध कर नौमें महीनेमें दूध पिये तौ वेदना शान्त होजाती है।

१०--दशमें महीनेमें--मिश्री, मुनक्का, शहद, नीलकमल इन सबको गायके दूधके साथ पियै तो दशमें महीनेकी वेदना शान्त होती है अथवा सोंठसे सिद्ध कर गौका दूध दशमें महीनेमें पान करै या मुल्हैठी, देवदारु, सोंठ, गौके दूधसे पिये तौ भी दशमें महीने की पीड़ा शान्त होजाती है।

हे वहन ! जो स्त्री सामान्यतासे लोध (वा आमला) सौ वीरांजन, मुलेठी इन सबको सावधान होकर सात दिन तक पीती है तो उसका गर्भ स्तंभित होता है फिर चलायमान नहीं होता; या धनियाँ, रसौत, लोध, मुलेठी पिये तौ भी गर्भ ठहर जाता है ।

शहत, अडूसा, चंदन, सैंधा, इन्द्रयव, घृत यह जलके साथ पीस कर देनेसे गिरता हुआ गर्भ शीघ्र थम जाता है, यह योग मौलि देवने कहा है ।

कुम्हारके चाकपर बरतन बनाते समय जो पतली मिट्टी हाथ मेंलगती है उसको ले बकरीके दूधमें डालकर शहतके साथ पियै तो शल्युक्तगर्भके गिरनेको निवारण करताहै और स्थापित करता है ।

कसेरू, सिंघाड़ा, जीरा, नागरमोथा, एरण्ड, शतावरी इनसे सिद्ध किया जल मिश्री डालकर पिये तो शूलको निवारणकर ताहै, और गर्भको गिरनेसे रोकता है ।

कुमुदका कंद, शहत, घी, दूधको मिलाकर पियै अर्थात् इसमें मिश्री डालकर ठंढा कर पियै तो गर्भस्राव, अरोचक, वातरोग सूजन, त्रिदोष, चमचमाहट यह सभी नियम सहित सेवन करने से नष्ट हो जाते हैं ।

ह्रीबेर, अतीस, मोथा, मोचरस, कुटज, जो इनका क्काथकर गिरते हुए गर्भमें देवे तो गर्भ स्तंभित होजाता है प्रदर कोख रोगमें देनेसे शूलादि नष्ट हो जाते हैं ।

कमलका कंद, काले तिल, शहत, मिश्रीयुक्त, दूधके साथ पीवे तो यह गुरुदोषसे गिरतेहुए गर्भको भी शीघ्र स्तंभनकर

ताहै। नील कमलकी नाल,मुलेठी, मिश्री,बड़ी कटेरी यह भी पीसकर पानीके साथ खानेसे गर्भको स्तंभन करती है।

शर्कराके साथ गौका दूध सेवनकरनेसे शुष्कगर्भकी शांति होतीहै,अथवा गंभारीके फलका चूर्ण वा मुलेठी शहतके साथ पान करै; अथवा गर्भिणी स्त्री जिसका गर्भ सूखता हो तो वह गायका दूध सेवन करै, तो उसके गर्भकीभी शान्ति होतीहै।

हे वहन ! यह मैंने तुझे गर्भकी चिकित्सा वताई जो स्त्रियें इसके अनुसार व्यवहार करैंगी उनको गर्भकी पीड़ा नहीं सतावैगी।

प्रसूतिके पूर्व आयोजन।

हे वहन ! स्त्रियोंके जीवनमें प्रसवके समान कठिन पीड़ा और कुछ नहीं है, इस वातको सभी मनुष्य कहते हैं कि, इसमें स्त्रीका नया जन्म होता है; इस कठिन कार्यमें किन २ चीजोंका प्रयोजन होता है वहभी मैं तुझे वताती हूँ कारण कि, जो स्त्रियें प्रसवकालकी आवश्यकीय वस्तुओंको पहलेसे संग्रह नहीं कररखती हैं उनको उस समयमें वड़ा कष्ट उठाना पड़ता है।

१–सवसे प्रथम तो गर्भवती स्त्रीके लिये एक सूतिका गृह अर्थात् सौड़का घर स्थिर करना चाहिये। सूतिकागृह कैसा होना चाहिये उसे मैं आगे वताऊँगी।

२–प्रथमसेही घड़ी मंगालेनी चाहिये कारण कि, इससे वालकका जन्मपत्र ठीक वनैगा–

३–वालक वार २ पाखाना पेशाव करता है, वालकके लिये चार पांच विछौने पहलेसे ही सिला रक्खै। यह पुराने कपड़ोंके हों; कारण कि, नया कपड़ा कड़ा होता है; वह

बालकके कोमल शरीरमें छिदता है और पुराना कपड़ा मुलायम होता है, वह बालकको कुछ क्लेश नहीं देता इसलिये पुराना कपड़ाही श्रेष्ठ है

४–तीन बालिस्तके लंबे चौडे पोतरेभी बालकके लिये पहलेसेही बना रक्खै दश पंद्रह हों।

५–माता और संतानके लिये उस समय "ताप" की भी आवश्यकता पड़ती है इसलिये सूतिकागृहमें पहलेसेही कोयलोंकी अँगीठी भरी हुई रखनी उचित है।

६–प्रसूति स्त्रीके लिये भोजनके उपयुक्त द्रव्यभी पहलेसेही संग्रहकर रक्खै; कारण कि, न जानें किस समय बालक पैदाहो और जो यह वस्तु उस समय न मिलै अथवा देरसे मिलै तो बड़ा कष्ट होता है, पहलेसे ही एक होशियार दायी स्थिर कर रखनी चाहिये कि, जो समाचार पातेही तुरन्त चली आवै।

७–यदि घरमें अमीरी हो तो एक धायंभी पहलेसेही बालकके लालन पालन करनेके लिये ठीक है।

८–प्रसूतिको बालक होनेके पीछे बहुतसे कपड़ोंकी आवश्यकता रहती है; इस कारण पहलेसेही पुराने २ कपड़े जितने मिल सकैं सभीको संग्रह कर रक्खै।

९–सूतिकाघर झाड़ बुहार कर साफ कर लेना उचित है, उसके भीतर कूड़ा कर्कट कुछ न रहै।

१०–सूतिकाघरमें एक चारपाई और एक साधारण बिछौना भी रखना चाहिये।

११–नालकाटनेके लिये एक तेजसा चाकू भी रखना चाहिये।

१२—खरयाथी दवानेको खुरपेकी आवश्यकता पड़ती है उसे मँगा रखना उचित है ।

१३—नाल वांधनेके लिये एक कलावेका कुछ एक मोटा वटा हुआ डोराभी रख छोड़ै ।

१४—मीठातेल और कुछ थोड़ासा आटाभी पहलेसे रख छोड़ै ।

१५—मट्टीका कूंड़ा या करियल वालकके स्नान करानेके लिये भी पहलेसेही रक्खे ।

१६—जल गरम करनेके लिये अंगीठीमें आग रहनी उचित है ।

१७—पुराने कपड़े और वालककी विछौनी आदिको एक जगह रक्खे ।

१८—पहलेसेही जलं और दूध मँगा रखना उचित है ।

१९—घरमें थोड़ीसी अजवायन और मिठाईभी रहनी चाहिये ।

हे वहन । जो स्त्रियें इन कामोंके करनेमें असावधानी करती हैं; उनको प्रसव कालमें वड़ा कष्ट उठाना पड़ता है । प्रसव समयमें प्रसूतीकी असहनीय पीड़ाको देखकर घरकी सभी स्त्रियोंकी बुद्धि स्थिर नहीं रहती; वरन् वह व्याकुल होकर इधर उधरको ढूँढ़ती फिरती हैं उनको जिस वस्तुकी आवश्यकता पड़ती है वह कठिनतासे मिलती हैं । वह पागलकी भाँति इधरसे उधर और उधरसे इधर दौडती फिरती हैं । और उस समय जो ऐसा होता है; तौ प्रसूति और संतानका जीना कठिन पड़जाता है; इसी कारण हे वहन! प्रसवके समयमें

जिन २ वस्तुओंकी आवश्यकता हो स्त्रियोंको वह पहलेसेही ठीक करनी उचित हैं।

सूतिकागृह।

हे बहन! हमारे देशमें स्त्रियें सूतिका घरको बड़ा खराब और बहुत छोटा तथा घरके बाहर आंगनमें बना देती हैं; और बहुतेरी छतपरही बना देती हैं; वह इस बातको नहीं जानतीं कि, इससे हमारी कितनी हानी होती है। बहुतेरे सोबड़के घरोंमें शील होती है, चारों ओरसे ठंढी २ हवा जाती है, ऐसे २ घरोंमें प्रसूतिको रक्खाजाता है; इन घरोंमें रहनेसे सैकड़ों बालक सूतिका घरमेंही मरजाते हैं; इसमें आश्चर्य क्या है;जिस घरमें पैर धरनेसे सर्व साधारणको फुरेरियें आती हैं भला उस गृहमें रहनेसे प्रसूतिकी क्या अवस्था होगी। और वह सुकुमार बालक उस पीड़ाको कैसे सहन कर सकता है, वह तो एक दो दिन जीवित रहकर आपही शरदीके मारे ऐंठ जायगा, जिस घरमें रहनेसे हमें कुछ पीडा नहीं होती, प्रसूतिको उस घरमें रहनेसे भी पीड़ा होती है; इस कारण हे बहन! सभी स्त्रियोंको सूतिकागृहकी ओर भी विशेष ध्यान रखना उचित है, स्त्रियोंको कैसा सूतिकागृह बनाना चाहिये इसको वह नहीं जानती हैं तभी तो वह ऐसा घृणित सूतिकागृह बनाती हैं, सूतिकागृह बहुत उत्तम बनाना चाहिये, जिससे बालक और उसकी माताको कुछ कष्ट न पहुँचे कितनीही सन्तान और उनकी माता मरजाती हैं उसका कारण यही सूतिकागृह है जो वह इस बातको जानतीं; तो ऐसा घर कभी नहीं बनातीं।

हे बहन ! सूतिकागृह कैसा होना उचित है, वह तुझे बताती हूं।

१–घरोंमें जो सबसे उत्तम घर हो वही सूतिकागृहके लिये ठीक है।

२–घरमें शील आदि न हो; और सूतिका गृहमें जो कुछ शील हो तो दो तीन दिन पहले अग्नि जलाले।

३–उत्तर या दक्षिणकी दिशामें सौहड़का घर होना ठीक है; सूतिकाघर जो बनाया जाय उस घरके आगेभी कोई घर हो जिससे प्रसूत इकली न रहै और उसे बोलचालकी सुनार आती रहै।

४–उस घरमें खिड़की आदि अवश्य हों जिससे कि उजाला भली भांतिसे रहै।

५–सूतिकाघरमें पानी निकलनेका भी रास्ता होंना चाहिये कारण कि, पानीका काम बहुत पड़ता है।

६–घरमें किसी प्रकारकी दुर्गन्ध न आती हो, दुर्गंध समान अधिक पीड़ा आर कुछ नहीं है। हे बहन! देखा जाता है कि, जिन घरोंमें दुर्गंधि आती है उन घरोंमें कोई न कोई रोगी रहताही है;इसलिये घरमें गंधककी धूनी देनी उचित है।

७–अनेक प्रकारके कारणोंसे सूतिकाघर मैला कुचैला रहता है, इसी कारण मिट्टीसे पुतवालिपवाकर साफ रखना चाहिये; जो घर साफ नहीं होता उसमें बालक और उसकी माताका स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता विना यत्न कियेहुए सूतिकाघर भी साफ सुथरा नहीं बन सकता।

हे बहन! मैंने जो कुछ कहा है यह इसके सम्बन्धमें ठीक है स्त्रियोंको इस पर विशेष ध्यान देना चाहिये।

अब मैं तुझे यहभी बताती हूं कि, बालक कितने दिनोंमें उत्पन्न होता है और वह लक्षणभी बताती हूं कि, जिनके द्वारा स्त्रियें भली भांतिसे जानलेंगी कि, अब इस स्त्रीके बालकहोने में दो एक दिन की ही देरहै।

प्रसवका नियतसमय-

शीघ्रप्रसूतास्त्रीके लक्षण।

हे बहन! गर्भ रहने पर नवें या दशमें महीनेमें बालक होता है किसी २ स्त्रीके नौ महीने पंद्रह दिनमें भी होता है, यह साधारण नियम है, परन्तु ठीक किस दिन बालकका जन्म होगा यहभी गणित शास्त्रसे जानने लायक बात है, इस दिनके स्थिर करनेके लिये रजोदर्शन बंद होनेका पिछला दिन छोड़ कर उसके आगेके तीन या पहले महीन गिनने और जो दिन आवे उसमें सातादिन जोड़ने, इस हिसाबसे आया दिन प्रसवकाही दिन है। अथवा रजोदर्शन बंद होनेका अखीर दिन छोड़कर दोसौ अस्सी दिन गिनना, और इस हिसाबसे आनेवाला दिन प्रसूतिका समझना चाहिये; इसी प्रकार गणितसे निकालेहुए दिनको या कभी उस दिनके एक दो दिन आगे पीछे बहुत करके स्त्री प्रसव होती है। परन्तु स्त्री पुरुषकी उमर जिस प्रकारसे जादे बढ़ती जाती है वैसेही प्रसव समयको नियमितदिनसे अधिक दिन लगते हैं; ऐसा अनुभव है।

हे वहन! विलायतके डॉक्टरोंने प्रसव होना इस प्रकारसे निर्णय किया है पहली जनवरीमें ऋतु वंद होवै तौ ३० सितम्बरके दिन प्रसव होता है।

१ फर्वरीमें	तौ ३१	अक्तूबर.
१ मार्चमें	तौ ३०	नवम्बर.
१ अप्रेलमें	तौ ३१	दिसम्बर.
१ मईमें	तौ ३१	जनवरी.
१ जूनमें...	तौ २८	फरवरी.
१ जुलाईमें	तौ ३१	मार्च.
१ अगस्तमें	तौ ३०	अप्रेल.
१ सितम्बरमें	तौ ३१	मई.
१ अक्टूबरमें	तौ ३०	जून.
१ नवम्बरमें	तौ ३१	जुलाई.
१ दिसम्बरमें	तौ ३१	अगस्तके

दिन प्रसव होता है इसी हिसाबसे हे वहन! अन्य २ तारीखोंमें ऋतु वंद हो तो प्रसवके और २ भी दिन जाने जा सकते हैं।

प्रसव होनेके कुछ दिन पहले गार्भिणी स्त्रीको पुष्यनक्षत्रमें सूतिकाघरमें प्रवेश करना चाहिये; वहां वह स्त्री बालकके होनेके समयको देखती रहै, प्रसूत होनेके आठ दशदिन पहले कुछ आराम मालूम होने लगता है; तथा उसको अपना शरीर कुछ हलकासी मालूम पड़ने लगता है, श्वास लेनेमें भी कुछ तकलीफ नहीं पड़ती, शरीर फुर्तीला होजाता है; और उस स्त्रीका चलने फिरनेको भी मन करता है; इसका कारण यह है कि बालक नीचे कटि प्रदेशमें उतरता है.

प्रसूतिकाल पास आगया, इसके जाननेके लिये दूसरे भी बहुत से उपाय हैं. गर्भिणी का पेट जिस समय ढीला होता है, उससमय उसकी जांघोंमें दर्द होने लगता है; गर्भवती स्त्रीको जल्दी २ पेशाव पाखाना होता है; तथा कुछेक जलन भी होती है, उसी समय समझना चाहिये कि, प्रसवकाल निकट आगया है। बार२ पेशाव पाखाने होनेका यही कारण है कि, इस समय मूत्राशयपर अधिक बोझ पड़ता है. कभी २ ऐसाभी होता है कि, गुदास्थानपर विशेष बोझ पड़नेके कारण दस्त बंद हो जाता है। ऐसी अवस्थामें जो दस्त बंद हो जाय तो पेडूपर सेक करै। प्रसवकाल आने पर कमर और पीठकी पसलियोंमें दर्द होने लगता है, और पेशावके समय प्रसवस्थानके मुँहपर कफ आकर दर्द करता है. योनिमें दुःख होने का कारण यह है कि इस समय बालकके गर्भाशयसे बाहर गिरनेकी विधि चलती रहती है, इसीकारणसे वह कभी विकास या कभी संकोच पाती है, ऊपर कहीहुई अवस्था जब स्त्रीकी होने लगे, तब समझ लेना चाहिये कि, बालक सांझ सवेरेहीमें होगा। हे प्रकाशवती यह तो मैंने तुझे प्रसूतीके लक्षण बताये और अब धात्री शिक्षा बताती हूं इसका जानना भी अवश्य कर्तव्य है ।

इति पञ्चमसोपान समाप्त.

षष्ठसोपान।

जननी।

धात्रीशिक्षा और प्रसव।



हे बहन! अब मैं तुझे जापेका काम बताती हूं यदि किसी समय दाई न मिले तो फिर क्या करना उचित है गर्भवती स्त्रीको किसीप्रकार जनाले यह काम ऐसाहै कि, बहुतसी स्त्रियां इसको नहीं जानती हैं,परन्तु उनको इसका जानना अवश्य है क्योंकि इससे स्त्रीको सर्वदा काम पड़ता रहताहै, जो इसको जानती होगी तो उन दुःखोंसे बची रहैगी. जो कि, मूर्ख दाई वा सौढ़में असावधानीसे हो जाते हैं, इसमें स्त्रीका दूसरा जन्म होता है कि, वह जापेसे भली भाँति कुशल पूर्वक हाथ पैरोंसे छुटे, जिस समय वह लक्षण दृष्टि आने लगें और गर्भिणि स्त्रीके वेदना होने लगे तो किसी चतुर दाईको बुलाले और उसके हाथोंके नख कटवादेवै।

प्रसव होना एक स्वाभाविक बातहै इसलिये इसको स्वाभाविक रीतिसेही होने देना चाहिये, उस काममें विना कारणही हस्तक्षेप करना कोई बुद्धिमानीका काम नहींहै। फिर जब देखै कि वेदना होते २ बहुत देर होगई और बालक होनेका अभी कुछ चिह्न दिखाई नहीं देता, तो दाईको यह देखना उचित है कि,बालक पेटमें किस प्रकार है, शिर नीचेको है, वा पैर नीचेकोहै याआड़ाहै, सभी बालकोंका शिर नीचेको होताहै और शिरके बल बालक पैदा होता है; इससे जच्चाको कुछ अधिक कष्ट नहीं पड़ता. इसकी पहँचान यह है कि,

जब बालक दांई ओरसे बांई ओर घूमे और बाई ओर ही स्त्री को भारी रहै तो यह बालक मस्तकके बल होता है और जो दाई ओर भारी रहै और दाई ओरसे बांई ओर घूमा करे तो पांवके बल होता है और जो दोनों ओर भारी रहै और पेटमें नहीं घूमै तो जानलो कि वह आड़ा पडाहै और हाथके बल पैदा होताहै, इससे स्त्री बहुधा मरजाती है, जो बालक अपने आपही घूम २ कर पांव मस्तकके बल आगया तो जानो भलाहै या जो दाईने अपने चतुराईसे बालकके हाथ भीतरको सरकादिये; तो भी बालकहो जायगा और स्त्री बच जायगी ।

दाईको प्रसूत होनेवाली स्त्रीके गर्भस्थानके मुखको हाथसे मलनाचाहिये, और फिर जब गर्भके बंद तथा और सब नाड़ियोंके बंद ढीले होने लगे और कमरके पिछले भागमें पीठ पसली बस्ती इत्यादि स्थानोंमें और मस्तकमें पीडा होने लगे तब धीरे २ मलना चाहिये । जिस समय गर्भमार्गमें आने लगे तब अधिक मलना उचितहै, यह क्रिया गर्भ बाहर आने तक करना चाहिये ।

बालकका शिर जननेन्द्रियके मुखमें आतेही स्त्रीको सावधानीसे बांयें करवटसे लिटाना चाहिये । दाईको उचित है स्त्रीको शय्यापर लिटाकर ही संतान उत्पन्न करावै । जभी बालकका शिर बाहरको निकलै तो उसे दाई अपने हाथ पर ले ले । परन्तु जोरसे न दबावे, जिस २ तरहसे कंधा बांह शरीरके और और भाग बाहर आने लगैं, वैसेही स्त्रीके पेटको अपने हाथसे नीचेको दबाना और जो यदि बालकका खाली मस्तकही दिखाई दे तो उसकी कोखमें आहिस्तेसे

उंगली डालकर बड़ी सावधानीसे बालकको बाहर निकालना, यदि इसमें जराभी असावधानी हुई तौ बालकके गले घुट जानेका डर है, इसकारण इसकामको बड़ी होशियार और जानकार दाईसे कराना चाहिये। बालक बाहर निकल आवै तौ एक स्त्री तौ जच्चाकी संभाल करै, और दाई बालकको तुरंत गरम पानीसे नहला कर उसके गलेका चिकना पदार्थ उंगलीसे निकाल डालै बहुधा ऐसेभी बालक होते हैं कि, जो खालकी पतली झिल्लीमें बंद होते हैं उस समय दाईको उचित है कि, वह छुरी या चाकूसे उस झिल्लीको फाड़कर बालकको निकालले, परन्तु इतना अवश्य ध्यान रक्खै कि, बालक पर सदमा न पहुँचै, जो इसके फाड़नेमें देर होती है या यह नहीं फटै तौ बालक इसके भीतरही मरजाता है।

बालक पैदा होतेही श्वास प्रश्वास लेने लगता है। और उसी समय रोताभी है, उसका श्वासोच्छ्वास उचित रीतिसे होता हो तो उसका नाल नाभिसे चार अंगुल अरसे पर या छैः तैह डोरेसे कसकर बांधना, और फिर औरभी चार अंगुलीके फाँसलेपर दूसरा बंद बांधना। फिर इन दोनों बंदोंके बीचमें कैंचीसे काटना इस रीतिसे नाल काटनेमें अधिक रुधिर नहीं गिरेगा, नाल काटतीसमय दूसरी स्त्रीको नालका भाग बड़ी मजबूतीसे पकड़वा देना उचित है जो ऐसा न होगा तौ नालका भाग फिर भीतर चला जायगा।

हे बहन! जो बालक जन्मतेही न रोवै तौ उसे चिकोटी (नोचना) भर कर रुलावै। कारण कि, बालकके रोनेसे उसकी श्वासोच्छ्वासकी क्रिया भलीभाँतिसे होती है, चिकोटी

भरने परभी यदि वह न रोवै, और मृतककी समान मालूम पड़ै, तौ उसकी पीठको थपकोरना या चूतरोंको थपकोरना चाहिये, और जवभी वालक न रोवै तौ कुछ एक गुन गुने पानीमें डुबोकर निकाल लेना उचित है, इससे वालक चौंक कर रो उठैगा, यह क्रिया नाल काटनेके वाद करनी चाहिये।

नाल साफ नरम कपड़े की पट्टीमें लपेटकर उसके पेटपर पट्टी बांधना कपड़ेका जो भाग नालमें लगैगा वहां मीठातेल लगाना। ऐसा करनेसे दो तीन दिनमें अपने आपही नाल सूखजायगा। यदि नाल कच्चाही छूटजाय और वालककी नाभिसे खून गिरने लगै तौ दीवेका तेल सुहाता गुनगुना रातको रोज लगा देना चाहिये। या रुई जलाकर उसकी छाई लगानी उचित है।

जन्म होनेपर वालकको दो तीन दिन तक जन्म घुट्टीही पिलानी उचित है, माताका दूध पिलाना ठीक नहीं। उसका स्तन नहीं पिलाना चाहिये। गर्भिणी स्त्रीको वालक होजाने के दो तीन दिन पीछे दूध उत्पन्न होता है और उस दूधमें रेचक गुण रहनेके कारण वालकको मलशुद्धि होती है, जिस समय वालक पैदा होजाय तौ स्त्रीको औंधी सुलाकर उसके पेटका भाग जोरसे दवावै। जव खरआई वाहर निकल आवै तब फिर पेट दवानेकी कुछ जरूरत नहीं है; वहुत करके प्रसूतके होनेके १०।५ मिनटके वीचमें ही खरआई वाहर गिर जाती है। इतने समयके भीतर भी जो वह न गिरै तौ धीरे २ पेटपर हाथ फेरते रहना तौ वह वाहर

गिर जायगी। गर्भाशयसे खरआई निकली है या नहीं, इसे जाननेके लिये जननेन्द्रियका नाल खैंचना चाहिये। तब वह जो छुटी होगी तो उसी समय बाहर आजायगी। परन्तु नालको खैंचकर खरआईका निकालना बड़ा धोखेका काम है। हे बहन! जब खरआई निकल आवे तब इन्द्रियके आस पासका बिगड़ा हुआ भाग गरमपानीसे पोंछ डालना चाहिये, स्त्रीको गरम कपड़े उढ़ाकर चित्त लिटा देना चाहिये; ऐसी अवस्थामें स्त्रीको पैर न सकोड़ने देना, और थोड़ी देर चुपचाप सोने देने चाहिये, और उसके निकट कोयलोंकी दहकती हुई अँगीठी रखनी चाहिये; चाहैं अँगीठीको खाटके नीचे रखकर सेंकदो, परन्तु उस समय इतना अवश्य ध्यान रखना कि, खाटके बान अँगीठी आदिमें न लग जाँय।

उस समय स्त्रीको हलका और जो जल्दी पच जाय ऐसा भोजन खिलाना चाहिये, जच्चाको नाज खाने को न दे और कच्चा पानी भी पीनेको न दे बत्तीसे पानी औटाकर देना चाहिये, उस औटे पानीकोही ठंडा करके पीनेको दे, पानीको दो वार बदलना उचित है; सबेरे का औटाहुआ पानी दोपहर तक पीने को दे और दोपहरका औटाहुआ पानी शामतक पिलाना चाहिये। जच्चाको चार दिन तक बराबर बिछौनेसे न उठनेदे, तथा पांचवें छठें दिन उस स्त्रीको केवल पेशाब पाखानेके लिये जाने दे।

हे बहन! प्रसूतिको विना प्रयोजन दवादेनेकीकुछ आवश्यकता नहीं है।

प्रसूतिके समय विस्तृत हुआ भाग नियमित कालसे

अपने आप संकुचित होजाता है इसके लिये दवादेनेकी कुछ आवश्यकता नहीं है ।

प्रसूतिको ज्वर खाँसी इत्यादि विकारोंके लिये देशी वैद्य लोग दशमूलका काढ़ा देते हैं, यह काढ़ा स्त्रियोंको अवश्य देना चाहिये, प्रसूतिके विकारोंमें वास्तविक यह बड़ा चमत्कारिक गुण करता है ।

प्रसूतिकी पीड़ा और चिकित्सा ।

हे बहन ! बालक होजानेके पीछे अक्सर जच्चाको जो रोग होजाते हैं वहभी मैं तुझे बताती हूं. कारण कि, जो उन्हें तू जानती होगी तौ जच्चाकी सँभाल भलीभाँति करलेगी, रोगोंके साथही साथ उनकी दवाइयां भी बताती हूं ।

जिन स्त्रियोंके बालक होनेके पीछे रुधिर अधिक बहता रहता है, उनकी सँभाल कठिन पड़ जाती है; और जिनके नहीं बहता वा कुछ कम बहता है वह दश दिनमेंही चंगी हो उठ बैठती हैं ।

दिनभरमें कई बार गरमपानीमें कपड़ा भिगो २ कर स्त्रीके जननेंद्रियमें रखना चाहिये, जब ठंडा हो जाय तभी गरम करके फिर रखदे, और गरम पानी में गरम दूध मिलाकर धो भी डालना चाहिये, इससे वहां मैल नहीं रहेगा. कारण कि, थोड़ा २ लोहू कई दिन तक बहता रहता है, और चार पांच दिन पीछे बीस पचीस दिन तक लोहूका पानीसा निकलता है, किसी २ स्त्रीके सवामहीनेतक निकलता रहता है; इसके धोने और सेकनेसे चैन पड़ता है-और वेदना भी कम होती है ।

प्रसवके उपरान्त गर्भस्थली पहली अवस्थामें प्राप्तहोनेके लिये चेष्टा करतीहै; और इसीकारण स्त्रीको अत्यन्त पीड़ा होती है; यदि उचित रीतिसे उस स्थानको सेका जायगा तो वह वेदना होने परभी प्रवल नहीं हो सकैगी।

पेशाबका बंद होना—प्रसवके उपरान्त स्त्रियोंको दो तीन दिन तक पेशाव नहीं उतरता है. उससमय किसी अच्छे वैद्यकी औषधी करानी चाहिये।

गर्भस्थलीसे स्राव—प्रसवके उपरान्त गर्भस्थलीसे जलीय स्राव होता रहता है, यह माताके शरीरके लिये विशेष उपकार और प्रयोजनीय है, यदि यह सहसा बंद होजाय तो विपत्तिकी आशंका होती है; इससे वहुत जलदी अच्छे वैद्यसे इसकी चिकित्सा करावै।

दुग्धोत्पत्तिजनितज्वर—प्रसवके उपरान्त बालकके आहार के लिये माताके स्तनोमें दुग्ध होता है; पहली पहल तो एक प्रकारका घना पदार्थ स्त्रीके स्तनोंसे निकलता है। यह वालकके पक्षमें विरेचकका कार्य करता है, तीसरे दिन वास्तविक दूध स्तनोंमें आता है; तव स्तन बढ़ने लगते हैं यहां तक वढ़ते हैं कि, इधर उधरको हाथ झुकातेमेंभी पीड़ा होती है; उससमय तृष्णा और शीत बोध होता है शिरमें दर्द होने लगता है, इसके पीछे अधिक पसीना आता है, और दो तीन दिन तक ज्वर भी आता है, जब वालक दूध पी-ने लगता है तव यह वेदना कुछ कम होती है इसलिये स्त्रीका दूध निचड़वा डालना उचित है; तव पीड़ा जाती रहेगी। कभी २ स्त्रियोंको दूध उतरताभी नहीं; यदि

ऐसा हो तो स्त्रीको दूध अधिक पीनेके लिये देना चाहिये और बूरामें सफेद जीरेको पागकर इसकी कतलियें खानेके लिये दे इससे दूध उतर आवेगा ।

जब तक बालक माता का दूध पीवे तबतक बालकका जीवन माताके ऊपरही निर्भर है, माता जो कुछ द्रव्य खाती है, स्तनोंका दूध उसके अनुरूपही होता है, इस समयमें संतानको पीड़ा माताके कारण होती है । इसकारण माताकी स्वास्थ्य रक्षा करने पर बालकको और किसी प्रकारकी पीड़ा नहीं होती माताको औषधी सेवन करनेसे बालककी पीड़ा दूरहो जातीहै। हे बहन! अबमैं तुझे जननीको क्या करना कर्तव्य है वह बताती हूं।

जननीका कर्त्तव्य ।

हे बहन ! जननी सभी स्त्रियें होती हैं; जिनके पुत्र नहीं होता वह अपने को चिरदुःखिनी मानकर दिन रात कुढ़ती रहती हैं, पुत्रके तोतले वचनोंको सुन उनका मन अत्यन्तही प्रसन्न होता है. पुत्रकी मंद मुसकानको देखकर माताके प्राण पुलकायमान हो जाते हैं, पुत्रकी मंद २ चालको देखकर माताके आनंदकी सीमा नहीं रहती; इससे बढ़कर आनंद इस संसारमें दूसरा नहीं है । इस कारण सभी स्त्रियें सुखकी लालसासे पुत्रकी कामना करती हैं । अपने असीम कष्टको भी पुत्रप्राप्ति पर सुख मानती हैं, पुत्रका सुधारना और बिगाड़ना यह माताही के अधीन है ।

बालक इस संसारमें क्या लेकर आयाहै ? जिस समय वह पैदा हुआ तब उस पर क्या था । यह क्या संभव था कि, इस जरासे बालककी मानसिक वृत्ति इतनी पुष्ट हो जायगी । यह

वालक अपने साथ कुछ नहीं लायाहै, यह केवल वीज लेकर आया, उसी वीजसे वृक्ष उत्पन्न करना जननीका कर्त्तव्य है; यदि वह इच्छा करैगी तो इस वृक्षको वचालेगी, और नहीं इच्छा करैगी तो यह वृक्ष नष्ट होजायगा।

इस संसारमें वालककी रक्षा करने वा न करनेका भार स्त्रियों केही हाथ है यदि संतान वालकपनसेही कुशिक्षित होजाय तो फिर वह वड़े होनेपर कभी नहीं सुधर सकता; जो वालक वचपनसेही लोभी क्रोधी होगा तो फिर वड़े होने पर कभी नहीं सुधरेगा, परन्तु वह कहीं लोभी और क्रोधी थोड़े ही उत्पन्न हुआ है उसको तो इसकी शिक्षा मिली है।

वहुतसी माताओंको यह कहते देखा है कि, ऐसे कुकर्मी पुत्रसे तो मेरी कोख वंदही रहती तो अच्छाथा, "फिर क्या करूं मेरे भाग्यमेंही ऐसी संतान लिखीथी" यह उनकी वड़ी-भारी भूलहै, संतानका वुरा भला होना किंचित् मात्रभी भाग्यके ऊपर निर्भर न रक्खैं; यह सभी जननीके ऊपर निर्भर है। संसारमें पुत्र उत्पन्न होना कोई कठिन कार्य नहीं है; वरन् संतानका लालन पालन करना वड़ा कठिन कार्य है; जिस रीतिसे वालकका लालन पालन किया जाता है; और जिस रीतिसे वालकके स्वास्थ्यकी रक्षा माताको करनी चाहिये, वह मैं तुझे वताती हूं; प्रथम कुछ थोड़ीसी वालचिकित्सा वता-कर फिर शिशुपालन वताऊंगी।

वालचिकित्सा।

हे वहन! वालकको पीड़ा सदा होती रहती है, वालकके मनका भाव देखनेमें क्लेश होनेके कारण वालकको पीड़ाकी

चिकित्सामें इतना क्लेश बोध होता है, माता जिसप्रकार अपनी संतानके मनका भाव समझ सकती है, उसप्रकार और कोई भी नहीं जान सकता; नीचे संक्षेपसे बालकोंकी पीड़ा और उनके रोगकी पहँचान तथा उन रोगोंकी औषधी भी बताती हूं।

साँसकी पहँचान—हे बहन ! जिस समय श्वास लेते समय बालकके नाकसे सुर जल्दी २ चलते हों और फैल जायँ तौ जानलो कि, बालककी छातीमें दर्द है; इस रोगमें बालककी आंखें पथराने लगती हैं; बालकको श्वासलेनेमें अधिक पीड़ा होती है; पेट फूलजाता है, होंठ नीले पड़ जाते हैं बालककी आंखें घूमती रहती हैं। मुँह लाल और सफेद पड़ जाता है ऐसी अवस्थामें बालकका इलाज बड़ीसावधानीसे करना चाहिये।

आँखोंकी पहँचान—सुखमें तो बालककी आंखें साफ रहती हैं; और जब बच्चेको कोई रोग होता है; तब उसकी आँखोंकी त्योरी बदल जाती है वे मैली रहती हैं, उस समय जानना चाहिये कि, बच्चेके शिरमें बीमारी होनेवालीहै।

नींदका नआना—जिस समय बालक रोजकी भाँति न सोवै और माताकी गोदीमें ही रहना चाहै, चौंक पड़ै तो जानलो कि, बालकका स्वास्थ्य ठीक नहीं है।

बालकके रोनेकी पहँचान—जिस समय बालक बार २ रोवै तौ माताको देखना उचित है कि, बालक और दिन-कीही तरह रोता है या उससे आज अधिक रोता है, जो

किसी भाँति न चुपै तौ जानलो कि वालकको कोई रोग होने वाला है, इस अवस्थामें माताको वड़ी सावधानीसे वालककी चिकित्सा करनी चाहिये।

वालकका खाँसना—जव वालकको शरदी होजाय और वह वार २ खाँसने लगे; आवाज पड जाय तो जानलो कि यह खांसी शरदीसे हुई है कभी कभी २ इसरोगमें वालक की पसली भी चल निकलतीहै, इस खाँसीका इलाज भी वहुत जल्दी करना चाहिये।

माताकी पहँचान—हे वहन! प्रथम तो वालकको टीका लगवा देना ही ठीक है वाजे २ वालकोंके टीका लगनेपरभी माता निकल आती हैं, उनकी भी पहँचान वताती हूं।

इसमें प्रथम वुखार आता है वच्चेके दिलपर वहुत घवडाहट और वेहोशी रहतीहै, फिर तीसरे दिन वालकका सारा शरीर लाल पड जाता है, और माथेपर खसखसकी वरावर छोटे २ दाने दिखाई पड़तेहैं। इस समय वालकको वड़ी होशियारीसे रखना चाहिये इसमें वालकको कुछ औपधी न दे।

टूंड़ीका पकजाना—इसमें पहले तो दीवेका तेलही मुफीद है, और दूसरा इलाज यह है, हलदी लोध परनींगके फूल इन सवको वारीक पीसकर शहतमें मिलाकर टूंड़ी पर लेप करै।

खालका लगजाना—अक्सर वालककी खाल लगजाती है.जांघें लग जातीहैं.इसका इलाज यह है कि,वालकके तेलकी लोई करके फिर पीछे गरमपानीसे न्हिला डालै।

दूध डालना—जो बालक थोड़ा २ दूध डालता हो तो कुछ हर्षकी बात नहीं है इससे बालक की छाती हलकी रहती है; और जो अधिक दूध डालता हो तौ उसका उपाय यह है। काकड़ासींगी; मोथा, पीपल इनको पीसकर शहतमें मिलाकर चटावै।

दूध न पीना—इसका लक्षण पहलेही देखले कि, किस पीड़ासे वह दूध नहीं पीता है, जिस जगह बालकका वेर २ हाथ पड़े वहां जाने कि, इसके इसी स्थानपर दर्द है, या इसको इन रोगोंमेंसे कोईसा है; या गर्भिणीके दूध पीनेसे उसके मंदाग्नि होगई है तो जैसा देखे वैसा उपाय करै, नीमके पत्ते, पटोलके पत्ते, कटेलीके पत्ते, गिलोयके पत्ते इन पत्तोंको औटाकर उसके पानीसे स्नान करावे।

हँसलीका जाना—जो बालक रोताहो दूध न पीवे तौ उसे दाईको दिखाकर मलवाना चाहिये—और नींबूके पत्तोंकी धूनी दे, गुंजाकी माला पहरावे। कागका लटक आना बालकका काग गरमीसे लटक जाता है, बालक दूध नहीं पीता, और दूध पीकर उसी समय डाल देता है, रोया नहीं जाता इसको बड़ी चतुराईके साथ चूल्हेकी राख और काली मिर्च पीसकर उंगलीमें लगा ऊपरको काग उठादे।

आँखका दुखना—हे बहन! बालककी आंखें दुखनेके कई कारण होते हैं कभी गरमीसे होजातेहैं और कभी शरदीसे तथा दांतनिकलनेमें भी दुखती हैं, छोटे बालकके कानोंमें कडुआ तेल डालना उचित है, और जो बालक माताका दूध पीताहो तौ उसकी माताको बड़े परहेजसे रहना चाहिये

नोन, मिर्च, खटाई, गरमवस्तु वादीकीचीज इनमेंसे कुछ भी न खाय, और रसौत को घिसकर उसके पानीका लेप वालक की आंखों पर करे. और भीतरभी एक बूँद डालदे, पीली मिट्टीकी टिकियें वनाकर घड़ोंपर रखदे और रातको सोते समय वालककी आँखोंसे बांधदे—और गेरूके फायेभी बांधने चाहिये—जो आंखें दांतों की होती हैं उनका आराम होना जरा कठिन होजाता है. जव तक दांत नहीं निकलआते तव तक आंखें दुखती ही रहती हैं।

पेट चलना—जव वालकका पेट चलै तो वेल, कत्था, धायके फूल, लोध, वड़ी पीपल इनको पीसकर शहतमें मिलाकर चटावे वड़ी हड़, काला नोंन, हींग यह पानीमें घिसकर पिलादे। कुड़ेके वीज, हलदी, वड़ी हड़, काकड़ासींगी पानीमें भिगोकर वह पानी वालकको पिलावे या इन्द्रजौ, नेत्र-वाला, नागरमोथा अतीस, सोंठ इनका काढा पिलावे।

खांसी—जव वालकको खांसी हो जाय तो पीपल; अतीस मूल, काकड़ासींगी इन सवको पीसकर शहतमें चटावै या वहेड़ा, कालानोंन, भुंटेकी छूंछ इनकी जला छाई कर वालकके माके दूधमें घोल कर पिलावै। अथवा वंशलोचनको शहतमें मिलाकर चटावै वा विलायती अनारका छिलका जला-कर उसकी छाईकर उसे तीन चार वार चटावै. तथा वहेड़को भूभलमें भूनकर उस राखको वालकको चटावै। और जो खांसी वा अतीसार संगहो तो अतीस पीपल मोथा सहतके साथ चटावै। ज्वर अतीसार। अतीस, पीपल, काकड़ासींगी, नागर मोथा इनको पीस कर वालकको चटावै; इससे खांसी और दूध गिरना भी वंद होजाता है।

रक्तातिसार--जब बालकके दस्तके साथ खून आवै तौ पाषाण भेद और साठा पानीमें घिसकर पिलावै।

आंवका अतिसार--जिस बालकके दस्तोंमें आंव आती-हो तौ वायविडंग, पीपल, अजमोद, कुड़, कुड़ेके बीज, सपेद, जीरा इनको एकसाथ पीसकर मिश्री डाल पीनेकेलिये दे।

आंवखूनके दस्त--यह बालकको होते हों तो कच्ची पक्की सौंफको पीसकर उसमें कच्ची खांड़ मिला चूरनकी भांति बालकको चटावै या सोंठका मुरब्बा, खानेको दे, या मरोड़फली सैंधे नमकके साथ घिसकर दे।

मुँह आजाना--शीतलचीनी और पपरिया कत्था पीस कर शहतमें चटावै। और जो सफेद मुँह आगया हो तो जिस कपड़ेसे पोता फेरा जाता है उसकी दो तीन बूँदें उसके मुँहमें निचौड़दे इससे जाता रहैगा।

ज्वर--जब वह बालकको आने लगे तौ इसमें दो एक दस्त करादेने उचित हैं. इस कारण दो तीन चमचे अंडीका तेल पिलादे।

संग्रहणी--छटांक भर चूना परातमें रखकर ढाई सेर पानीसे धीरे २ पतली धारसे तर्त्तां दे, इससे वह घुलजायगा, उस पानीको निखारले और दूधमें थोडा २ सा मिलाकर दिनमें चार पांच बार चटावै।

काँचका निकलआना--बालकके मूत्रसेही उसे आव-दस्त करादे, पुरानी चलनीका चमड़ा जलाकर उसके पानीको

उस पर छिड़कै, तेल लगाकर ल्हसोढ़ा लगावै, या आम और जामनकी छाल और पत्ती इनको औटाय उस पानीसे आवदस्त करावै।

हुचकी--गीला कपड़ा तालुयेपर रक्खै, नारियल पीस कर शक्कर मिलाकर चटावै। रीठेको डोरेमें पिरोकर नारमें पहरा दे।

चिनग--जिस समय बालक पेशाव करती समय रोवै और अपनी पेशावकी इन्द्रियको खैंचे तौ जानलो कि इसे चिनगकी बीमारी है उसकी औषधी यह है कि, चार पांच डेली बवूलके गोंदकी कपड़ेमें बांध पानीमें भिगोदे, फिर उस पानीमें मिसरी मिला तीन चार बार दिन भरमें पिलावै।

दांतोंके निकलनेका इलाज--जरासा चूनेका पानी शहतमें मिलाकर बालकके मसूढोंपर लगादे, दांत भली भांति निकल आवैंगे। धायके फूल और पीपलको आंवले के रसमें रगड़ कर बच्चे के मसूढोंमें लगावै तो दांत अच्छे निकलैंगे।

छालोंकी दवा--बालकके मुँहमें छाले पड़गये हों तो पीपलकी छाल और उसके पत्ते इनको बारीक पीस कर शहतमें मिलाकर चटावै हे बहन! इससे बालकके मुँहके छाले अच्छे हो जातेहैं।

अधिक लार गिरै उसका इलाज--जो बालकके मुखसे बहुत लार गिरती हो तो सफेद सरसों, लोध, तिल इनका काढ़ा कर शहद डाल कर बच्चेको पिलावै जो थोड़ी लार बहती हो तौ उसका रोकना उचित नहीं है।

बालकका पेशाब बंद होना—यदि बालकका पेशाब बंद हो गया हो तो; टेसूके फूलोंको पीसकर बालकके पेडू पर लेप करदे पेशाब अच्छीतरह से आवेगा।

गुदा पकनेका इलाज—रसोतको पानीमें घिस कर लगावै या शंख और मुलहटी को बारीक पीसकर लगावै।

डरनेका इलाज—जो बालक डरताहो, या सोतेमें चौंक पड़ता हो तो मुर्ग की पूछके परको दोनों ओर घी लगाकर आगपर रख कर धूनी दे तो बालकका डर जाता रहता है। और फटकरीकी धूनी दे।

सोतेमें दांत पीसनेका इलाज—जो बालक सोतेमें दांत पीसै तो भुरजीके भाड़का रेता, उसके मुँहमें डालदे। नीलकंठके परको ताबीजमें मढ़कर गलेमें पहरादे।

अधिक शर्दी—जो बालकको केवल शरदीही होगई हो और बार २ छींकें लेता हो तो जरासी केसर दूधमें घोलकर बालकको पिलादे और जाड़ोंमें तौ दूसरे तीसरे दिन देता रहै।

पसली—यह रोग बालकोंके प्राणोंकाही लेनेवाला होता है; बहुधा यह रोग अपवित्रतासे ही होता है इसमें बालककी पसली चलने लगतीहै ज्वर आजाताहै कफ जम जाताहै श्वास जलदी २ चलता है, दस्त होतेहैं और नहीं भी होते, बालक अचेत रहता है नाकके दोनों सुरोंमें गढ्ढे पड़ते हैं, पेटमें तीन गढ्ढे पड़ते हैं—एक तौ बीचमें दो पसलियोंमें इसमें सुईके तरह कांटा बालकके छिदता रहता है, ज्यादेतर यह रोग बालकको शर्दीसे होता है; इसकी औषधी यह है कि, मुर्गीके अंडेको

फोड़कर उसके पानीको रुईकी फुरैरीसे तीनों गड्ढोंमें लगावै– एक बूंद कुछएक मुँहमें चुआदे–और गोरोचनभी जरासा खानेके लिये दे दूधमें घिस कर गोरोचन पिलाना चाहिये.इस रोगमें दस्त भी करादेने चाहिये। और एलुआको पीस गरम कर वालककी पसलियों पर लेप करदे। वरांडीभी पसलीपर मलनी चाहिये; दोचार जगह स्यानोंसे झड़वाना फुँकवाना भी चाहिये; हे वहन। यह रोग वड़ा दुष्टहै. मैं तौ इसे भुगते बैठीहूं। वीसियों वालक इसी रोगमें चट पट मरजाते हैं; इसकी दौड़ वड़ी जलदी करनी चाहिये, इसीको मशान रोगभी कहते हैं।

शीतला–इसमें वालकको पहले दो तीन दिन तक बुखार आता है इसके पीछे नन्हे २ दाने निकलते हैं; उस समय तरकारी छौंकनी उचित नहीं घरमें किसीको स्नान नहीं करने देना चाहिये; जिस घरमें बालक रहै उसके द्वारपर आगकी अंगीठी भरी धरी रहै, शीतलाष्टकका पाठ कराना उचित है, ऐसे समयमें कुछ औषधी न दे; चौराहेमें दोनों वक्त मश्कें छुड़वावै; किसीको घरमें न आनेदे–घरके भीतर जो कोई भी जाय पहले अग्निपर पैर सेक कर पीछे भीतर जाय– वालकको खानेके लिये दूध आदि कोई वस्तु न दे, केवल भुने हुए आलू और रोटीका छुलका खानेको दे–नमक विलकुल न दे; फिर जव वालककी माता ढाला लेजाँय तौ वालकका मुँह हाथ धुला कर उसको वाजार भेजना चाहिये–इसमें शीतलाका पूजन–और शीतलाका पाठ अवश्यही कराना चाहिये।

शिशुपालन ।

हे बहन ! अब मैं तुझे यह बताती हूं कि बालकका लालन पालन माताको किस रीतिसे करना चाहिये बालचिकित्सा जिस प्रकार तेरे उपयोगी है, उसी प्रकारसे बालकके लालन पालनकी रीतिभी तेरे काम आवैगी ।

१–माताको बालकके पालन करनेके विषयमें प्रथम धीरजकी अवश्यकता है । जो स्त्रियें संतानके तनक रोग होने परही अपने धीरज छोड़ देती हैं उनके लिये बालकका पालन करना बड़ा असंभव है । जननीको यही उचित है कि, यदि बालकको कुछ कष्ट हुआहो तो सावधान होकर उसकी चिकित्सा करै और उस समय बालकको कुछ बद-परहेजी न होने दे माताको उचित है कि, सोते समय बालकको अपना दूध कभी न पिलावे बहुतेरी स्त्रियें जिस समय बालक रोता है उसी समय जागकर बालकको गोदमें ले उठकर दूध पिलाती हैं लेटे २ दूध पिलानेसे बालकका कान बहनेलगता है, वह स्त्रियां इस बातको नहीं जानतीं कि, जरासे हमारे कष्टमें इस सुकुमार बालकको कितना कष्ट उठाना पडता है, यदि जो वह ऐसा जानती होतीं तो यह काम कभी नहीं करतीं ।

२–इस कारण हे बहन ! माताको सर्वदाही सावधान रहना चाहिये, माताके समान लालन पालन करनेवालीका अभाव होने पर बालकभी जीवित नहीं रह सकता । यदि वह सुकुमार बालक अपने नेत्रोंसे एक मिनट भी अपनी माको न देखे तो वह कितना व्याकुल होता है, सभी समयमें बालक अपनी माताकी ही गोदीमें रहनेसे सुख मानता है । जब साव-

धानी करने परभी अनेक वालक मरजाते हैं तव विना सावधानी कियेकी तौ कौन कहै। वहुतसी स्त्रियें दास दासी या अपने कुटुम्वकी स्त्रियोंको वालक देकर निश्चिन्त हो जाती हैं; परन्तु टहलनी हो या कुटुम्वकी स्त्रीहो माताके समान स्नेह और यत्नसे दूसरा कोई नहीं रख सकता। हे वहन! विधाताकी कैसी अद्भुत लीला है कि, माताको जितनी संतानकी ममता होती है उतनी और किसीकी नहीं होती। यह ममता केवल संतान पालन के लियेही है, इस ममताके होते हुए भी जव माता संतानका यत्न सहित पालन नहीं करतीं हैं तव इस प्रकारकी ममताके विना हुए संतानका लालन पालन नहीं हो सकता।

हे वहन! किन २ नियमोंसे वालकोंके स्वास्थ्यकी रक्षा करनी होती है उसे तो मैं तुझे आगे वताऊंगी। यह वात नहीं है कि, वालककी स्वास्थ्यरक्षासे ही वालकका लालन पालन नहीं हो सकता, वालकके पालनकरनेके विषयमें वहुतसीवातों पर ध्यान रखना स्त्रियोंको अवश्यकर्त्तव्यहै; वह सभी वातैं तुझे वताती हूं।

वालकको यत्न सहित रखनेकाही नाम वालकका लालन पालन है, वालकको किस समय क्या करना चाहिये, इस वातको स्त्रियें भली भांतिसे नहीं जानतीं, इसी लिये वह नियमभी मैं तुझे वतातीहूं।

१-दिनमें जितनी वार वालकको दूध पिलायाजाय उतनीही वार पिलाना चाहिये उससे अधिक न पिलावै।

२–जिस समय बालक सोताहो उस समय उसे सोने देना चाहिये, उसकी नींद भंग करनी उचित नहीं।

३–कच्ची नींदमें बालकको कभी न जगावै, कच्ची नींदमें जागकर बालक सारे दिन रोता है और उसे बड़ा कष्ट होता है।

४–भीगे कपड़ोंमें बालकको कभी न सुवावै करण कि, इससे बालकको बड़ी ठंढ लगजाती है। बालकके नीचेका पोतरा बार २ बदलना उचित है जो स्त्रियें बालकको सारीरात भीजेमें रखती हैं इससे कितनी हानि होती है वह इस बातको नहीं जानतीं। बालकके पेशाब पाखाने फिरनेके समयमें वह आलस्यके मारे उसे खाट परही करने देती हैं, अपनी कायाको कष्ट नहीं देतीं इसी कारण बिचारा बालक सारीरात भीजेमें पड़ा रहता है और माता सन सन सोती रहती है; फिर बालक रोगी होजाय तो इसमें आश्चर्यही क्या है बालक शरदी लगनेके करण अनेक कष्ट पाता है, और इसी शरदीकी पीड़ासे वे अकाल मृत्युको प्राप्त् होजाते हैं।

माताको उचित् है कि, बालकको पाखाने पेशाब करानेका अभ्यास डालैं, यह तो उनकेही आधीन है, जो स्त्रियें बालकको बार २ पाखाना पेशाब नहीं कराती हैं, उनके बालकको कोई डरके मारे गोदमें भी नहीं ले सकता इस कारण इस बात परभी माताको अवश्य ध्यान देना उचित है।

५–बहुतसी स्त्रियें बालकको ठंढेपानीसे ही निहलाती हैं, और आपभी दिनमें कई बार स्नान करती हैं, उनको इस

बातका ध्यान नहीं रहता कि, हमारे नहानेसे बालकको ठंढ होजायगी, यदि वह स्त्री स्वयं स्नान करै तौ शरीर पर प्रथम तेल मलकर पानीको औटाकर उससे स्नान करै और बालकको भी दूसरे तीसरे दिन तेल मलकर स्नान करावे ।

६—यह तौ मैं तुझे प्रथमही बताआई हूं और अबभी बताती हूं कि, बालकका पालन करनेके लिये माताको भी अपना शरीर और स्वास्थ्य ठीकरखना उचितहै; नहीं तो किसी प्रकार बालकका पालन नहीं होसकता यदि माताको कुछ रोग होगा तो बालकको भी अवश्य वही रोग होजायगा। यदि माता सदा रोगी रहती हो, दूसरेकी निन्दा करनेवाली हो, कलेश करने वाली हो, चोरी करनेवाली हो, सदा झूंठ बोलती हो, तब संतान भी उसी प्रकारकी होजायगी।

हे बहन! बालकोंका पालन करना कोई सहज बात नहीं बालकके पालन करनेमें माता अपने तनकी सुधिभी भूल जातीहै, और उसका बालककी ओर ही ध्यान रहताहै; इसी कारणसे सभी स्त्रियोंको उचितहै कि, बालकके ऊपर विशेष ध्यान रक्खैं। संतानका सुख दुःख माताहीके ऊपर निर्भरहै।

शिशुस्वास्थ्य रक्षा।

हे बहन! अब मैं तुझे बालकके स्वास्थ्यकी रक्षा बताती हूं, जिस प्रकारसे बालककी स्वास्थ्य रक्षा होकर शरीर दिन २ पुष्ट होता है।

ताप—सोहढके घरमें तापका रखना भी अत्यन्त प्रयोजनीयहै सर्वदा कोयलोंसे भरी दहकतीहुई अंगीठी प्रसूतीके घरमें धरी रहै, इससे बालकका शरीर क्रमसे तेजवान् और

पुष्ट होजाताहै, शरीरमें रुधिरके आने जानेकी क्रिया तीक्ष्ण होजातीहै श्वासप्रश्वासभी भलीभांति चलतारहताहै उस अँगीठी में हाथ सेंकरकर बालकके शरीरको सेकना उचितहै। फिर तेल गरमकर सुहाता२ तेल बालकके शरीर पर मलना कर्तव्य है। ऐसा जो करा जायगा तौ बालकको शर्दी होना तौ दूर रहा वरन् कोई रोग नहीं होगा ।

स्नान–बालकको दूसरे तीसरे दिन स्नान करानेमें कुछ हानि नहींहै, भली भांतिसे बालकके शरीरपर सरसोंका तेल मलकर शरदीमें गरम पानीसे और गरमीमें धूपके धरे पानीसे स्नान करावै, परन्तु बालकको बहुत देरतक जलमें भिगोना उचित नहीं उसीसमय उसका सब शरीर पोंछ डालना चाहिये ।

वस्त्र–बालकका शरीर सदा ढकारखना चाहिये, आंगनमें उघड़ा कभी न सुलावै जब सुलावै तब ढककर सुलावे, उघड़े रहनेसे बालकको बड़ी शरदी होजातीहै तथा दृष्टि लगजातीहै इसकारण गरमियोंमें तौ पतले और साफ कपड़ेसे बालकको ढककर रक्खै और जाड़ोंमें गरम कपड़ोंसे ढककर रखना उचितहै ।

आहार–बालकका प्रधान आहार स्तनका दूधहै, यह मैं तुझे पहलेही बताआईहूं, स्तनोंमें दूध न होनेसे बालकके जीवित रहनेमेंभी संदेह है । परन्तु अत्यन्त स्तन पिलानेसे माताका स्वास्थ्य भंग होसकताहै, यही नहीं वरन् बहुतसी उन्मत्त होजातीहैं, स्तनमें किसीप्रकारकी पीड़ा होजानेपर बालकको स्तन नहीं पिलाना चाहिये. स्तन पिलानेका समय

वांधलेना चाहिये, इससे देखोगे कि, वालक ठीक उसी समय जागताहै, इसकारण वालक और माता दोनोंके विश्राममें विघ्न न होगा वालकके रोतेही उसको स्तन पिलाना कदापि उचित नहीं इससे वालकको एक प्रकारका कुअभ्यास हो जायगा; और दूध न पचते पचते दूधके पीनेसे पेटमें जलन पड़ने लगैगी। रात्रि के समय निंद्रावस्थामें दूध कभी नहीं पिलाना चाहिये; इस प्रकारकी अवस्थामें स्तन पीकर वहुतसे वालक मरगये हैं। स्तनोंको उघाड़े रखना किसी समयभी ठीक नहीं, इससे स्तनोंमें फोड़े होजानेका डर है।

हे वहन! जव वालक चार पांच महीनेका होजाय तो उसे गायका दूध आधा पानी मिलाकर पिलाना चाहिये परन्तु इतना अवश्य ध्यान रहै कि, वालकको ठंढ़ा दूध किसीसमय पीनेको न देवै और न वासी देवै वालकको दूधके अतिरिक्त और कुछ खिलाना न चाहिये।

वायु—जिससे वालक साफ और शीतल हवाको सेवन कर सकै इसके उपाय करनेका भी प्रयोजन है, वालक अच्छी हवाके लगनेसे हाथ पैर हिलाकर खूव खेलैगा, इससे उसके परिश्रममें उसका भोजन शीघ्रही पचजायगा। और वालकका शरीरभी दिन २ पुष्ट होता रहैगा, पवन ही मनुष्यके जीवन धारण का मूलाधार है। पवनके खराव होनेसे सभीको पीड़ा उत्पन्न होतीहै; तव फिर वालकको यदि रोग होजाय तो इसमें आश्चर्य क्या है?

निद्रा—हे वहन! ऐसा देखाजाताहै कि, वालक उत्पन्न होनेके पीछे ५-६ सप्ताहतक सोता ही रहताहै, केवल भूखके स-

मय जागताहै, और दूध पीकर फिर सोजाताहै यह स्वाभाविक बात है । गर्भमें रहनेके अभ्यासको बालक सरलतासे नहीं भूलसकता । इस प्रकार जब बालक जागे उससमय किसीको बालकके सन्मुख जाना उचित नहीं इससे बालकका मन सहसा उत्तेजित होजाताहै,और उसे बड़ा कष्ट होता है बहुधा स्त्रियें बालकको थपकोर २ कर सुलाया करती हैं,ऐसा कभी नहीं करना चाहिये, यह बड़ा अन्यायहै, इससे बालकके मस्तक पर आघात लगताहै इससे मस्तक निस्तेज और शरीर दुर्बल हो जाताहै, इसके अतिरिक्त यह बुरीबान पड़तीहै । जहां एकवार बालकको इस प्रकारसे सुवाया फिर विना थपकोरे हुए बालक सोता नहीं ।

दांत–बालकोंको दांत निकलनेके समय अनेक भांतिके कष्ट भोगने पड़तेहैं, अधिकतर इसमें पेटकाही रोग होताहै; इस समय माताको बड़े पथ्यसे रहना चाहिये ।

टीका–जब बालक चार पांच महीनेका होजाय तब उसके टीका लगवा देना उचित है, इसमें केवल दो तीन दिन बुखार आता है बालककी बांहोंको बड़ी सावधानीसे रखना चाहिये जिससे फफोले फूटने न पावैं ऐसा यत्न करना उचितहै ।

माताकी स्वास्थ्यरक्षा-विनामाताकी स्वास्थ्य रक्षा हुए सन्तानका स्वास्थ्य कभी ठीक नहीं रहसकता, बहुतसी स्त्रियें अपना परहेज कुछ नहीं करतीं इसी कारणसे उनका बालक रोगी रहताहै, तब वह यह कहतीहैं कि, इतनी सावधानीसे तो बालकको रखतीहूं, फिर नहीं कहसकती कि, इसको रोग कहांसे दौड़आताहै । उसका कारण यहीहै कि, वह अपना परहेज

नहीं रखतीं इसमें अधिकतर तो माताकोही बड़े परहेजसे रहना चाहिये, हे बहन! किसीकी कहावतहै कि "तीन बरस घालै तो एक वालक पालै" तीन वर्षतक वालककी माको परहेजसे रहना चाहिये। वालककी स्वास्थ्यरक्षाके साथही साथ माताकेभी स्वास्थ्यकी रक्षा होजायगी अधिकतर माताके भोजनपर वालकका स्वास्थ्य ठीक रहताहै, इसी कारण माताको ऐसी वैसी कोई चीज नहीं खानी चाहिये, बहुतसी स्त्रियें अपने खानेपर कुछ ध्यान नहीं रखतीं स्वादके मारे अलाय वलाय सभी कुछ भखजाती हैं, वह स्त्रियें वडी मूर्ख हैं जिनको अपनी संतानका ध्यान नहीं रहता इसी कारणसे उनकी बहुतसी संतान अकालमेंही मरजातीहैं उनको घोर पाप लगताहै ऐसी कौनसी माताहै जो संतानको पालन करनेमें कसर करैगी, परन्तु वह अपने भोजनमें ध्यान नहीं देतीं इसीसे वहुतसे वालक अकालमेंही मृतक होजातेहैं।

शिशुशिक्षा।

हे वहन! वालकके पालन करनेके साथही साथ वालकको वालशिक्षा देनेकी आवश्यकताहै, जिन वालकोंको वालकपनसे उचित शिक्षा मिलैगी फिर वह वड़े होनेपर कभी कुमार्गगामी नहीं होंगे इसीकारण माताको चाहिये कि, जव वालक कुछ होशियार होजाय तभीसे उससे वर्णमालाके अक्षर बुलवावैं जव वह इनको वोलनेलगै तो खाने पीनेकी वस्तुओंके नाम बुलवावैं जैसे 'पानी-रोटी' इत्यादि जो दो दो अक्षरके हों और जिनसे रोज काम पड़ताहो जैसे कि "चाचा, दादी, लाला, अम्मा, चाची, बुवा, नानी, मामा इनकोभी खूब बुल-

वावै, फिर जब इतना होजाय और बालक कुछ समझनेलगै तो ५२ प्रकारके बहुतसे खांड़के अक्षर बनवावे जैसे कि, दिवालीमें खांड़के हाथी घोड़े आदि बनाकरतेहैं, और बालकको जो खानेके लिये मीठा दियाजाताहै उस स्थानमें इसी मीठेको दे और उनको पहँचान करकै जैसे कि क, ख, ऐसा होताहै, दो तीन दिनतक "क" अक्षरही खानेको दे और कहती जाय कि आज तैंने "क" खाया फिर इसी भांति "ख" दे फिर धोखा देकर जब बालक "ख" मांगे तो उसे 'क' देदे जो वह लेले तो उसे सावधान करै कि, देख कौनसा अक्षर है जो वह बतादे कि यह "ख" नहीं है "क" है तब उसे एकके पलटेमें दो देदे, इसी भांतिसे अक्षरों की पहँचान करावै। एक काम और भी करै कि, उनके कपड़ों पर भी रेशमके डोरेसे अक्षर काढदे, जिससे वह पहँचान जाय कि,यह उस अक्षरका कपड़ा है; या उस खिलौनेको जो मैंने तुझे दिया उससे पढ़ाना सिखावे उस्सेभी बालक बहुत जल्दी पढ़सकताहै, उसके पढ़ाने की रीति मैं तुझे पहले बताआईहूं उसीके अनुसार बालकको प्रथम पुस्तक पढ़ा देनी उचित है जिस रीतिसे मैंने तुझे पढ़ायाथा, उसी रीतिसे पढ़ाना सभीके उपयोगी होगा।

बालकपनही बालकोंकी शिक्षाका समयहै, इस समयमें बालक जितनी जल्दी सीखताहै बड़े होनेपर उतनी जल्दी नहीं सीख सकता, जिस प्रकारसे दिन २ बालक बढ़ताजाताहै उसी प्रकारसे बालशिक्षाभी अवस्थाके अनुसार बालककी मानसिक वृत्तिको ऊँचा करतीहै।

यदि माता बालककी शिक्षाके विषयमें ध्यान नहीं देती

तो वालक जिस रीतिसे चारों ओर को देखताहै वही वातैं सीखताहै। जिस दिन वालक आँखैं मलकर चारों ओरको देखताहै उसी दिनसे मानों उसकी मानसिक शिक्षाका नाश होगया। उसी दिनसे वह अपने मनमानी घरजानी वातें सीखनेलगा। यदि माताको उसने क्रोध करते हुए देखा, तव वहभी गुस्सा करना सीखजायगा। और जो माता उसे हटकेगी तव तो उसका गुस्सा दिन २ वढ़जायगा। यहां पर हे वहन! मैं तुझे एक कहानी सुनाती हूं माताके विना सुधारेहुए वालक कभी ठीक नहीं होसकता।

वालकपनमें वालक माताके पाससे जो कुछ सीखताहै, वह कभी नहीं भूल सकता, वालकपनमें माताकी शिक्षा उसके हृदयमें जमजातीहै,वड़े होनेपर सैकड़ों उपाय करनेपर भी वह वालक उस भांति नहीं सीखसकता, इस वातको सभी जानती हैं कि, वालक अपनी मातासे ही पूछा करते हैं कि 'अम्मा! यह क्या है यह क्या है' माता यदि उस वस्तुको कुछका कुछ वतादे तो वालक उसको वही जानैगा, पीछे सैकड़ों वातोंके जानने परभी वालक उस चीजको नहीं भूलैगा।

कहानी–हे वहन! आमेरिकाके युद्ध समयमें जिस मनुष्यने जो वीरता और सहायता प्रकाश की थी, वह मनुष्य वालकपनमें रोया करता तो माता उसे घरके कुछ दूर जाकर कह देती कि,यह जो पेड़ है इसके भीतर भूत वैठाहै,और जो तू अवकी वार रोया तो तुझे मैं इसे देदूंगी जव वह वालक वड़ा होगया, और अनेक भांतिकी पुस्तकोंको पढ़गया; तव वह

भूतका यकीन नहीं करता, वह यह कहता कि जमीनपर भूत कभी नहीं रहसकता; भूत तो क्या वह किसी भयदायक वस्तु-से भी नहीं डरता था ।

हे बहन ! जब युद्ध समाप्त होगया और वह आदमी अपने घरको लौटा; रात्रि अँधेरी घोड़ेपर चलाजारहाथा चलते २ उसी माताके बतायेहुए पेड़के नीचे पहुँचा; तो उसी समय माताकी वह बात याद आगई यह बात सच्च थी कि, वह उस समय कुछ भय नहीं करताथा, परन्तु उस समय उसको आपसे आपही भय लगा, तब उसने देखा कि, वह बिकटाकार भूत अपनी भयंकर मूर्त्तिको निकालेहुए मुझे पकड़नेके लिये दौड़रहाहै । उसने डरके मारे आंखें मीचलीं; फिर मूर्च्छित होकर जमीनपर गिरपड़ा ।

इतनेमेंही घोड़ेके पैरोंका शब्द सुनकर उसकी मा और उसके भाई द्वारपर देखनेके लिये आये; जाकर देखा कि, वह वीर पुरुष जमीनपर अचेत पड़ाहै,घोड़ा इधर उधर फिर रहाहै तब उनको बड़ा आश्चर्य हुआ और उसके निकट गये जाकर देखा कि, उस समय वह मनुष्य मृतक होगयाहै ।

हे बहन ! मेरे इस कहानी कहनेका यह अभिप्राय है कि, माता जिस प्रकारसे बालकको शिक्षा देगी, बालक वैसीही सीख सीखैगा । बालककी शिक्षासम्बन्धमें माताको क्या करना चाहिये वह मैं तुझे आगे बतातीहूं ।

अभ्यास और संग ।

अभ्यास–अभ्यास शिक्षाका प्रधान अंगहै; एक प्रकारसे अभ्यासको मनुष्यका दूसरा स्वभावभी कहाजासकता है,

कारण कि, यह साधारणमें देखा जाताहै कि, संसारमें मनुष्यके स्वभावके अतिरिक्त और कुछ नहीं है, जैसे कि, विना भोजन मिलेहुए जीना असंभव है, उसी प्रकारसे अभ्यासहै सभी मनुष्य पृथ्वीमें अभ्यासपर निर्भर करतेहैं। उसीप्रकार वालककी अवस्था अभ्यासपरहै, जैसी आदत डालोगी वैसी आदत पड़ैगी इसमें अधिकतर माताकोही सावधान रहना चाहिये।

हे वहन! जिससमय वालक जन्म लेताहै उस समय वह कुछ नहीं जानता; जव माता उसे पीनेको दूध देतीहै तभी वह पीताहै, उस अवस्थामें माता जैसी आदत वालककी डालैगी वालक वैसाही होगा मां अच्छीआदत डालैगी वालक अच्छा होगा और वुरी आदत डालैगी तो दुष्ट प्रकृति होगा। वालक जिस समय भोजन करनेको वैठे माताको उचितहै कि, उससमय उसको चुप चाप खानेदें भोजन करतेसमय वालकको चलने फिरने दें, मैले कपड़े पहरनेकी आदत न डालैं, भोजन खानेके उपरान्त हाथ मुँह भली भांतिसे धोनेकी वान डालैं। वालकके पेशाव आदि फिरनेपर हाथ पैर धोनेको कहैं, चौकेमें न घुसने दें, किसीकी चीजको देखकर जो वालक मचलजाय और कहै कि, मैं यही लूंगा तो उस समय उसकी इस हठको पूरा न करैं, जो यदि वह उसी समय वही वस्तु मँगादेगी तो आगे को उसको वही वान पड़ैगी प्रभातकाल होनेपर वालकको परमेश्वरके नाम लिवाने सिखावें, इससे भगवान्‌में भक्ति उत्पन्न होगी। गाली देनेकी वान कभी न डालैं, वहुधा स्त्रियें वालकको छोटेपनेपर गाली देना सिखातीहैं, उस समय तो

उसके तोतले २ वचनोंसे वह गालियें सभीको अच्छी लगती-हैं, परन्तु बड़ेहुए पर सभीको बुरी लगती हैं फिर वह सैकड़ों उपाय करतीहैं परन्तु बालक अपनी आदतको नहीं छोड़ता।

हे बहन ! संतानके प्रति माताका ध्यान न देनेमें आगेको बालकके लिये बड़ी खरावी होतीहै । माताके दोषसे ही संतान विगड़तीहै और वह माता रात दिन संतानको देख २ कर जला करतीहै ।

स्त्रियोंको उचितहै कि, अपनी संतानके प्रत्येक कामोंकी ओर अवश्य ध्यान रक्खें ।

संगति—यह भी काम माताका ही है कि, वह अपने बालकोंको जैसी संगतिमें बैठालेगी वैसाही गुण आवेगा किसीने कहाहै कि ।

दोहा—संगतिही गुण ऊपजै, संगतिही गुण जात ।
संगति बैठै नीचकी, आठों पहर उपात ॥

जो बालक बालकपनमेंही जुआरीके निकट बैठेगा तो धीरे२ जुआरी होजायगा, चोरके निकट बैठेगा चोर होगा, ठगके निकट बैठेगा ठग होगा, नीचके निकट बैठेगा नीच जातिकी बातें पसंद आवेंगी, बदमाशके निकट बैठेगा, बदमाशी सीखैगा । पढ़े लिखेके निकट बैठेगा, पढ़ना लिखना सीखैगा, मूर्खके निकट बैठेगा मूर्ख होगा, गुणीके निकट बैठेगा गुणवान् होजायगा, पंडितके निकट बैठेगा पंडित होगा ।

परन्तु हे बहन ! माता इन बातोंको न जानकर अपने बालकोंको घरसे बाहर लड़कोंमें खेलनेके लिये भेजदेतीहैं, फिर उनके वह बालक उनके हाथोंसे बाहर निकलजातेहैं,

फिर उनका सँभालना कठिन होजाताहै तव उस समय माता चैतन्य होती हैं, फिर संतानको मारना पीटना करती हैं, परन्तु वालक क्या कभी सुधर सकता है, कभी नहीं, वरन् इससे वालकको क्रोधही वढ़ता जाता है, फिर वह संतान अपने माता पिताका सामना करने लगती है। आखिरको उनकी संतान मूर्ख होजाती है। फिर वह चोरी करनेमें कमर बांधती है।

परन्तु यह कसूर तौ उन्हींका है; जव वह अपनी संतानको बुरी संगतिसे वचावैंगी कभी उनका सामना नहीं करैंगी, मेरे कहनेका यह मतलव नहीं है कि, तुम अपने वालकोंको घरसे वाहर न जाने दो। जिस समय वालक अपनी संगतिको ढूंढनेके लिये वड़े व्याकुल होते हैं उस समय उनको श्रेष्ठ जातिके वालकोंके निकट खेलना चाहिये। इससे उनकी शारीरिक और मानासिक वृत्ति वढ़जाती है। परन्तु जिन लड़कोंके निकट तुम्हारे वालक खेलनेको जाते हैं उनका स्वभाव कैसा है, इस वातको भी देखना उचित है। विना स्वभाव जानेहुए उनके निकट खेलनेको न जाने दे।

यदि किसीभांति वालकोंको बुरी संगति मिलजाय; उस समय उनको मारना नहीं चाहिये, कारण कि, मारनेसे वालक और भी खराव हो जाता है उसको उस समय समझा बुझाकर लज्जित करना उचित है। जव बालक अपने गुणोंपर आपही लज्जित होजायगा, तौ अपने आप उस मार्गसे हट जयगा।

हे बहन! बालकके छोटे परही माताको अभ्यास और संगति इन दोनों विषयमें ध्यान रखना उचित है। जो बालक बालकपनमें ही पढ़ेलिखोंके निकट बैठेगा तो वहभी पढ़ने लिखनेको सीख कर धीरे २ पंडित होजायगा। और जिसके चरित्र ठीक नहींहैं वह कभी नहीं पढ़ सकता चाहै वह सैंकड़ों मदरसोंमें क्यों न पढ़ै।

अन्यान्यशिक्षा।

हे बहन! पहले जो कुछ बताया यह तौ बालकपनकी शिक्षाथी; जबतक बालक पढ़नेके लिये न जाय माताको इन बातोंपर तभीतक ध्यान रखना कर्तव्य है; फिर जब बालक पढ़नेके लिये जाने लगै उस समय माताको क्या करना चाहिये वहभी मैं तुझे बताती हूं।

१-प्रथम तो जिस पाठशालामें पढ़ाई अच्छी होती हो और जहां पंडित अच्छा गुणवान् हो उस पाठशालामें लड़केको पढ़नेके लिये भेजै।

२-फिर पाठशालामें भेजकरही निश्चिन्त न होजाय, वह पढ़नेके लिये जाता तौ है परन्तु कुछ पढ़ताभी है या नहीं इस परभी माताको अवश्य ध्यान देना उचित है; बिना इसके देखे भले संतानका पढ़ना ठीक नहीं होता।

३-जिससे बालकका लिखने पढ़नेमें मन लगै और उत्साह बढ़ै वही यत्न करना उचित है उसके पढ़ने लिखनेको

सुनकर अच्छे २ प्रयोजनीय कपड़े बनाना और जूते आदि पहराना चाहिये। इसीसे वालकोंको पढ़नेमें उत्साह वढ़ताहै।

४–स्वास्थ्य भी पढ़नेलिखनेका एक मूल कारणहै, जव वालकका स्वास्थ्यही ठीक नहींहै तौ पढ़ना लिखना किसी प्रकार नहीं होता, और जो ऐसी हालतमें वह पढ़ेलिखे गया तौ उसका स्वास्थ्य नष्ट होजायगा, इसकारण पढ़ानेके साथही साथ वालकके स्वास्थ्यकीभी रक्षा करनी माताको उचितहै नियतसमयमें स्नान, भोजन, नियमसे सोना ऐसा करनेसे वालकका स्वास्थ्य कभी नहीं विगड़सकता।

फिर जव देखै कि, अव यह वालक पढ़ लिखकर हुशियार होगयाहै और इसकी अवस्थाभी युवा होनेको आईहै तौ उससमय उसका विवाह करदेना उचितहै। कारण कि, आजकल जिन लड़कोंका अवस्था आनेपर विवाह नहीं होताहै वह वहुधा कुमार्गगामी होजातेहैं।

इति पञ्चसोपान समाप्त.



सप्तमसोपान।

कर्त्री।

धर्मोपदेश।

हे वहन! अवतक तौ मैंने तुझे घरके कामकाज वताये परन्तु अव कुछ थोड़ा धर्म उपदेशभी वतातीहूं।

संसारमें सभी मनुष्योंको गृहस्थीमें रहना होताहै इस कारण जिस प्रकारसे संसारी सुख दुःख वीतते जातेहैं उसी-प्रकारसे मनुष्यका जीवनभी सुख दुःखोंको भोगकर समाप्त होताजाताहै।

जिस स्थानमें मनुष्य रहताहै उसीको गृह (घर) कहतेहैं, परन्तु संसार एक विस्तारित विषयहै, गृह (घर) वागके बीचमेंका एक वृक्षरूपहै, और यह संसारही वागस्वरूपहै, घरके ओरे धोरेके घरोंमें और भी वहुतसे मनुष्य रहतेहैं; परन्तु उन सभी मनुष्योंके साथ मिलकर एक जगह रहनेका ही नाम संसारहै एक साथ रहनेपर किसी दूसरे मनुष्यके सम्वन्धमें कोई भी मनुष्य अज्ञानताका परिचय नहीं देस-कता। जिस प्रकार संन्यासियोंका घर नहीं होता. तव संन्या-सीही संसारसे अलग रहसकतेहैं, दूसरा कोई भी संसारसे अलग नहीं रहसकता। वरावरवालेके साथ सम्वन्ध, कुटु-म्बियोंके साथ सम्वन्ध, स्वजनोंके साथ सम्वन्ध, दुकानदा-रोंके साथ सम्वन्ध, दास दासी इत्यादि सभी मनुष्योंके साथमें एक संसारी सम्वन्धहै; हे वहन! इस संसारमें रहकर कोई मनुष्य इन सम्वन्धोंको नहीं भूलसकता। इन सव कारणोंसे

संसारके स्थानविषयमें वा अवस्थाके सम्बन्धमें संसारका नाम नहीं है; संसारमें सभी मनुष्योंके साथ सम्बन्धके वशसे जो मनुष्यको करना उचित है उस कर्तव्यकेही अनुसार कार्य करके वास करनेकाही नाम संसारहै। इसी कारणसे सभी मनुष्य संसारीहैं। क्या असभ्य, क्या सभ्य, क्या अंग्रेज, क्या जर्मन, क्या भारतवासी, क्या चीनी सभी संसारमें वास करतेहैं। हम हिन्दूहैं हम भी संसारमें वास करतेहैं; और २ जातियोंकी बनिस्बत हमारा संसारमें अधिक सम्बन्धहै हम संसारमें यात्रा कर एक धर्मकोही उस यात्राका अंग मानतेहैं हे बहन! बड़े २ ऋषि मुनिभी प्राचीन शास्त्रोंमें यही लिख-गयेहैं। हम केवल एक अन्नके खानेवालेहैं; हम सबके साथ मिलकर रहना ठीक मानतेहैं। अंग्रेजलोग स्त्रीकोही साथ लेकर रहना पसंद करतेहैं, अधिक क्या—वह विवाह होजाने-पर कन्याके माता पितासे कुछ सम्बन्ध नहीं रखते परन्तु हमारे यहां यह रीति नहींहै, हमें तौ सभीके साथ मिलकर रहना होताहै इन सबमें 'स्वामिनी' जिस समय स्त्री होतीहै उस समय मनुष्योंके सुख दुःखका भार उसी कर्त्रीपर जाताहै; और २ देशोंकी अपेक्षा हमारे भारतवर्षकी स्त्रियोंके ऊपर गृहस्थका अधिक भार पड़ता है; भारतवर्षकी स्त्रियोंके ऊपर प्रथम तौ स्वामीकी सेवाका भार है, इसके अतिरिक्त फिर सा-सु, श्वसुर, देवर, नंद इत्यादिकी भी सेवा करनी पड़तीहै। अधिक क्या उनके ऊपर दरिद्र और भिखारियोंकी भी सेवाका भार है, स्त्रियें ऐसा कोई दिन नही होता जो अपने घर आयेहुए भिखारीको अन्न न देती हों।

राजा जिस भांतिसे धर्मसहित प्रजाका पालन करता है, धनी हो या दरिद्र हो परन्तु उसकी दृष्टिमें सभी समान हैं, जिस भांति वह सर्वशक्तिमान् परमेश्वर मनुष्यसे लेकर कीट पर्यन्त सभीकी समान रक्षा करता है उसी प्रकार जब स्त्री स्वामिनी हो जाती है उस समय बड़ेसे लेकर छोटे तक अथवा नौकर चाकरसे लेकर भिखारी तक सभीके लिये विचार करना होताहै; जो स्त्रियां ऐसा करती हैं उनका घर ऋद्धि सिद्धिसे भर जाता है और जो ऐसा नहीं करतीं उनके घरमें रात दिन क्लेश रहता है ।

हे बहन ! कर्त्री होनेका काम कोई सहजबात नहीं है, कर्त्री तो सभी होती हैं परन्तु जो कर्त्रीका कर्तव्य कार्य निवाहे वही यथार्थ कर्त्री है; कर्त्री होकर जो स्त्रियें घरके मनुष्यों पर अपना अधिकार जमाया चाहती हैं; उनका फल उलटा हो जाता है । विना नम्रता और प्रेम तथा दयासहित व्यवहार कियेहुए घरवालों पर अपना अधिकार किसी भांति नहीं जम सकता और घरवाले भी विना भक्ति दया आदिके उत्पन्न हुए किसी भांतिसे उसका मान नहीं करसकते; उसके कहनेमें कोई नहीं चलता, उसकी बात कोई नहीं मानता यदि कोई घरवाला गृहणीको कर्त्री नहीं मानै, तो घरमें कभी शान्ति नहीं हो सकती, और जिस घरमें अशान्ति विराजमान् रहती है वहां सुख कभी नहीं मिल सकता ।

मनुष्य भक्ति किसकी करते हैं ! जब गुण होगा तो मनुष्य स्वयंही तुम्हारी भक्ति करने लगैंगे, जिनमें गुण होता है उनकी प्रशंसा सभी मनुष्य करते हैं जिस स्त्रीका अधिकार घर

पर रहता है, उसका रोब जमजाता है, और घर २ में उसकी प्रशंसा होती है, उसके विना पूछे कोई कुछ काम नहीं कर सकता इसी कारण सभी स्त्रियोंको उचित है कि, जिस समय वह कर्त्री होजांय उस समय सबके प्रति एकसा व्यवहार करें और दया तथा भक्ति सबके ऊपर जमाकर सबको अपनी मुट्ठीमें करलें, फिर हे बहन ! घरमें कभी क्लेश अशांति लड़ाई झगड़ा कुछ नहीं होगा।

हे बहन ! विना रीतिनीतिके जानेहुए कर्त्री ठीक नहीं हो सकती सो मैं तुझे आगे रीति नीति भी बताती हूं।

रीति और नीति।

हे बहन ! अब मैं तुझे रीति नीतिकी रीति भी बताती हूँ।

१-रीतिनीति कुछ विषय नहीं है, रीति एक बाहिरी कार्य है, और नीति मानसिक भावकी उन्नति है। पहले नीति है उसके पीछे रीतिहै, कारण कि, जबतक स्त्रियोंका मनही ठीक नहीं होगा तबतक उनपर रीति नहीं आसकती।

२-चित्तकी मानसिक वृत्तिकाही नाम नीति है, इस वृत्ति की उन्नति करतेही मन अपने आपही ऊँचा होजाता है; और उसी समय मनकी नीचता दूर होजाती है।

३-हे बहन ! स्त्रियोंको सच्च बोलनाही एक प्रधान नैतिक व्यवस्था है, जो स्त्रियें झूंठ बोलती हैं उनको ऐसा बहुधा देखा जाता है कि, अच्छेकी जगह बुरा होगया है, झूंठ बोलना महा पाप है।

४-सबके ऊपर दया करनाही स्त्रियोंका प्रधान कार्य है, जो स्त्रियें श्रेष्ठ व्यवहार करतीहैं फिर उनको कष्ट उठाना नहीं पडता

९–सबसे मीठा बोलना यही उनका प्रधान गुण है। जो स्त्रियें कर्कश स्वभावकी होती हैं उनसे कोई बात चीत करना नहीं चाहता उनके समीप कोई स्त्री नहीं आती घर २ में उनकी निन्दा रहती है, और जो मीठा बोलती हैं, तौ सभी उनसे संतुष्ट रहते हैं घर २ में उनकी बड़ाई होती है, बहुतसी स्त्रियें उनके पास आया जाया करती हैं। सहस्रों और हजारों रुपये पानेसे भी इतना मनुष्य संतुष्ट नहीं होता जितना तुम्हारे मीठे बोलनेसे संतुष्ट होताहै, यदि मनुष्यको तुम विना कुछ दिये हुए बिदाकर दोपरन्तु मधुर वचनोंसे बिदा करो तो वह सहस्र गुण संतुष्ट होताहै, हे बहन! इस संसारमें मधुर वचन बोलनेके समान वस्तु दूसरी नहीं है। मधुर बोलना कुछ शक्तिका काम नहीं है यह स्त्रियोंका एक आभूषण है।

स्त्रियोंके लिये मधुर बोलने और लज्जा करनेका भी प्रयोजन है। जिन स्त्रियोंको लज्जा नहीं है, जो स्त्रियें निर्लज्ज हैं, वह चाहें रूपवती क्यों न हों परन्तु उनका रूप किसी अर्थका नहीं।

स्त्रियोंको स्वभावसेही लज्जा होती है, अधिक जोर करने पर लज्जाको विना नष्ट कियेहुए स्त्रियोंकी लज्जा कभी नष्ट नहीं होती। परन्तु आज कलकी नए फेशनको पसंद करनेवाली स्त्रियें लज्जाको नष्ट करती जातीहैं; जो स्त्रियें स्वाधीन बनना चाहती हैं; उनसे मानो लज्जाका वैर होगया है, और दिन दिन लज्जाका राज्य उठताही जाता है।

हे बहन! स्त्रियें स्वभावसेही सौन्दर्यप्रिय हैं, और अपनी २ सुन्दरताको बढ़ानेके लिये कितने उपाय करती

हैं; फिर मैं नहीं जानती कि, वह लज्जाको किस लिये छोड़ती चली जाती हैं; ऐसा जाना जाता है कि, वह इस वातको नहीं जानतीं कि, लज्जासे भी स्त्रियोंकी सुन्दरता है,लज्जासे स्त्री कितनी सुन्दर लगती है इस वातको वह जानती होतीं तो ऐसा काम कभी नहीं करतीं।

१-हे वहन! दयाभी स्त्रियोंके लिये एक आवश्यकीय वृत्ति है, इस संसारमें सवकी अवस्था समान नहीं है, कोई दरिद्र है, कोई धनी है, यदि संसारमें दया न होती तो यह संसार कठोर और भयंकर हो जाता यदि कोई किसी के ऊपर दया न करता; यदि सभी सवके दुःखको देखकर सुखी होते, तो यह संसार जंगलके समान दिखाई देता।

केवल हृदयमें दया होनेसे ही ऐसा नहीं हुआ;संसारमें रहनेसे मायाका भी प्रयोजन है; मायाही स्त्रीपुरुषोंको वांधनेके लिये रस्सी स्वरूप है। परन्तु माया तो सवके हृदयमें है, जो संसारमें जन्मा है वही मायासे बँधाहुआ है।

माया, अच्छी वोल चालके सिवाय और कुछ नहीं है; संसारमें जैसे २ हृदयमें माया वढ़ती जाती है, वैसे २ ही अच्छी वोल चाल भी वढती जाती है, इसी कारणसे संसार सुखका स्थान होगया है, अच्छी वोल चालके समान मधुर द्रव्य और कुछ नहीं है।

पुण्यकी ओरको मन जाना इस संसारमें सुख प्राप्तिका उपाय है; जिस स्त्रीका मन पापकी ओर है; वह सुखी होनेकी आशा न करे, आज कल पापकी अधिक वृद्धि हो रही है इस कारण सभी स्त्रियोंका मन पापकी ओरको जाता है जिस प्रकारसे स्त्रियोंका मन पापकी ओरको न जाय वही करना कर्तव्य है।

यह सभी स्त्रियोंको जानना उचित है कि, पुण्यही एक मात्र सुख और शान्तिका उपाय है; जो स्त्रियें पुण्यको छोड़कर पापकी ओरको जाती हैं उनके समान मूर्ख दूसरी नहीं है। पहली पहल पापका मार्ग अच्छा लगताहै इसीसे स्त्रियें इसकी ओर जाती हैं, परन्तु वह इस बातको नहीं जानतीं कि, इस पापका फल कैसा भयंकर फलैगा ।

यदि संसारमें सुखी होना चाहो; तो सर्वदा पुण्यके मार्गपर चलकर नीतिकी उन्नतिका उपाय करो, सदा अपने कुटम्बि-योंको संतुष्ट रखनेकी चेष्टा करो, सदा सबसे मीठा बोलो, सब के प्रति श्रेष्ठ व्यवहार करनेके लिये उपाय करनाही स्त्रियोंका मूल धर्म है ।

नीति—ऊपर लिखीहुई नीति सबके हृदयमें उन्नति प्राप्त करती है और वह उन्नतिस्वभावसे ही रीतिका उदय करके सबको प्यारा बनालेती है ।

रीति—रीतिके विषयमें कोई नियम बताना सहजबात नहींहै ।

१—आदर सहित संभाषण (बात चीत) करना एक श्रेष्ठ रीति है, परन्तु बहुतसी स्त्रियें आदर सहित बात करना नहीं जा-नतीं; इसीसे स्त्रियें उनके पास आकर भी बात चीत नहीं करतीं इस कारण सभी स्त्रियोंको आदर सहित बात चीत करनी चा-हिये । हे बहन ! जो कोई तुम्हारे घर आवे उसको तुम आदर सहित बैठालो अपने बड़ोंका मान करो इसीका नाम सत रीति है, परन्तु इस समय स्त्रियें अभिमानके मारे आदरभाव करनेकी रीतिको भूलतीही जातीहैं जो स्त्रियें अपने बड़ोंका आदर सन्मान नहीं करतीं; उनकी उचित सेवा नहीं करतीं

सासनंदको साधारण स्त्रियोंके समान जानती हैं, उनको कटु वचन कहती हैं उन दुष्टा स्त्रियोंको घोर नरक प्राप्त होता है।

हे बहन! अपने कुटम्बियोंसे भी श्रेष्ठ और अच्छा व्यवहार करना उचितहै परन्तु दुष्टा स्त्रियें श्रेष्ठ व्यवहार तो दूर रहा वरन् दिनरात उनके साथमें कलेश करती रहतीहैं। जितना अन्याय और अत्याचार होना चाहिये वह अपने कुटुम्बियोंकेही ऊपर करतीहैं-जो अपने कुटुम्बी हैं उनके ऊपर ऐसे अत्याचारका करना कैसे अन्यायका कामहै।

रीतिका दूसरा नाम सभ्यताहै परन्तु स्त्रियें इसबातको नहीं जानतीं कि, सभ्यता किसको कहते हैं। सभ्यता कोई किसीको नहीं सिखासकता यह स्वयं उत्पन्न होतीहै; जो स्त्री रीति नीतिको अच्छी रीतिसे जानतीहैं वही संसारमें आदरकी सामग्री होतीहैं-सभीजगह उसका मान होताहै, सभी उसका आदर करतेहैं, सभी उसके साथ बातचीत करनेकी इच्छा करते हैं।

हे बहन! मैंने तुझसे रीति नीतिके विषयमें जो कछु कहा यहसभी तेरे उपयोगीहै, रीतिनीतिके विना जानेहुए कभी कोई स्त्री सुखी नहीं रह सकती।

त्योहार।

हे बहन! अब मैं तुझे वर्षदिनके त्योहारभी बतातीहूं कि, यह किसलिये हो ते हैं।

क्वार सुदी दशमी--इसे विजयादशमी तथा दशहरा भी कहतेहैं, इस त्योहारमें नगरों नगरोंमें बड़ी धूमधाम होती है, आजकेही दिन महाराज श्रीरामचंद्रजीने रावणको मार लंका

को जीताथा;और विभीषणको राज्यदे श्रीसीताजीको पायाथा व्यापार देशयात्राकेलिये यह तिथि बहुत उत्तम है,आजके दिन ब्राह्मण, क्षत्री, वैश्य सभी अपने २ यहां पूजन करतेहैं।

दिवाली वा दीपमालिका—यह त्योहार कार्त्तिकके कृष्णपक्षकी त्रयोदशीसे प्रारंभ होताहै, त्रयोदशीके दिन जिस समय भगवान् सूर्य छिपजाते हैं, उससमय सभी स्त्रियें यमराजके नामका एक दीपक जलाया करतीहैं, और चतुर्दशी और मावसके सबेरेही तारोंकी छांह उठ कर तेल और उवटना मलके सभी स्त्री पुरुष स्नान करतेहैं, इसके पीछे सुन्दर वस्त्र पहर २ कर अपने २ घरोंको सजाते हैं, दिवारोंपर भांति २ के रंगकी वेलबूटी बना २ कर आनंद मनातीहैं; सूर्यके अस्त होजानेपर घर २ में श्रीलक्ष्मीजीका पूजन होताहै, फिर पूजनकर घर २ में रोशनी होतीहै; सारीरात जागरण होताहै; और रात-भर लक्ष्मीसूक्तका पाठ आदि कर वह रात्रि व्यतीत होती है।

वसंतपंचमी—सब ऋतुओंमें वसंतऋतुही सबमें प्रधानहै, माघसुदी पंचमीको यह वसंतपंचमी होतीहै, आजके दिन घर २ मालिन वसंत देने जातीहैं, सभी स्त्री पुरुष अपने २ कपड़े वसंती रंगकर पहरतेहैं और आजहीके दिनसे होलिकोत्सव प्रारंभ होताहै ।

मकरकी संक्रान्ति—यह संक्रान्ति सब संक्रांतिओंमेंबड़ी है संक्रान्तिओंके हिसाबसे जो संवत् होताहै उस सम्वत्का आरंभ इसी संक्रान्तिसे होताहै; आजके दिन तिल खानेका तथा तिलदान करनेका बड़ा माहात्म्य है ।

होली—फागुनसुदी पूर्णमासीके दिन होलीका त्योहार होताहै हे बहन ! ऐसा सुननेमें आयाहै कि;इस दिन वह सम्वत् समाप्त होजाताहै जो कि, पूर्णमासीके हिसावसे गिनाजाताहै; आठ दिन पहलेसे विवाह आदि शुभकार्य नहीं होते, आजके दिन अग्निहोत्र कियाजाताहै आजकल वैदिकरीतिको छोड़कर सीधी रीतिसे अग्नि जलालेतेहैं छोटे २ लड़के उपले लड़की काठ आदि इकट्ठा कर उसमें अग्नि लगातेहैं सभी स्त्री पुरुष होलिका देवीका पूजन करतेहैं।

ज्येष्ठसुदी १०—इसको दशहराभी कहतेहैं, यह तिथि सभी शुभकार्योंमें श्रेष्ठहै, इसी दशमीको राजा भगीरथजी-श्रीगंगाजीको लायेथे इसीलिये इसको गंगाजीके जन्मका दिन कहतेहैं। गंगाजीके आनेसे सारे भारतवर्षका उपकार हुआ दशों इन्द्रियोंसे कियेहुए पाप भगीरथजीके नष्ट हुए इसीलिये इसको दशहरा कहतेहैं।

असाढीपूनो—आजके दिन सभी स्त्रियें देवीजीका पूजन करतीहैं।

तीजें—श्रावणसुदी तीज—यह भी स्त्रियोंका बड़ाभारी त्योहार है घर २ में सभी स्त्रियें सुन्दर २ वस्त्र और आभूषण पहरकर अपनी संग सहेलियोंके साथ मिलकर हिंडोलोंमें झूला डालकर झूलतीहैं और भांति २ की मल्हारैं गातीहैं।

सलूनो—त्रेतायुगमें रामचंद्रजी महाराजने अवतार लेकर जिससमय लंकापर चढ़ाई की थी और समुद्रका पुल बांधाथा तो उस समय अपनी सहायताके लिये शिवजी महाराजका पूजन किया; और रेतेका लिंग बनाकर महादेवजीकी स्थाप-

ना करी; वही स्थान सेतुबंध रामेश्वर नामसे विख्यातहै,पूर्णमासीको पूजन पूरा हुआ, और शिवजी महाराज प्रसन्नहुये, तब शिवजीमहाराजने प्रसन्न होकर महाराज रामचंद्रजीके हाथमें राखी बाँधी ब्राह्मण सभी सावनके महीनेमें शिवजीका पूजन करतेहैं और पूर्णमासीको नवीन यज्ञोपवीत पहनतेहैं उसी दिन सबके हाथोंमें राखी बाँधी जातीहै।

नागपंचमी–आजके दिन सभी स्त्रियें नागोंका पूजन कियाकरतीहैं घर लीप पोतकर आजके दिन घरके चारों कोनोंमें एक गोबरकी लकीर खींचकर नागोंको कच्चा दूध पिलाती हैं।

जन्माष्टमी–भादोंवदी आठैंको श्रीकृष्ण महाराजका जन्म हुआथा सो आजके दिन उनका जन्मोत्सव मनायाजाताहै, आजके दिन सभी स्त्रियें वधाई गती हैं।

गुरुजन-अतिथि सेवा।

हे बहन! स्त्रीको सबसे पहले गुरु जनोंकी सेवा करनी चाहिये जिससे उनकी सेवामें कुछ हानि न हो नियतके समयपर उनको भोजनादि मिलजाय रात्रि होनेसे पहलेही जो अपने बड़ोंकी चारपाई आदि बिछादेतीहैं,कोई रोग होजाने पर जो स्त्रियें उनकी भलीभांतिसे सेवा शुश्रूषा करतीहैं, उस समय उनकी सेवा करनेसे जो स्त्रियें घृणा नहीं करतीहैं वही स्त्रियें धन्यहैं।

संसारमें मातापिता तथा सासश्वसुरके समान गुरु दूसरा स्त्रियोंके लिये नहींहै देखो माताने; कितना कष्ट उठाकर

कितने यत्न और कितने परिश्रमकरकै अपनी संतानको मनुष्य कियाहै, उनकी संतान जैसी कर्जदारहै संसारमें उतनी कर्जदार और किसीकी नहीं, संतान इस ऋणका बदला इस-जन्ममें नहीं देसकती इसकारण सभी स्त्रियोंको उचितहै कि, जहांतक हो उनकी सेवामें कसर न करैं, ऐसा नहीं करतीं वह पशुहैं।

सास श्वशुरभी माताकी ही समानहैं. स्वामी स्त्रीमें कुछ भेद नहींहै, जिसप्रकार लड़का अपने मा बापका बेटाहै उसीप्रकार बेटेके समान उनकी बहूहै बहू और बेटेमें कुछ अंतर नहीं है। इसकारण पतिके पितामाता स्त्रीकेभी पितामाता हुए।इसनिमित्त स्त्रीको सासश्वसुरकी भी सेवा करनी सबप्रकारसे उचितहै, अपने मातापिताके स्थानपर सासश्वसुरको समझना चाहिये, जो स्त्रियें सासश्वसुरका कहा न मानकर उनका निरादर कर-तीहैं वह कुलकलंकहैं। जिससमय पति कमानेलगै उससमय स्त्रीको कर्त्रीका पद मिला उससमय उस पदवीको पाकर गृह-स्थमें निर्लिप्तहो धर्मचर्चासे समयको बितावे. उसी समय स्त्री नये कर्त्री घरके राज्यसिंहासनपर विराजमान् हुईहै। उसी समय सारे घरका भार उसके ऊपर पड़ा तब उसे सबसे पहले सासश्वसुरकी सेवामें तन मन लगाना चाहिये।

हे बहन! बूढे आदमियोंका स्वभावही टर्रा होजाताहै,बोली अक्खड़ होजातीहै;इससमय उनको संतुष्ट रखना बड़ा कठिन होजाताहै। वह जरा बातपर रुष्ट होजातेहैं, उससमय स्त्रीको धीरजकी आवश्यकताहै उनका इसबातपर ध्यान न देकर सा-सश्वसुरको संतुष्टकरनेके लिये परिश्रम करना अत्यन्त उचि-

रहै, जिस रीतिसे तुम अपने सासश्वसुरको संतुष्ट रक्खोगी तुम्हारी वहुयेंभी उसी प्रकार तुम्हैं संतुष्ट रक्खैंगी।

हे बहन! जिससमय तुम्हारे घर कोई पाहुना आवै तौ उसकाभी आदर सत्कार भलीभांतिसे करो प्रथम उसे भोजनकराकर पीछे आप करो, उसके सोनेका वंदोवस्त भलीभांतिसे करदो पाहुनेकी सेवा करनेका वडा फलहै जो स्त्रियें पाहुनोंका निरादर करतीहैं उनकाभी आदर नहीं होता। इसकारण अतिथिकी सेवा करनाही स्त्रियोंका कर्तव्यहै।

संतानसंतति।

हे बहन! अव मैं तुझे वतातीहूं कि, संतान संततिके सम्बन्धमें स्त्रीको क्या करना उचितहै।

१–वेटे, पोते, पोती, वेटी आदि जिससे सदा सुखी रहसकैं माताको वही करना चाहिये।

२–फिर वालवच्चोंके खेलनेकी चीजोंकाभी वंदोवस्त करदेना उचितहै, जो वस्तु उन्हैं रुचै उनके लिये वही मँगादेनी चाहिये।

जिससे वालक आपसमें खेलते २ लड़ाई झगड़ा न करैं, तथा मार पीट न करैं ऐसा उपायभी स्त्रियोंको करना उचितहै, जिससमय वह खेलते २ लड़नेलगैं तौ उन सवको वुलाकर उनका झगड़ा मिटादेना उचितहै। कारण इसकी असावधानीमें वालकोंका क्लेश नहीं मिटता, वालकपनमें जव वालकोंके मनमें वैरभाव उदय होजायगा; तौ वड़े होनेपरभी उनको वही आदत रहैगी।

फिर यह भी देखनाचाहिये कि, वालकोंने समयपर खाने-को खाया है या नहीं, यदि नहीं खाया हो तो उसी समय उनको खाने पीनेका बंदोवस्त करनाचाहिये, जहांपर बालक खेलनेको जांय, तौ उनको ठीकसमयपर आनेका भी प्रबंध करना चाहिये, जो समय पढ़नेलिखनेका हो उसमें उन्हें पढ़ावे रातको सुलावे, प्रभातकोही जगादे। इन सब बातोंपर स्त्रीको अवश्य ध्यान देना चाहिये जो स्त्रियें अपने बालबच्चोंपर इस-भांति ध्यान नहीं रखती हैं उनको वड़ा कष्ट उठानापड़ता है। इसविषयको तुझे अधिक क्या वताऊं जिससमय तू घरवाली वनेगी उससमय सभीबातें तुझे आपसे आप आजांयगी।

आत्मीयस्वजन।

हे वहन! स्त्रीको अपने कुटुम्बके प्रति कैसा व्यवहार करना चाहिये वह भी मैं तुझे वतातीहूं, स्त्रीको वहुधा कुटुम्बमें ही रहनापड़ताहै, और कुटुम्बमें रहने सेही उसकी शोभाहै, परन्तु आजकलकी स्त्रियें कुटुम्बमें रहना नहींचाहतीं वह केवल अपने स्वामीके ही साथमें रहना पसंद करती हैं उनका यह कहनाहै कि "मैं और मेरा मुन्श तीसरेका मुँह झुलस" परन्तु यह उनकी वड़ी भूलहै, जो स्त्रियें ऐसाकरतीहैं अंतमें उन्हें पछता-ना पड़ताहै जो स्त्रियें अपने कुटुम्बियोंसे मिलकर नहीं चलतीं यदि उनके घर कोई व्याह शादी हो तौ वह लोग उससमय उनके शरीक नहीं होते, और उनके व्याह शादीमें भी रौनक नहीं आती, रातदिन अपने कुटुम्बियोंके साथ झगड़ा करती रहतीहैं, नहीं ऐसा कभी नहीं करना चाहिये, उनसे मिलझुल-कर चलना चाहिये इसीमें तुम्हारी शोभाहै; जो ऐसा नहीं क-

रतीं उनका घर दुःखमय होजाताहै; जिसघरमें कुटुम्बके लोग दुःख पातेहैं वहां कर्त्रीकी भक्ति नहीं रहती उसका आदर कोई नहीं करता, जिसघरमें रातदिन क्लेश होता रहताहै वहां सुख और सुशांति कभी नहीं रहसकती। जिस घरमें सर्वदा क्लेशका राज्य रहताहै, जहां सभी अपना स्वार्थ ढूढ़ते रहतेहैं वहां सभी सुखका एक वारही लोप होजाताहै। यहां मैं तुझे एक दृष्टान्त सुनाती हूं।

पांच छे जने एकही घरमें रहतेथे, कोई सौरुपये महीना पैदा करताथा;कोई दशरुपये पाताथा। सभीके लड़के लड़की थे; यह सब बालक एकही साथ खेलाकरते थे, जिसका बाप सौरुपये पाताथा उसकी माताने आकर अपने बेटेको भोजनका पदार्थ दिया, और उन बालकोंको बुलायातकभी नहीं। इसके साथी बालक उसके खानेकी चीजको देखतेरहे, उसका यह व्यवहार बड़ाही नीच और तुच्छ हुआ स्त्रियोंको ऐसा कभी नहीं करना चाहिये जितने बालक खेलतेहों जराजरासी चीज सभीको देनीचाहिये, स्त्रियोंकी बड़ाई इसीमें होतीहै, उनका जरासी चीजमें कुछ पेट थोड़ेही भरजाताहै।

दासदासी।

हे बहन! आजकल सभी अपने घरमें नौकर चाकर तथा टहलनी रखलेतीहैं परन्तु करुणामय परमेश्वरने जिनको नौकर चाकर या टहलनी रखनेकी सामर्थ्य दीहै, वह यदि नौकरोंके ऊपर अत्याचार करैं तो इसमें बड़ी लज्जाकी बातहै, बहुतसी स्त्रियें अपनी टहलनियोंको पशुके समान जानकर निर्दयहो उनके साथ वर्त्ताव करतीहैं; बात २ पर गाली देकर

बुलातीहैं, उनको तेलीका बैल जानकर उनके ऊपर कामकी मारामार करतीहैं, जरा देरभी नहीं बैठनेदेतीं बात २ पर चिल्लाकर वोलतीहैं, घरकी यदि कोई वस्तु जातीरही तो नौकरकोही धमकानेलगीं;यहांतक कि,उसको मारने पीटनेमें भी कसर नहीं करतीं, खानेके लिये पेटभर भोजन नहीं देतीं, यदि दियाभी तो कहा " अरे तेरी खूराक बड़ी है, इतना तो हमारे घरमें कोई नहीं खाता " अब वताओ भला उस नौकरको कहांतक बुरी न लगैगी, उनके ऐसे व्यवहारसे दुःखीहो नौकर नौकरी छोड़कर भागजाताहै, महीनेसे अधिक कोई नौकर उनके यहां नहीं ठहरसकता, इसकारण नौकर चाकरोंके साथ ऐसा व्यवहार कभी नहीं करना चाहिये, मीठे वोलकर उनसे काम लेना उचित है, यदि कोई घरकी वस्तु जातीरहै तो उनसे इसभांति पूछना चाहिये कि, जिससे उन्हें बुरी न लगै, ऐसा करनेसे वह तुम्हारा घर छोड़कर कहीं नहीं जायँगे और सबमें तुम्हारी वड़ाई करैंगे, फिर तुम्हैं भी नौकरोंके विना कुछ कष्ट उठाना नहीं पड़ैगा।

दरिद्र और भिखारी।

हे बहन! दरिद्र और भिखारीको भी अपने अंशका भागी समझना चाहिये तुम्हारे घरमें इनकाभी कुछ हिस्साहै, ऐसा कोई दिन नहीं होता कि, जिसदिन तुम्हारे दरवाजेपर कोई भिखारी न आता हो, परन्तु आजकल भिखारियोंको भीख देना तो अलग रहा; उनको स्त्रियें गालियां देतीहैं और कहतीहैं कि " आगया सवेरेसेही टरटरकरनेके लिये " वाजी २ स्त्रियें झूंझलमें भरकर आटेके वदले उनकी झोलीमें खाक डाल-

आतीहैं, इससे उन फकीरोंका सारा आटा विगड़जाताहै; और वह दुरशीशें देतेहुये चले जातेहैं, नहीं ऐसा कभी नहीं करना- चाहिये किसीने कहाहै कि "क्या फकीरका टालना और क्या वालकका वहलाना" फकीरको जरासा आटा देदिया; वह तुम्हैं सैकड़ों आशीर्वाद देताहुआ चलागया; जो कुछ वसाया नित फकीरोंके लिये निकालधरा; इससे तुम्हारा परलोक सुधरैगा और तुम्हारा धन कुछ कम न होगा वरन् दूना वढ़ैगा।

दोहा–तुलसी पक्षिनके पिये, घटै न सरितानीर ।
धर्मकिये धन ना घटै, जो सहाय रघुवीर ॥
रामनामके कारने, सव धन डाला खोय ।
मूरख जानैं गिर पड़ा, दिन २ दूना होय ॥

हे वहन ! स्त्रियोंको उचितहै कि,अपने द्वारपरसे भिखारीको खाली न जानेदें; जो स्त्रियें ऐसा व्यवहार करतीहैं उनका यश और कीर्त्ति वढ़तीहै ।

सद्व्यवहार ।

हे वहन ! स्त्रियोंको सवमें अपना विश्वास जमाना चाहिये, सवके साथ मिलजुलकर काम करना उचित है; जो किसीसे किसीसमय तुमने रुपया पैसा कुछ उधार लियाहो, तो जव तुम्हारे पास आजाय पहले उसका देदो पीछे और कुछ काम करो इस कारण तुम्हारी साख वनीरहैगी, और अवसर पड़ने- पर तुम्हारा वड़ा काम निकलैगा, जिसके साथ तुम्हारा लेन देन हो उससे हिसाब किताव साफकर रक्खो जिससे तुम्हारा विश्वास वनारहै, सवसे वातचीतकरनेमें नम्रतारक्खो, कभी

अभिमान मत करो, जो स्त्रियां अभिमान करतीहैं उनकी बड़ाई नहीं होती उन्हैं सभी स्त्रियां कहा करतीहैं कि, " अरी वह तो मारे गरूरके किसीसे बाततकभी नहीं करती उसके पास हम जाकर क्या करैंगी। "।

हे बहन! इस कारण अभिमानकरना स्त्रियोंको कदापि उचित नहीं तुम्हारे घर फिर कोई स्त्री नहीं आवेगी घर २ में तुम्हारी निन्दा होगी धनचाहै तुम्हारे कितनाही क्यों न होजाय; लड़के लड़की कितनेही क्यों न होजांय; इनके होने-पर कभी अभिमान नहीं करना चाहिये, धन तो आताही जाता रहताहै।

राग कालिंगड़ा—मूरख छांड़ि वृथा अभिमान।
औसर बीत चल्योहै तेरो दोदिनको महिमान।
भूप अनेक भये पृथ्वीपर रूप तेज बलवान।
कौन बचो या काल व्यालते मिटगयेनामनिशान।
धवल धाम धन गज रथ सेना नारी चंद्रसमान।
अंतसमय सबहीको तजकर जाय बसे श्मशान।
तज सतसंग भ्रमत विषयनमें जाविधि मर्कटश्वान।
छिनभर बैठि न सुमिरण कीनो जासों होय कल्यान।
रे मन मूढ़ अंत जिन भटकै मेरो कह्यो अबमान।
नारायण ब्रजराज कुँवरसों वेगहिकर पहचान।

हे बहन। इसलिये इस धनसम्पत्तिका अभिमानही क्या आजहै कल नहीं॥ जो स्त्री तुम्हारे घर कोई वस्तु मांगनेआवै, जहांतक होसकै उसे वह देदो उसका काम निकलजायगा, फिर मुहल्लेकी स्त्रियोंके यहांसे जैसा चालचलन हो उनके

साथभी तुम्हैं वैसाही करना चाहिये। जितनी मिठाई उनके यहांसे आवै उतनीही तुम उनके यहां भेजो जो कमती भेजोगी तो तुम्हारी निन्दा होगी यहां मैं तुझे एक दृष्टान्त सुनाती हूं, हमारे मुहल्लेमें दुर्गाप्रसादकी बेटीका विवाह हुआ, इनके यहां सबके यहांसे व्याह शादीमें आदपाका ही गिंदोड़ा आता था; दुर्गाप्रसादने कहा हमभी आदपाकाही गिंदोड़ा बनवावैंगे, इसपर उनकी स्त्रीने उत्तर दिया ।

कवित्त ।

पटुका मँगवाय मुँह बांधो हलवाइनके,
चासनी न चाटजायं जौलो सिहरायँगी ।
मृत्तिका मँगाइके कुटाइ डारो भाठनको,
चूहे और चूही कहु कैसे नियरायँगी ।
चारहू दिशानते बयारिनको बंद कीजे,
उड़ने न पावे जो लौं तौलौं ठहरायँगी ।
माछिनको मारिडारो चीटिन अवार फारो,
चींटी दई मारी क्या हमारी खांड़ खायँगी ।
वीसई पुरुत हम बाटेहैं गिंदोरे सुनि,
बड़े २ वैरिनकी छाती फटजांयगी ।
नायन औ वारिन परोसिन पुरोहतानी,
छोटे पाय खोटी खरी हमसों कहिजायँगी ।
सुनरे हलवाई चाल आईहै हमारे यही,
डेढ़टांकखांड़ चहै औरहु लगि जायगी ।
फिरकीसे छोटे दिमरकीसे जोटे जरा,
कागज से मोटेबनै बात रह जायगी ।

पतिने कहा चल मूर्ख ! मैं तेरी वात कभी न मानूंगा, हे वहन ! ऐसा स्त्रीको कभी करना उचित नहीं और फिर उनका कोई कहा नहीं चलता, घरमें सब निरादर करतेहैं, अपने यहाँसे चाहैं जरासी वस्तु ज्यादे चली जाय परन्तु कमती कभी नहीं देना हे वहन ! यह मैंने तुझे कर्त्री होनेपर जो काम करने चाहिये वह वताये, अव कुछ थोड़ासा पुण्यधर्मभी वतातीहूं।

इति सप्तमसोपान समाप्त.



अष्टमसोपान ।

पुण्यवती ।

सवैया-

वेदपुरानविहाय सुपंथ कुमारग कोटिकुचाल चलीहै ।
काल कराल नृपाल कृपालन राजसमाज वड़ोहिछलीहै ।
वर्णविभाग न आश्रमधर्म दुनीदुखदोषदरिद्रवलीहै ।
स्वारथको परमारथको कलि रामको नामप्रताप वलीहै ।

धर्म—हे वहन ! सभी मनुष्योंके साथ धर्म जाताहै; परन्तु वहुतसी स्त्रियें इसको जानतींतकभी नहीं, संसारका नियम यहीहै कि, जिससमय तुम्हारे लड़के वड़ेहोगये, घरमें वेटेकी वहू आगई, वेटोंने सव कारवार संभालकर धन पैदाकरना शुरू करदिया; इस ओर वेटेकी वहूने भी सव घरका काम काज सीखलिया; उससमय स्त्रियोंको उचितहै कि, घरका सव भार वहूको सौंपकर आप गृहस्थीकी सव चिन्ता छोड़ धर्माचरण करें; परन्तु वहुधा स्त्रियें गृहस्थीमें ऐसी लिप्तरहतीहैं, कि, मरने तक उन्हें गृहस्थीसे छुटकारा नहीं मिलता, उनको अपने जीवनमें एकवारभी धर्मकी चिन्ता करनेका समय नहीं मिलता उनका परलोक नहीं सुधरता; स्त्रियें इसीसे धर्माचरण और धर्मकी चिन्ता नहीं करतीं कि,उन्हें यह ज्ञान नहींहै कि, धर्मकरनेसे कितना सुख और कितना आनंद मिलताहै,इसीसे वह इस मिथ्यागृहस्थीमें फंसीरहतीहैं और जिन्होंने एकवारभी धर्मकी चिन्ताकीहै, उनको यह संसार दुःखरूप दिखाई देताहै. उन्हें इस संसारमें सुख किंचित्‌भी नहीं दिखाई देता.हे वहन!

फिर देखो राजामोरध्वजकी धर्मके लिये क्यागति हुईथी ? वहभी मैं तुझे सुनातीहूं।

राजा मोरध्वज बड़ा धर्मात्मा राजा था; उसका यह नियम था कि, उसके यहांसे कोई साधु विमुख नहीं जाता; जो कोई जो मांगताथा राजा उसे वही दे देतेथे, इसकी कीर्त्ति देशदेशोंमें फैलरही थी सभी कोई मोरध्वजराजाकी बड़ाई करतेथे. एकदिन ऐसा हुआ कि, नारदजीने श्रीकृष्ण भगवान्से जाकर कहा कि, महाराज मृत्युलोकमें राजा मोरध्वज बड़ा धर्म कर रहाहै, उसके धर्मकी परीक्षा करनी चाहिये यह विचारकर श्रीकृष्ण भगवान्ने बहुतसे साधुओंकी मंडली अपने साथ ली; और आपनेभी साधुका रूप धारण किया और एक मोटा ताजा शेरभी अपने साथमें लिया सबजने मिलकर राजा मोरध्वजकी नगरीमेंगये और जाकर राजाके द्वार पर खड़ेहुए; द्वारपालने राजाको जाकर समाचार सुनाया कि, महाराज ! बहुतसे साधु आपके द्वारपर खड़ेहैं और आपके दर्शनकी इच्छा करते हैं; राजाने कहा शीघ्र लिवालाओ; द्वारपाल जल्दीसे जाकर साधुओंको बुलालाया, राजाने प्रणामकर पूछा आपका आना कहांसे हुआ, साधुओंने आशीर्वाद देकर कहा राजन्! हम तो रमतेरामहैं राजाने चरण धोकर चरणोदक ले पूछा कि, आपने किसकार्यके लिये मेरा भवन पवित्र किया जो इच्छा हो सो कहिये। संतोंने कहा हे राजन्! आप दीनदयालु और बड़े धर्मात्माहैं देशदेशोंमें आपकी कीर्त्ति छारहीहै, इसे सुनकर हम कुछ धन लेनेको आपके पास आतेथे रास्तेमें एक शेर मिलगया उसने हमारे

पुत्रको पकड़लिया तब हमने उसकी वहुत विनती करी और कहा कि, इसे छोड़दो तब सिंहने बहुत कहने सुननेपर उत्तर दिया कि मोरध्वज राजाके पुत्रके दाहिने अंगका मांस लाओ तो मैं तुम्हारे पुत्रको छोडूंगा नहीं तो किसीप्रकार नहीं। मोरध्वजने प्रसन्नहोकर कहा कि, बहुत अच्छी बातहै, मेरे बड़ेभाग्यहैं जो मेरे द्वारा आपका पुत्र बचै । तुम सिंहको बुलालाओ और मैं अपने बेटेको लाताहूं, साधुओंने सिंहको बुलालिया, शेरने राजासे कहा कि, मैं आपके पुत्रका मांस इस प्रतिज्ञापर खाऊंगा कि,एकओर रानी और एक ओर आप खड़े होकर बीचमें पुत्रको बैठाल आरेसे चीरैं तो मैं उसके दाहिने अंगका मांस खाऊंगा और तीनोंमेंसे किसीके भी नेत्रोंसे आंसू न निकलै-राजाने कहा ऐसाही होगा मैं रानीको बुलालाऊं, यह कह रानीको बुलालाये चौकी विछाकर बीचमें पुत्रको बैठाल दोनों जने आरेसे पुत्रके शरीरको बीचमें से प्रसन्नहो चीरनेलगे, किसीके मुखपर मलीनता नहीं दिखाई दी (उससमय आकाशवाणी हुई)।

रागकाफी ।

सुतके चीरनहेत मोरध्वज ठाढे रानिसमेत ।
चौकीपर सुतको पधरायो महाकठिन आरामँगवायो ।
निकट केहरीको बैठायो खैंचत धर्म निकेत ॥ १ ॥
माया मोह कपट निद्रा तज सब शरीरसे मल हरिपदरज।
हरि हरि हरि हरि जपत ताम्रध्वज सब दुःख हरि हरलेत॥२॥
ज्यों २ चलत शीशपर आरा त्यों २ बहै रुधिरकी धारा ।
ऐसा रक्षक कृष्ण हमारा रहा सकलमलरेत ॥ ३ ॥

भये वहुत दानी विज्ञानी जिनकी अबलौं कहत कहानी।
परन्तु मोरध्वजसा दानी कोउ न दिखाई देत ॥ ४ ॥
हरि हरि हरि हरि भजहु रैनदिन, कोऊकार्यसरतनाहिंहरि विन।
कवहुं न हरिको नामलियो जिन होत भूत और प्रेत ॥ ५ ॥
धनधन मोरध्वजकुमारको उदित भयो,
नाहर अहारको श्यामागिनो नाहिंश्वेत।
दानी ऐसो भयो न होगो सुततु चीररहे मिलदोनों।
वृथाजन्म अकारथ खोनो मूरख अव तो चेत।

रानीने चीरते २ राजासे कहा कि, देखो पुत्रके शिरपर आरा चल रहाहै परन्तु पुत्रको कुछभी कष्ट नहीं विदितहोता; रुधिरकी धारा वहरहीहै; वास्तवमें इसकी रक्षा श्रीकृष्णही करतेहैं; देखो मनुष्यके एक कांटाभी लगजाताहै. तौ वह उसके लगनेसे कितना व्याकुल होताहै, और इसके शिरपर तौ आरा चलरहाहै परन्तु इसको कुछभी सुधि नहीं कि, किसका शिर चिररहाहै परमेश्वरकी कैसी अद्भुत महिमाहै।

दोहा--कोमल जव तनुको करत, शिरसकुसुम लजि आय।
वही समयके फेरसों, वज्रसदृश हैजाय ॥
जो पुष्पोंकी सेजपर, धरत सकुचसों पाय।
तिनके शिर आरा चलत, करत न मुखसों हाय ॥
लालनको पालनकियो, कुचको दूधपियाय।
ताको शिर चीरत खड़ी, सुनी न ऐसी माय ॥

रानीके यह वचन सुन राजाने कहा कि, तुम्हें नहीं मालूमहै कि हिरणाकुशने प्रह्लादको कैसे २ कष्ट दियेथे, अग्निमें

जलाया, पर्वतसे गिराया, गयन्दसे चिरवाया, तप्तखंभसे बँधवा यां अनेकप्रकारके दुःख दिखाये परन्तु परमेश्वरकी कृपासे उसका बाल बांका भी नहीं हुआ, रानीने कहा कहीं कुछ विघ्न न होजाय ताम्रध्वजके वांये नेत्रसे आंसुओंकी धारा वहरहीहै। उसी समय संतोंने कहा मत चीरो अब हमारा सिंह यह मांस नहीं खायगा; यह कहकर संत अंतर्ध्यान होगये । तब सब हाहाकर करनेलगे, पुत्रने प्राण छोड़दिये ताम्रध्वजकी स्त्री भी विलाप करतीहुई आई और उसने भी अपने प्राण छोड़दिये तब राजारानीने कहा कि, अब हम जीकर क्याकरैंगे जब वह दोनों मरनेके लिये तैयारहुए उसीसमय भगवान् श्रीकृष्णने आकर उनका हाथ पकड़लिया और उसीसमय उनके पुत्र ताम्रध्वजके शिरपर हाथ धरा वह जीवित होगया तब श्रीकृष्ण मुरलीबजाकर गानेलगे ।

भक्त हैं मेरे जीवन प्रान ।
जब जब भीर परत भक्तनपर धरत हमारो ध्यान ॥
उसीसमय सुधिलेत गरुड़ चढ़ त्याग खान अरु पान ॥
भक्त हेत अवतार लेतहूं भूमंडलमें आन ॥
मैं भक्तनको भक्त हमारे करत सदा सनमान ॥
जो कोउ मेरी शरण लेतहै मुझको अपनो जान ॥
मेरे हिये वसत सो निशिदिन सज्जन चतुर सुजान ॥

१-परन्तु प्रह्लादने सब दुःख सहकर भी अपनी प्रतिज्ञाको न छोडा और कहा-
गले तौंक पहिरावो पांव बेरीले भरावो गाढे बंधन बंधावो औ खिचाओ काची खालसों ॥
विषले पिलावो तापै मूठभी चलावो मांझी धारमें बहावो बांध पत्थर कमालसों ॥
बिच्छूलै बिछावो तापै मोहिं लै सुलावो फेर आगभी लगावो बाँधकापर दुसालसों ॥
गिरिसे गिरावो कालेनागसे डसावो हा हा प्रीति न छुटावो गिरिधारी नंदलालसों ॥

मैं अपने पूरण भक्तोंको देत हृदय अस्थान ॥
"शालग्राम" नामसे वढ़कर और कौनसो दान ॥

हे वहन ! फिर तीनों जने भगवान्‌की स्तुति करने लगे अंव देखो कि, धर्मका कैसा प्रताप है. कि, आजतक उनकी वड़ाई देशदेशांतरोंमें छा रहीहै, इसकारण हे वहन ! सभी स्त्रियोंको धर्माचरण करना उचित है।

धर्माचरण–सवैया।

काहू सों न रोष तोष काहूं सों न राग दोष काहू सों न वैरभाव काहू सों न घातहै ॥ काहू सों न वाकवाद काहू सों न है विपाद काहू सों न संग नातो काऊ पक्षपात है ॥ काहू सों न दुष्ट वैन काहू सों न लेन देन ब्रह्मको विचार कछु और न सुहात है। सुन्दरकहतसोईईशनकोमहाईशसोईगुरुदेवजाकेदूसरीनवातहै।

हे वहन ! अव मैं तुझे धर्माचरणकी रीति वताती हूं कि, जिस रीतिसे धर्माचरण किया जाताहै। सवसे प्रथम प्रातःकाल होनेसे प्रथमही शय्यासे उठना उचितहै फिर शौचादिकसे निश्चितहो, स्नानकर पूजापाठ करै, जो स्त्रियें घरपर आवें उन्हेंभी धर्मका उपदेश दे, वालकोंको अपने समीप वैठाकर उनको भगवत्‌की भक्तिका उपदेश दे, सव ओरसे मन हटाकर केवल एक ईश्वरमेंही लगावै, पूजापाठ नियमसहित करै स्नान करके विना पूजा पाठ किये हुए किसीको न छुये । पूजाका स्थान एकांत होना चाहिये, फिर जव पूजापाठसे निश्चित होजाय तो दुपहरसे प्रथम भोजन करै और उससमय जिस स्त्रीसे भी वात करै उससे धर्मशास्त्रहीकी करै। संध्याके समय धूपदीप देकर नारायणकी आरती करै, तुलसीका दीप-

क बाले, फिर रात्रि होनेपर धर्मशास्त्रकी पुस्तकोंको पढ़ाकरै जबतक नींद न आवै तबतक पढ़ै, ऐसा करनेसे स्त्रियोंको परम गति प्राप्त होतीहै, और मरते समय उन्हें यमराजके दूत आनकर नहीं ले जाते पुण्यात्माओंमें उसकी गणना होतीहै मरनेमें कुछ कष्ट नहीं होता ।

हे बहन ! मैंने तुझे अबतक जो कुछभी बतायाहै वह सभी तेरे उपयोगी है और जो तू मेरे कहे अनुसार व्यवहार करैगी तो तेरी बड़ाई होगी घरके आदमी तेरा आदर सत्कार करैंगे ।

नित्यकर्म ।

हे बहन ! स्त्रियोंको नित्यकर्म अवश्य करना चाहिये; कारण नित्यकर्मसे ही शरीर स्वस्थ रहताहै प्रभात कालही उठकर परमेश्वरका भजन करै, पीछे स्नानकर पूजापाठ करै; प्रभात कालके गानेयोग्य दोएक प्रभाती बतातीहूं—

प्रभाती-१.

प्रातसमय रघुवीर जगावैं कौशल्या महतारी ।
उठो लालजी भोर भयो है सुरनरमुनि हितकारी ॥
ब्रह्मादिक इंद्रादिक नारद सनकादिक ऋषि चारी ।
वाणी वेद विमल यश गावत रघुकुल यश विस्तारी ॥
वंदीजन गंधर्व गुण गावैं नाचत दे दे तारी ।
उमासहित शिव द्वारे ठाढ़े होत कुलाहल भारी ॥
कर अस्नान दान प्रभु कीनो गो गज कंचन झारी ।
ज़यजयकार करत जन माधो तनमनधनबलिहारी ॥ १ ॥

प्रभाती-२.

जागिये कृपानिधान जानराय रामचंद्र जननी कहै बार२ भोर भयोप्यारे । राजिवलोचन विशाल पीत वापिका मराल ललित कमलवदन ऊपर मदनकोटि वारे ॥ अरुणउदित विगत शर्वरी शशांक किरन हीन दीन दीपज्योति मलिन द्युतिसमूह तारे । मनो ज्ञान घनप्रकाश बीते सबभवविलास आसत्रास तिमिरतोष तरनितेज जारे ॥ बोलत खगनिकर मुखर मधुकर प्रतीत सुनो श्रवण प्राण जीवन धन मेरे तुम वारे । मनोवेद बंदी मुनिवृंद सूतमागधादि विरद वदत जयजयजयजयति कैटभारे । विकसत कमलावली चले प्रपुंजचंचरीक गुंजत कलकोमल धुनि त्यागकंज न्यारे । मनोविराग पाय सकल शोककूपगृहविहाय भृत्य प्रेममत्त फिरत गुणत गुण तिहारे । सुनत वचन प्रिय रसाल जागे अतिशय दयाल भागे जंजाल विपुल दुखकदंब टारे । तुलसिदास अतिअनंद देखके मुखारविंद छूटे भ्रमफंद परम मंदद्वन्द्वभारे ॥ २ ॥

हे बहन ! इसभांति भगवत्‌को जगाकर पीछे स्नानकर विष्णुसहस्रनामादि अच्छे २ स्तोत्रोंका पाठ करै, तिसके पीछे तुलसीका पूजन करै सूर्यनारायणको अर्घ्यदेवै ।

१-तुलसीपत्र इस मंत्रको पढ़कर तोडै-" तुलस्यमृतनामासि सदात्वं केशवप्रिया । केशवार्थे चिनोमि त्वां वरदा भव शोभने ।" तुलसीको स्नान करानेका मंत्र-" गोविन्दवल्लभां देवीं भक्तचैतन्यकारिणीम् । स्नापयामि जगद्धात्रीं विष्णुभक्तिप्रदायिनीम् ॥ " इस मंत्रको पढ़कर तुलसीको प्रणाम करै-" वृन्दायै तुलसीदेव्यै प्रियायै केशवस्य च । विष्णुभक्तिप्रदे देवि सत्यवत्यै नमो नमः ॥ "

२-इस मंत्रको पढ़कर सूर्यको अर्घ्य देवै-"जगत्सवित्रे शुचये सवित्रे कर्मदायिने ॥ नमो विवस्वते ब्रह्मन् भास्वते विष्णुतेजसे (एषोऽर्घः भगवते श्रीसूर्याय नमः) "

पीछे सूर्यनारायणको नमस्कार कर उनकी परिक्रमा करै। इसके पीछे ठाकुरजीका चरणामृतले:यही स्त्रियोंके नित्यकर्महैं इसीकेद्वारा मुक्ति प्राप्तहोतीहै, जो स्त्रियें ऐसा करतीहैं उनका फिर जन्मनहीं होता जिससमय रसोई तैयार होजाय तौ भगवानका भोगलगाय पीछे आप भोजनकरै, भगवानके विना भोगलगाये कोई वस्तु नखाय, हे वहन! दो पहर होनेपर अच्छी २ पुस्तकोंके भजन पढ़ाकरै, जैसे कि, सूरसागर, व्रजविहार, रागरत्नाकर इत्यादि पुस्तकें हैं, इनमें वड़े२ उत्तम भजनहैं, संध्याहोनेपर तुलसीका दीपक वालै और ठाकुरजीकी आरतीकरै।

आरती १.

आरति युगलकिशोरकिकीजे। तन मन प्राणनिछावरकीजे॥
गौर श्याम मुखनिरखन कीजे। हरिको रूप नयनभर पीजे॥

१–इस मंत्रसे सूर्यको नमस्कार करै–" जपाकुसुमसंङ्काशं काश्यपेयं महाद्युतिम्। ध्वान्तारिं सर्वपापघ्नं प्रणतोऽस्मि दिवाकरम्॥ "

२–" एकं चंड्यां रवौ सप्त त्रीणि दद्यात् विनायके॥ चत्वारि केशवे चार्धं शम्भवे च परिक्रमम्" देवीके पूजनमें एक परिक्रमा करै. सूर्य नारायणके पूजनमें सात परिक्रमा करै. गणेशजीके पूजनमें तीन परिक्रमा करै. और केशवके पूजनमें चार परिक्रमा करै–और महादेवजीके पूजनमें आधी परिक्रमा करै अर्थात् जलैरीको न लाँघै।

३–हे वहन! ताँबेके पात्रमें विष्णुका चरणामृत लेकर पान करै पीछे मस्तकपर धारण करै, चरणामृत पीनेसे पहले इस मंत्रको पढ़ै।

कृष्ण कृष्ण महावाहो भक्तानामार्तिनाशन। सर्वपापप्रशमनं पादोदकं प्रयच्छ मे॥१॥
अकालमृत्युहरणं सर्वव्याधिविनाशनम्। विष्णोःपादोदकं पीत्वा शिरसा धारयाम्यहम्॥२॥

४–प्रत्येक देवताकी आरती अलग २ हैं. वह सब आरतीसंग्रह नामक पुस्तकमें लिखी हैं।

रविशशिकोटि वदनकी शोभा । ताहि देखिमेरो मनलोभा ॥
फुलनकि सेज फुलन गलमाला। रत्नसिंहासन वैठेनँदलाला॥
मोर मुकुट कर मुरली सोहै। नटवरवेष निरखि मन मोहै ॥
ओढ़े नीलपीतपटसारी । कुंजन ललना लालविहारी ॥
श्रीपुरुषोत्तम गिरिवरधारी। आरति करत सकल व्रजनारी॥
नंदनँदनवृपभानुकिशोरी । हरमानँदस्वामीअविचलजोरी ॥

आरती २.

आरतिकीजै श्यामसुन्दरकी । नंदकुमार राधिका वरकी ॥
भक्तिकरदीप प्रेमकरवाती । साधुसंगतिकर अनुदिन राती ॥
आरति व्रजयुवतिन मन भावै। श्याम लीलाहित हरियशगावै ॥

व्रत।

हे वहन ! अव मैं तुझे व्रत वताती हूं जो स्त्रियें करती हैं, व्रत तौ अनेक हैं उन्हें वतानेमें समय अधिक लगैगा, परन्तु मुख्य २ व्रत इस समय में तुझे वताती हूं, व्रत चार प्रकार के हैं, एक तो, सौभाग्यके लिये, दूसरे पुत्रके लिये, तीसरे भाईके लिये और चौथे मोक्षके लिये हैं; इन्हींको स्त्रियें अधिक तर किया करती हैं। अव मैं पहले सुहागके व्रत वतातीहूं।

श्रावणसुदी तीज—जिसे कजली तीज भी कहते हैं, इस दिन जिन लड़कियोंका विवाह हो गया है छोटीसे लेकर वड़ी तक सभी इस व्रतको रहती हैं, प्रातः कालही उठ स्नान कर नवीन वस्त्र और अच्छे २ गहनोंको पहन मिट्टीकी गौरि वना कर सव स्त्रियें उसकी पूजा करती हैं, गौरि को सुन्दर वस्त्र पहरा रोली चावल फूल और मिष्टान्नसे उसकी पूजा कर हाथ जोड़ कर प्रार्थना करती हैं कि;हे देवी ! जिस भाँतिसे तुम्हारा

सुहाग अचल है उसी भाँति हमारा भी सुहाग अचल रहै, इसके पीछे विविध प्रकारके पदार्थ गौरीके आगे रख उनका भोग लगाती हैं, फिर तीसरे पहरके समय अपने कुटम्बियोंको भोजन करा आप भोजन करती हैं, सभी सौभाग्यवती स्त्रियें इस व्रतको करती हैं ।

भादों सुदीतीज—जिसे हरतालिका तीज कहते हैं, इसे भी सब स्त्रियां करती हैं हे बहन ! यह व्रत इस भांति किया जाता है, प्रातःकाल होतेही स्नान कर इस व्रतको धारण करै, फिर तीसरा पहर होने पर शिव और गौरी की मूर्त्ति बना उसका भली भांतिसे शृंगार करै,इसके उपरान्त आप सुन्दर २ वस्त्र तथा आभूषण पहर विन्दी महावर आदि लगाकर शिव पार्वती को स्नान कराकर उनको वस्त्र पहरावे, फिर शेली चंदन अक्षत फूल धूप दीप नैवेद्य चढ़ा कर वेलपत्र चढ़ावे फिर दक्षिणा चढ़ाकर शिव गौरीको प्रणाम करै, और हाथ जोड़ कर प्रार्थना करै कि, हे गौरी ! तुम्हारे समान मेरा भी सुहाग अचल रहै, फिर विविध भांतिके पदार्थ शिव गौरीकी प्रीतिके निमित्त उनके सन्मुख धरै, पीछे वायनामंसकर सास नंद आदिको दे, इसके पीछे कथा सुनै—उस रात्रिको जागरण करै फिर प्रभातकाल होने पर गौरिको सिलावे फिर स्नान कर आप भोजन करै, हे बहन ! महादेवजीने पार्वतीजीसे कहाथा कि, जो स्त्री इस प्रकार हमारा तुम्हारा पूजन कर इस व्रतको करती हैं, उनके सब पाप मुक्त होजाते हैं, और सदा उनका सुहाग अचल रहताहै, और जो स्त्री आजके दिन भोजन करती हैं वे जन्म जन्मान्तरों तक विधवा दारिद्रिणी तथा पुत्रशोकको प्राप्त

हो दुःख भोगती रहती हैं; इस कारण यह व्रत सभी स्त्रियोंको करना उचित है।

कार्त्तिक वदी चौथ४—इसे करवा चौथभी कहते हैं इस दिनभी सभी स्त्रियें व्रत धारण करती हैं। प्रथम स्त्रियें स्नान कर इस व्रतको धारण करैं और भली भांतिसे अपना शृंगारकर सारे दिन उपवास करैं, पीछे दीवारपर बड़का पेड़ काढ़कर उसके नीचे गणेशजीकी मूर्त्ति बना उसे स्नान करा चंदन पुष्प धूप दीप नैवेद्य आदिसे उनकी पूजा करै, इसके पीछे दक्षिणा चढ़ाकर प्रणाम करै फिर चंद्रमाके उदय होने पर अर्घ्यदे अक्षत फूल चढ़ा कर हाथजोड़ चंद्रमाको प्रणाम कर उनकी परिक्रमा करै; पीछे आप भोजन करै; इस व्रतमें चंद्रमाका दर्शन कर भोजन किया जाता है करुवामँसे।

जेष्ठमासकी मावस—इसेही वर मावस तथा वरसात कहते हैं, हे वहन! यह व्रत इस भांति किया जाता है कि, स्त्री प्रभातकाल होते ही स्नान करै इसके पीछे अपना सब शृंगार कर वड़के वृक्षकी पूजा करै वहुतसी अपने घरही बड़के वृक्षकी डाली मँगा कर उसकी पूजा करती हैं प्रथम वृक्षके नीचे लीप कर मिट्टीका कलश भराहुआ रखकर लेपन अक्षतसे उसकी पूजा करै; इसके पीछे उत्तम २ फल चढ़ाकर विविध भांतिके भोजन उस कलशके ऊपर रखकर उसे मंसदे पीछे हाथ जोड़ कर प्रणाम करै—हे वहन! इसी व्रतके प्रभावसे सावित्रीने अपने पति सत्यवानकी आयु ४०० वर्ष की करलीथी। जो स्त्रियें इस व्रतको करती हैं वह सावित्री के समान सुख भोगकर अंतमें वैकुंठको जातीहैं।

चैत्रमासके शुक्लपक्षकी तीज–हे वहन ! आजके दिनभी सभी स्त्रियें इस व्रतको करती हैं; इस व्रतमें वसिष्ठजी के साथ देवी अरुन्धतीकी पूजा की जाती है, मिट्टीकी मूर्त्ति बनाकर पृथ्वी पर स्थापित कर, इसके पीछे स्नान करा रोली अक्षत फूल पान मिष्टान्न चढ़ावे; पीछे सुन्दर पदार्थोंका भोग लगाय देवी अरुन्धतीको प्रणाम करै पीछे चंद्रमाको अर्घ्य दे आप भोजन करै; स्कंदजीने कहाथा कि, जो स्त्री इस व्रतको कर देवी अरुन्धतीकी पूजा करती है वह हजार वर्षतकभी विधवा नहीं होती और पति पुत्र पौत्र सहित इसलोकमें सौ वर्ष तक जीकर अंतमें वैकुंठ धामको जाती है ।

पुत्रके लिये व्रत ।

हे वहन ! जो व्रत पुत्रके लिये स्त्रियें किया करती हैं, वह मैं तुझे बताती हूं।

माघसुदी चौथ–इसे गणेश चौथ भी कहते हैं इस दिन स्त्रियें पुत्रके लिये व्रत धारण करती हैं इस दिन स्नान कर शुद्धहो सभी स्त्रियें गणेशजीकी पूजा करतीहैं मिट्टीसे गणेश जीकी मूर्त्ति बनाकर उन्हें स्नान कराय चंदन पुष्प धूप दीप नैवेद्यसे उनकी पूजा कर तिलकुटका भोग लगाय हाथ जोड़ यह प्रार्थना करती हैं कि, हे गणेशजी ! आपके प्रसादसे हमारे पुत्रहो वर्षवें दिन यह व्रत करती हैं। अधितर माघके महीने में यह व्रत किया जाता है, यह व्रत श्री पार्वतीजीने कियाथा इस व्रतके करनेसे स्त्रियें सब संक-

टोंसे छूट जाती हैं और गणेशजीकी कृपासे उनके पुत्र होते हैं प्रत्येक महीनेकी चतुर्थीको भी गणेशजीका व्रत रहना उचित है।

श्रावणमासकी शुक्ल चतुर्थी—के दिन दूर्वा गणेशजीका व्रत करै, सुवर्ण या चांदीकी गणेशजीकी प्रतिमा बना कर सुवर्णकी दूर्वा बिछाकर सुवर्णकी पीठपर स्थित लाल वस्त्र-से युक्त कलशके ऊपर रख कर, स्नान कराय चंदन, पुष्प पान नैवेद्य आदिसे गणेशजीकी पूजा करे, पीछे दक्षिणा चढाय वह मूर्त्ति और कलश अपने पुरोहितको देदे, जो कोई स्त्री इस व्रतको तीन वर्ष तक करती है, उसके सब मनोरथ पूर्ण होजाते हैं, और पुत्र पौत्रादिकी प्राप्ति होती है।

मोक्षके लिये व्रत।

हे बहन! मोक्ष पानेके लिये स्त्रियें व्रत किया करती हैं उनमेंके मुख्य २ व्रत मैं तुझे बताती हूँ।

फाल्गुनसुदी तेरस—इसे शिवरात्रि व्रत कहतेहैं इस व्रतके करनेमें बालक वृद्ध कन्या स्त्री पुरुष सभीका अधिकार है, प्रातःकालही उठ स्नानकर पवित्र हो शिवजीका ध्यानकर व्रत धारण करै पीछे बेलपत्र फल फूल मिष्टान्न, धूप आदिसे शिवजीकी पूजा करै,इसके उपरान्त दक्षिणा चढाय दीपक बालकर शिवजीकी आरती करै, सारीरात जागरण कर प्रभातको दूसरे दिन व्रत करनेवाले ब्राह्मणको भोजन कराकर पीछे आप पारण करै, इस भांति इस व्रतके करनेसे धर्म अर्थ काम मोक्ष चारों वर्ण प्राप्त हो जाते हैं, इसके समान व्रत पृथ्वीमें दूसरा नहीं है शिवरात्रिका व्रत सर्वोत्तम व्रत है।

भादों सुदी चौदस—जिसे अनन्त चौदस कहते हैं, इस व्रतकोभी स्त्री पुरुष रहते हैं, प्रथम प्रातःकालही स्नान कर अनन्त देवका व्रत धारण करे, इसके पीछे शिव आदि पांच देवताओंकी पूजा करै इसके पीछे थालीमें गौका कच्चा दूध भर कर समुद्रके आशयसे उसकी पूजा करै, फिर अनन्त, वासुकी, तक्षक इनका ध्यान कर इनकी भी पूजा करै पीछे क्वारी कन्याके कते हुए सूतका अनन्त बनाय चौदह तारोंमें चौदह ग्रंथी लगाय उस दूधसे अनन्त देवको स्नान करावे पीछे स्त्री अपनी बाईं भुजामें धारण कर अनन्तदेवकी कथा सुनै, इसके उपरान्त ब्राह्मणको भोजन कराय आप भोजन करै, इस व्रतमें नमक या सैंधा नमक नहीं खाया जाता, हे बहन ! श्रीकृष्णने युधिष्ठिरजीसे कहा था कि, मनुष्य इस व्रतके अनुष्ठान मात्रसे सब पापोंसे छूटकर मुक्त हो जाता है। चौदह वर्ष तक यह व्रत किया जाताहै। इस व्रतके प्रसाद-से स्त्री पुरुष सभी पापोंसे छूटकर वैकुंठ धामको जाते हैं।

भादों वदी अष्टमी—जिसे जन्माष्टमी कहते हैं इस व्रतको स्त्री पुरुष दोनोंही करते हैं; स्त्रियोंको यह व्रत अवश्यही कर्तव्य है, प्रातःकाल ही स्नान कर इस व्रतको धारण करै; इसके पीछे आधीरात होने पर श्रीकृष्ण भगवान्का ध्यान कर उनकी पूजा करै, इसके पीछे यथाशक्ति वसुदेव, यशोदा, नंद, रोहिणी, देवकी, गर्ग, आदिकी पूजा करै, फिर श्रीकृष्णके जन्मोत्सवकी कथा सुनै, चंद्रमाके उदय होनेपर अर्घ्य दे हाथजोड़ कर परिक्रमा करै। पीछे भगवान्को भोग लगाय आप भोजन करै; हे बहन ! इस प्रकार जन्माष्टमीके व्रत करनेसे स्त्री पुरुष सब पापोंसे छूट कर श्रीकृष्णके लोक को जाते हैं।

वैशाखमासके शुक्लपक्षकी तीज–इसे अकतीज कहते हैं; अकतीजके दिनही बद्रीनारायणके पट खुलतेहैं इसी दिन यात्रियोंको दर्शन होताहै, इस तिथिमें स्नान, दान, जप, होम और विष्णुकी पूजा करनेसे अक्षय फल प्राप्त होता है; इस तीजके दिन विष्णु भगवान्‌की पूजा कर जलसे भरा कलश बूरा और सत्तू ब्राह्मणको दे पीछे सत्तुओंका भोग भगवान्‌को लगावे; और लक्ष्मीजीके सहित विष्णुभगवान्‌का ध्यान कर उनको प्रणाम करै; जो स्त्री इस प्रकारसे इस व्रतको करती है वह इन्द्रलोकको प्राप्त होकर विष्णुलोकको जाती हैं।

ललितासातैं–यह व्रत भादोंके महीनेमें शुक्लपक्षकी सातैंके दिन किया जाता है; इस दिन स्नान कर, गणेशजी, शिवजी तथा दुर्गाजीकी पूजा करैं, उसके पीछे धूप दीप चंदन अक्षत फूल आदिसे शिव आदिकी पूजा करै, उसके पीछे कथा सुनै; तत्पश्चात् भगवान्‌को भोग लगाकर आप पारण करै, सात वर्ष तक यह व्रत किया जाताहै, इस व्रतके प्रभावसे स्त्रियें पुत्र पौत्रादिका सुख भोगकर अंतमें वैकुंठ धामको जाती हैं।

दूर्वाष्टमीव्रत–इसीको महालक्ष्मी व्रत कहते हैं, इसे भी सभी स्त्रियें रहती हैं, इस दिन लक्ष्मीनारायणकी पूजा होती है, इस दिन कच्चे तारोंको आठ तार कर उसमें आठ गाठें लगाय उसकी पूजाकर स्त्री बाँये हाथमें धारण करै; इसके पीछे कथा सुनकर ब्राह्मणको भोजन कराय आप भोजन करै; जो स्त्रियें इस व्रतको धारण करतीहैं वह इस लोकमें अनेक प्रकारके सुखोंको भोग कर अंतमें वैकुंठ धामको जाती हैं।

चैत्रमासके शुक्लपक्षकी नौमी ।

इसे रामनौमी कहतेहैं, यह रामनौमीका व्रत स्त्री पुरुष दोनों कोही करनेका अधिकार है; जो स्त्री इस व्रतको धारणकरै तौ इस भांति आचारसे रहै प्रथम प्रातःकालही उठ स्नान कर भक्ति सहित सीता और रामचंद्रजीकी मूर्त्तिका पूजन करै; इसके पीछे रामचंद्रजीकी माता श्रीकौशल्याजीको फूल चढ़ावे, इसके उपरान्त सीतापति रामचंद्रजीकी चिन्ता कर शंख घड़ियाल इत्यादि बाजे बजावै, फिर फल पुष्प और तुलसी पत्र लेकर श्रीरामचंद्रजीको चढ़ावै; इसके पीछे रामगीताका पाठ करै। सारीरात जागरण कर प्रभातको ब्राह्मणको जिमाय पीछे आप भोजन करै, हे बहन ! जो इस प्रकारसे इस रामनौमीका व्रत करती हैं उनकी सब मनोकामना पूर्ण होजाती हैं और सर्वदा श्रीरामचंद्रजी उनकी रक्षा करते रहते हैं फिर उन्हें कुछ भय नहीं रहता ।

क्वारसुदीमें देवीजीकी पूजा ।

इन्हें नवदुर्गे भी कहते हैं इसमें नौदिन तक व्रत किया जाता है, प्रतिपदासे लेकर नौमीतक बराबर व्रत कर नित्य श्री दुर्गादेवीजीकी पूजा करै; इसके उपरान्त घीका दीपक बालकर दुर्गादेवीकी अतिभक्तिकर दुर्गापाठ करै नौमीके दिन कन्या बरुओंको हलुआ पूरी जिमाकर उन्हें दक्षिणा दे पीछे चरण छूकर देवीकी प्रार्थना करै,पीछे आप भोजन करै नौदिन तक बराबर फलाहारही खाकर व्रत धारण करै; जो स्त्रियें इस प्रकारसे नौ दिन तक श्रीदुर्गादेवीजीका व्रत धारण कर

ती हैं उनको संसारमें कुछ दुर्लभ नहीं रहता देवी प्रसन्न होकर उनको मन वांछित फल देती हैं।

भादौंमें शुक्लपक्षकी पंचमी।

इसे ऋषिपंचमी कहते हैं, इस व्रतको सभी स्त्री करती हैं, पंचमीके दिन नदीमें स्नान कर व्रत धारण करै, इसके पीछे अरुन्धती सहित सप्तऋषिकी पूजा करै, और चंदन हार पान फूल नैवेद्य आदि चढ़ाकर प्रणाम करै, पीछे भगवान्का चरणोदक लेकर शाककाही भोजन करै, जो स्त्री इस व्रतको करती है उसके सम्पूर्ण पाप नष्ट होजाते हैं, स्त्रियें जो रजस्वला होनेके समयमें घरके वरतन आदि छूलेती हैं, उनको इसका वड़ा पाप लगता है उनका वह पापभी इस व्रतके करनेसे दूर होजाता है। यह व्रत स्त्रियोंको सम्पूर्ण सम्पति तथा धन, पुत्र और यशका देने वाला है जो कोई स्त्री ऋषिपंचमीका व्रत धारण कर ऋषि पंचमीकी कथाको सुनती है उसके सम्पूर्ण पाप नष्ट होजाते हैं।

संक्रान्तिव्रत—हे वहन! महीनेकी महीने स्त्रियोंको संक्रान्तिका व्रत रहना चाहिये, संक्रान्तिके दिन स्त्री स्नान कर पवित्र हो व्रत धारण करै, इसके पीछे भक्तिसहित लक्ष्मीपति विष्णु भगवान्की पूजा करै; फिर भगवान्को मिष्टान्नका भोग लगाकर जलसे भराहुआ कलश ब्राह्मणको दे तदनन्तर आप भोजन करै—जो स्त्रियें वर्षदिनकी वारह संक्रान्तिको व्रत धारण करती हैं वह सव पापोंसे छूटकर अंतमें विष्णुधामको जाती हैं।

कार्त्तिकके शुक्लपक्षकी एकादशी—इसे देवोठान एकादशी कहते हैं इस दिन स्त्री व्रत धारण कर भक्ति सहित विष्णु भगवान्‌की पूजा करै आजकेही दिन सम्पूर्ण देवता सोतेसे जागते हैं, प्रत्येक महीनेके पक्ष २ की एकादशी रहनी उचित है; पीछे विष्णुभगवान्‌को स्नान कराय वस्त्र पहराकर हार, चंदन, फूल, सुन्दर २ फल यह चढ़ावे इसके पीछे एकादशीकी कथा सुनै पीछे फलाहार भोजन कर रात्रिको जागरण करै, हे वहन ! जो स्त्री इस प्रकारसे एकादशीका व्रत नित्य प्रति करती हैं उन पर विष्णु भगवान् प्रसन्न होजाते हैं फिर उनको संसारमें आना नहीं होता है ।

श्रावणके सोमवार—श्रावणमासके सब सोमवारोंको व्रत रहना उचित है, सोमवारके दिन प्रभातकाल ही स्नान कर व्रत धारण करै पीछे शिवजीको स्नान करावे, इसके उपरान्त चंदन फूल पान मिष्टान्न सुन्दर २ फल चढ़ाकर वेलपत्र चढ़ावे फिर दक्षिणा चढ़ाय शिवजीकी आरती करै, शिवतांडव आदिस्तोत्रोंका पाठ करै, इसके पीछे परिक्रमा कर शिवजीको प्रणाम करै । संध्यासे कुछ पहले ब्राह्मणको भोजन कराय दक्षिणा दे पीछे आप भोजन करे । जो स्त्रियें इस प्रकार सावनके सोमवारोंमें व्रत धारण करती हैं उन पर शिवजी प्रसन्न होजाते हैं, इस लोकमें वह सब सुखोंको भोगकर अंतमें शिवलोकको जाती हैं । हे वहन ! यह मैंने तुझे चारों प्रकारके व्रत सुनाये, और फिर अपने २ देशकी रीतिके अनुसार भी व्रत होते हैं ।

कार्त्तिकसुदी दोयज—इसेही भैया दोयज कहतेहैं आजके दिन भाईके लिये व्रत किया जाताहै, सभी स्त्रियें तथा लड़कियें इस व्रतको धारण करती हैं, भाई बहनके यहां भोजनकरनेके लिये जाते हैं, सभी वहनें उत्तम २ भोजन बनाकर भाईको अपने हाथसे परोस कर खिलाती हैं, आजके दिन वेरीके वृक्षकी पूजा कर दिवालीके दीवलोंमें खीलें वताशे दाल चावल चने आदि भरकर उनको मूसलसे कूटती हैं, और कहती जाती हैं कि, यह हमारे भाईके वैरी दुश्मन कूटे गये, और जिनके सगी वहन या सगा भाई नहीं होता वह अपने नाते रिश्तेके भाईको जिमाती हैं, इसके पीछे भाई भोजनकर उनको दक्षिणा देते हैं, हे वहन! आजके दिन स्वयं यमराजभी अपनी वहन यमुनाजीके यहां भोजन करनेके लिये गयेथे; इसका यहफल है कि, जो भाई आजके दिन अभिमान कर अपनी वहनसे टीका नहीं कराता उसका माथा उस जन्ममें पत्थरका होता है—और जो वहन अभिमान करकै अपने भाईका टीका नहीं करती उस जन्ममें उसका अंगूठा पत्थरका होता है। अब मैं व्रतोंको यहांही समाप्त करके तुझे तीर्थोंका माहात्म्य वताऊंगी कि, किसतीर्थमें जानेसे क्या फल मिलताहै।

तीर्थसेवा।

तीर्थयात्रा और उसका फल।

हे वहन! हिन्दूजातिमें तीर्थका दर्शनही प्रधान धर्म है, तीर्थको चले गये और वहांके सम्पूर्ण देवताओंके दर्शन कर लिये, वस इसीसे तीर्थका फल मिल गया इस प्रकारसे तीर्थसेवाका फल कभी नहीं मिलसकता, जिस रीतिसे तीर्थकी सेवा करने

से फल प्राप्त होता है। हे बहन ! वह रीतिभी मैं तुझे बतातीहूं. जो मनुष्य धार्मिक जितेन्द्रिय अहंकाररहित होकर तीर्थका दर्शन करते हैं; वही तीर्थ फलके यथार्थ अधिकारी हैं, अर्थात् उन्हींको तीर्थका फल मिलता है, और जो नास्तिक और निंदक हैं उनको कभी तीर्थका फल नहीं मिलता, जिनको तीर्थोंमें विश्वास नहीं है; जो मूर्ख हैं, उनका तीर्थमें जाना न जाना बराबरहै, तीर्थमें जानेसे अज्ञानको दूर करना उचित है, और जब अज्ञान दूर होगया तब ज्ञानका उदय होगा, और ज्ञानका उदय होतेही अज्ञानसे कियेहुए सम्पूर्ण पाप नष्ट होजांयगे, और तीर्थके दर्शन करनेसेही सब पाप छूटजांयगे, और जो पाप तीर्थके ऊपर किया जाता है, उसका नाशभी नहीं होता, इस कारण तीर्थ जानेसे प्रथम मनकी शुद्धि करलेनी उचित है।

तीर्थको पैदल जानेमें जितना फल होता है उतना गाड़ीपर चढ़कर जानेसे नहीं होता, फिर तीर्थपर जाकर दूसरे तीर्थकी प्रशंसा कभी न करै, तेल कभी न मलै, तीर्थके पुरोहितकी कभी निन्दा न करै, जबतक इच्छा हो तबतक तीर्थमें रहै परन्तु तीन दिन तक रहनेसे फल प्राप्त होता है, इसकारण तीन दिन तक तो अवश्यही रहै।

काशीतीर्थ—हे बहन ! काशीजीमें जाकर पुष्करणी और मणिकर्णिका घाटपर स्नान कर ब्राह्मणोंको भोजन करावै, इसके पीछे उत्तरवाहिनी गंगाजीपर स्नान कर गंगाजीकी पूजा करै। इसके उपरान्त आदित्य, विष्णु, दंडपाणि, महेश्वर और द्रौपदीको नमस्कार कर गणेशजीकी मूर्त्तिके समीप

जाकर भली भांतिसे उनकी पूजा करै; फिर ज्ञानवापीके जलको छूकर तारकेश्वर नंदिकेश्वर, और महाकालीका दर्शन कर उनकी पूजा करै। इसके पीछे संसार बंधनसे छूटनेके लिये विश्वेश्वरकी पूजा कर उनका ध्यान करै. फिर अन्नपूर्णा का दर्शन कर उनकीभी पूजा करै। इस रीतिसे सब देवी देवताोंकी पूजा दर्शन और ध्यान कर कुमारीकी पूजा करै, फिर अपनी शक्तिके अनुसार दान पुण्य करै। जिस दिन काशीमें पहुँचै उस दिन उपवास करै; उसके दूसरे दिन स्नान कर नित्य क्रियाको समाप्त कर ब्राह्मणोंको संतुष्ट करै; इससे गोत्रमादि यज्ञके करनेका फल मिलता है।

फल—हे वहन! महेश्वर कभी काशीधामको छोड़ कर नहीं जाते, इस कारण जो स्त्री पुरुष अपने पापोंको दूर करनेकी इच्छासे काशीमें जाते हैं उन सबके पाप दूर हो जाते हैं; और अंतमें उनको मोक्षप्राप्ति होती है, वह मनुष्य आवागमन से छूट जाता है।

वैद्यनाथतीर्थ।

हे वहन! वैद्यनाथ तीर्थमें जाकर प्रथम शिवगंगामें स्नान करै; इसके पीछे नित्यक्रिया समाप्तकर वैद्यनाथको हाथसे स्पर्श कर यथाशक्ति पूजा कर उसस्थानमें स्थित जयदुर्गा आरोग्यदेवी तथा अन्यान्य देवी देवताओंकी पूजा करै ऐसा विख्यात है कि, भगवतीका हृदय पतित होकर जयदुर्गा रूपसे विराजमान् हैं।

फल—वैद्यनाथतीर्थके दर्शन और उनकी पूजा करनेसे सहस्र अश्वमेध यज्ञका फल प्राप्त होता है; और सब पापोंका

नाश होकर असीम पुण्य प्राप्त होता है, इसतीर्थका दर्शन बड़ी सरलतासे हो जाता है, इसमें अधिक खर्च नहीं पड़ता। और यह स्थानभी अति मनोहर है ।

हरिद्वारतीर्थ—हरिद्वारतीर्थ गंगाका द्वार;ऐसा प्रसिद्धहै कि, श्रीगंगाजी महादेवजीकी जटासे निकल कर विष्णुभगवान्के चरणोंको धोतीहुई इस स्थानके बीचमें होकर मृत्युलोकमें आई हैं; इसी लिये हरिद्वारके समान दूसरा तीर्थ नहीं है। हरिद्वारमें जाकर स्नानादिकर तीर्थ पद्धतिके सम्पूर्ण कर्म करे। पीछे उस स्थानमें गंगाधर, वेणीमाधव और अन्यान्य देवी देवताओंके दर्शन कर पीछे उनकी पूजा करै, और जितने दिन इच्छा हो उतने दिन रहै।

फल—हरिद्वारतीर्थका दर्शन करनेसे करोड़ तीर्थोंके जानेका फल मिलताहै यह स्थान गंगाद्वार स्वर्गद्वारके समान है, इस स्थानमें स्नान करनेसे तीन कुलोंका उद्धार होता है हरिद्वारगंगा मोक्षदेने हारी हैं; यदि भाग्यसे कोई मनुष्य वहां शरीर छोड़दे तो उसको मोक्ष हो जाता है, यहां एक रात रहनेसे सहस्र गोदानका फल प्राप्त होता है।

प्रयागराज—इसतीर्थका नाम इलाहाबादभी है । यहां मुक्तवेणी गंगा यमुना और सरस्वतीका संगम हुआ है; हे बहन। इस प्रयागतीर्थमें जाकर स्नानादि कर अपनेको पवित्र करै, इसके पीछे गंगा यमुना और सरस्वतीके संगमस्थानमें स्नान करै, पीछे वेणीमाधव इत्यादि देवताओंकी पूजा कर मनुष्य अपना शिर मुँड़ावे उन वालोंको गंगाजीमें डालदे; इसके पीछे मनुष्य ऋणमोचन तीर्थमें स्नान करै, पीछे

यमुनाके किनारेके सभी देवता तथा महादेवजीकी पूजा करै फिर भोगवतीमें स्नान समुद्रकूपमें तीन रात्रि तक रह कर हंसप्रपतनकुम्भमें स्नान करे।

फल—प्रयागराजमें जानेसे स्वर्गकी प्राप्ति और ब्रह्मलोककी प्राप्ति होती है और ऋणसे मुक्त होकर अश्वमेधयज्ञका फल प्राप्त होताहै; इस स्थानमें जानेसे सब कुल पवित्र होजातेहैं, पूर्णमासीके निकटके तीन दिनोंमें गंगा यमुनाके संगममें स्नान करनेसे सूर्यग्रहणकालके समान स्नानका फल प्राप्त होता है और ज्ञानका उदय होकर सब पापोंका नाश होजाता है।

अयोध्यातीर्थ—अयोध्याजीमें जाकर पहले सरयूमें स्नान करै, फिर ग्रामके बीचमें हनूमानजीकी पूजा करै, पीछे श्रीरामकी पूजा उनकी प्रार्थना तथा उन्हें नमस्कार करै; पीछे कौशल्या, दशरथ और सीताजीका एकाग्रमनसे दर्शन कर उनकी पूजा करै, इसके पीछे कृत्तिवास शिवजीकी पूजा कर जनकमहर्षिकूपमें स्नान और तर्पण करै. जब तक इच्छा हो तब तक रहै।

फल—यहां आकर कृत्तिवास शिवकी पूजा करनेसे अश्वमेध यज्ञका फल प्राप्त होता है, जो मनुष्य या स्त्री जनक-पुरमें स्नान करता है उसका फिर जन्म नहीं होता और जो इस स्थानपर शरीर छोड़ता है उसकाभी पुनर्जन्म नहीं होता; उसे एकबारही मोक्ष प्राप्त होजाती है; श्रीरामचंद्र-जीके आशय से जो कुछ कार्य कियाजाता है उसका असीम फल होता है, यहां रामनौमीके दिन उपवास रह कर जो मनुष्य पितृपुरुषोंके लिये तर्पण करता है उसको ब्रह्मकी

प्राप्ति होती है जो कोई कामभी रामनौमीके दिन इस स्थान पर किया जाता है उसका काम तत्काल सिद्ध होजाता है ।

मथुरातीर्थ—मथुराजी श्रीकृष्ण भगवान्की लीला करनेकी भूमिहै।इसके वीचमें यमुनाजीके विश्रामके तीर्थ अन्यरहैं यहां स्नान और तर्पण आदि कार्य कियाजाता है; पीछे गतश्रम नामक देवताका मंदिर है सव यात्री उन्हीं देवताकी विधिपूर्वक पूजा करतेहैं, उसके पीछे ध्रुव तीर्थ है यहां भी स्नान और तर्पण किया जाता है; इसके उपरान्त मथुरानाथके निकट जाकर उनकी और श्रीराधिकाजीकी भलीभांतिसे पूजा करै, श्रीमथुराजी सवसे पवित्र और शुद्ध तीर्थ है यहां जाकर, केशव, भूतेश्वर, कंसनाथ, महाविद्या इत्यादि सभी तीर्थोंमें स्नान और पित्रोंके लिये तर्पण करै. कंसका मंदिर वसुदेव और देवकीका कारागार, श्रीकृष्णका जन्मस्थान इनका दर्शन करनेसे मन प्रफुल्लित होजाता है ।

फल—श्रीयमुनाजीमें स्नान कर श्रीमथुरानाथकी पूजा करनेसे अश्वमेध यज्ञका फल प्राप्त होता है, और श्रीकृष्णका दर्शन करनेसे मनुष्यको परमगति प्राप्त होती है, जो मनुष्य मथुराजीमें रहते हैं उन सभीको मोक्षकी प्राप्ति होती है, मथुराजीमें नियम सहित स्नान कर तर्पण करनेसे सव पितर तृप्त होजाते हैं, जो भगवत् भक्त श्रीयमुनाजीपर शरीर छोड़ते हैं उनको फिर जन्म लेना नहीं होता. उनको विष्णुलोक प्राप्त होजाता है इस तीर्थमें स्नान करदान करनेका अक्षय फल होता है; इतना फल यज्ञ तपस्या करनेसे भी नहीं होता जितना फल यहां दान और स्नान करनेसे होता है, यहां कंसराजके

घर वने हुए हैं, यहांपर श्रीकृष्णने कंसको मारकर देवताओंका भय दूर किया था।

श्रीवृन्दावनतीर्थ।

दोहा–वृन्दावन जे वास कर, शाक पात नित खात।
तिनके भोगनको निरखि, ब्रह्मादिक ललचात॥
हम न भये ब्रजमें प्रगट, यही रही मन आस।
नित प्रति निरखत युगलछवि, कर वृन्दावन वास॥

हे वहन! वृन्दावन अति उत्तम तीर्थ है जो यात्री वृन्दावन जाते हैं वह मथुरा होकर जाते हैं, यहां जाकर प्रथम मनुष्य केसीघाटमें स्नान कर तर्पण करै पीछे गोविन्द, भ्रमर, चिड़ इत्यादि २४ घाट हैं वहां क्रमसे स्नान करै, यहांभी प्रयागराजके समान मस्तक मुँड़ाना होताहै; वृन्दावनमें भी श्रीकृष्णने अनेक स्थानोंमें लीला कीहै, वह स्थान वनेहुए हैं; श्रीकृष्णने इस वृन्दावनमें वाल्यावस्था, किशोर अवस्था और यौवन अवस्थाका कुछ एक अंश व्यतीत कियाथा, इसीलिये वृन्दावन श्रीमथुराजीसे वडातीर्थ है। गोपीनाथ गोकुलानंद, राधारमण, मदनमोहन, दामोदर, राधा, श्यामसुन्दर, गोविन्द और राधिका इत्यादि वहुतसी देवताओंकी मूर्त्तियोंकी यहां पूजा कीजाती है। केशव, महादेव, गोकर्णेश्वर, वृन्दादेवी, गोपेश्वर, नन्द, उपनंद, यशोदा, रोहिणी, कृष्ण, बलराम, श्रीराधिका इत्यादि अनेक देवता हैं, इन सवकी भली भांतिसे पूजा और प्रणाम कर प्रार्थना करै, इस वृन्दावनमें वहुतसे कुण्ड हैं, इनमें मानगंगा, कृष्णसरोवर, राधाकुंड, श्यामकुंड इत्यादि विख्यात हैं, इन सभी कुंडोंमें स्नान किया जाता है, इन सव

कामोंको समाप्त कर पीछे महालक्ष्मीका दर्शन करै फिर उनकी विधिपूर्वक पूजा करै।

फल- इस स्थानपर आकर जो मनुष्य इन कुंडोंमें स्नान करता है उसको सातकरोड़ बार गंगास्नानसे जो फल प्राप्त होता है वह मिलता है, सावनके महीनेमें तीजसे लेकर पूर्णमासी तक बड़ा मेला होता है, झूलोंकी अनुपम शोभा होती है; वृन्दावनकी अनुपम शोभाको देखकर यात्रियोंका मन वहांसे आनेको नहीं करता।

कामाख्यातीर्थ-इस तीर्थको यात्रीलोग आषाढ़के महीनेमें जाते हैं इस स्थानमें जाकर प्रथम नीलाचलकी पूजा करै, पीछे गौरीशिखरपर जाय, इसके उपरान्त सौभाग्यनामक कुंडमें स्नान और तर्पण करै हे बहन! फिर विष्णुका दर्शन कर उनकी पूजा करै; इस स्थानमें दशकुंड हैं सभीकुंडोंमें स्नान कियाजाता है; इसके पीछे गुफाके बीचमें कामाख्या देवीकी पूजा कर नमस्कार करै, पीछे प्रार्थना करै, यहां और भी बहुतसे देवता हैं, इनमें टाकवेश्वरी, दीर्घेश्वरी, प्रचंडिका और चंडघट, प्रधान हैं, इन सबका दर्शन और पूजा कर पीछे प्रार्थना करै। इसके उपरान्त धर्मद्वारमें जाकर, निर्गमन, स्वर्गद्वारका दर्शन कर, पीछे वैर गुहामेंकी सिद्धगंगामें स्नान करै।

फल-हे बहन! कामाख्यादेवीकी पूजा करनेसे मनुष्यके जन्मजन्मान्तरोंके किये हुये पाप नष्ट होजाते हैं साष्टांग दंडवत करै तौ उसके सब मनोरथ सिद्ध होजाते हैं, फिर उसका पुनर्जन्म नहीं होता।

ब्रह्मपुत्रतीर्थ–यह ब्रह्मपुत्रनद हिमालयसे निकल भारतको उत्तरओरमें छोड़कर अर्थात् तिब्बतनामक देशके मध्यमें भारतके पूर्व उत्तरद्वारमें प्रवेश कर उस स्थानसे दक्षिण और पश्चिमकी ओर होकर गंगाजीके साथ मिलाहै इसी कारणसे यह ब्रह्मपुत्रनद ठीक उत्तरमें है, भारतके मध्यमें स्थित जहां इच्छाहो इस नदमें वहीं स्नान करै; उसे ब्रह्मपुत्र तीर्थका फल मिलताहै, जो मनुष्य चैत्र मासके शुक्लपक्षकी अष्टमीमें स्नान करता है, उसको सब तीर्थोंके फलकी प्राप्ति होती है, जो मनुष्य ब्रह्मपुत्रकी पूजा करता है वह सब पापोंसे छूट जाता है ।

फल–हे बहन ! जो मनुष्य ब्रह्मपुत्रके किनारे जाकर उसका दर्शन करता है उसका फिर जन्म नहीं होता, और तीन जन्मोंके कियेहुए पाप नष्ट होजाते हैं । ब्रह्मपुत्रका जल-स्पर्श करते ही, मनुष्य संसारी बंधनोंसे छूट जाता है और ब्रह्महत्याका पापभी छूट जाता है । जो मनुष्य उसके जलमें कुछ द्रव्य डालता है वह जीवन्मुक्त होजाता है, ब्रह्म-पुत्रकी कथा सुननेसे शरीर निष्पाप होजाता है, और दर्शन करनेसे मनुष्यका फिर जन्म नहीं होता, इसके जलस्पर्शसेही मुक्ति प्राप्त होती है, और जलके पान करनेसे इस लोकमें यश और लक्ष्मीकी वृद्धि होती है जो मनुष्य इस तीर्थ पर वास करता है, उसको गंगासागर, प्रयाग, पुष्कर, काशी आदि तीर्थोंके रहनेके समान फल मिलता है ।

पुष्करतीर्थ–इस स्थानमें बारह वर्ष पीछे मेला होता है, उसीको कुंभ कहते हैं । यह तीर्थ राजपूतानेमें स्थित है; इस

स्थानपर पितरोंका श्राद्ध किया जाता है; यह बड़ा भारी तीर्थ है, पुष्कर एक ह्रदका नामहै। भागीरथीजी जिस प्रकारसे पूजनीयहैं, पुष्करभी उसी प्रकारसे पूजनीय तीर्थ है।

फल—यहां स्नान और तर्पण करनेसे पित्रोंको स्वर्गकी प्राप्तिःहोतीहै।

चन्द्रनाथतीर्थ—हे बहन! चंद्रनाथतीर्थको कलकत्ते होकर जाना होता है रास्तेमें ग्वालंदा पड़ताहै, वहांसे नारायणगंज होकर मेघना नदीके पार पहुँचना होताहै, पीछे वहांसे गोशकुंडमें जाय। इसके पीछे यहांसे वालुकाकुंडमें जाकर यात्री लोग पित्रोंके लिये पिंड देतेहैं, चंद्रनाथतीर्थ त्रिपुराराजके अन्तर्गत एक छोटेसे पर्वतके बीचमें विराजमान् है। यहां देवदेव महादेवजी चंद्रनाथ नाम धारणकर प्रतिष्ठित हैं, शिवरात्रिके समय यहां बड़ा मेला होताहै, भारतवर्षके सभी स्थानोंसे यहां यात्रीलोग आते हैं।

फल—जो मनुष्य चंद्रनाथकी पूजा कर उनका ध्यान करताहै, वह इस लोकमें जबतक जीताहै तबतक आनंद सहित जीवन व्यतीत करताहै उसको कोई कष्ट नहीं होता। और अंतमें विष्णुलोकमें जाकर परमात्मामें लीन हो जाता है।

बदरिकाश्रमतीर्थ—हे बहन! जो यात्री बदरिकाश्रमको जाते हैं वे हरिद्वार होकर जाते हैं। पीछे वहांसे बराबर पंद्रह दिनतक हिमालय पर्वतपर चढ़कर बदरिकाश्रममें पहुँचतेहैं। सब समयमें ही बदरिकाश्रमको जाना नहीं होता, यहांपर बड़ी शरदी पड़तीहै और बरफ पड़ताहै इसकारण चैत्र वैशाख इन महीनोंमें यात्रीलोग जातेहैं। यहां विष्णुभगवान्की मूर्त्ति

चतुर्भुज हरि प्रधान देवताहैं, सब यात्री उनका दर्शनकर पूजा करते हैं, और पीछे ब्राह्मण, संन्यासी और भिखारियोंको संतुष्टकर भोजन करा पीछे आप भोजन करते हैं।

फल—हे बहन! बदरिकाश्रमतीर्थमें जाकर जो मनुष्य हरिकी पूजा करताहै उसको फिर माताके उदरकी पीड़ा भोगनी नहीं होती, अर्थात् उसका फिर जन्म नहीं होता।

सेतुबंधरामेश्वरतीर्थ—बम्बई होकर सेतुबंधरामेश्वर जाना होताहै यहां एक लिंगमय शिवजीकी मूर्त्ति प्रतिष्ठित है, यात्री लोग यहां जाकर विधिपूर्वक उस मूर्त्तिकी पूजाकर यथाशक्ति दान करतेहैं, हे बहन! यह शिवजीकी मूर्त्ति श्रीरामचंद्रजीने स्थापित कीथी। इस स्थानमें रामचंद्रजीने सीताजीके उद्धारके निमित्त रावणके राज्यमें जानेके लिये समुद्रका पुल बांधाथा। यद्यपि लंकासे लौटते समय रामचंद्रने उस पुलको तोड़दिया था, परन्तु तोभी इसका कुछ एक अंश तीर्थरूपसे विख्यात है।

फल—जो रामेश्वर दर्शन करिहैं।
सो तनु तजि ममधाम सिधरिहैं॥

सेतुबंधरामेश्वरमें स्नान पूजा और तर्पण आदि करनेसे परलोकमें पितृपुरुषोंको तृप्ति प्राप्त होतीहै, और मनुष्योंके सब मनोरथ पूर्ण हो जातेहैं, मनुष्यको इस जीवनमें परम सुख मिलताहै।

चन्द्रशेखरतीर्थ—हे बहन! इस तीर्थमें जाकर मनुष्य पहले व्यासकुंडमें स्नान करै इसके पीछे शिवतीर्थमें स्नान और

तर्पणादि कर पर्वतके ऊपर नन्दीश्वर, मतिदक्ष इत्यादि देवताओंकी पूजा करै यहां पर कोई २ यात्री शिरभी मुँड़ाते हैं यहां नानाप्रकारकी शिवजीकी मूर्त्ति अनेक स्थानोंमें प्रतिष्ठित हैं।

फल—हे बहन। जो मनुष्य यहां स्नान और तर्पण करताहै उसको अक्षयफल मिलता है। उसके सात जन्मोंके कियेहुए पाप नष्ट होजातेहैं। यहांपर विराजमान् केश शालग्राम नामक सहस्रमुखयुक्त मूर्त्तिका दर्शन करनेसे मनुष्यका पुनर्जन्म नहीं होता। शम्भुनाथका दर्शन स्पर्श और उनकी पूजा करनेसे मनुष्यको दशाश्वमेधयज्ञका फल प्राप्त होताहै। जो मनुष्य चंद्रनाथका दर्शन, स्पर्श, पूजा और प्रणाम करताहै, और जो उनका चरणोदक पान करता है उसको मुक्ति प्राप्त होतीहै।

श्रीक्षेत्रतीर्थ—उड़ीसाके अन्तर्गत जिला कटकके बीचमें पुरी नामक स्थानमें जगन्नाथ देवका एक विख्यात मंदिर है, इसके बीचमें जगन्नाथ देवही पुरीके प्रधान देवताहैं। इसीको श्रीक्षेत्र कहते हैं, और फिर जगन्नाथके अतिरिक्त यहां विरजा देवी हैं, पुरुषोत्तम, शंभु, हरि, भुवनेश्वर, साक्षी गोपाल, मार्कंडेश्वर, शिव, इत्यादि देवताओंकी पूजा की जातीहै और फिर वैतरणीमें स्नान; नाभिगयामें श्राद्ध; तथा अक्षय वटकी प्रदक्षिणा, दर्शन और उनकी पूजा की जातीहै, इसके पीछे पूजा और नमस्कार करनेसे विशेष फल प्राप्त होताहै।

फल—हे बहन ! जो मनुष्य जगन्नाथका दर्शन और उनकी प्रदक्षिणा करताहै उसको सहस्र अश्वमेध यज्ञका फल मिलताहै तथा सात तीर्थोंके स्नान दानका फल मिलताहै, बलरामकी पूजा करनेसे मोक्ष प्राप्त होताहै। जो मनुष्य सुभद्राका दर्शन-कर उनको नमस्कार करता है; उसको परम गति प्राप्त होतीहै और अंतसमयमें विष्णुपुरमें जाकर आनंदसे समय व्यतीत करताहै, वैतरणीमें तर्पण और दान करनेसे अन्तसमयमें वैतरणीके पार होनेमें कष्ट नहीं होता, विरजादेवीका दर्शन करनेसे सातकुल पवित्र होतेहैं और ब्रह्मलोककी प्राप्ति होतीहै, अक्षय-वटका दर्शन करनेसे राजसूय यज्ञका फल मिलताहै, हे बहन ! वहां जाकर जो मनुष्य पुरुषोत्तमकी पूजा कर अपने पित्रोंका श्राद्ध करताहै उसके सात कुल उद्धार होजाते हैं।

हे बहन ! तीर्थ तो हजारों हैं उनको कहांतक बताऊंगी इस समय मैंने मुख्य २ तीर्थोंका माहात्म्य तुझे सुनादिया, क्योंकि आगे औरभी बहुतसी बातें समझानी हैं।



नवम सोपान।

श्रोता।

हे बहन! अब मैं तुझे स्त्रियोंकी कथा सुनाती हूं कि, जिनकी बड़ाई आज तक भारत वर्षमें छारही है।

सीता—महारानी सीताजी मिथिलाधिपति राजा जनककी पुत्रीथीं; जिस समय राजाने पानीबरसने की इच्छासे पृथ्वीको खनन कियाथा उस समय यह कन्या इनको मिली इन्होंने इसका नाम सीता रक्खा, यह कन्या परम रूपवती और गुणवान् थी, जब यह विवाहयोग्य हुई, तो राजाने अपनी यह आज्ञा प्रचार की कि, जो कोई मेरे यहां शिवधनुषको तोड़ेगा वही इस कन्याको पावेगा देशदेशांतरोंके राजा आन २ कर धनुषसे जूझे परन्तु कुछ भी न हुआ हार २ कर घरको लौट गये; अंतको महाराज अयोध्याके राजा दशरथजीके बड़े पुत्र महाराज रामचंद्रनेही उस धनुषको तोड़कर सीताजीको पाया।

जिस समय राजा दशरथजी वृद्ध होगये और राजकार्य भारमें उनकी सामर्थ्य न रही तब राजाने अपने बड़े पुत्र रामचंद्रको ही राजतिलक देनेका विचार किया राजाके तीन पुत्र और थे, कैकेयीसे भरत सुमित्रासे लक्ष्मण, शत्रुघ्न और, कौशिल्या से राम उत्पन्न हुएथे यही सबसे बड़े थे राजाने अपनी यह आज्ञा प्रचार की कि, मैं रामकोही राज्य दूंगा, इस बातको सुन कर कैकेयी बड़ी दुःखित हुई; उसने विचारा कि हाय! राजाने मेरे पुत्रको राज्य न दिया, जब रात्रि होनेपर राजा

उसके महलमें गये, उस समय कैकेयी मलीन भावसे चुपचाप पड़ी रही राजासे कुछ न बोली। राजाने न बोलनेका कारण पूछा तब उसने कहा कि, जिस समय आपसे देवासुर संग्राम हुआथा उससमय युद्धमें मैंने आपकी बहुत सहायता की थी; तब आपने प्रसन्न होकर मुझे दो वरदान दियेथे परन्तु मैंने उनको उस समय धरोहरकी भांति आपहीके पास रखदिये, अब मैं अपने वही वरदान लेना चाहती हूं; पहले से तो भरतको राज्य दो और दूसरेसे रामचंद्रको १४वर्षके लिये वनको भेजो। यह सुनतेही राजाको मूर्च्छा आगई; और उसी अवस्थामें सारी रात बीतगई जब राजा प्रभातको राजदरबारमें न गये तो सुमन्त्रको बड़ी चिन्ता हुई और वह इस बातको जाननेकेलिये रनवासमें गये जाकर देखा कि, राजा पृथ्वी पर अचेत पड़े हैं; पीछे राजाको सावधान कर राजासे कहा कि; आज रामचंद्रको राज्य दिया जायगा इसकारण शीघ्र सभामें चलिये कारण नौतेहुये राजालोग आपकी बाट देख रहेहैं। राजाने कहा सुमंत्र! सर्वनाश होगया। दुष्टा कैकेयीने बड़ा विघ्न किया है; यदि इस समय एक बार रामको मेरे निकट लेआवो तो अच्छा हो, सुमंत्र रामचंद्रको तुरंत लिवा लाये, आकर देखा कि, पिता पृथ्वी पर अचेत पड़े हैं, सौतेली माता कैकेयीसे राजाके अचेत होनेका कारण पूछा तब कैकेयीने कहा कि, राजाने मुझे दो वर दिये हैं, तुम इसी समय वनको चले जाओ भरतके आने की बाट मत देखो। रामचंद्र उसी समय पिताको प्रणाम कर सीताजीको कौशल्याजीके पास रखनेको गये, और जा-

कर बोले कि, माता! मैं आज वनको जाऊंगा इसलिये सीता को अपने पास रखना, यह सुनतेही सीतादेवीने कहा स्वामिन् मैं पतिके विना एक पल भी जीवती नहीं रह सकूंगी आप जहां जायँगे पीछे २ मैं आपके चरणोंकी सेवा करती हुई चलूंगी। फिर रामचंद्रने लक्ष्मणसे कहा भाई! लक्ष्मण तुम घरपर रहकर माता पिताकी सेवा करना। इस पर लक्ष्मण ने कहा भाई जिस समय आप सीताजीको अपने साथ लिये जाते हो तव मुझे भी लेजाओ, नहीं तो स्त्रीको साथमें ले जानेसे आपको वड़ा कष्ट होगा, तव रामचंद्रजीने उन्हें भी संग लिया जव तीनों जने जानेको तैयार हुये तव राजाने सुमंत्रको बुलाकर रथ लानेके लिये कहा; सुमंत्र रथ लाकर तीनों जनेको बैठाल वनको चले।

रामचंद्रके वन जानेसे सभी अयोध्यावासी दुःखित हो कर रामचंद्रके रथके पीछे २ चलने लगे। राजा दशरथभी वाहर आये, पिताको अधिक कष्ट होता हुआ देखकर रामचंद्रने सुमंत्रको शीघ्र रथ चलानेकी आज्ञा दी, रथ तमसा नदी पर पहुँचा, वहां सवने स्नान कर फलाहार किया। फिर दूसरे दिन गोमती नदीके पार हो गंगाके किनारे कौशल राज्यमें पहुंचे वहां शृङ्गवेर नगरमें गुहकके यहां पहुंच कर सुमंत्रको विदा दी दूसरे दिन गंगा पार होकर भरद्वाज मुनिके आश्रममें पहुंचे। भरद्वाजने अपनेही आश्रम में रहनेके लिये वहुत हठ करी, रामचंद्रने विचारा कि, यह स्थान अयोध्यासे बहुत निकट है कदाचित् भरतजी मुझे लेने के लिये न आजांय इस कारण चित्रकूट पर्वतपर जाकर एक कुटी वना वहीं रहने लगे।

इस ओर सुमंत्र शृंगवेरपुरमें रामचंद्रको छोड़कर अयोध्यामें पहुँचे राजा दशरथने सारा समाचार सुमंतके मुखसे सुन अत्यन्त व्याकुल होकर कहा कि, एक समय मैं शिकार खेलनेको सरयूके किनारे गयाथा वहां जिस समय अंधक मुनिके पुत्रने अपने कमंडलुमें नदीसे जल भरा तब मैंने मृग जानकर उसके वाण मारा, तब उसने राम २ कह कर प्राण छोड़ दिये, तब मैं उसके मातापिताको पुत्रके मृतक शरीरके निकट लाया उस समय उन्होंने पुत्रशोकसे कातरहो मुझे शाप दिया कि, जिस भाँति हम पुत्रशोकसे व्याकुलहो प्राण छोड़ते हैं उसी भाँति तुमभी पुत्रशोकसे कातर हो प्राण छोड़ोगे; यह कहते २ राजानेभी प्राण छोड़ दिये। मंत्रियोंने विचारा कि, राजाकी क्रिया कौन करै चार वेटोंमेंसे यहां एक वेटा भी नहीं है।

तव कुलगुरु वसिष्ठजीने राजाके शरीरको तेलमें रक्खा, और केकय राजाके यहांसे भरत शत्रुघ्नको बुलाकर राजाकी अंतिम क्रिया करवाई, हाथी घोड़े गाय अन्न वहुतसा दानकिया। इसके उपरान्त सभीने भरतजीको राज्यसिंहासन पर वैठनेके लिये कहा, परन्तु भरतजी राजी न हुए और रामचंद्रको खोजते २ चित्रकूट पर्वतपर पहुँचे, वसिष्ठजीके मुखसे राजाके मरनेका समाचार सुनकर सभी दुःखित हुए, मुनिकी आज्ञानुसार तीन दिन तक अशौच ग्रहण कर रामचंद्रने पिताका श्राद्ध किया, फिर भरतजीने अयोध्याको चलनेके लिये रामचंद्रसे वहुतसी विनती करी, तव रामचंद्रने उनकी वात न मान कर उन्हें राज्यपर वैठ

नेके लिये कहा, भरतने कहा जो आप नहीं चलतेहैं तो आप अपनी खड़ाऊं देदीजिये उन्हेंही सिंहासनपर वैठाकर राजकार्य चलाऊंगा तब रामचंद्रने उन्हें खड़ाऊं देकर विदा किया।

इस ओर राम लक्ष्मण सीता चित्रकूटको छोड़ कर अगस्त्य पर्वत पर पहुँचे, वहां कुछ दिन रहकर पंचवटी वनमें कुटी वनाकर रहने लगे, इस समय लंकामें राजा रावणथा। रावणने अपने भुजावलसे पंचवटीतक अपना अधिकार किया रावणकी वहन शूर्पणखा घूमती २ रामलक्ष्मणके पास गई और उनसे विवाहका प्रस्ताव किया, रामने न माना, तव उसका वहुत हठ देखकर लक्ष्मणने उसके नाक कान दोनों काट लिये, तव वह अपने भाई खर दूषणको लेकर आई रामने उनको मार डाला, तव उसने रावणसे जाकर कहा, रावणने मारीचसे जाकर कहा कि, मारीच! सीता हरनेमें तुम्हैं मेरी सहायता करनी होगी मारीचने मना किया समझाया परन्तु वह एक न माना अन्तमें मारीच सुवर्णका मृग वनकर इधर उधर घूमने लगा, इसे देख कर सीताजीने रामचंद्रसे कहा कि, इस मृगको मारकर इसका चर्म ले आओ रामचंद्र उस मृगको मारनेके लिये गये, लक्ष्मणको सीताके निकट छोड़ गये मृग रामचंद्रजीको वड़ी दूर लेगया वहां जाकर रामचंद्रने उसे तीक्ष्ण वाणसे मारा तव वह मायावी राक्षस "भइया लक्ष्मण! मरा" यह कहकर चिल्लाने लगा सीताजीने लक्ष्मणसे कहा कि, देवर अपने भइयेकी सहायताके लिये जाओ, तव लक्ष्मण चारों ओर धनुषसे रेखा खैंच कर सीताजीसे वोले कि, इस लकीरसे वाहर मत

निकलना, यह कहकर चले गये; इस अवसरको पाकर रावण दंडीका रूप धारण कर भिक्षा लेनेके लिये सीताके समीप गया सीताने भीतरसे हो भिक्षा दी परन्तु रावणने कहा मैं बँधी भिक्षा नहीं लेता वाहर आकर दो, जैसेही भिक्षा देनेके लिये सीताजी वाहर आईं वैसेही रावण रथके ऊपर चढ़ाकर लंकाकी ओरको चला; लंकामें लेजाकर अशोकवनमें रक्खा सीताको रानी वनानेके लिये बहुत हठ किया जब उन्होंने न माना तौ छोड़कर चलागया हे बहन ! सीताकी रक्षा करनेके लिये बहुतसी राक्षसियोंको रक्खा इस ओर राजा रामचंद्रने सुग्रीवके मुखसे सुना कि, सीताको रावण चुराकर लेगयाहै; अतएव उन्होंने सुग्रीवकी सहायता कर वालिको मार सुग्रीवको राज्य दिया; फिर हनूमान्जीको सीताकी खोजके लिये भेजा; हनूमान्ने लंकामें जाकर देखा कि, रावणके रनवासमें रावण मंदोदरीको लिये हुए सो रहा है; फिर वृक्षके ऊपर चढ़कर देखा कि, सीता देवी अत्यन्त दुःखित हो मलीन भावसे वैठी रामनाम जप रही हैं; तव किसीको न देख कर सीताजीके समीप जा रामचंद्रकी अंगूठी दे रामलक्ष्मणकी कुशल सुनाई हे वहन ! जव यह सीताका समाचार ले रामचंद्रके पासको लौटे तौ रावणके वागके फल खाने और पेडोंको उखाड़ने लगे तव रावणके वेटेने आनकर युद्ध किया उसेभी मार डाला अंतमें मेघनाद वांधकर लेगया और इनकी पूछमें आग लगादी यह लंकाको फूंककर रामचंद्रके पास आये रामचंद्र सीताका समाचार पाय समुद्रका पुल वांध लंकापुरीको गये, यह आजतक सेतु-

बंध नामसे विख्यातहै रामने सामनेसेही रावणके मुकुटको चूर्ण कर डाला; फिर बड़ा भयंकर युद्ध होता रहा बहुतसे राक्षस मारे गये रावणके पुत्र इन्द्रजित्ने लक्ष्मणको नागपाशमें बांध लिया परन्तु उससे छूटकर उन्होंने रावणके पुत्रोंसे युद्ध कर सारी सेना मार डाली ।

रावणने इन्द्राजित्को फिर सेना देकर युद्ध करनेके लिये भेजा इस युद्धमें रामचंद्रकी बहुतसी सेना मारी गई,फिर जब कुंभकर्ण इन्द्रजीत आदि बलवान् २ योद्धा मारे गये तौ अंतमें रावणके साथ युद्ध प्रारंभ हुआ रावणने अत्यन्त क्रोधित होकर लक्ष्मणके वक्षस्थलपर भयंकर आघात किया उस समय रामचंद्रने क्रोधित होकर रावणको मारडाला और विभीषणको राज्यदे सीताके पास हनूमान्के हाथ समाचार कहला भेजा फिर सीताके लेनेके लिये विभीषणको भेजा; सीताके आनेपर रामचंद्रने कहा कि, तुम बहुतदिनोंसे रावणके यहां रहीहो जो हम तुम्हें घर रखलेंगे तौ हमारी निन्दा होगी इसकारण तुम सुग्रीव या भरत तथा शत्रुघ्नके यहां रहो, तब सीताने बहुत रुदन किया सीताने अग्निमें परीक्षा देकर रामचंद्रको अपनी सत्यताकी परीक्षा दी तब रामचंद्रने ग्रहण किया, पीछे चौदह वर्ष होजाने पर रामचंद्र अयोध्याको आये; चारों भाई मिले फिर सबने मिलकर रामचंद्रको राज्य दिया।

इस ओर सीताजी गर्भवती हुई।रामचंद्रने सीताजीसे पूछा कि, तुम्हारी क्या खानेको इच्छा करतीहै, सीताने कहा नाथ ! खानेको तौ कुछ इच्छा नहीं करती परन्तु वन देखने की इच्छा करती हूँ, रामने कहा अच्छा कल भेजदूंगा,

यह कहकर रामचंद्रने सभामें आकर सभासदोंसे पूछा कि, हमारे राज्यमें प्रजा कैसे रहतीहै, किसीने कुछ उत्तर न दिया, इतनेमेंही किसी भले आदमीने कहा कि, आपने रावणके घरमें रहीहुई सीताको जो घरमें रख लियाहै इससेही लोग उंगली उठाते हैं और सब बातमें आपकी कीर्त्ति है; यह सुन-कर रामचंद्रने दुःखित हो दूतको बुलाकर उससे पूँछा कि, कहो हमारे विषयमें लोग क्या कहतेहैं दूतने कहा कि, महाराज कल एक नदीके किनारे धोबी कपड़ा धोते २ लड़ते जातेथे उनमें एक तौ श्वसुर था और एक जमाई था श्वसुरने जमाईसे कहा देखो मैंने तुम्हें योग्यपात्र विचारकर कन्या दी थी, परन्तु तुमने उसे ऐसा माराहै कि, वह तुम्हारे घरसे भागकर मेरे घर गई परन्तु जवान लड़कीको मैं अपने घर रखना पसंद नहीं करता, यह बात शास्त्रकेभी विरुद्ध है, इसपर जमाईने कहा कि, तुम्हारी लड़की पतिके निकट रहना नहीं चाहती वह केवल माबापके यहां रहना अच्छा मानतीहै; अब मैं उसे घर नहीं रक्खूंगा, देखो महाराज रामचंद्रकी स्त्री सीताजीको रावण हरकर ले गयाथा, और रामचंद्रने उसे फिर अपने घरमें रखलिया।फिर वह तो राजाहैं,उन्हें सब सामर्थ्यहै और मैं नीच जातिहूं जो ऐसा करलूं तो बिरादरीके लोग मुझे जातसे बाहर कर देंगे यह बात सुनकर रामचंद्र दुःखी हुए । उसीदिन सीताकी चोटी बांधते २ किसी सहेलीने पूछा तुमने बहुत दिनोंतक रावणको देखाथा, उसके दशशिर वीसनेत्र वीस भुजा थीं क्या यह बात सत्य है; सो तुम पृथ्वीपर खैंचकर उसकी आकृति दिखाओ, सीताने पृथ्वीपर रावणकी मूर्त्ति

बनाकर दिखाई, इतनेमेंही दैवात् रामचंद्रभी आन पहुँचे, तब देखा कि, रावणका चित्र ठीक बनाहै; तब विचारने लगे कि, सीताजी यदि भली भाँतिसे रावणको न देखतीं तो यह उसकी मूर्त्ति किस भाँति खैंचतीं; इससे राम औरभी दुःखित हुए और क्रोधित होकर लक्ष्मणसे कहा कि, कलही सीताजीको तुम वाल्मीकिके आश्रमके निकट छोड़ आओ सीताको वनवास दिया। लक्ष्मणने वही किया, और साराहाल सीताजीसे कहदिया। सीता अत्यन्त दुःखी हुई; फिर वाल्मीकिने मुनियोंकी स्त्रियोंके निकट सीताको रखदिया। रामचंद्र महादुःखित हो एकसुवर्णकी सीता बनाकर समय बितानेलगे हे बहन! इस ओर सीताजीके दो पुत्र हुए, मुनिने इन दोनों पुत्रोंको लव और कुशसे ढककर रक्खा। फिर एकका नाम लव और दूसरेका नाम कुश रखादिया। फिर धीरे २ यह दोनों बालक संगीतविद्यामें पंडित होगये। इससमय रामचंद्रने अश्वमेध यज्ञ प्रारंभ किया यज्ञका घोड़ा मुनिके तपोवनमें गया तब शत्रुघ्न उसे लेनेके लिये गये। तब लव कुशके साथ शत्रुघ्नका युद्ध हुआ। शत्रुघ्न हारे फिर भरत और लक्ष्मण भी हारे अधिक क्या उस युद्धमें स्वयं रामचंद्रभी गये।रामचंद्रकी सैना दोनों बालकोंको देखकर कहनेलगी कि,जिससमय महाराजने सीताको वनवास दियाथा उससमय सीताजी गर्भवती थीं, कदाचित् यह उन्हींके पुत्र हों तब रामचंद्रजीने उन दोनों बालकोंका परिचय पूछा लव और कुशने कहा परिचय तो पीछे पूछना, प्रथम युद्ध करके अपने घोड़ेको ले जाओ;पितापुत्रमें युद्ध हुआ रामचंद्रकी बहुतसी सेना मारीगई, फिर राम-

चंद्रने उनसे पूछा कि, तुम कौन हो और किसके पुत्र हो तव लवने कहा कि, हम वाल्मीकि मुनिके शिष्य हैं। पीछे लव-कुश वाल्मीकिके साथ रामचंद्रके यज्ञमें गये और जाकर अपनी संगीतविद्याका परिचय दिया; इससे सारी सभा मोहित होगई। रामचंद्रने संतुष्ट होकर वहुतसा धन देना चाहा, लव-कुशने कुछ नहीं लिया, रामचंद्रने पूछा यह कविता किसकी है; वालकोंने कहा कि, वाल्मीकिकी वनाईहै रामचंद्रने कहा माताका नाम क्या है तव लवकुशने कहा कि, हम सीताके पुत्र हैं यह सुनतेही रामचंद्रने उन्हें गोदीमें उठालिया। और नेत्रोंमें जलभरकर कहा कि, हे मुनिश्रेष्ठ! सव सभास-दोंके सन्मुख सीताकी परीक्षा दो तो मैं उन्हें अपने घरमें रख लूं। फिर सीताजीके आनेपर सीताने कहा कि, एकवार तो मैं परीक्षासे उत्तीर्ण होगईहूं फिर अव क्यों दूं यह कह लज्जासे मुख नीचाकर पृथ्वीकी ओर देखकर कहा। हे माता वसुन्धरे! मुझे स्थान दो, यह कहतेही पृथ्वी फटगई और सीताजीको गोदमें वैठालकर पृथ्वी देवी रसातलको ले गई। इसके पीछे रामचंद्रनेभी शोकसे अधीर हो प्राण छोड़ दिये। पीछे लव और कुश राज्य करने लगे।

हे वहन! इससे यह भलीभांति विदित होताहै कि, सीता-जी कैसी पतिव्रता स्त्री थीं; उनके सतीत्वमें कोई भी संदेह नहीं करसकता सतीमें जो गुण होने चाहिये सीता देवीमें वह सभी गुण विद्यमान् थे।

सती।

हे वहन! सतीका प्रेम जैसा स्वामीसे देखा जाताहै, संसार

में ऐसा और किसीका दिखाई नहीं देता। कन्या सती दक्ष राजाकी बड़ी प्यारी कन्या थी, रूपमें सुवर्णकी मूर्त्ति गुणमें सर्वलोकोंको मोहनेवाली, अंतमें शिवजीकी स्त्री हुई वह कुटीमें रहकरही आनंद मानतीथी; भिक्षाके अन्नसेही उन्हैं संतोष था मुंडोंकी मालासे शोभायमान् शिवका वक्षस्थल, अंगमें भस्म लगीहुई, लाल २ नेत्र, ऐसे शिवकी सेवा करना ही उनके जीवनका एक व्रत था, कैलासपर्वतके सुख और शान्तिको वर्णन करते २ भारतके प्रधान २ कविभी हारमान गयेथे। जिससमय राजा दक्षने अपने यहां यज्ञ किया; तो उस यज्ञमें दक्षने शिवजी और सतीको न्योता नहीं दिया इसी अवसरमें गौतमकी कन्या जया सतीके देखनेकी इच्छासे कैलास पर्वतपर गई. सती उसे इकला आयाहुआ देखकर बोलीं कि, विजया,जयन्ती और अपराजिता यह किसकारणसे नहीं आईं। जयाने कहा कि, वह सभी अपने नानाके यहां यज्ञ में गईहैं; मैं वहींको जारही हूं आप और क्या शिवजीमहाराज उनके यज्ञमें नहीं जायँगे। क्या पिताने आपको निमंत्रण नहीं दिया,सम्पूर्ण लोकोंमें जो स्थावर और जंगम दिखाई देते हैं यह सभी उनके यज्ञमें निमंत्रित हुये हैं तब क्या आप को निमंत्रण नहीं किया ? हे बहन! जयाके मुखसे इन वज्रके समान कठोर वचनोंको सुनकर उन्होंने अत्यन्त क्रोधित हो उसीसमय अपने प्राणोंको त्याग दिया। जया सतीकी यह अवस्था देखकर शोकसे व्याकुल हो ऊँचे स्वरसे विलाप करने लगी, उसके रोनेके शब्दको सुनकर शिवजी जयाके धोरे गये जाकर देखा कि, सती मृतक पड़ीहै. शिवजीने पूछा

यह क्या हुआ तब जयाने कहा कि, यज्ञमें पिताने इनको निमंत्रण न देकर इनका निरादर कियाहै. इनकी सब बहिनें अपने २ पतियोंके साथ गई हैं। यह सुनकर इन्होंने अपने प्राण छोडदिये, यह सुनकर शिवजी अत्यन्त क्रोधित होकर दक्षके यज्ञमें गये और जाकर दक्षका यज्ञ विध्वंस करदिया-हे बहन! सतीने मृतक होकरभी शिवजीको न छोड़ा, उन्हों ने गिरिराजके घरमें मैनाके गर्भसे जन्म लिया उनका विवाह फिर शिवजीकेही साथ हुआ।

देखो! सती कैसी पतिव्रता स्त्री थी जिसने पतिका निरादर हुआ सुनकरही प्राण छोड़दिये इसीसे आजतक भारतवर्षमें उनकी कीर्त्ति प्रकाशमान् हो रहीहै।

शैब्या।

हे बहन! महाराज हरिश्चंद्र ससागरा पृथ्वीके राजाथे परन्तु प्रारब्धके वशसे उनकोभी अनेक कष्ट उठाने पड़े उन्होंने प्रथम सारा राज्य विश्वामित्रको स्वप्नमें दियाथा. महर्षिने प्रत्यक्षमें आकर अपना राज्य लेलिया परन्तु विश्वामित्रके क्रोधकी तबभी शान्ति नहीं हुई तौभी राजा ऋषिके कर्जदारही रहे; फिर ऋषिके ऋणसे मुक्त होनेके लिये घरसे निकल चले, स्त्रीभी उनके साथ चली। जब किसी भाँति कर्जसे छूटनेका उपाय न देखा तब रानी शैब्याको एक ब्राह्मणके हाथ बेचा; परन्तु इससे भी उनके दुःखका अंत न हुआ तब चंडालके यहां आप बिके तब ऋषिके ऋणसे छुटकारा हुआ चांडालके यहां मुरदोंपरसे वस्त्र लेनेका रुजगार होता था मरघटपर राजा नियत हुए।

इस ओर रानी शैब्या अपने पुत्रको ले ब्राह्मणकी सेवा शुश्रूषा करने लगी एकदिन अचानक उसके पुत्रको सांपने काटखाया, उसके काटतेही पुत्र मरगया, रानी शैब्या पुत्रशोकसे कातर हो सारी रात रोती रही; परन्तु कौन दासीके पुत्रका संस्कार करैगा इस कारण अपने आपही पुत्रके मृतक शरीरको उठाकर रात्रिमें इकली रोते २ मरघटकी ओरको चली। उसके रोनेके शब्दको सुनकर वृक्षलता आदि सभी कांपने लगे; श्मशानमें राजा हरिश्चंद्र मोटा लठ्ठ कंधेपर धरेहुए घूमरहेथे; अंधकारमें दोनोंमेंसे किसीने किसीको न पहँचाना। हाय ! राजा रानीको इससे अधिक दुःख और क्या हो सकताहै।

हरिश्चंद्रने कहा पुत्रकी क्रिया जब करियो पहले हमैं आधा कफ्फन दे दो राजाके बोलको रानीने पहँचानकर कहा; लो आज अपने गोद खिलाये पुत्रकी दशा देखलो, राजाने बहुत दुःख माना अंतमें कहा जो होनाथा सो होगया अब हमैं आधा कफ्फन दे दो, रानीने कहा स्वामी मेरे पास तो कपड़ा नहींथा मैं अपने दुपट्टेमें लपेटकर लाई हूं परन्तु तुम्हारी आज्ञा माननी उचितहै, यह कहकर आंचल फाड़ने लगी, हे बहन! उसी समय भगवान् रानी शैब्याके सतीत्व और राजाकी सत्यता देखकर आ उपास्थित हुए; और उनके पुत्रको जीवदान देकर राजा हरिश्चंद्रको फिर राज्य दे दिया।

हे बहन! रानी शैब्याका पतिधर्म सराहने योग्य है स्त्रियोंको ऐसाही करना उचित है।

सावित्री।

हे वहन! सावित्रीके पिता बहुत दिनोंसे राज्यको छोड़कर वनमें रहते थे इन्होंने वानप्रस्थका अवलम्बनकर कन्याकोभी अपनेही साथ रक्खाथा वृक्षके फूलके समान उस वनमें सावित्री दिन २ बढ़ने लगी। इसवनके एक ओर एक अंधा राजा रहता था; उसके भाईने राज्य छीन लियाथा. वह अपने पुत्र सत्यवान्को लेकर रहताथा; सत्यवान् और सावित्री दोनों जने अपने २ पिताके लिये जंगलमें लकाड़ियें वीनने जाया करते दोनोंमें अधिक प्रेम बढ़गया, परस्परमें दोनोंने विवाह करनेका संकल्प किया दोनोंके पिता माताभी राजी होगये, परन्तु किसी ऋषिने सावित्रीके पितासे गणना करके कहा कि, जब सावित्रीके विवाहको एक वर्ष हो जायगा उसी दिन सत्यवान्की मृत्यु होगी, यह सुनकर ऐसा कौनसा पिताहै जो सत्यवान्के साथ विवाह करनेमें राजी हो, परन्तु सावित्रीने किसी की न मानी। यदि विवाह न हुआ तो भी वह नहीं बचैगा, तव उसके इसकाममें किसीने कुछ रोक टोक न करी, सावित्री और सत्यवान्का विवाह हो गया।

धीरे २ एकवर्ष पूर्ण होगया। सावित्री दिन गिनती जातीथी। जिसदिन उसके विवाहका पूर्ण दिन हुआ उसकोभी वह नहीं भूलीथी। तब प्रभातकोही सत्यवान् घरसे वाहर चले तो सावित्रीभी उनके पीछे २ चली, सत्यवान्ने बहुत मना किया परन्तु सावित्रीने एक न माना, संध्यातक तो वह दिन निर्विघ्नतासे बीतगया सावित्री अपने मनही मनमें विचारने लगी कि, ऋषिके वचन झूंठे हुए, आज सारादिन बीतगया;

ठीक उसीसमय सत्यवानने कहा " सावित्री ! " मेरे शिरमें बड़ा दर्द हो रहाहै; यह कहते २ वह वहीं लेट रहा सावित्री स्वामीके मस्तकको गोदीमें धरकर बैठगई । हे बहन! कुछ काल पीछे रात्रि होगई, सारे वनमें अंधकार छागया, इससमयमें सत्यवान्‌की मृत्यु होगई तव भयंकर जीवजंतुओंके वनमें स्वामीके मृतक शरीरको गोदीमें लियेहुए सावित्री उसी वनमें बैठी रही।

यमके दूत सत्यवान्‌को लेनेके लिये आये, परन्तु सतीकी देह छूनेसे उसके उठानेमें असमर्थ हो लौट गये और जाकर यमराजसे कहा-यमराज स्वयं आये, परन्तु वहभी सत्यवान्‌का शरीर उठानेको समर्थ न हुए अनेक उपाय करे परन्तु न उठासके तव सावित्रीने यमराजसे कहा कि, तुम सत्यवान्‌के मातापिताके नेत्र खोल दो तो मैं इस देहको छोड़दूं यमराजने कहा ऐसाही होगा उनके नेत्र खुलजायंगे; सावित्रीने सत्यवान्‌की देह छोड़दी परन्तु यमराजको पकड़लिया, वह उनके साथ २ चलने लगी तव उन्होंने सावित्रीको और भी वरदान दिये परन्तु सावित्रीने उनका पीछा जबभी नहीं छोड़ा, तव यमराज घबड़ाकर सावित्रीसे कहने लगे कि, " सत्यवान्‌के औरससे तुम्हारे सौपुत्र होंगे " सावित्रीने कहा " देव ! सत्यवान्‌को तो आप ले चले फिर किसप्रकारसे सत्यवान्‌के औरससे हमारे सौ पुत्र होंगे ? " तव यमराजको ज्ञान उत्पन्न हुआ उससमय उन्होंने सावित्रीकी पतिभक्तिसे विशेष संतुष्ट हो सत्यवान्‌को जीवित करादिया, तव सावित्री लौटकर अपने पतिके निकट आय सत्यवान्‌का मस्तक गोदीमें रखकर बैठ-

गई । सत्यवान् उसीसमय उठ बैठा, और उठकर बोला कि, यह क्या रात होगई अबतक हम इस वनमेंही पड़ेहैं, यह कहकर दोनोंजने घरको चले गये।

धीरे २ यह सब बात सारेमें फैलगई उसीदिनसे आजतक सारी स्त्रियें ज्येष्ठमासकी मावसको सावित्रीका व्रतपालन करती हैं कि, हमभी सदा सुहागन रहैं।

हे बहन! सावित्री कैसी सती थी जिसने सासश्वशुरके नेत्र खुलवाकर पीछे अपने पतिको जीवित कराया, धन्य है सावित्रीके सतीत्वको कि, जिसका यश आजतक फैल रहाहै।

दमयन्ती।

हे बहन! विदर्भ नगरमें भीमसेन नामके एक राजाथे, उनके कोई संतान नहीं थी इसकारण वह सर्वदा दुःखी रहतेथे, एकदिन दमनक नामके ऋषि राजाकी सभामें गये; राजाने अपना दुःख कहा ऋषिने कहा कि, शीघ्रही तुम्हारे एक सौभाग्यवती कन्या जन्म लेगी । ऋषि यह कहकर चले गये, थोडे दिनोंके बाद राजाके एक कन्या हुई राजाने ऋषिके नामके अनुसार उस कन्याका नाम दमयन्ती रक्खा; दमयन्तीके रूप और गुणकी बड़ाई सुनकर निषधदेशके राजा वीरसेनका पुत्र नल उसके साथ विवाह करनेकी इच्छा करने लगा; दमयन्तीके रूप और गुणकी परीक्षा करनेके लिये एक दूत भेजा, नैषधकाव्यमें इसको हंसरूपी कहाहै; अरु कहाहै कि, एक दिन राजा नल अपने हमजोलीके लड़कोंके साथ बागमें फिर रहेथे उससमय उस बागके सरोवरमें सुवर्णके पंखवाले एक हंसको देखकर उसे पकड़ने लगे, तब उस हंसने कहा कि, तुम जो

दमयन्तीके पानेकी अधिक इच्छा करतेहो मैंने उसकामको ठीक कर लियाहै, और हंसने दमयन्तीके रूप गुणकी वड़ाई भली भाँतिसे सुनाई तव राजाने उसे अपना दूत बनाया।

हंस फिर विदर्भनगरमें गया और रनवासके भीतरवाले सरोवरमें विचरण करने लगा उस समय दमयन्तीकी दृष्टि उस हंस पर पड़ी और उसको पकड़ने लगी, हंसने कहा मुझे न पकडना मैं तुम्हारा अधिक रूपवान् और गुणवान् राजा नलके साथ विवाह कराढूंगा। इसको सुनकर दमयन्ती अत्यन्तही प्रसन्न हुई और उस हंससे इस कामको पूरा करनेके लिये कहा हंसके चलेजानेपर रानी उसके आनेकी वाट देखती रही जव हंस न आया तो वड़ी चिन्ता करने लगी सखियोंने यह समाचार दमयन्तीकी मातासे जाकर कहा, तव राजाकोभी खबर हुई, राजाने एक सभा करी; देशदेशान्तरोंके राजा आये नैषधकाव्यके वनानेवालेने लिखा है कि, इन्द्र, अग्नि, यम, वरुण इत्यादि देवताभी दमयन्तीके पानेकी इच्छासे इस सभामें आयेथे। जिससे नलराजा दमयन्तीके साथ विवाह न करसकैं, इस इच्छासेही नलके द्वारा दमयन्तीपर अपना समाचार भेजा कि, हम तुम्हारे साथ विवाह करनेकी इच्छा करते हैं दमयन्तीने कहा कि, उन देवदेवके चरणोंमें मेरा कोटि २ प्रणाम कहना, मैंने मनही मनमें जिसके साथ विवाह किया है, उसके विपरीत नहीं होगा, राजा नलने यह बात उन देवताओंसे जाकर कहदी, देवताओंने वहुतसे उपाय किये कि, जिससे राजा नलका विवाह दमयन्तीके साथ न हो; परन्तु कुछ भी न हुआ

अंतमें दमयन्तीने सबके सामने राजा नलके गलेमें जयमाला डाली, नलराजा दमयन्तीको लेकर अपने देशको चले गये, और रनवासमें रहकर आनंदसहित समय विताने लगे, इसप्रकारसे जब बारह वर्ष बीतगये तो दमयन्तीके एक लड़का और एक लड़की उत्पन्न हुई लड़केका नाम इन्द्रसेन और लड़कीका नाम इन्द्रसेना रक्खा।

पुष्कर नाम नलराजाका छोटाभाई अक्षक्रीड़ामें बड़ा पंडित था। राजा नलभी पाशा खेलना जानतेथे, बुद्धिके फेरसे दोनों भाई खेलनेको बैठे धीरे २ राजानल राज, पाट, धन, दौलत, दास, दासी सभी हारगये, इसके उपरान्त यह समाचार दमयन्तीने सुना, वह विधाताकी गति जान विधिको मनाने लगी, परन्तु उसका मनोरथ सफल न हुआ तब महा-विपत्ति जानकर सुशील नामवाले सारथीको बुलानेके लिये अपनी प्यारी दासीसे कहा उस सारथीके आजानेपर दमयन्तीने इन्द्रसेन और इन्द्रसेनाको ननसालमें पहुँचानेकी आज्ञा दी आज्ञापातेही सारथी उनको विदर्भराजमें लेगया।

धीरे २ राजा अपने कपड़े तकभी हारगये। केवल जो कपड़े पहर रहेथे वही रहे तब पुष्करने कहा कि, अब अपनी स्त्रीको दाँवपर लगाओ यह सुनकर राजा नल अत्यन्त क्रोधित हुए, फिर रानीके गहने उतारकर लगाए जब यहभी हारगये तौ राजानल निकल चले, दमयन्तीभी स्वामीके पीछे २ चली पुष्कर सब राज्यके अधीश्वर हुए, और अपने राज्यमें यह ढंढोरा पिटवादिया कि, राजा नलको जो कोई अपने घर रक्खैगा वह जानसे मार दिया जायगा। राजानलको कहीं ठिकाना

न मिला इन्हैं तीन दिनतक विना जलपान किये वीतगये; चौथेदिन नदीके किनारे जाकर अंजलीसे जल पिया; और उस रात्रिको वहीं व्यतीत किया; प्रातःकाल किसी वनमें जाकर फल मूल भक्षणकर जीवनकी रक्षा करने लगे इसभांति-कई दिन वीतगये; एकदिन राजानलने सुवर्णके पंखवाला एक पक्षी देखा, जैसे ही इन्होंने उसके पकड़नेके लिये अपना डुपट्टा उसके ऊपर डाला कि, वैसेही वह आकाशको उड़गया, तव राजानलने कहा कि, देख दमयन्ती ! जव भाग्य मंद होताहै तव ऐसाही हुआ करताहै, देखो हमने तो यह विचारकर कपड़ा डालाथा कि, इसपक्षीके पंखमें जो सुवर्णहै इसे वेंचकर जीविका निर्वाह करैंगे और इस पक्षीके मांसको खांयगे, सो विधाताकी गतिसे फेंकाहुआ डुपट्टाभी गया । दमयन्तीने राजा नलसे अपने वापके यहां चलनेको वहुत वार कहा परन्तु राजाने यही कहा कि, पहले तो मैं राजा होकर ससुरालमें गयाथा, अव क्या मुँह लेकर ससुरालमें जाऊँ तुम्हैं कष्ट होताहै तुम स्त्री जातिहो तुम चली जाओ; इससे दमयन्तीने कहा मुझे चाहे जितना कष्ट हो मुझे पिताके घर रहनेमें कुछ सुख नहीं है परन्तु मैं आपको किसी भांति नहीं छोड़ सकती, यह कह कर दमयन्तीने अपने पहरेहुए वस्त्रमेंसे आधा वस्त्र राजाको पहराया, जिससे कि, मुझे छोड़कर स्वामी कहींको न चलेजांय ।

इस ओर राजानल भूंख प्याससे व्याकुलहो दमयन्तीको सोती छोड़कर चलदिये आगेको चलते जाँय और पीछे फिर २ कर देखते जाँय कि, दमयन्ती क्या कररही है. परन्तु अवतक दमयन्ती सोतीही रही, पीछे जव जागी तो राजाको न

देखकर रोनेलगी हा नाथ ! मुझे कहां छोड़गये, यह कह २ कर विलाप करने लगी; इसी समयमें एक अजगरसर्प दमयन्तीको दिखाई दिया और वह सर्प दमयन्तीके निकटको आनेलगा—दमयन्ती बराबर रोतीरही, रोनेके शब्दको एक व्याधेने सुना उसने आकर उसे मारडाला, व्याधा दमयन्तीकी सुन्दरताको देखकर मोहित हो उसे अपने घर ले गया; और अपनी स्त्री बनानेकी इच्छा की दमयन्तीने शाप दिया कि, मैं यथार्थही पतिव्रताहूं तो यह पाखंडी शीघ्रही भस्म होजाय। यह सुनकर अत्यन्तही क्रोधित हुआ और दमयन्तीके मारनेके लिये धनुपपर वाण चढाया परमेश्वरकी कृपासे जैसेही उस व्याधेने धनुपको खैंचा, वैसेही वह वाण उस व्याधेकेही छातीमें जाकर लगा, उसके लगतेही व्याधा मर गया।

हे वहन ! इसी समयमें दमयन्ती उसके घरसे वाहर हो स्वामीकी खोज करने लगी, कहीं भी कुछ समाचार न मिला फिर एक वड़े ऊंचे पर्वतपर चढ़ी और जाकर एक ऋषिकी कुटीमें देखने लगी, जव वहाँभी न मिले तो आगे चली वहाँ जाकर रास्तेमें एक वनियेसे पूँछा, तुमने क्या हमारे पति राजानलको देखा है, तव उसने कहा माता हमने तो नहीं देखा, मैं इस समय वाणिज्य करनेके लिये सुवाहुनगरीको जाताहूं, यदि इच्छा हो तो चलो मेरे साथ वहाँ जाकर ढूंढलेना जव वह वनिया वहाँ पहुँचगया तो वह तो अपने काम धन्धेमें लगा और दमयन्ती पागलकी भांति राजा नलको ढूंढती हुई फिरने लगी। इसी अवसरमें छत्तपरसे सुवाहु राजाकी रानीने उसे देखा, तो उसी समय अपनी सखीको

भेजकर बुलाया; उसका सारा हाल पूछकर सुनन्दा नामकी एक कन्याको उसके निकट रखदिया ।

इस ओर राजा नलने बहुत दूरसे देखा कि, एक काला सर्प भयंकर दावानलमें जलनेके कारण चिल्ला रहा है उसको दावानलसे छुटाया, फिर उस अधजले सर्पको चलनेमें अशक्त देखकर राजाने उसे अपनी गोदीमें ले लिया; परन्तु वह कुटिल सर्प काटनेको हुवा तो राजाने उसे छोडदिया; फिर अयोध्यामें ऋतुपर्ण राजाके निकट जाकर कहा "कि, मैं राजानलका सारथी हूं, मेरा नाम बाहुक है मैं घोडे चलाने भली भांतिसे जानता हूँ" तब राजाने इनको अपने यहां रख लिया, इस प्रकारसे नल और दमयन्ती दोनों जने दो स्थानोंमें रहने लगे इस समयमें राजा भीमसेनने कन्या और जमाईको खोजनेको बहुतसे नौकर चाकर भेजे परन्तु किसीने इनका पता न पाया, अंतमें सुदेव नामका ब्राह्मण बहुतसे धनकी इच्छासे सुबाहु राजाके राज्यमें गया उसने सुना कि, दासीके वेषमें एक रानी राजाके रनवासमें रहती है, उसने उसकी पहचानकर राजा सुबाहुसे कहा कि हाँ यही राजा भीमसेनकी कन्याहै। दमयन्ती उस ब्राह्मणके मुखसे माता पिताका समाचार सुनकर संतुष्ट हुई, सुबाहु राजाने उसका पूरा २ हाल जानकर जाना कि, यह वास्तवमें रानीही है, दमयन्तीने अपनी माताके यहांके ब्राह्मणको प्रणाम किया यह समाचार पाकर रानीभी पहलेसेभी अधिक प्यारके साथ रखने लगी ।

इसके उपरान्त सुदेव दमयन्तीको पिताके घर ले आये दमयन्तीके आनेपर उसके माता पिता अत्यन्तही

हर्षित हुए परन्तु दमयन्तीको स्वामीके लिये दुःखित देखकर राजाने फिर सुदेव ब्राह्मणको जमाईकी खोज करनेके लिये भेजा, सुदेवने बड़े यत्नसे उनका पता चलाया कि, राजा नल ऋतुपर्णराजाका सारथी बनाहै, दमयन्तीने ऋतुपर्णराजाको एकपत्र लिखकर सुदेव ब्राह्मणके हाथ अयोध्याको भेजा और सुदेवसे कहा कि, तुम राजासे जाकर कहना कि, दमयन्तीको उसके स्वामी राजानलने छोड़ दियाहै अब उसका स्वयंवर फिर होगा, इसकारण आप शीघ्र रथपर चढ़कर विदर्भ नगरको चलैं, इससे ऋतुपर्ण राजा अवश्यही आवैंगे, और जो उसके सारथी यदि राजानल होंगे तो वहभी आवैंगे तब पहँचान लिया जायगा कि, यह राजाहै या नहीं।

समाचार पातेही राजा ऋतुपर्ण और सारथी एकवारही विदर्भनगरमें पहुँच गये, राजाने आकर जब स्वयंवरका कुछ सामान न देखा तौ मनही मनमें संदेह किया। बाहुक घोड़ोंको खोलकर घुड़शालामें बांधकर आपभी वहीं बैठा। दमयन्तीने रनवासमें ऋतुपर्णराजाके आनेका समाचार पा केशिनी नामकी दासीको अश्वशालामें भेजा; बाहुक केशिनीके मुखसे दमयन्तीकी अवस्था सुन रोनेलगा। यह सुनकर दमयन्ती समझ गई कि, यही राजा नलहैं। बाहुकने अपने लिए जो भोजन बनायाथा; उसका कुछ अंश दमयन्तीने देखनेके लिये दासीसे मँगवा भेजा, दमयन्तीने खाकर देखा तो जाना कि; इन भोजनोंको नलराजाके अतिरिक्त और कोई नहीं बनासकता, इसके उपरान्त दमयन्तीने दासीके साथ लड़के लड़कीको भेजा। सारथीने बड़े प्यारसे उन दोनों

बालकोंको गोदीमें बैठालकर बड़ा प्यार किया और फिर महलोंमें भेजदिया। यह देखकर दमयन्ती स्वयं बालकोंको लेकर स्वामीके साथ मिलनेके लिये गई और जाकर सारा हाल कहा, आपसमें दोनोंजने वार्त्तालाप करतेहुए मग्न होगये राजा भीमसेनने सुना कि, राजानल अबतक ऋतुपर्णराजाके यहां छिपकर सारथी बने नौकरी करते रहे। अब इनके आनेसे अत्यन्त संतुष्ट हुए, ऋतुपर्णराजाभी दमयन्तीकी आशासे निराश हो दमयन्तीका राजा नलके साथ मिलन होनेसे अत्यन्त प्रसन्न हुए,और लज्जित होकर कहा कि,मैंने विना जाने हुए आपको सारथीके कार्यमें नियुक्त कियाथा, यदि जो कुछ भूलसे कहाहो आप मुझको क्षमा कीजिये; राजानलने कहा मैं आपका जन्मभरतक उपकार मानूंगा कारण कि, आपने उस समय मुझे अपने स्थानमें रखकर जीवदान दिया उस समय ऋतुपर्ण राजा अपने देशको चले गये।

हे बहन! राजानलने कुछ दिनतक सुसरालमें रहकर फिर अपने राज्यमें जानेकी इच्छा की, इनके श्वसुरने बहुत भांति समझाया और कहा कि, हमारे पुत्र नहीं है तुम्हीं हमारे राज्य पर रहो; परन्तु राजानल राजी न हुये और बहुत विनय कर अपने देशको जानेकी आज्ञा मांगी। राजा नल एक रथ सोलह हाथी, पांचसौ घोड़े और छे सौ पैदल साथ लेकर निषध राज्यको चले दमयन्ती पिताके घरही रहीं इसके पीछे राजा नलने निषधराज्यमें जाकर पुष्करसे एकवार फिर खेलनेको कहा, और कहा कि, पहिली पहल खेलकर हम अपना सर्वस्व हार गये और अबकी बार देखो क्या होय जो नहीं खेलोगे तौ युद्ध करनेके लिये तैय्यारी करो।

पुष्करने हँसकर कहा कि, दमयन्तीको नहीं हाराथा सो उसीपर कूदते दीखोहो; यह कहकर दोनों जने चौसर खेलने लगे, अवकी वार राजा नल जीते तव पुष्कर थर २ कांपने लगा; नल राजाने कहा कि, भाई! मैं तुम्हारे समान दुष्ट नहींहूं, तुम कुछ चिन्ता मत करो वृथा क्यों कांप रहे हो, तुम जिस तरह पहले रहतेथे उसी तरह रहो मैं तुम्हारे ऊपर कुछ अत्याचार नहीं करूंगा। पुष्कर राजा नलके पैरोंमें गिरपड़ा प्रजाने राजा नलकोही राजा मानकर प्रणाम किया नलराजाके राजा होने पर प्रजा आनंद सागरमें मग्न होगई राजा नलने अपने पुत्र कन्याकोभी ननसालसे बुलालिया और आनंद सहित राज्य करने लगे।

हे वहन! देखो दमयन्तीने कैसे २ कष्ट सहे और शाप देकर व्याधेको भस्म किया वह कैसी सती स्त्री थी।

पद्मिनी।

हे वहन! चित्तौरमें भीमसिंह नामवाले एक बड़े पराक्रमी राजाथे पद्मिनी उसकी स्त्री थी। जिस समय मुसल्मानोंने भारतवर्ष पर आक्रमणकर अपना अधिकार कियाथा, और आर्यावर्त्तके प्रायः सभी देशोंमें अपना दखल किया उससमय भीमसिंह अपने बाहुबलसे चित्तौरका राज्य कररहेथे उस समय अलाउद्दीन दिल्लीका वादशाह था।

आर्यावर्त्तके प्रायः सभी अंशोंको जीतकर अलाउद्दीनने दक्षिणापथ और चित्तौरपर आक्रमण किया. यद्यपि चित्तौर पर आक्रमण तो किया परन्तु उसकी इच्छा पूरी न हुई।

भीमसेनकी स्त्री चित्तौरकी महारानी पद्मिनी बड़ी रूपवती थी जिसप्रकार ग्रीकके इतिहासमें क्लि उपेटरकी सुन्दरताने विलायतके सातसौ राजाओंका भस्म कियाथा वैसेही सुलतान अलाउद्दीनभी पद्मिनीके रूप ज्योतिके भीतरही जलाथा. मुसल्मान बादशाह बड़े पाखंडी होतेथे, वह बहुतसी बेगम होनेपरभी यदि किसी हिन्दू स्त्रीकी सुन्दरताको सुनते तो उसके पानेमें ऐसा बुरा व्यवहार करतेथे कि, जिसका ठीक नहीं,एक तो यह भारतवर्षके सभी अंशोंके अधिकारी थे,फिर उनकी जो इच्छा होती वही करसकतेथे, बहुतसे नौकर चाकर गुप्तभावसे बादशाहके कहने अनुसार काम करतेथे, वह नौकर चाकर अनेक देशोंमें जाकर यह देखतेथे कि,किस जगह कौनसी स्त्री रूपवती है और जिस स्थानपर जिस स्त्रीको देखा उसीसमय आनकर कहतेथे और बादशाहसे बहुत धन पातेथे।

अलाउद्दीनने सुना कि, पद्मिनी रानी अत्यन्तही रूपवतीहै जिसदिनसे पद्मिनी रानीके रूपकी कथा सुनी, अलाउद्दीन उसी दिनसे भोजन पान निद्राको छोड़कर पद्मिनीके पानेकी कोशिश करने लगा, किसी उपायसे क्यों न हो परन्तु पद्मनीको अवश्य प्राप्त करूंगा, चित्तौरके राजा भीमसिंहसे कहलाभेजा कि, मैं चित्तौर देखनेकी इच्छा करताहूं । भीमसिंह सभी बातोंको जानते थे; परन्तु राजपूत अतिथि सेवासे विमुख नहीं होते, अतिथिकी सेवा नहीं करेंगे तो महापाप लगैगा, इस शंकासे अलाउद्दीनको चित्तौरसे पत्र लिखकर निमंत्रण किया।

यद्यपि अलाउद्दीन अपनी बड़ी भारी सेना लेकर गयाथा परन्तु दोचार आदमियोंकोही अपने साथ लेकर भीमसिंहसे साक्षात् किया; भीमसिंहने बड़े यत्नके साथ अलाउद्दीनकी शुश्रूषा की, अलाउद्दीनने बातों २ में पद्मिनीके रूपका जिक्र भी छेड़ा, भीमसिंह उसके मतलबको समझ गये, वह यह उपाय शोचने लगे कि, किसप्रकारसे इसको टालूं, परन्तु अलाउद्दीन ऐसा भूलनेवाला आदमी नहींथा। भीमसिंहने अतिथिका अपमान करना नहीं चाहा। अलाउद्दीन पद्मिनीके साथ वार्त्तालाप करनेके लिये महलमें गया। अंतमें यह ठहरी कि, अलाउद्दीनके सन्मुखही एक अग्निका कुंड बनाकर उसमें पद्मिनीका प्रतिविम्ब दिखाया जाय, भीमसिंहने विचारा कि, मुसलमान राजाके सन्मुख खड़ी होकर हिन्दूराजाकी रानी अवश्यही प्राण छोड़ देगी, भीमसिंहने यह समाचार अलाउद्दीनसे कहला भेजा; अलाउद्दीन इसबातपर राजी हो गया, तब एक अग्निका कुंड बनाया गया रानी पद्मिनी एकबारही उस ओरको होकर निकली, अलाउद्दीन उसके रूपकी परछांही को देखतेही मोहित हो गया जिसके यहां हजारों रानियाँ थीं वह चित्तौरकी रानीको देखकर जो मोहित हो गया तो इसमें आश्चर्यही क्याहै हे बहन! पद्मिनीका रूप इतिहासोंमें विख्यात है।

जब अलाउद्दीनको ज्ञान हुआ तो विदा होकर अपने स्थानको चला गया फिर कुछ दिनोंके पीछे दूतके द्वारा यह पत्र लिखकर भेजा कि, यदि भीमसिंह सीधी तरहसे पद्मिनीको

मुझे नहीं देंगे, तौ मैं चित्तौर पर चढाईकर अपना अधिकार करलूंगा। इस पत्रको देखतेही भीमसिंहका तन बदन जल उठा, भीमसिंहने वह पत्र पढ़कर अपनी रानीको सुनाया पद्मिनीने हँसकर स्वामीको उसपत्रका यथोचित् उत्तर देनेके लिये कहा, भीमसिंहने अलाउद्दीनका निरादरकर विपरीत पत्र लिखा; अलाउद्दीन क्रोधमें भरगया और उसीसमय चित्तौरपर चढ़ाई की, चित्तौरकी बड़ीभारी सेनाने अलाउद्दीनके साथ घोर युद्ध किया, परन्तु अंतमें भीमसिंहही हारे; अलाउद्दीन जय प्राप्तकर महलमें पद्मिनीको ढूंढ़नेके लिये गया, परन्तु महलमें कहींभी रानीका पता न लगा तौ बड़ी चिन्ता करने लगा, उसने देखा कि, एक भयंकर चिता धू धू करके जलरही है, कोनेमें छिपकी हुई एक ओर पद्मिनी खड़ी अपना वस्त्र संभाल रहीहै जैसेही अलाउद्दीनने उसके पकड़नेको हाथ बढ़ाया कि, वैसेही पद्मिनी उस अग्निकी जलतीहुई चितामें कूद पड़ी। इस चरित्रको देखकर अलाउद्दीन बहुत दुःखी हुआ, और हताश हो अपने घरको चलागया।

हे बहन! पद्मिनीके पतिव्रतधर्मको धन्य है कि, जिसने मुसल्मानके हाथसे इसप्रकार अपने सतीत्वकी रक्षा की।

लीलावती।

लीलावती भास्कराचार्यकी कन्या, गणित और ज्योतिषशास्त्रके जाननेमें पंडिता थी, फैजी नामक एक सभासदने दिल्लीके बादशाह अकबरके संतोषके अर्थ एक ब्राह्मणसे अपनेको ब्राह्मण बता संस्कृतभाषाको सीखकर इस भाषाके उत्तमरग्रंथों-

को पढ़ फारसीमें उनका अनुवाद किया। इनमें भास्कराचार्यकी लीलावती नामक कन्याने जिस ग्रंथका अनुवाद किया था उसमें लिखाहै कि, भास्कराचार्य वदर शहर निवासीहैं, यह लीलावतीही उनकी एकमात्र कन्या है। जन्मलग्न और नक्षत्रादिकी गणना करनेसे जाना जाताहै कि, वह पति पुत्र करके हीन होगी इससे उसके पिता सदा चिन्ता करते रहते कि, वैधव्य निवारणका कोई उपाय है या नहीं।

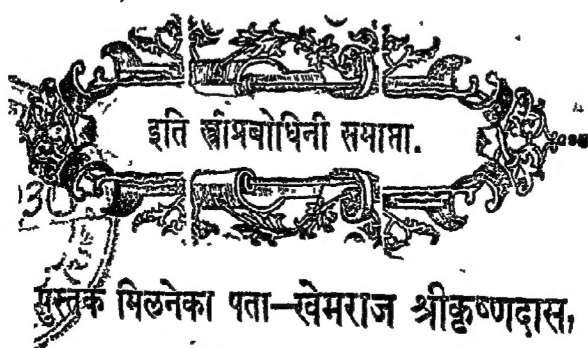
कन्याका विवाह समय आ पहुँचा। उन्होंने स्वयं ज्योतिष शास्त्र विचारकर ऐसी लग्न स्थिर करी कि, जिससे कन्या विवाह होने पर सधवा रहे और पुत्रवती हो। विवाहकी रात्रि में वहुतसे ब्राह्मण और पंडितोंके सामने कन्या और जमाई को एक जगह वैठालकर लग्नका समय निश्चय करनेके लिये जल भरेहुये एक पात्रके ऊपर छोटे छोटे छेदोंकी एक तोंवी रखकर कहा इस तोंवीके छेदोंमेंसे जल आकर भरपूर हो जभी जलमें डूव जायगी तभी मैं कन्याको दान करूंगा, तो मेरी कन्या विधवा नहीं होगी परन्तु कैसी आश्चर्यकी वातहै; जव लीलावती उसे देख रहीथी, उस समय अचानक उसके मुकुट मेंसे एक मोती टूटकर उस तोंवीमें गिरगया उसके गिरतेही तोंवीका छेद वंद होगया, उसीसमय लग्न टलगई। कन्याके पिता अत्यन्त विस्मित हुये और लग्नकी आशाको निष्फल देख कन्याका विवाह करदिया अंतमें लीलावती विधवा होगई इस प्रकारसे विधवा होकर वह समय विताने लगी। परंतु पंडितने प्रण किया कि, मैं उस कन्याको ज्योतिष विद्यामें ऐसा पंडित करूंगा कि, जिससे उसका नाम सर्वदा विद्यमान् रहै।

यह विचार कर उन्होंने कन्याको नानाभांतिके अंक और ज्योतिषशास्त्रकी शिक्षा दी और संस्कृतभाषामें एक अंकोंकी पुस्तक बनाकर उसके नामसे प्रचारित की, इस पुस्तकमें सर्व प्रकारके अंक सूत्र और उदाहरण भी हैं ।

लीलावती शुद्ध थी, इसीसे उसके पिता पुस्तके द्वारा ही उसका नाम विख्यात कर गये हैं, कुछ यही बात नहीं है, वरन् लीलावती भी स्वयं ज्योतिष शास्त्रकी जानने वाली थी, लीलावतीने एकवृक्षकी जड़के नीचे बैठकर ज्योतिष शास्त्रकी विद्याके बलसे थोड़ेही समयमेंही उस वृक्षकी शाखा और पत्तोंतकको गिनती करदी थी ।

हे बहन ! लीलावतीका नाम भारतवर्षमें आजतक विख्यात है, उसने पतिधर्म पालन करनेके लिये लिखनेमेंही अपना जीवन व्यतीत कियाथा ।

हे बहन ! अब मेरी परमेश्वरसे यही प्रार्थना है कि, इसके सुननेका ईश्वर तुझे फल दे यदि तू मेरे कहे अनुसार चलैगी तो तेरी बड़ी बड़ाई होगी ।



पुस्तक मिलनेका पता—खेमराज श्रीकृष्णदास,
"श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम् प्रेस-मुंबई.